

ating the holiness of the Brahmans and power of their ritual are industriously circulated, in order to create awe and respect among the ignorant masses. It becomes therefore necessary to unveil this ritual as far as the limits of a small book will admit and to place within the reach of the Reformers such portion of the ancient mode of worship as required notice. This it is hoped, may stimulate a further research, in those regions of antiquity, which appear to be utterly neglected in India by those, whom they concern most. The Religion of a nation greatly affects its destinies and progress. Adherence to the ancient prejudices combined with the thickly prevailing ignorance and a powerful priest-craft has produced baneful effects, such as early-marriages, miserable and forced widowhood, prevention of travelling to foreign countries, slavery of female sex, waste of money on useless objects, eleemosynary habits of one-tenth of the population, internal dissensions, want of fellow-feeling and patriotism and above all false worship of God. When reformers try to remove these effects, where do they stumble? At the religious difficulty.

---

## TABLE OF CONTENTS.

No.	Subject.	Page
1	Introduction &c.....	1—4
2	Preface.....	1—75
3	Index.....	77—98
4	Exposition of Nigamas .....	1—111
5	Supplement with annotations	1—40
6	Defence of the system by a Pandit	1—53
7	Do in Sanscrit by another ,,	1—51
8	Do in Gujiathi.....	1— 8

# सूची:

प्रकरण,

पृष्ठ.

१ भूमिका,

१—४

२ प्रस्तावना,

१—७५

३ अनुक्रमणिका,

७७—९८

४ निगमप्रकोश,

१—१११

५ परिशिष्ट,

१—४०

६ संदर्भ,

१—९३

७ संस्कृत संडण,

१—९१

८ सदरहुनो अर्थ,

१—९

# निगम प्रकाशन

एटले

वैदिक धर्मनो सुलभ



“लो० हि० निबंध संग्रह” कर्ताए  
पर्म सुधारणा इच्छिनाग्ना उपयोग वास्ते  
बनावी प्रतिद्वं कर्यो।

अमदावाद मध्ये

मामानीं हवेलीमां युनाइटेड प्रिंटिंग अने ज. ए. कंपनी  
“लिमिटेड”ना प्रेसमां रणछोडलाल होराचंदे छाप्यो।

संवत् १९३०.

सने १८७५.

## प्रस्तावना।

हिंदुर्धर्मना पण भागछे. कर्मकाढ, ज्ञानकांड अने भक्तिकाढ. जे अग्निहोत्रि श्रीरो पाणिक अने वेदिया ज्ञानविषये ते कर्मकाडि केहेवायच्छे. संन्यासी परमहंस इत्यादि ज्ञानी केहेवायच्छे. गोसावि माहाराज स्वामिगिरायण इत्यादि भक्त केहेवायच्छे. आ यथा उपर्युक्त एम जणाशे के कर्मकांडमा दयादिक ऊत्तमगृण नयी अने अर्थत मूढ, विवेक गृण्य, ओछो बुद्धिना लोक मात्र आ भार्गवों स्वीकार करेछे एम विजामार्गना लोक वोलेछे. अने कर्मवाळा एम कहेछे कि—

यावत्वर्णनिभागोस्तियावत्वेदप्रवर्तते अग्निहोत्रंचयज्ञंच  
तावत्कूर्यात्कलौयुगे ॥

हरितस्मृति.

कर्मकाडि कहेछे के ज्ञान सुषिधि ज्ञातीभेद अने वेदने मानो सा सुषिधि यज्ञपाठ करो. आ यथा उपर्युक्त ज्ञान अनें भक्तिमार्गनु ऊत्तमपणु सिद्ध यशो एवी आशाछे. अने कर्मकाढनु लक्षण शुं ते पण इनामा आवश्य.

आ पुस्तक लखवानुं कारण एम छेको हिंदुस्तानमाहाल जे हिंदुधर्म चाले छे, अने तेना पेटामा अनेक प्रकारना संप्रदाय अने पंथ चाले छे, ते बधायनुं मुळ वेदमा छे, अने वेदनो आधार, अश्रावक लोक शिवाय, वपाय पंथवाळा माने छे. माटो वेदमा शुं छे, अने शाप्रकारनु भजन छे, अने कीणा कीया देव छे, ते जाणवा विशेषणा

५ टोप, श्रावक, जैन, बौद्ध फक्त ज्ञानकाढमा जे जे सारू होयच्छे ते ते माने छे- कर्मकाढने मानता नयी.

लोकोना मनमा आपेक्षा छे, वेदना पुस्तको प्राचीन माहासंस्कृत भा-  
 षामा लखेला छे, तेथी साधारण पुराणीक के शास्त्री पंडीतोधी तेनो  
 अर्थ थतो नयी, सायनाचार्यादिक जे भाष्यकार यड़ गया तेमनो करे-  
 लो अर्थ जेने भाष्य कहेछे, ते ज्यारे हाथमा लेईए त्योरे वेदनो अर्थ  
 थाय, वेदना प्रत्येक वाक्यने मंत्र एवी संज्ञाछे ते मंत्र ब्राह्मणो भणेछे  
 पण तेनो अर्थ समजता नयी, घणा एक लोक नो एम कहे छेको,  
 वेदनो अर्थ वहु गहन अने गुढ छे तेनो अर्थ यायज नहाँ, अने घणा  
 एक लोक एवुं कहे छे के, वेदनो मंत्र ब्राह्मण शीवाय कोईए भणवो  
 नहाँ, अने जे भणे तेने मोटी शिक्षा ठरावेली छे, वेदनो मंत्र कोई  
 ब्राह्मण भणलो होय तो बीजी नातना लोकोए ते साभल्दुं नही, अने  
 वधा हिंदु एम माने छे के वेदना मंत्रमा वहु मोटी शक्ति छे, तेनुं व-  
 र्णन क्रग् विधान ईश्वादि ग्रंथोमा कर्यु छे केटलाएक मंत्र भ-  
 प्यायी वरसाद आवे छे, अने केटलाएक मंत्र भणता अग्नि सळगी  
 उठे छे, ए मंत्रबडे नाना प्रकारना अख्य याय छे, जेथी वायु, पूर्वत,  
 वरसाद, अग्नि प्रबल धर्दने नाश करी नाखे छे एवा अख्यना नाम न-  
 शास्त्र, आनेयास्त्र, वायव्यास्त्र ईत्यादिक भारतादोक ग्रंथोमा वर्णन  
 रूप्य छे, अने ते एकेक मंत्र मेढववा वास्ते, राजा लोक ब्राह्मणोने  
 घेर शेवा करता ए प्रमाणे अर्जुने पाशुपतास्त्र मेढव्युं, एवी कथा  
 छे, तेथी वास्त्रण लोक आ वधाय मंत्र पोतानी पुंजी समजीने गुप्त रा-  
 मे छे, तेनो असर कोईने बतावता नयी, तथा पुस्तक कोईने आपता  
 नयो, ब्राह्मण शीवाय बीजी नातने वास्ते पुजा बीगेरे अनुष्टान करवुं  
 होय तो पुराणीक लोक भणीने ते करे छे, ने वेदनो मंत्र बोलाय  
 नहाँ, गारण यगमान वेदनो अधिकारी न होय तो, रोना काममा

वेदनो उच्चार पुरोहित न करे, वेदनो अधर ए प्रमाणे धणा पवित्र गणेला छे,\* ब्राह्मण होय तो, नाह्या दिना मंत्रनो उच्चार न थाय, अने जग्या पछी पण न थाय; कदापि एम करे तो मंत्रनी शक्ति ओ-छी थाय छे. हालेना ब्राह्मण एम समजे छे के जेवो जोइए तेवो चोखाइ न पाव्यायी धणा एक मंत्रनुं सामर्थ जतुं रह्युं, केटला एक कहे छे के, आ कबीयुगना पाप्यी मंत्रनुं अने मंत्रना अधिष्ठती जे ब्राह्मण, ए वेनुं सामर्थ धंठी गऱ्युं छे.<sup>३</sup>

वेदना पुस्तको धेणा प्राचिन छे, एमा कोइ पैण संशय नयी, अने वेदना पूर्वे शुं हतुं ते मालुम पडतुं नयी. अने वेदना पछी जे जे यथं यथा छे ते वधाय वेदना आधारयी थया छे. हाल जे ब्राह्मण वेद मुख पाठ करेछे, तेने वेदीया कहेछे, अने जे यज्ञ यागादीक क्रीया जाणे छे तेने श्रौति कहे छे, अने जे यहस्यने घेर उपनयन विवाह, इत्यादीक संस्कार करावे छे, तेने याज्ञीक अथवा शुक्ल कहे छे. जे पुराण वाचे छे तेने पुराणीक कहे छे, धर्म शास्त्र इत्यादीक एक शास्त्रनो अभ्यास जेने कर्यो होय, तेने शास्त्री कहे छे अनेक शास्त्रनो जेने अभ्यास कर्यो होय तेने पंडित कहे छे. ज्योतिषनो अभ्यास करे छे, तेने जोशि कहे छे. अने वैद्य शास्त्रनो अभ्यास करे छे, तेने वैद्य कहे छे. ए प्रमाणे जुदा जुदा प्रकारना ब्राह्मण छे. जे श्रौतायिनी शेवा करे छे, तेने अमिहोत्री कहे छे. अने जेने यज्ञ कर्यो होय, ते दिक्षित एवो अडफ धरावे छे. पूर्वे युगमा वधाय ब्राह्मण अने क्षत्री अमिहोत्री हता, धणं करीने एक कुळमा एक अमिहोत्र राखता. हाल ते चाल तुटी गइ छे, हवे कोकज ब्राह्मण अमिहोत्री होय छे, तोपण

\* टिप-नोपण सरकारी निसालना शास्त्री बद्याय जातना लोकोने वेद भणावे छे.

हिंदुगजा, ज्या ज्या छे, आ र्या अभिहोत्रनी तृष्णि करावे छे. अने अपिनी सेवा बीन हरकत चलावता वास्ते, नेमणुको अने गाम पण आपे छे पूर्व युगमा ख्रीयोने यज्ञो पवित्र धारण अने वेदाभ्यास करावता, पण हाल ते चाल छुटी गड छे, कल्पियुगमा ख्रीओने उपनयनने ठेकाणे लघ उरावेलु छे अने ख्रीओने शुद्र जेवी समजवी, तेथी हाल ख्रीओने वेदाभ्यास अथवा गायत्री उपदेश करावता नयी.

वेदमा मुख्य धर्म, यज्ञनो वताव्यो छे. वेद मंत्रनो विनियोग यज्ञार्थ थाप छे. अने प्राचीन कालमा ब्राह्मण अनेकशक्ती, अनेक प्रकारना यज्ञ, करता, तेथी अनेक देवताओ तृप्त यद्दने मनुष्यने जे जोइए ते आपता, गीतामा कह्यु छे के —

सहयज्ञाः प्रजाः सृष्टुपुरोवाचः प्रजापतिः

अनेन प्रसविष्यध्वमेपवोस्तिष्टकामधुक् ॥

देवान्भावयतानेन तेदेवाभावयं तु वः ॥

परस्परं भावयं तः श्रेयः परमावाप्स्यथ ॥

यज्ञादुचतिपर्जन्यो यज्ञः कर्मस्मुद्दृवः ॥

कर्मन्नद्वाहोद्वर्वं विद्वत्रह्याक्षरस्मुद्दृवं ॥

यज्ञाशिष्टाशिनः संतोमुन्ध्यं तेसर्वकिल्विष्यैः ॥

अर्थ — अबदेवे, मनुष्य उत्तर कर्यां तेज वज्रत यज्ञ करानी की-  
या वतावी, अने बहु त्रे, ए श्रीया तमे रुरो तो तमने जे जोइए ते म-  
लये ने यज्ञ कर्यायी, देव तमारा उपर प्रसन्न यद्दो अने तुमने जे जो-  
इए ते भाष्ये यज्ञ कर्यायी वरसाद पढ्यो, अने यज्ञ शो रुहे वरवो

ને રેદમા વતાવેલું છે, માટે વેદનો અક્ષર છે, તે સર્વથી મોટા છે, એ પ્રમાણે મનુષ્યને ઉપદેશ કર્યો.

ભાગવતમા કલું છે કે, પ્રાચીન વહી રાજાએ ઘણા યજ્ઞ કર્યા, તેથી એને ઘણા જીવોની હિંસા ફરવી પડી, છેલોવારે નારદજીએ ઉપદેશ કરીને યજ્ઞ વંધ રૂર્યા, પ્રાચીનકાલમા રાજા ભરત એણે બહુયજ્ઞ રૂર્યા અને રામચંદ્રજીએ પણ રાવણના યુદ્ધમા ઘણા જીવ મરી ગયા તે પાપ કાહાડવાને વાસ્ત્વે અશ્વમેધ કર્યો. તે કથા પુરાણમા પ્રસ્તીદ્વારે, તેજ પ્રમાણે પાડવોએ અશ્વમેધ કર્યો. તે કથા ભારતમા છે કલ્યાણુગમા રાજા જયસીંગ જેપુરમા અશ્વમેધ કર્યો. એવી દંત વધા પ્રસ્તીદ્વારે, ભરુચમા બળી રાજાએ દશ અશ્વમેધ કર્યા, તે ઠેકાણે હાલ લોક નહાય છે. તેને દશાશ્વમેધ ક્ષેત્ર કહેવાય છે. એજ પ્રમાણે ઉત્તુકંઠ મહાદિવ પાસે જાવાલી સુષિએ યજ્ઞ કર્યો તે ઠેકાણે ખૈરનાથ, એવું કહેવાય છે. ને સ્વાધી ભસ્મ નીકલે છે. એ પ્રમાણે હિંદુસ્તાનમા હજારો ઠેકાણે યજ્ઞ થએલા તેના દાખલા મલી આવે છે. તેથી પૂર્વ કાલમા ઘણા યજ્ઞ થતા એમ જણાય છે.

વैદિક યજ્ઞમા ઘણી હિંસા કરવી પડેછે, 'એ વાતમા કંઈ પણ સંશય નથી, કલ્યાણના આરંભે વૌધ મત ઉત્પન્ન થયું તે ઘણા જોકે મા યું તે મત વેદના વીરુદ્ધ હતું. હિંસાને લખ્યે, વૌધમત વાંચાએ વેદની અને બ્રાહ્મણોની ઘણો નિદા કરો છે. અને અહિસા, તપ, સય, દેહઢંઢ, ઉપવાસ ઇલાદી પતિપાદન કરો, લોકોને ઉપદેશ કર્યાથી વેદોપર્મ બાતલ પડચો. પછી બ્રાહ્મણોએ કરો કમર બાધી, એક મત

---

ટીપ—એ પ્રમાણે પુરાણોમા ઇતિહાસ છે તે ઊપરથી લખ્યું છે..

पयाने, वैदिक पर्मनुं स्थापन कर्युं तोषण बौधपर्म वीलकुल रद्द थयो नथी, योडो घणो चालेछे अने वीजा प्रात करतां मारवाढ अने गुज-रातमां बौधपर्मनुं जोर वधारेछे, तेथी ब्राह्मण दया पर्मथी चालेछे, अने यत्यागादिक क्रीया ब्रिलकुल करता नथी, पण हिंदुस्तानना अन्य भागमा यज्ञ धाय छे, अने श्रोति ब्राह्मण पण घणा छे.

वेद मुळमा एक गणातो नहतो अनेक रूपीओ पासे अनेक मंत्र नो संग्रह हतो, ते वधाए श्री व्यासजीए भेगा कर्या, अने तेनां चार नाम पाढ्यां जे छंदरूपी वाक्यो हता, ते जुदा काहाज्यां तेमां अनेक देवोनी प्रार्थना छे, तेनु नाम ऋग्वेद एवं पाठ्युं, अने ए भाग वधाय करता प्राचीन जणाय छे, एमा जे देवोनुं वर्णन कर्यु छे ते राम कृष्णादिक पुराणना देव, हाल जे प्रसीदू छे, तेथी वेदना देव जुदाछे, अयि, वायु, सुर्य, सूद्र, विष्णु, इंद्र, वरुण, सोम, नक्ष, पूषा, ईश्यादि वेदमा देव गणेला छे, अने तेमनी प्रार्थना वेद मंत्रमा करेली छे, जे गायन करवाना मंत्र हता तेनुं नाम, सामवेद पाठ्युं अने जेमा यज्ञ क्रीया वतावी छे, तेनुं नाम यजुवेद पाठ्युं, यजमान एटले यज्ञ करनार अने, पुरोहित एटले मददतगार, अने चोथो वेद, अर्थर्वण, एमा अरोष्टशाति इश्यादि लखेली छे, पण सौथी ए वेद नूतन जणायछे, ए चारे वेद एटले संहिता अने ब्राह्मण ए अनादि छे.

एवं मानेलुं छे कोइ केहेछे के चारे वेद ब्रह्माना मुखमाथी प्रगट थया, कोई केहेछे के, ब्रह्मानुं मुख एटले ब्राह्मण तेमाथी निकब्बा, वेदने जो-देला वीजा नाहाना नाहाना पुस्तको छे, तेने उपनिषद कहेछे, तेमा केटलाएक खराछे ने केटलाएक नूतनछे गैदेक कर्मनी, ए मंथमा नि-

दा करलो छे. अने बीजा वपा देव मुक्तीने, एकपर ग्रन्थमात्र मानेलु  
छे. अने घणुं करीने निवृत्ति मार्गनी प्रशंसा करीछे. आ ग्रंथमाथी वे-  
दात शास्त्र उत्तर मीमांसा निकल्युं. अने बीजा वैदिक ग्रंथमाथी पूर्व  
. मीमांसशास्त्र निकल्युं छे. ए वे मत एक बीजाने विस्तृदछे आयिहोशी  
याजिक, इत्यादी कर्म काढी, ब्राह्मणं पूर्व मीमांस शास्त्रनो आधार लेछे.  
अने संन्यासी परमहंस इत्यादी, खागी, ब्राह्मण उत्तर मीमांस एटले  
वेदात शास्त्रनो आधार लेछे. अने वधाय कर्म मुक्तीने फक्त ब्रह्मनुं ध्यान  
करेछे. बीजा कोई देवने मानता नथी. ए मार्गने ज्ञान मार्ग पण क-  
हेछे. आ वे शिवाय जीजो मार्ग भक्ति मार्ग फरीने साप्रत चालेछे.  
तेमा चार संप्रदायना यहस्य खागी, वैरागी सापु इत्यादिक गणाय छे.  
हरदास, पुराणिक, रामदासि, वारकरी, आ बद्धाय भक्ति मार्गवाङ्माछे.  
एने उपासना मार्ग पण कहेछे. उपासनाना पेटामा वे छे एक वाम  
मार्ग अने एक दक्षण मार्ग तेमा वाम मार्ग ए देवीनुं कहेवाय छे. अने  
दक्षण ए शिव, विष्णु इत्यादीकनुं कहेवाय छे. तेमा स्मर्त, शैव, वैष्णव,  
सर्वपणी, सत्त्वसंगी, इत्यादिक गणाय छे. ए मार्गमा वैष्णव मात्र  
अहिंसाव्रत पाळेछे अने वाम मार्ग जे आगम अने तंत्रनो आधार लेछे  
तेमा ए व्रत पालता नथी. अने जे वेदनो आधार लेछे ते पण आहेसा  
व्रत पालता नथी अनेक शास्त्रमा कोई ठेकाणे ज्ञाननी प्रशंसा करीछे.  
कोई ठेकाणे भक्तीनी प्रशंसा करीछे. कोई ठेकाणे कर्मकांडनी प्र-  
शंसा करीछे. अने दरेक मार्गना ग्रंथ घणाछे. माटे झीयो मार्ग सारो  
तेनो निश्चय करवाने घणो मुषकले पढेछे. एटलुं खरु की कर्मकाढे  
ए वहु प्राचीन छे. अने यज्ञयागना विधी केवळ, हिंदुस्तानमा चालता  
हता, एम नथी पण बीजा देशमा पण प्राचीन काळमा यज्ञयाग क-  
रता हता.

प्राचिन कालपा, जे ज्ञान्यण हता, तेमने क्रषि एवं कहेता. केटला एकने महर्षि, एवं नाम छे, केटला एकने, देवर्षि, केटला एकने राजर्षि, छंदर्षि, एवा जुदा जुदा नाम छे, पण क्रषि ए शब्दनो अर्थ, यंथ कर्ता एवो थाय छे, पण हालना ज्ञान्यण एम कहेछे के क्रषीनु ज्ञान अद्भूत हतुं तेथो तेमने "अद्यार्थदृष्टा" कहेछे. एटले जे कोइने मालम पढ़ानुं नहीं ते एमने मालम पढ़तुं हतुं. तेथो एमणे जे यंथ वाध्याछे, ते वेद तूत्य गणायछे. अने क्रषी गया पछो जे यंथ यथा ते, पौरुष यंथ कहेवायछे. क्रषीना यंथने, आर्ष एवं कहेवायछे. अने वेद नज यंथने छादस एवं कहेवाय छे. ए वधाय क्रषी अनेक प्रकारना जनवरेनुं मास खाता हता. एवं एमना यंथ उपर्यो जणायछे. हाल मैठ, यवन, इथादिक मास आहारीछे. पण एमना करतां आ वधाय क्रषीओ वधारे हता. कारण, हाल कान्स देशमा घोडानुं मास खावानो प्रचार, पड्योछे. पण अभ्येष क्रषीओ हजारो वर्षयो करता आव्हा छे. तेथो एवु मालम स्फेंचे के घोडो खावानो प्रचार क्रषी मंडळमा घणो हतो, पछी वैष अवतार थयो त्यारे, घणकि हिंसा वंथ पडी, अने दयानो विस्तार थयो, अने सात्विक मार्ग वध्यो, अने वैष लोक निवृत्ति, मार्गने वळगी पड्या. त्यारे कर्मकाढी ज्ञान्यण, वहु ओशोपाल्य थड़ पड्या, अने पोतानुं कर्म ढाकवा वास्ते केटलीक मीथ्या. बाती चलावी ते एवीके कोइ कहेछे, के,

॥ वैष्णकीहिंसाहिंसानभवति ॥

एटले वेदमानो हिंसा छे तेने हिंसा न गणवी,  
योवेदविहिताहिंसानसाहिंसाप्रकीर्तिता ॥ भागवत टिका

यत्त्रघाणभक्षोविहितःसुरायास्तथापश्चोरालभन्नहिंसा

भागवत ११-५-२३

देवतोदेशोनयत्पशुहननंतदालंभनं ॥ टीका

बीजा कहे छोके, पूर्वना, क्षमा जनावरो मारता, पण फरो जीवित करवानु ते मने सामर्थ्य हर्तु, ते आपणे नथी माटे आपणे न करवी, बीजा कहे छो के, वेदमा हिंसा नयो अने जे हिंसानो अर्थ कहाहे छो, ते भूलछे. बीजा कहे छो के, मनुष्यने मास खावानी इच्छा होय, ते तृष्ण करवाने वास्ते यज्ञ विधि बताव्यो छो माटे ए विधि नयी, पण संकोच छो. बीजा केटलाएक, कहे छो के, कोइ कामनी सिद्धि करवी होय यारे हिंसा करवी पडे पण आपणे काम्य कर्म मुकी देइए तो, हिंसानी जरूर नयी. अने केटलाएक कहे छो के, वेदमा जे हिंसा लखी छो, ते पूर्व युगने वाले हती, पण कबीयुगने वास्ते नही. खरी रीते ए वधी तकरार तपाशीए तो, एमानी एक पण खरी नयी, कारण जनावरोने मारीने क्षमियो फरी जीवित करता हता, ए वातनो दाखलो कोइ ठेकाणे मछतो नयी. अने बीजुं एम के जे युगमा घणी हिंसा चाल-ती ते युगने कबी कहेवुं, अथवा जे युगमा दयानो विस्तार वधारे थयो, तेने कबी कहेवुं, आ एक मोटो संशय छो. अने वेद वाक्यनो निषेध पुराण वाक्ययो थाय नही. माटे ए तकरार पण वरोवर नयी. अने जे कहे छो के वेदना वाक्य संकोचार्थ छ. ते पण खर नयी कारण अनुस्तरणी इत्यादीक ठेकाणे मास खावानु नयी योर हिंसा शावास्ते लखी छो. एनुं कारण जणातुं नयी, संकोच होय सो एवी हिंसा लखे नही. माटे ए कल्पना पण मिथ्या छो. अने वेदमा हिंसा नयी, एवुं

जे कहे छे, तेमने विशे एटलुंज कहेवाय के ते लोको वेदोर्धमा भभण छे. खरी बात एटलीज के बौधे दया धर्म घलाव्योते दहाडापो ब्री-  
द्धण लेकोए हिसा शास्त्र संतादवाने बस्ते, अनेक योजना करी, ग्रा-  
हण अने क्षबी ए वेड जणाए पोतानो धर्म मुकी दीधो, अने लोभी  
थइने दृष्ट्यर्थ, गमे ते बातने भान्य करे छे, अने आ बात सब छे के  
असब छे ए विशे विचार करता नयो, ए प्रमाणे हालना नास्तिकी नो  
स्थीती छे, तेज प्रमाणे क्षबी लोकोए पोतानो धर्म मुकी दीधो, एम-  
नो धर्म एबो हसो के, पोताना देशनु रक्षण करवु, ते बात जइने पे-  
टने अर्थे जे रोटलो आपे एनी नोकरी बजावावो, ते कहे के, भाइने  
के, बापेन मारो; तोपण मारे, ए प्रमाणे स्थीती पास्यायी वयो देश  
खराब यई गयो, अने सब अने देशभीमान नावुद थयो.

जे बखत दयाधर्म प्रगट थयो तारे हिंसानी बंधी थइ. पण केटला  
एक प्रातमा ए चाले छे, ने कडलाएक प्रातमा नधी चालतो, सारस्वत,  
मैथील, कान्पकुञ्ज, गौड, उत्कल, ए पांच गौड नाद्धण कहेवाय छे  
अने तेमनी बस्ती झराची, लाहोरीयो कलकत्ते सुधी, आखा हिंदुस्ता-  
नमा छे. ते बधाय मच्छ मासनो अहार निस करे छे, अने द्रावीड,  
तैलंग, कर्णाटक, महाराष्ट्र, ए चार प्रातमा, यज्ञ करती खत्ते मात्र,  
मास खाय छे, निय खाता नयी. अने गुजरातमा कोइ कारणथी पण  
मास खाता नयी, ए प्रमाणे आज बहोट छे. दक्षणना जे वैष्णव  
संपदाइ नाद्धण छे ते लोटनो बकरो करीने तेनो यत करीने खाय  
छे. तेने पीट पशु कहे छे. पण बीजा घणा नाद्धण प्रथम पशुनो यत  
करे छे. ए प्रमाणे घणा नाद्धणोए, बडोदरामा अने करतावी क्षेत्रमा  
यज्ञ कर्यां छे. पूजा, सतार, काशी इयादि क्षेत्रमां घणा यत याप छे

તેમા કોઇમા ચાર કોઇમા આઠ કોઇમા પચીસ એટલા પણ હોમે છે. અને એ જનાવરો શાખથી મારતા નથી કારણ તેનું સુધીએ બહાર પડું ન જોઇએ. માટે ગઢુ દાચીને મારે છે. એ કામ બહુ નિર્દ્યપણનું છે પણ વેદાજા સમજીને કરે છે. જે ઠેકાણે શ્રાવક ગુજરાતી કે મારવા ડી જે ગામમા હોય છે. તે ઠેકાણે કોઇ અમિહોચ્ચી યજ કરવા લાગે લાર કોઇએ એને માલ ધીરવો નહી કે વેચવો નહી એવો વાખો ઘાલે છે. તેથી ઘણી હરકત પડે છે. તેથી અહંમદનગર જીલ્ડામા ઘણા એક ગા-મમાં શ્રાવકોની વસ્તી મોટી છે. તે ઠેકાણે યજ થતો નથી તેજ પ્રમાણે મુંબદીમા પણ ગુજરાતી શ્રાવક ને વૈણવોની વસ્તી વધારે છે, માટે તે ઠેકાણે પણ આજ સુધી યજ થયો નથી. પણ જ્યાહા બ્રાહ્મણોનો જથો મોટો છે તે ઠેકાણે યજ થાય છે ગયા મહા મહીનામા પુનામા વાજપેય યજ થયો તેમા ચોવીસ બકરા હોમ્યા અને મોટા મોટા નામાકિત ગૃહ-સ્થો અને વેરીયા બ્રાહ્મણ શાખી પંડિતો ભેગા થયા હતા. એવું વર્તમાન પત્રથી ખબર પ્રસિદ્ધ થિ છે.

પર્મના આધાર બે જણાય છે. એક તર્ક, અને બીજો, કથા, જાની લોક છે, તે તક્કિથી, ઈશ્વરને સમજે છે. અને અજાનીછે તેમને વાસ્તે, રોચનાર્થ, અનેક પ્રકારની કથા રચેલી હોવાચીને તે પ્રમાણે ભજન કરેછે. તર્કને ફક્ત બુદ્ધિનો આધાર છે અને કથાને આધાર પુસ્તકનો. પછી પુસ્તક લખનારની જોવી આવણ તે પ્રમાણે તે પુસ્તકની માયતા થાય. જગતમા પુસ્તક લખનાર ઘણા યાણું અને તે એવો કદેશમા એકેક જ્ઞાતિમા એકેક સંપ્રદાયમા માનીતાછે. બ્રાહ્મણ કહેછે કે ક્રાણિના કરેલા પુસ્તક તે બધાય કરતા મોટા ઝારણ રે પરમેભર ક્રાણિમા પ્રેરણ હરતા હતા, તે પ્રમાણે ક્રાણી લખના. શ્રાવક કહેછે \*

के, तिर्थकर्ता पुस्तको मोटा, मुसलमानो कहेछे के पेंगवरनां पुस्तको मोटा, आ वपां पुस्तको मेढवतां एकबीजाने मळतां नयो, यारे धर्म कोने कहेवो अने पाखंड कोने कहेवो एनो निर्णय करतां वहुज कठण छे, धर्म छे ते वे प्रकारना छे, एक, स्वभाविक, अने सांकेतिक, स्वभाविक धर्म छे ते स्वतःप्रमाण छे, अने बद्धाय पुस्तकोमां ते मछे छे, अने, सांकेतिक, धर्म मात्र मळतो नयी, स्वभाविक धर्म एटले सय, दया, न्याय, शम, दग्ध, तितीक्षा, इत्यादि, ने कोइ पण ना पाहतु नयी, अने, सांकेतिक धर्ममां घणीए उकरारो छे, हिंदू कहेछे केप्रावण मासमा उपवास करवा ने मुसलमान कहेछे के रमजानमा करवा, ए प्रमाणे देश देशना, सांकेतिक धर्म, अने आचार जुदाछे, आ बधायनुं तस्जे ज्ञानी अने विवेकी छे, ते मात्र जाणेछे, अने जे लोक अज्ञानी होपछे, ते एकबीजानी साये अभिमानयी, लढाईपरेछे, अने एकबीजानी निंदा, अने द्वेष, करेछे, अने सार, असारनुं विचार करता नयी.

हालना न्नाल्यण वणा अज्ञानी ययायी पोताना शास्त्रमां शुँ छे ते जाणता नयी अने पोतानुं ज्ञान वधारता नयीं तेयी त्रण हजार वरस उपर हिंदुस्तानमा जेटलुं ज्ञान हर्तुं, तेटलुंज, कायम रह्युंछे, तेनुं कारण जे आगळ क्रष्णियो लखी गया, तेमां कांइ भूल नयी, तेयी काइ वधारवानुं रह्युं नहीं, एवी समजण पञ्चायी लोको आगळ डगलां भरता नयी.

धर्मशास्त्रमां एवुं कह्युं छे के, यज्ञ कर्यायी देश अने भुमि, पवित्र याय छे, अने कीया देशमां यज्ञ करवा अने कीया देशमा न करवा \* एनी विगत लखी छे, तेमां गंगा पर्मुनानो कांठो ए सौधी श्रेष्ठ गणाय

छे ते ठेकाणे, पूर्व युगमा छुणा यज्ञ थएला, तेथी ते देशने पूण्य भूमि कहे छे. हाल केटला एक लोक एम कहे छे, के यज्ञ करवो नहीं अने जे कर्ममा हिंसा आवे छे, ते कर्म न करवुं, पण जे ऋषिना वाघेला ग्रन्थ छे ते आधारथी ब्राह्मणने ब्राह्मणपूर्ण मळे छे. अब प्राशान मौजिवंधन, लय, अंखेष्टि, आ वधाय संस्कार श्राद्धतर्पण श्रावणी इत्यादिक कर्म खरा अने, वार्कीना यज्ञादिक कर्म, मिथ्या ए केम थशे. एकज ऋषिना यथमानो एक अध्याय खरो ने एक अध्याय खोटो, ए केम कहेवाशे, अने कदापि एम होय तो तेनो पाठ पारायण करवामा पूण्य छे के नहीं? ज्यारे वर परणवा सारु घेर आवे छे यारे मधुपक्क करवानी चाल अद्यापि चाले छे. ने उत्सर्जन पक्ष लेइने गौदान करे छे. तेज प्रमाणे शूलगवने ठेकाणे वृषोत्सर्ग करे छे. अने श्राद्धमा, मासने ठेकाणे, माष एटले, अडद ले छे. पण कर्मनो खाग करता नयी वद्याय पृथ्वी उपर भरतखंडने कर्म भूमि कहे छे, तेनुं कारण, आ देश शिवाय, बीजे ठेकाणे यज्ञ याग थता नयी तेथी ते देश पवित्र थएला नहीं, माटे ब्राह्मणोने, बीजा दंशमा जवानी पण मनाड छे.

शास्त्रमा एवु गणेलु छे के बार मासनुं एक वर्ष याय छे अने एवा केटला एक वर्ष जाय, यारे एक युग कहेवाय, अने चार युगनो महा युग अने एवा वोहोतेर महायुग जाय, यारे एक मन्मन्तर याय छे अने. चौद मन्मन्तर जाय यारे, एक कल्प कहेवाय. कल्प, एटले ब्रह्मदेवनो एक दीवस केटला एक ब्राह्मण एम कहे छे के, कोई शास्त्र आफ्लपमा चाळवानुं, अने कोई शास्त्र बीजा कल्पमा चालवानुं, एवो कल्पभेद बताने छे. प्रण ए वात खरी जणाती नयी केवळ अनुवाद टाळवाने वाने ए कल्पमा करेली छे वेदनो एस भाग एस कल्पमा,

अने वीजौ भाग वीजा कव्यमा, चालवानो, एवं कहीएतो, वेदनो कोइभाग  
रहेवानो नयी, अने वेदमां यज्ञ विधि वीना कोइ भाग पण छेज नहीं,  
कोइ कहेशो के ज्ञानकांड तो उपनिषद भाग छे, तेमां यज्ञनो विधि  
बतावेलो नहीं पण यज्ञनी निंदा करेली नयी, वज्ञो एम कहेलु छे के  
यज्ञ कर्यायी देहनी, ने चित्तनी शुद्धि याय छे, अने ते कर्या पछी  
सन्यास लेवो माटे घणा एक लोक यज्ञ संपादन करीने, पछी सन्यास  
ले छे.

### यज्ञोदानंतपश्चैवपावनानिमनीयिणां ॥ गीता ॥

शतयज्ञ जे माणस करे, तेने इंद्रपद मळे छे, एछले ते माणस  
स्वर्गनो राजा याय छे, अने जे यज्ञ करे तेने स्वर्ग मळे छे, एको कथा  
पुराणोमां घणे ठेकाणे लखी छे, अने केटलाएक राजा, शतयज्ञ क-  
रवा लाग्या, यारे इंद्रने वीक लाग्यो, के आपणुं राज्य जशे, तेयी ते  
आडो पछ्यो, एवी पण कथा छे, पण हाल जे लोक यज्ञ करे छे, ते  
फलाणे दीवसे स्वर्गे जशे एवं काँइ जणातुं नयी, कारण कोई यज्ञ  
कर्या पछी दश वर्ष जीवे छे, वीस वर्ष जीवे छे, ने कोई पचास वर्ष  
जीवे छे, पछी मी वयत जता हशे ते कोण जाने.

आ कबीयुगमां जेम ग्रामण उत्तरता गया, तेम तेम खी-  
ओनो भर्पोसार भोछो करता गया, प्रथम लग्न कर्या विना ग्रहवादी  
प्रोओ रहेती हत्ती; एवो उदाहरणो पण घणो छे, गर्मी, मैवेयी, व-  
दया, आ ऊपि रन्याकुमारी हत्ती शास्त्रमां लस्युं छे के.

**द्विविधाःस्त्रियोः । व्रतादिन्यः । सद्योवध्यश्च ।**

**न त्र व्रतादिनीनामुपनयनभग्नींधनंवेदाध्ययनंस्वगृहेभिः**

( २७ )

क्षाचयेति । सद्योवधूनांमुपस्थितेविवाहेकथंचिदुपनय  
नमात्रशत्वाविवाहःकार्यः । हरितस्मृति ।

पुराकल्पेषु नारीणां मौजीं बिंधनमीष्यते ॥

अध्यापनं च वेदानां सर्ववित्रीवचनं तथा ॥

वर्णयेदजिनं चीरं जटावल्कलमेवच ॥ यमस्मृति ।

ते वंश करीने, सर्व छोंगोने परणावधी अने तेमने शुद्र प्रमाणे  
दास समजबो, एवं उराव्युं अने धणी मरे लारे एमने बाड उत्तराववा  
के धणिना मडदा साथ बँडी मरवुं, जनावरनो अनुस्लरणी करता, ते  
छोंगीज करवा लाग्या तेथी जुलम, अने अन्याय, वहु वधी गयो.

अथर्वण वेदमा संविहतानुं काढ नव अनुवाक नण अने प्रपाटक  
वीसमा पुनर्विवाह करें ते पंचोदन होम करे एवं लख्युं छे ते मंत्र नि-  
चे लख्या छे.

यापूर्वपतिं वित्वाथान्यं विन्दते परं ॥

पंचौदनं च तावजं ददातो नवियोपतः ॥ २७ ॥

समानलोकाभवति पुनभुवीपरः पतिः ॥

यारेजं पंचौदनं दक्षिणाङ्गोति पंददाति ॥ २८ ॥

अथर्वसंविहता

प्राचीनकाळमा लघु करवानु महुरत वहाडता नहोता एवं आश-  
लायन अने वेधायन सूत्र उपरथी मालम पडे छे,

सार्वकालगेकेविवाहम्

आश्वलायन-

सर्वैमासाविवाहस्य

बौधायन

अने नहानी छांडीनुं लम पण करता नहता एवं मनुंना वयनयो  
मालम पडे छे.

आज्ञातपतिमयौदामज्ञातपतिसेवनम्

नोद्राहयेत्पितावालामज्ञाताधर्भज्ञासनम् ॥

हित्यकेशी सूक्ष्मा एम लख्युं छे के लय यथा पछो घोये दिवसे  
चतुर्थी कर्म एटले गर्भाधान करवुं एवो विधी लख्यो छे तेथी एम मा-  
लम पडे छे के ऋच्यानी उमर लमनी वस्त गर्भाधान लायक जोइए  
नहींतो चतुर्थ कर्म शी रीते थशे.

प्राचीनकाळमा त्रीवर्णमा कन्या आपवा लेवानो अने अरसपरस ज-  
मवानो चाल हतो भूगूङ्काविनो पुढ शुक तेनो दोकरो देव यानी एय  
याकी राजाने आपी हती एटले ब्राह्मणनो केन्या क्षत्रीने आपी अने  
घणा स्मृतियोमा ए विशे घर्जु लखेलु छे. पछो आ वधी बावतनो सं-  
कोच थयो अने खीओने दाट्यलमा लाववा विशे घणोन प्रयत्न थयो  
अने जे खीओने पहेलो आधिकार हतो ते सर्व हरण करी लोधो अने  
खीओने शुद्ध समान ठराव्यु.

अतःपरं प्रवृत्यामीस्त्रीशूद्रपतनानिच ॥ जपस्तपस्तिर्थया

त्राप्रवृजामंत्रसाधनं ॥ देवताराधनेचैव स्त्रीशूद्रपतनानिषद् ॥

अन्तिस्मृती १३४

आ देशमा प्रयम कीरत अने निषाद एटले भालि कोळी इखादि  
लोक रहेता तेने केटलेक ठेकाणे दस्यु राक्षस ए पण नाम आप्या छे.  
जेम जेम आई लोकोनी वस्ती पइ सेन तेम जुना लोको हठता गया

अने जे वधारे केब्बणी पामेला अने बुद्धिवालि हता ते आगल पडता गया अने जे आर्य लोकोमा जे जे रुढी हती ते रुढीनो विधि थइ गयो, जे प्रमाणे बोलवामा जे रुढी चाले छे ते रुढी लेइने व्याकरण शाखना नियम वंथाय छे कब्दुं छे के.

### प्रयोगशरणाःवैयाकरणः

एज प्रमाणे जे रुढी चालती होय अने जे रुढी लोकोने मान्य छे ते रुढी लेइने धर्मसाखवाळा विधि ठरावे छे कब्दुं छे के

### शास्त्रात् रुढीविलियसी ॥

हरेक शाखानुं सूत्र जोता जेटलुं सूत्रमा कर्म लख्युं छे तेटलुं कोई करतुं नयी केटलाएक अनुष्टानो बीजी रीते करे छे केटलाएक लाता यथा छे ने केटलाएक टुँका थँथा छे ते विशे एम कहे छे के  
अकरणात्मदकरणंश्रेये ॥

कर्मकाडने मूळ आधार वेद अने सुत्र ए वे छे पण ए वेनो अर्थ कोई करतो नयी अने घणुं करीने रुढी मार्ग प्रमाणे चाले छे.

मनुष्यने प्रथम अज्ञानकाळ होय छे, पछो पराक्रम काळ आवेछे, तेमा मेटा मोटो वीर पराक्रमी राजा थईने देशनुं नाम वधारी दे छे सार पछी लोक विचार काळमा आवे छे, अने विचार करता करता जराकाळ आवे छे तेमा अबळा विचारमा पहोने देशनो नाश थई जाय छे. हाल हिंदुस्तानना लोक चोथी स्थितीमा छें हाल कोई जाणतो नयी के आ देशमा पूर्व शी शी विद्या हती अने शो शो सुप्ता रो हतो अने वेदशाखमां शु छे ते कोई जाणतो नयी जुना उदाहणों जोईने एम बोले छे.

कुण्डैपायनस्यगृहीतनैषिकव्रह्मचर्यस्यविचित्रवीर्यदारे  
 ष्वपत्योत्पादनप्रसंगः  
 युधिष्ठिरस्यकनीयानिजितभातृजायापरिणयनं  
 वासुदेवार्बुनयोनिपिदुमातुलदुहितस्त्रिमणीसुभद्रापरिण  
 यनं ॥ इति धर्मव्यतिक्रमः ॥ तेजसानांनदोपः ॥  
 ख्यातःशक्रोभगांकोविधुरतिमलिनोमाधवोगोपिजारः ॥  
 वैश्यापुत्रोवसिष्ठःसर्वजदयमःसर्वभक्तोहुतांशः ॥  
 व्यासोमंछोदरीयःसलवणजलधिष्ठानांडवाजारजातः ॥  
 सद्ग्रेतास्यधारीनिजगतिवसतीकस्यदोपोनजातः ॥

तेजस एटले जबरजस्त तेने रुदी तोडतां दोष नयो पण आज.  
 तेजस माणसनो आभाव थयो छे अने लोक असत्य बोलनारा कपटी  
 अने आपसमा लडनारा वहु थया छे तेनु कारण विद्वानोनो घटारे  
 वहु थयो कह्यू छे के.

शास्त्रेणहीनाः कवयोभीवंतिकवित्वहीनाश्वपुराणभद्रः ॥  
 पुराणहीनालपिमाचरंतिकृपित्वहीनाश्वभवंतिसंताः ॥

आ कारणथी भजान वहु उत्पन्न यर्यु अने विवेक वीलकुल जतो  
 रखो जे मूर्ख माणस छे ते डाहो गणाय छे अने दुराचारी छे ते स-  
 दाचारी गणाय छे अपयो जानी अभीमान वध्यो अने वेदनो भर्थ  
 शु छे ते कोई जाणतुं नयी सूत्रभो कोईने खबर नयी रुनु सूत्र थाय  
 छे ते मात्र जाणे छे धर्मशास्त्र कोई समजतो नयी ग्राहणीयु भगवत्तर

પોપટ જેવું ભણે છે અને લોકોને ફનડવાની ઝછા રાખે છે તેથી અ-  
દાવતો ઘણો ઉત્પન્ન થડ પ્રખેક મનુષ્યને એવી ઝછા છે કે વીજા લો-  
કોએ આપણા કદવામા રહેવું અને તે લોકોએ આપણો હુકમ માનવો  
એજ ન રણથી સાસુ બહુની લદાઈઓ થાય છે. ગોર જજમાનની થાય  
છે, રાજા ને ર્દીયતની થાય છે આવ કારણથી કલ્પિયુગમા ઘણીએ  
રીતો વગડતી ગઈ વિધવાએ વપન કરતું એ વિષે કોઈ ઠેકાણે શાખ  
આધાર વેદમા કે સ્મૃતિમા જણાતો નથી તેસીરી અરણ્યકમાને અધ્યા-  
યમા પિતૃમેધ એઠલે અંત્યેષ્ટિની પદ્ધતી લખી છે, પણ તેમા વપનનો  
અને સતનિનો કોઈ ઠેકાણે દાખલો નથી તોપણ એ રુઢી ચાલો કા-  
રણ વિના કાઈ પણ રુઢી ચાલતી નથી એમ કણું છે કે.

**અકારણમનુદ્વિશ્યનહિમંદોપિપ્રવર્તતે ॥**

અર્થ.

કારણ દિના મૂર્ખ પણ નિયમ કરતો નથી.

યારે આવા નિયમ કરવાનું કારણ શું હશે તે કેહેવાને ઘણુ મુષ-  
કેલ છે વપન વિષે એક વાક્ય નિર્ણય સિધુંમા લખ્યું છે. -

**વિધવાકવરીબંધભત્રૈવધાયજાયતે ॥**

**શિરસોવપનંતસ્માત્કાર્યવિધવયાસદા ॥**

પણ એ વચન કાહાનું છે, તેનો પતો નથી અને, ક્ષેપક, અને ક-  
લિપિત છે એમ જણાય છે, અને ઘણે ઠેકાણે એ માય નથી મળું અને  
યાજ્ઞવળ્ણથે એ વિષે કાઈ લરયું નથી કદાચીત યવન મુસલમાન હિદુ-  
સ્તાનમા સચાર ફરવા લાગ્યા યારે એ જબરદસ્તોથી છ્રીઓને પકડી  
ને લેઈ જતા એવુ દેવલ સ્મૃતિથી માલમ પડે છે કારણ એ ઋષી સિં-

धुं नदीने काठे रहेता अने तेना ग्रंथमा आवी स्त्रीयोने शी रिते शुद्ध करवी ए विचार लखो छे तेथी एम लागे छे के ते वस्त्रतमा कंडै पण मोटुं संकट उभ्यं थपु हशे तेथी आवो उराव थयो छे.

**कलौनान्यगतिस्थिणांसहानुगमनाद्वत् ॥ ऋग्वेद  
वादात्साध्वीस्त्रीनभवेदात्म ॥ घातिनी ॥ निष्णयसिंधु ॥**

बैजे ठेकाणे एवु लख्यु छे के  
**सहानुगमनंशस्तंवैधव्यस्त्याधपालनम् ॥**

अमेरिकामा, जे वस्त्र जमीदार लोकोए, गुलाम वेचाधी राख्या थारे एवो कायदो करवो पड्यो के गुलामोनी फरीयाद के साक्षी कोइ कोईमा सामळ्यो नहीं अने गुलामोनी कमाइ ते धणीनी कमाइ, अने गुलाम नासे तो, सरकार पकडीने वणीने ओप, तेज प्रमाणे धर्मशास्त्रमा स्त्रीयोनो अधिकार कहाढी लीघो अने तेमने दास्यत्व आपुं थारे तेमने बंधन करवा वास्ते विधवा धर्म लखवा पड्या ते नीचे प्रमाणे.

**एकाहारोसदाकार्यःनद्वितीयोकदाचन ॥**

**पर्यकशायिनीनारीविधवापातयेत्पति ॥**

**नैवांगोदृतंनंकार्यस्थियांविधवयाववचित् ॥**

**नाधिरोहेदनङ्गाहंप्राणैःकंठगतैरपि ॥**

**कंचुकंनपरीदध्यात् वासोनविकृतंवसेत् ॥**

**तांवुलाभ्यंजनंचैवकांस्यपोनेचभोजनं ॥**

**याति श्वन्नद्वचारिश्वविधवाचविवर्जयेत् ॥**

वीजु वृत वंधनने ठेकाणे लम ठराव्युं तेथी वृत वंधननो काळनो  
 अति देश लेइने लग्नो राळ टुळको कयों तेथी एवो ठराव कयों के  
 अष्टवर्षीभवेत्कंन्यानववर्षानुरोहिणी ॥  
 दशवर्षीभवेत्गौरीअतउध्वारिंजश्वला ॥  
 अष्टमेवर्षेन्राह्मणोउपनयेत् ॥

सर्व शास्त्रनुं आदीकारण, अनुभव, अने तर्क ए वे छे आ वेधी शा-  
 स्त्र वंधाय छे वैद्यशास्त्र, ज्योतिशशास्त्र, पर्मशास्त्र इत्यादिकनुं मूळ एज  
 छे. पण लोभी के स्वार्थी मनुष्य ज्यारे शास्त्र उभु करवामा सामेल था-  
 य छे आरे अनुभव अने तर्क बाजुए मुकीने स्वार्थी अने लोकहित ना  
 शक कानुं, शास्त्रमा घाली दे छे तेथी लोकोनो विगाड थाय छे आ  
 देशने चार काळ थया प्रथम अज्ञानकाळ हतो तेमा श्रद्धा वधीरे पण  
 विचार ओछो तेथी हिंसा कर्याधी देव तृप्त थाय छे अने जे देव नहीं  
 तेने देव केहेता अने ते देव एवा के मनुष्य पासेधी खावा मागे छे  
 एवु ते काळमा धारेलुं, पछी पराक्रमे काळ आव्यो तेमा रामचंद्र युधि-  
 ष्टर अने विक्रम जेवा पराक्रमी राजा थया तेमणे आर्य लोकोने वहु  
 सुख अने मोटापणुं आव्युं लारपछी षट् दर्शन वाढा निकल्या ते व-  
 खतमा विचार काळ प्राप्त थयो ते वखतमा कमकान्ड उपरनी श्रद्धा .  
 निकली गड अने मानसिक शास्त्र वहु वधी गयुं तप, देहदंड, उप-  
 वास, इत्यादिक पर्ममा पेठापछो जराकाळ आव्यो तेमा विचार उपो  
 पञ्चो अने पराक्रम नष्ट थयुं हवे जेमना हाथमा कायदा करवाना हता  
 तेमने स्वार्थ बुद्धिथी के पोताना अज्ञानर्थी एवा कायदा कर्या के लो-  
 कोनुं सर्व द्रव्य हरण कर्युं अने लोको आपणा भक्ष छे एम समझीने

नाना तरोहथी लोकोने खाइ गया अने हजारे कायदा एवा कर्या कै  
लोकोमानो संप उठी गयो अने अदावतो बधी अने भारे बेडीओ लो-  
कोना पगभा एवी सज्जड करी मुकी छे के तेथो लोकोनी हाल चाल  
अने विचार बंध पञ्चो छे अने पोताने वाले जे खोराक करी मुवयो  
हतो ते अने पेंडे पारका लोकोनो भक्ष थया, ए स्थितीमा आ देश  
हाल पञ्चोछे, पृथ्वी उपर घणा देश छे पण हिंदुस्तान जेवा हजारे  
वरस्थी परतंत्र थएलो देश जणातो नयी अने कदाचीत आ देशने  
स्वतंत्रता मळवानो विवत आवेतो अहींआनालोक पोतानां स्वतंत्रता  
रक्षण करशे एवुं पण लागतुं नयी.

जे बेडीओ ऊपर लखो छे तेमानी धोडि हेठे बतावोछे,

- १ द्विजस्याव्यौतुनौयातुशोधितःस्याप्यसंग्रहः ॥
- २ गिरसोवपनंतस्मात् कार्याविधवयासदा ॥
- ३ स्त्रीशूद्रसमानधर्माः ॥
- ४ दत्ताकन्यानदीयते ॥
- ५ क्वचिच्चाणीपतिव्रता ॥

अर्थ.

१. ब्राह्मण, शशी, वाणीए नावमा बेसवुं नहीं, २. विपवाए वाळ  
रापवा नहीं, ३. स्त्री अने शुद्र ए बैने बरापर छे, ४ कन्याने पुनर  
विवाह न मरवो, ५. जे स्त्री गायन करे ते पतिव्रता रहेयो नहीं इ-  
यादि नियम वाध्यापी हिंदुलोकोनुं पराम जतुं रख्युं, १ हिंदुस्तानना  
जण तरफ दार्त्योछेअने उत्तर तरफ हिमालयछे माटे वहाणपा बेठा  
पिंडाय परदेशमा जगाय नहीं भने परदेशमा गया बिना सान के बेपार

न परानो नयो, आ प्रमाणे नियम अंगेज लोकोए रुप्यो होत, तो आं देशमा वहाण शिवाय शी रीते आवे अने आ देशमा मोटुं राज्य भेळ-  
ब्यायी एमने जे अपरामित सुख मब्युं छे, ते शी रीते मब्त, माटे  
दरोयामा जुं नहीं एबो नियम जे माणसे ठराव्यो ते माणस अस्त  
मूर्ख हशे एवुं जणायछे. हवे ए खरुं के हजारो लोक वाहाणमा बेशीने  
फरेउे अने मस्कत बगेरे ठेस्ताणे पण बेपार करेछे पोखंदरना तथा  
कछमाडवीना वाणीया आफोरा खंडमा घणा छे, मारीच बेटमा हिं  
दु घणाछे तेज प्रमाणे काबुल, केदहारमा, अने डरनमा पण घणा  
हिंदुओ बसेउे तेथी सदरहु नियम कोइ पाल्तुं नयी ए खरुं छे तो-  
पण केटलेक प्रसंगे स्वार्थी ब्राह्मण कोइने छळ करवानो धारे तो स-  
दरहु वचन तेमने टेको आपेछे, अने घणाखरा लोक अजानीछे तेथी  
खरु शुं अने खोटु शुं एनो विचार यतो नयी, लोकोनो गाडरीयो प्र-  
वाहछे. माटे महीपतराम रूपराम जेवा विलायत जड आव्या ते काम  
मोटुं पैर्धनुं अने साहसनुं कर्यु अने एवुं काम करनारा घणाज थोडा  
हशे ते बाबत तेमनी तारीफ करवानी तो बाजुपर रहो अनै आज  
चौद वरस सुधी न्यातना लोक लद्याज करेछे अने सदरहु वचन  
काढीने एकवीजाने टेको आपेछे, पण ए विशे कोइ विचार ने गिवेक  
करता नयी आवा लोक ज्ञानशुन्य थया छे.

३. बीजो नियम विधवाना केश काढवा विशे छे ते पण केट-  
लाएक लोक मानता नयी. उत्तराहिंदुस्तान, गुजरात, द्रविड देशमा  
अने दक्षप्रमा पण मानता नयी.

३. चीजो नियमधी स्त्रियोने शुद्र बरावर ठराव्या तेथी उपन-  
यन गयुं ने बधाय स्त्रीनुं विवाह करनो एम थयुं तेथी बाललम उत्पन-

थयुं अने लोक अल्पायू अने निर्वल थया तेर्थी आसा देशानुं ससानाश  
भयुं जेने कन्या होय ते कीकरमा पडेछे अने वर सोपवा लागेछे प-  
छो बोजवर मले ने केवळ नानुं बालक मले के बुद्ध मले तो तेनो वि-  
चार न करता परणविले

४. चोथो नियम वाध्यो के, जे राडे तेने फरी परणवर्ण नहीं,  
एवु ठराच्याथी पाप वह् वधुं अने बाल्हस्या अने गर्भपात अपरमित  
थया छे, शास्त्रमा ए विशे अनेक मत छे ते वर्षाय स्मृत्यर्थ सारमा ए-  
कठा ऊर्ध्वा छे ते नीचे प्रमाणे:-

मृतेन्यस्मैग्रदातव्यामृतेसत्यपदात्युगा ॥

पुरापुस्तपसंयोगान्मृतेदेयेतिकेचन ॥

अहतावद्येकन्यैवपुनदेयेतिकेचन ॥

आगर्भभारणात्कन्यापुनदेयेतिचापरे ॥

आवा एनेक मत थयाथो निश्चय शो त उरावने मुश्फेल पडेछे  
प्राचीनकालमा आठ प्रारना विवाह टसा तेना नाम -

२ ब्राह्मा २ दैव ३ वार्षे ४ ग्राजापत्य ५ आसुर

६ गांधवे ७ राक्षस ८ पैशाच ॥

अने नेर प्रारना पूऱ्ह हना तेना नाम,

१ औरस २ शुनिकामुत ३ क्षेत्रज ४ गुढज ५

कानिन ६ पौनर्भव ७ ढत्तक ८ क्रीत ९ छत्रिम १०

स्वयंदत ११ सहोद १२ सोपविदु १३ द्वामुष्यायन

आमाणी वे गम्भा छे ने ग्रीजा वग झाडी नारण छे.

वेदमा धणे ठेकाणे पुनर्विवाहनी आज्ञा छे अने भारथमा दमयं-  
तिनुं आख्यान प्रसीद छे तेज प्रमाणे—

पश्चपुराणमा अध्या ८४मा दिव्या देवीभी कथाछे ते हेठो लखीछे  
उज्बलउवाच ॥ पुक्षदीपेमाहाराजभासीत्युष्यमतिःसदा ॥  
दिवोदासोतिविख्यातःसत्यधर्मपराणः ॥२॥ तस्यापत्यंसमुत्यं  
नंनारीणांमुत्तमंतदा ॥ दिव्यादेवीतिविख्याताख्येणाप्रतिमा  
भुवो ॥३॥ पित्राविलोकितासातुरूपलावण्यसंयुता ॥ कस्मै  
देयामयाकन्यासुवरायमहात्मने ॥४॥ ईति चिंतापरोभूत्वा  
समालोच्यनृपोत्तमः ॥ रूपदेशस्यराजानं समाहुयनृपोत्तमः ॥५॥  
कन्याददौमहात्मासौचित्रसेनायधीमिते ॥ तस्याविवाहका  
लस्यसंप्राप्येसमयेनृप ॥६॥ गृतौसौचित्रसेनस्तुकालधर्मेण  
वैकील ॥ दिवोदासस्तुधर्मत्वाचिंतयामासभूपतिः ॥७॥ ब्राह्म  
णान्ससमाहुयपृष्ठनृपनंदनः ॥ अस्याविवाहकालेनुचित्र  
सेनोदिवंगतः ॥८॥ अस्यास्तुकीदशंकर्मभविष्यत्त्वुवंतु  
मे ॥ ब्राह्मणाडचुः ॥ विवाहोजायतेराजन् कन्यायास्तेवि  
धानतः ॥९॥ पतिर्मृत्युप्रयात्यस्यानोचेत्संगकरोतिच ॥  
महाव्याध्यभिभूतश्वत्यागंकत्वाप्रयातिच ॥१०॥ प्रवाजितो  
भवत् राजन् धर्मशास्त्रेपुढ़वते ॥ नस्याद्रजस्वलायावद्  
न्येष्वपि विधीयते ॥११॥ विवाहेतुविधानेनपिताकुर्यान्नसं

शयः ॥ एवंराजासमदिष्टोधर्मशास्त्रेपुकोविदैः ॥२१॥  
 विवाहार्थसमायातईद्रप्रस्थेदीजोत्तमैः ॥ पुनर्दत्तातदातेर्न  
 रूपसेनायभूमुजे ॥२२॥ यदायदामहाभागोदिव्यादेव्या  
 श्वभूमिषः ॥ चक्रविवाहंतदुत्तांषियतेलग्नकालतः ॥२३॥  
 एकविंशतिभर्त्तारः कालेकालेमृतास्तदा ॥ तस्यास्तुरु  
 पसंशुत्यराजानोमृत्युनोदिताः ॥२४॥ सआमंचक्रिरेमुढाः  
 स्तेमृताःसमरंगणे ॥

अर्थ—दिवोदास्त करीने एक राजा हतो तेनी कन्या दिव्या देवी  
 कुरीने हती तेने चित्रसेनना राज पुत्र साथे परणावी एटलामा वर  
 मरी गयो त्यारे ब्राह्मणोनी सभा करी राजाए पुछुण के हवे शी रीते  
 करवुं, त्यारे ब्राह्मण बोल्या के, कन्या वरने घेर बलावी नहीं त्या सु-  
 धी काई पण विष्णु अवेतो पुनर्विवाह याय, ते सांभर्डीने राजाए पो-  
 तानी रुक्ष्याने चित्रसेन कुंवरने फरी आपी, पण ते वर तरतज मरी  
 गयो, ए प्रमाणे ए कन्याना एकबीस वार लान थया.

रुक्ष्याने यह अनिष्ट होयतो लग्न पहेला कुंभ विवाह करवो एवं  
 लख्यु छे ते कुंभ कोडेयी एक धणी गरी गयो एम समजादछे ए  
 प्रमाणे लोक करेछेपण कुंभ विवाह पछी जेलान याय छे ते पुन-  
 र्विवाह केम न कहेवाय.

९ प्राचीन कालम, खोयोने नृस्य गायन शीखावता ते चाल हाल  
 यं पञ्चोछे अर्जुन विराटराजाने घेर ब्रह्मनटा धईनेरत्यो हतो ते ज-  
 ग्नानखानामा गायन शीखवया वास्ते रत्यो हतो, एज प्रमाणे वार व-

रस सुधी नम्बर्चर्य पालीने विद्याभ्यास करवानी चाल हतो ते पण वंप  
थईछे, जनोई देना पेटेला विवाह करी मुकुछे, अने ब्रह्मचर्य बिलकुल  
पालताज नथी, कन्यानी जनोई मुदल काढी नाखी, अने भायडानी  
राखिछे ते अमसती नामनी राखीछे, पण विद्याभ्यास करवानो जे मुळ  
हेतु, तेनु कशुए ठेकाणु नथी, मनुस्मृतिमां लख्यु छेके त्रीस वरसनी  
उमरनो पुरुष होय त्यारे वार वर्षनी कन्या परणावरी.

### त्रिशूदौपैवहेकन्यांद्वादशावाधिकीं ॥

आ शिगाय तीवर्णमां कन्या अने अन्न व्यवहार हतो, ते हाल वं-  
ध पड्यो छे, एटलुज नहों पण ब्राह्मण ब्राह्मणमांज वांधा पड्या छे,  
ते एक बोजानु जमता नथी ने कन्या आपता नथी, तेथी घणी अड-  
चणो पडीछे, कोई नातमां कन्यानी छतछे ने कोई नातमां अछतछे,  
अने ए वाधाने लीधे मायद्वाड जेबो मोटो राजा होय तेने पण  
भीखारी कन्या सोधवी पढ्येछे, कारण के सिधीया के होलकरनी क-  
न्या एना कामनी नथी, तेथी भीखारीनी कन्या ज्यारे परणे त्यारे ते  
कन्यानो मान पण रहेतो नथी अने धर्णी वगर परणेली राढो राखे  
तो तेमना टोलामा राणीने पण हींडबु पडे, अने दासी करता दासी  
थईने रहेबू पडे, अने मोटाना धरमा नाहानो आदमी आवी कन्यानी  
होमायतथी मोटु पद पामेछे, तेथी बहु वगाड थाय छे, तेथी मुभायि-  
तकार लखे छेके,

### शालकोग्रहनाशाय वित्तनाशायकुंजरः ॥

बरोबरीनी पदवीना यहस्योनी सगइ थाय तो मोटो उपयोग  
पाय छे, हाल हिंदूस्ताननी माहाराणीन्हो दिकरो रसना बादशाहनी,

ऋण्या परण्यो अने आवी प्रकारना ऋण्यानुं अपमान थाय नहीं, अने कदाचित नातनी भडचणने सीधे ए राणीनो दीकुरो कोइ रोजर-भी कृण्या परण्यत तो से ऋण्यानुं मान रहेत नहीं अने तेनो वापभाड घरमा-पेशने कृण्याना हीमायतथी, राज्यनो वीगाड वरत, अने वराबुरीनी कृण्या परण्यार्थी बने राज्य मजबूत थड गयां माटे ए विचार-पण ध्यानमा रखवाँ लायरु छे.

ब्राह्मणोनी उपजीविका कर्म उपरछे कोड माणस, शातिक, पौष्टि-क, इटापूर्त, यजनं, यज्ञन, कर्म करे तो ब्राह्मणोने पैसा मळे, जे बधत बौधधर्मचाह्यो, ते बखत ब्राह्मणो सामा यथा तेनु कारण एज के, तेमनी उपजीविका बंध पडी, तेथी ब्राह्मणोने वहु क्रोध आच्यो, गमे ते मार्ग चाले अने तेमनी उपजीविकाने काड पक्को न लागतो होय तो ते सामा थता नथी प्राचिनकाव्यमा यारे ज्ञानमार्ग निक-ळ्यो, यारे लोक सन्याशी थवा लाग्या, यारे एवी गोठवण हत्ती के, बधाए कर्म करोने वृद्ध थाय यारे बानघ्रस्थ अने संन्यास गृहण करता, तेथी ज्ञानमार्गवालानो अने ब्राह्मणोनो ज्ञाशो वापो पङ्क्षो नहीं, पछी भक्ति, मार्गवालाये एवु ठराव्यु के भजन शिवाय बोजुं काई करवानो जहर नथो, अने कर्मकान्डीनो मोक्ष स्वर्गमा हतो ते ज्ञानमार्गाए एवु ठराव्यु के, स्वर्ग तो थोडा दिवस चालवानु छे, माटे एवु नश्वरफल विशे प्रपन कर्तो नहीं, ज्ञानमार्गवालानो मोक्ष ने सायुज्य मुक्ति कहे छे एठले आत्मा अने ब्रह्म एक थई जाय अने च्योतिमा उपोती मळे यारे जुदुपणु काईज रहे नहीं, अने पाणिमा मी-दुं पढे अने एक थई जाय छे ते प्रमाणे ज्ञानमार्गवालाए मुक्तो मानी छे, पछी भक्तिमार्गवालाए एवु ठराव्यु के स्वर्ग अने सायुज्यता, ए बे

कामना नथी, अने मोक्ष तेनुं नाम छे के ज्या भगवाननुं सानिध्य अने  
सेगानुं लाभ मले अने जे ठेकाणे गयाथी फरी मृत्यु लोकमा, न अव-  
तरीए तेनुं नाम मोक्ष,

तुकाराम कहेछे.

हेचिदानदेगादेवा॥तुझाविसरनव्हावा॥नलगेमुक्तिधनसं  
पदा॥संतसंगदेईचदा॥गुणगायीनआवडि॥हेचिमाझीस  
र्वज्ञाडि॥तुकाह्वणेगर्भवासी॥तुखेघालावेआह्वांसी ॥१॥

यद्रत्वाननिवर्त्तेतदामपरमम् ॥ गीता॥ अ०१५

एवं स्थान प्राप्त थवाने वास्ते भक्ति शिवाय बीजुं सापन नथी ए  
लोक तो कर्मने निर्दयपणुं गणे छे अने ज्ञानने लुकु गणे छेई भक्त  
लोक रूर्मने के वर्णने गणता नथी जे मोटा मोटा भक्त थई गया  
तेमा अनेक जातीना लोक हता विदुरजी ए शुद्ध हतो, अजामेळ ए  
पापी ब्राह्मण हतो, नाभाजी ढेड हतो, तेने भक्तमाळ यंथ रच्यो  
छे, रोटीदास चामहीओ हतो, चोखामेळ ए भंगी टतो, नामदेव द-  
र्जी हतो, रुचीर ताई हतो, एकनाथ अने नगर्सिंह मेहेतो, ए ब्राह्म-  
ण हता तुराराम वाणीयो हतो आ पधाए कर्म मुरुने भक्त थया  
हता एमाना रेठलाएरे परोपकारार्थ यंथ रच्या छे यारे ब्राह्मण के-  
हेवा लाग्या ते आवा प्राहृत यंथ ऊर्द्धे यारे अमारो वृति दुवी जगे,  
षष्ठी अमने रोण पुछशे एम समजने भक्तो साये ब्राह्मणनु वैर चा-  
लतु ने चालतुं भावे छे, तुरारामनी जोहे रामेश्वरभट बहु लक्ष्यो  
अने तुरारामना रेला पूछार भीमा नदीमा नाम्बी दीर्घो, तेग प्र-

माणे गोताना टीकाकार ज्ञानेवरना जोडेब्राह्मणोंये वहु वैर बाध्यु, अने एकनाथने पैठणना ब्राह्मणोए घणी वार ज्ञात बाहार मुक्यो ए बधी कथा भक्तिवीजप ग्रंथमा लखी छे तेथो एम जणाय छे को, भक्तनु अने ब्राह्मणनु मोटु वैर छे तेनु नारण एटलंग के रुम उपर भक्त श्रद्धा राखता नथी हालमा ब्राह्मणनी वृत्ति वहु दुर्दी गई छे तोपण केटलाक लोक एमने हजी माने छे, ब्राह्मण लोक जगवाना वहु लोभीया छे, कंई पण जम्बानु होय तो २० गाउथो दोडसो आवे, ने कोइना घरमा माणस मरी गयु होय तो तेनु बारमु तो पहेला दीवसधी गणतो रहे, को फलाणा दीवसे चारमु आवे छे, चीजुं काई मोटु काम होय तेनो विचार करवो होय से चीजो बोलाव्यो होय तो कोई पण ना आवे, दक्षणा के राई जम्बानु होय सो बगर तेडे पण जाय, ब्राह्मण शीवायना जे बीजा लोको छे तेमने पण आ ब्राह्मणनो गुण लायो छे तेपण काई मोटु सार्वजनीक काम होय तो बोलावता पण ना आवे अने जम्बानु होय के लग्नकार्यनो वरदोहो होय तो वाणीया रुणवी पण जरुर आवे आवा प्रसंगे भेगा थवानु ए पोतानो र्पम जाणे छे, चीजुं काई काम होय तो ते भूली जाय ने ध्यानमा रह्युं नहीं अमार्द शुं काम छे एम कहीने जाय नहीं, कबीर साहेब कहे छे के

**ब्राह्मणभंगीरावळाचकथाकाहियेकाग ॥**

**कहेकबीरएचारोजणनोमुरदाउपरलाग ॥**

ब्राह्मण लोकोए पोताने वास्ते मोटु राज उभु कर्युछे ड्याजाय न्या एमनु सनमान, बगर परलम्बे बगर गुणे धायछे, ज्यो मुषी यज्ञयाग चालता हता, अः सुर्ग ए चावत घणा मोटा यंथ लख्या छे, केटला

एक कहेछे के अमे धनान्त वेद भण्या छीए कोई कहेछे के अमे सोमा-  
न्तश्रौत भण्या छीए एवु कर्मकान्डनो विस्तार कर्यो छे।—

ज्यारे कर्मकान्ड बेटुं सारे एमणे बीजी युक्ति सोधी कहाढी से  
एवीके नदिभो अने गाम अने तल्लाव ईत्यादिक जे देदमां नहि तेनो  
माहात्म लखवा लाया अने ते कथा जेम जेम जुनी थइ तेम तेम प-  
व थइने फळ आपवा लागी ए प्रमाणे काशी, प्रयाग, गया, गोदा,  
रेवा, पुष्कर, जगन्नाथ श्री नाथ ईत्यादिकना हजारो माहात्म लख्या  
अने ए टंकशाल हजी जारीछे पंढरी माहात्म पचास वर्ष उपर ल-  
खी गयुं छे, डाकोरनु माहात्म चार वरस उपर लखी गयुं छे पावका-  
चळ माहात्म एटले पावगढनी जात्रानु माहात्म श्रीस्थळ मा-  
हात्म एटले सीतपुरनु माहात्म थोडा वरस उपर लखी गयुं छे एज प्र-  
माणे जाती जातीना माहात्म लख्याछे, जेवां के नागरखंड, औदित्य  
प्रकाश, राइक पुराण, ईत्यादिक हजारो माहात्म प्रसिद्ध छे ए यंथो-  
मा लखनाराओ ए घणी धूर्तता करी छे.\*

\*जाहा ताहा कळि आव्यो छे अने लेकेनि श्रद्धा ब्राह्मणना  
लेख उपरयि उठी जशे माटे बद्दाय लोकोए गफलतमां रहेवुं नहि  
अने श्रद्धा छोडवी नहीं छोडशो तो नर्कमा जशो एवी वातो घणे  
ठेकाणे लखी छे, कळि बुद्धि बगडिछे अने नर्कमा नाले छे माटे  
हुंशियारीयी रहेवुं, जे भाग्यवान हशो तेज ब्राह्मणना लेख उपरविश्वास  
राखशे पापी जीव हशो ते मात्र राखे नहीं एवि प्रमाणावणी पाने  
पाने लखीछे.

नविश्वासंकरिष्यांति देवेषु ब्राह्मणेषु च ॥

माणे गोताना टीकाकार जानेखरना जोडेब्राह्मणोये वहु वैर वाधुं,  
 अने एकनाथने पैठणना ब्राह्मणोए घणी वार जात वाहार मुक्यो ए  
 बधी कथा भक्तिवीजय यंथमा लग्नी छे तेथो एम जणाय छे के, भक्तनुं  
 अने ब्राह्मणनुं मोटुं वैर छे तेनुं कारण एटलुंज के रुम उपर भक्त  
 भद्रा राखता नथी. हालमा ब्राह्मणनी वृत्ति वहु दुर्दा गई छे तेपण  
 केटलाक लोक एमने हगी माने छे, ब्राह्मण लोक जगवाना वहु लो-  
 भीया छे, कई पण जम्बानुं होय तो २० गाउथी दोडतो आवे, ने को-  
 ईना घरमा माणस मरी गयुं होय तो तेनुं बारमुं तो पहेला दीवस्थी  
 गणतो रहे, के फलाणा दीवसे वारमु आवे छे, बीजुं काई मोटुं काम  
 होय तेनो विचार करवो होय ते बीजो बोलाव्यो होय तो कोई पण  
 ना आवे, दक्षणा के काई जम्बानुं होय तो बगर तेडे पण जाय, ब्राह्म-  
 ण शीवायना जे बीजा लोको छे तेमने पण आ ब्राह्मणनो गुण ला-  
 यो छे तेपण काई मोटुं सार्वजनिक काम होय तो बोलावता पण ना  
 आवे अने जम्बानुं होय के लम्नकार्यनो बरघोडो होय तो बुणीया क-  
 णबी पण जस्तर आवे आवा प्रसंगे भेगा धगानुं ए पोतानो र्भर्म जाणौ  
 छे, बीजुं काई काम होय तो ते भूली जाय ने ध्यानमा रह्युं नहीं अ-  
 मास शुं काम छे एम कहीने जाय नहीं, कबरि साहेब कहे छे के

**ब्राह्मणभंगीरावङ्गाचवथाकाहियेकाग ॥**

**कहेकबीरएचारोजणनोमुरढाउपरलाग ॥**

ब्राह्मण लोकोए पोताने वास्ते मोटु राज उभु कर्युछे ज्याजाय त्या  
 एमनुं सनमान, बगर पराक्रमे बगर गुणे धायच्छे, ज्यां सुधी यज्ञायाग चा-  
 लता हता, स, सुरी ए बाबत घणा मोटा यंथ लहुया छे, केदला

एक कहेछे के अमे धनान्त वेद भण्या छीए कोई कहेछे के अमे सोमान्तश्रौत भण्या छीए एवु कर्मकान्दनो विस्तार कर्यो छे.—

ज्यारे कर्मकान्द बेठुं सारे एमणे बीजी युक्ति सोधी कहाढी ते एवीके नदिभो अने गाम अने तब्लाव ईत्यादिक जे वेदमां नहि तेनो माहात्म लखवा लाग्या अने ते कथा जेम जेम जुनी थई तेम तेम प-वन थईने फळ आपवा लागी ए प्रमाणे काशी, प्रयाग, गया, गोदा, रेवा, पुष्कर, जगन्नाथ श्री नाथ ईत्यादिकना हजारो माहात्म लख्या अने ए टंकशाल हजी जारीछे पंढरी माहात्म पचास वर्ष ऊपर ल-खी गयुं छे, डाकोत्तु माहात्म चार वरस ऊपर लखी गयुछे पावका-चळ माहात्म एटले पावागढनी जात्रानु माहात्म श्रीस्थळ मा-हात्म एटले सीतपुरनु माहात्म थोडा वरस ऊपर लखी गयुछे एज प्र-माणे जाती जातीना माहात्म लख्याछे, जेवा के नागरखंड, औदिच्य प्रकाश, राइक पुराण, ईत्यादिक हजारो माहात्म प्रसिद्ध छे ए यंथो-मा लखनाराखोए धणी धूर्वता करी छे.\*

\*जाहा ताहा कळि आव्यो छे अने लेकेनि श्रद्धा ब्राह्मणना लेख ऊपरयि उठी जशे माटे बद्धाय लोकोए गफलतमा रहेवुं नहि अने श्रद्धा छोडवी नहीं छोडशो तो नर्कमा जशो एवी वातो धणे ठेकाणे लखी छे, कळि बुद्धि बगडेछे अने नर्कमा नाखे छे माटे हुंशियारीयी रहेवुं, जे भाग्यवान हशे तेज ब्राह्मणना लेख ऊपरविश्वास राखशे पापी जीव हशे ते मात्र राखे नहीं एवि धमकावणी पाने पाने लखोछे.

नविश्वासंकरिष्यांति देवेषुब्राह्मणेषुच ॥

तेज प्रमाणे केटलाएक मास तिथि योगवार इत्यादिकर्नुं माहा-  
स्म लख्युं छे तेने व्रत पर्वणी कहे छे व्यतीपात सोमवार पुर्णोत्तम-  
मास कपिलाषष्ठि मटोदय विग्रे ते जेम जेम जुना थता जायछे तेम  
तेम वधारे मानवामा आवे छे करोडो रुपीआ खरचीने लोक काशी  
याचा करेछे पर्वणी अने व्रत उपर दान पूण्य करेछे, तेथी माहात्म  
लखनारनो प्रयत्न व्यर्थ गयो नर्थी एतो उघाहुं छे अमेरिकामा गुलाम  
उपर घणी कमाड करता पृष्ठ ते काळ गयो, पण आ वधायनी अ-  
वधी एवी जणाय छे के व्या सुधी लोक अज्ञानी छे खा सुधी एमने  
एम चालशे ए वात नाहिणोना भनमा सारी रिते विसेषे भाटे जेटलो  
प्रकाश थाय अने विचार वधे ते वात तेमने सारी गमती नर्थी, पण  
हालना काळमा ए बाबतमा प्रतिकार थाय एवुं नर्थी.

ब्राह्मणोने शौको धणो थई छे, ब्राह्मण जमाडवाने ठेऊणे आ-  
खाडाना वाच अने मंदिरना साधु जमाडे छे ब्राह्मणोने ए वात सारी  
लागती नर्थी, ब्राह्मणोना भनमा आ वर्णसंकर माधु काहाथी आव्या  
हमारी परंपरा प्राप्त मोदाई धणा ग्रंथमा वर्णन करेली ते जतो रही,  
के शुं पण लोक कहेछे के ब्राह्मणमा तपतेज नर्थी संसारी अने

कर्मभ्रष्टाभविष्यति चतुर्वणीकलौयुगे ॥

राजानोधर्महीनाश्च पीडयिष्यतितेप्रजाः ॥

अधर्मवल्लभोलोको धर्मद्रेष्टीचमत्सरी ॥

भविष्यतिकलौविप्राभाचारथ्रुतिवाजिताः ॥

बृतमद्यरतानित्यंसर्वव्यसनिनःसदा ॥

जैमिनो अश्वमेवेकलिधर्मप्रकरणे ॥

लोभीयाने जमाडवामा शुं पुण्य! ते करता तीर्थवासी, सागी, तपोनीधी,  
बावा जमाडीये तो शुं खोटुं. एवा घणा बाधा पञ्चा छे. साधु जे थया  
छे ते ईश्वर अलौकिक कामो भक्तने वास्ते करे छे एवु माने छे.

ज्ञानीनुं ब्रह्म निर्गुण छे ते काई ए करतुं नथी. पोत पोताना क-  
र्म प्रमाणे फळ यायछे. ज्ञाननुं फळ सायुज्यता छे एम समजीने ज्ञान  
मार्गवाला कोइनी प्रार्थना के भक्ति करता नथी. भक्तिवाला परमेश्वरने  
कर्ता अने सगूण समजे छे अने परमेश्वर भक्तनुं हित बुरे छे एम स-  
मजे छे. तुकाराम नामनो प्रख्यात साधु दक्षणमा थयो तेना वचनो  
दक्षणी भाषामा छे ते निचे लख्या छे

पडताजडभारी ॥ दासेआठवावाहरि ॥

मगतोहोउनेदिशीण ॥ आडघालिसुदशीन ॥

कोठेनदिसेपाहाता ॥ उडिघालिअवचिता ॥

हरिन्यादासाचिता ॥ हेतोअघटितवार्ता ॥

आह्याघालिपाठीकडे ॥ पुढेकळिकाळाभिडे ॥

हाकेसरशिउडि ॥ घालोनीयास्तंभफोडि ॥

ऐसाकृपावंतकोण ॥ एकभगवंतवाचून ॥

तुकाह्यणेकृपानिधी ॥ आह्याउतरीनावेमधी ॥१॥

वेदाचातोअर्धभाह्याशिच्छावा ॥ येरानीवाहावा

भारमाथा ॥२॥

संध्याकर्मध्यान ॥ जपतपअनुष्टान ॥

कठड ठरावीने लाखो रुपिया ते उपरहजारो वरसधी कमावे छे, काई पण युक्ति भूत्या नयी, कोइनो बाप मरी जाय तो, तेनो छोकरो सज्जा लोटो विगरे ब्राह्मणने आपे तो स्वर्गमा मरनारने तेटलुँ मबशे एवं उराव्युं तेथी मरनारने पछवाडे हजारो दान करेछे, परमेश्वरना आडतिया ज्ञान थयाचे अहंया आप्यु के स्वर्गमा भलामण पोहोचे छे अने तरत जमाखर्च पढेछे, आ वातनु सार एटलुँज के जे वखत एक बाजु वहु धूर्त ज्ञानी अने जवरदस्त होयछे अने विजी बाजु अशक्त अज्ञान अने ऋषजोर होयछे ते वखत पोतानो स्वार्थ धाय तेढलो करी लेवाने कोई भूलतो नयी ए साधारण अने स्वभाविक वात छे, पोतानो स्वार्थ भूलन्नारो एवो परमेश्वर भक्त कोकज हशे, घणा एवा नयी तोपण हमे एवा छिये एवं पाखंड करभारा घणा होयछे.

भागवतमा ऋषभदेवनि कथा छे ते उपर्यी एम जणायछे के अहिं सा विषे उपदेश करवामा प्रथम वैष्णव हसा, नारदजी वैष्णवमा गणायछे, ए पण यज न करवानो उपदेश करता, पछि इश्वरने माननार अने नास्तिक ए वे पंथ यथा पछि जे ग्रंथ यथा ते पोत पोताना बुदा यथा, ए मानवाने आपार छे जैमिनि अश्वमेध ए ग्रंथ कोई वैष्णवभो लखिलो छे तेमा लखे छे के अश्वमेधमसेने माझो ते वखत कपूरनो ढगली थयो अने लहु निरुल्यु नहां पण दूधनी पारा चालि पछि व्यासजी कपूर होम करवा लाग्या ते वखत ईद देव आविने उभो रही, तेथी एम मालूम पढेछे के ए क्लूर विषी छपावानी मतलवपी लट्ट्यु हशे, वेद अने सूत्रमा एवो प्रयन्न फरेलो नयी तेथी सूत्र सूपि हिसा वावत तकरार नहाति एम जणाय छे, ऋषभदेव, जैश विष्णुना भवतार गणेला छे, वैष्णव-पूर्मनुं मूळ दया धर्ममा छे

एम लागेछे हिंसानी, तकरार उभि रद्दा पछिना घंथनु स्पज जुदुछे.

हिंदुस्तानना पंडित विद्वज्जन केहेवाय छे पण एमनि विद्या लो-  
कोना काममा अवती नयो, उद्यम, धंधा वधारवामा ए विद्या मदद  
करती नयो उलटी धधा भागामा मदद करेछे माटे विद्वज्जन ए  
पद ब्राह्मणोने घटे छे के नाहि ए मोटो विचार छे खरी उपयोगनी  
विद्या कहिये तो शिल्प, नाविक शिल्प, सैन्यविभुक्ति, भूगोळ इत्या-  
दिक्कनो ठेकाणोज नयो. राजा लोक विद्वज्जनोनो सम्रह वहु करेछे  
पण जेम जेम आ संयह वर्धेछे तेम ते राजानो सत्यानास जाय छे  
एनुं झुं कारण हशो!

मूळ दया धर्म प्रतिपादन करनारा वैष्णव हता तेमा जे नास्ति  
क थया तेमणे जगत्नुं कारण कर्म स्विकार्युं तेमनुं केहवुं एम छे.  
ब्राह्मायेनकुलालवन्नियमितोब्रह्मांडभांडोदरे ॥ विष्णुयेन  
दशावतारगहनेक्षिसोमहासंकटे ॥ स्फ्रोयेनकपालपाणि  
पुटकेभिक्षाटणंकारिता ॥ सूर्योभ्राम्यतिनित्येमवगगनं  
तस्मैन्मःकर्मणे ॥१॥

प्राचीन काळमा पाचकर्म चालता हता ते कर्बीमा न करवा नि-  
श्च नीचे लख्या प्रम्पणे वचन पराशर ऋषिनुं छे

आग्निहोत्रंगवालंभं संन्यासंपलपैतृकं ॥

देवरात्यसुतोसत्तिकलौपंचविर्वन्नेयेत् ॥

अर्थ.

आग्निहोत्र, गायनो हिंसा, सं-यास, ने शापमा मात्तनु मक्षण, अ-  
ने दीपर साथे परणावत्तु

अवघेघेडेनाम ॥ उच्चारिता ॥१॥  
 नैसावोलेतैसाचाले ॥ त्याचिवंदावीपाडले ॥२॥  
 मायवापकेवळकाशि ॥ तेणेनजवितिर्थाशी ॥३॥  
 आलितिर्थपर्वणि ॥ न्हव्याभठाङ्गालेधणि ॥४॥  
 अवध्यापपेघडलायेक ॥ उपासकशक्तिचा ॥५॥  
 भावेगावेगीत ॥ शुद्धकसनियाचित्त ॥  
 नामघेतावाटचालि ॥ यज्ञपाडलापाडाले ॥६॥  
 सांडोनियारामराम ॥ ब्राह्मणह्यणतिदोमदोम ॥७॥  
 दयातिचेनाव ॥ भूताचेपालण ॥ आणिनिर्दक्षण ॥  
 कंटकाचे ॥८॥  
 धन्यतेचिप्राणे ॥ क्षमादयाजाचेआंगी ॥  
 यमधर्मसांगेदूता ॥ तुद्धानाहीतेथेसत्ता ॥  
 गदाचक्रघेडनीहरी ॥ उभावेसत्याचेहारी ॥  
 जेथेदयाक्षमाशांति ॥ तेथेदेवाचिवसति ॥  
 तुकाह्यणेत्रिविधताप ॥ मगजातिंआपोआप ॥९॥  
 ज्ञानेश्वरनीवाणि,  
 योगयागविधी ॥ येणेनोहेसिद्धि ॥ वायाचिउपाधी ॥  
 इभधर्म ॥ वेदशास्त्रप्रमाण ॥ श्रुतिचेवचन ॥ एकनारा

यण ॥ सारजपा ॥ जपतपकर्म ॥ क्रियानेमधर्म ॥  
वाउगाचिश्रम ॥ व्यर्थजाय ॥ हरीपाठ

एवा भक्तोना वाक्यो बहु छे ते लखता पार आवे नहीं. हासिल  
एटलु चके प्राचिनकाळनुं माहात्म उपर हालना ब्राह्मणोए अभिमान  
राखवो नहीं प्राचिन अभिमान उपर लक्ष राखीने बद्धां क्षत्रि राजा  
नाशा पाप्या अने हजि खराब धायछे तेज प्रमाणे प्राचीन मोटापणुं  
बताविने ब्राह्मण मोटा यथा चाहे छे पण ए कशा कामनुं नयी. प्रा-  
चीनकाळमा अज्ञान बहु हतुं ते हाल गयुं माटे अज्ञानना आधारे  
मोटापणुं मेलवेलुं ते प्रकाशमा रहेवानुं नयी. आजना काळ प्रमाणे जे,  
सुधारो अवश्य छे ते चलावामा ब्राह्मण लोके मदद केरवी. उत्तमगुण  
अने विद्या संपादन करवाने वास्ते लोकोने सदुपदेश करवो, देशमा  
संपनुं रक्षण करवुं. ए प्रकारे घालशे तोज ए मनु महत्व कायम् रहेशे.  
इयेज लोक राज्य रीतिमा अने कायदा विगेरे करवामा महाधूर्त कहे-  
वाय छे कारण के हरेक ठेकाणे बार आना पोतानी नोतनो स्वार्थ  
अने चार आणा दोशि लोकोनो स्वार्थ राखे छे एम केहेवाय छे पण  
ब्राह्मणोना कायदा तपासिये तो पोताना स्वार्थ पंदर आना अने  
विजानो स्वार्थ एक आनो राख्यो छे एम स्पष्ट जणाय छे. ज्या खा  
कथामा ब्राह्मणोना श्रापयि हजारो राजा बँडि गया भरो गया परमे-  
शरने पण ब्राह्मणोनि विहिक अने परमेश्वर विष्णुने ब्राह्मणोए लात  
मारी तो पण परमेश्वर एमने पगो लाग्या. एवि कथा प्रसिद्ध कर्त्तने  
पोतानुं महात्म अपरीमित वधान्युं पण ते वात थई गइ. आज तेवो  
काळ नयी ए नको समजवुं जोई.

ब्राह्मणोने यहण गणवानि रोत मालुम पढि ते उपरयो ते पर्व-

पराशर ऋषि वैद्यनव हता ए क्रपिए जे स्मृति करो छे तेमां हीं  
सानो निषेध बहु कर्यो छे विद्युपुराण ए ऋषिनुं करेलुं छे अने भाग  
वत पंथमां ए ऋषि मुख्य गणाय छे.

**ग्रहादनारदपराशरं पुडरीकव्यासां वरीपशुकशोनक  
भीष्मदालभ्यां ॥ स्वक्षमां गढाङ्गुनवसिष्ठविभीषणादीपुण्या  
निमां परमभागवतं स्मरामि ॥**

अग्निहोत्र बंध कर्यु तेनुं कारण हिंसा बंध करवानुं हशे एम ज-  
णाय छे कारण अग्निहोत्र उत्पन्न कर्या पछो पशुयाग प्राप्त यायछे  
माटे हिंसा बंध करवाना मनलबयो हिंसानुं मूळ काढी नाख्युं एम  
जणाप छे केवलाएक लोक कहे छे के मंत्र संरक्षण करवाने वास्ते  
यज्ञ करवो जोईए अने जे वैद्यनव लोक पिष्ट पशु करे छे ते पण एम  
कहे छे के हिंसा न करवी पण यज्ञ करवो कारण यज्ञ कर्याथी मंत्रनुं  
रक्षण यायछे. आवी फोकर शा वास्ते राखवी पढे छे ते समजतुं  
नयो, कारण युगना आरभे ब्रह्मदेव ऋषियोने मंत्र आपे छे एवुं पण  
लख्युं छे.

**युगांतेरहिंतान् वेदान् सेति हासान्महर्षयः ॥**

**लेभिरेतप सापूर्वमनुज्ञाता स्वयं भुवः ॥**

एम छतां पण मंत्र रक्षणने वास्ते अध्यायन पारापण, यज्ञ इत्या-  
दिक ऊर्म चाले छे.\*

\*जुनागढना दिवान गोकुलजी जालाए सांख्यायनी ऋग्वेदी  
प्राघ्यन छे ते हाल अग्निहोत्रि थया छे. अमदावादनो सदरभमीन

ગોપાલરાવ મૈરાં એ ગ્રહસ્થ-કઢોદરમા પ્રસીદ્ધ હતા, તેમનો ભાચીજો નારાયણરાવ પાડુરગ એમને નર્મદાને કાઠે વેળુ કરીને ગામ છે, તે ગામમા સાત યજ્ઞ કર્યા, અને તેમા લાખો રૂપીયા ખરચ કર્યા એવી કિન્નો છે અને એ પ્રમાણે ઘણા લોક આજ કરે છે. તે વિશે ગુજરાત જિવાય બીજા દેશમા વાધો લેતા નથી કાંઈ રાજા નથી માટે અશ્વમેધ કરતા નથી એમ કહેવાયછે. જો બ્રાહ્મણના કુલમા વ્રણ પુરુષ સુધી યજ્ઞ ન થયો હોય તેને, ડુર્ગાદ્રિપણ કહેછે, અને તે બાબત પ્રાયાભીત કરવું પડે છે.

ગવાલંભ એટલે ગાયની હિંસા એ વેદમા ઘણી લખી છે ભાગવતમા આલંભન શબ્દનો અર્થ દેવાર્પણ સમજવો હિંસાનો ન સમજવો એવુ લખ્યું છે મનુ અને યાજવલ્બય સ્મृતિ સુધી ગવાલંભ કાયમ રાખ્યું છે, ત્યાર પછી પુરાણમા અને નાટક ગ્રંથમા પણ એ વિધી લખેલો છે તેથી એ નિ પેપ વર્યાને બહુ વર્દ્ધ થયા નથી એમ જણાય છે, તૈત્તિર્ય બ્રાહ્મણમાં અને શતપથ બ્રાહ્મણમા નીચે લખેલો મંત્ર મળે છે.

### ગવ્યાન્પશૂનુત્તમેહન્નાલભતો । આગ્રંથનુ પૃષ્ઠ ૨૬-૩૦

એ વેદાજ્ઞાથી મુપુર્ક વિધી ઉત્ત્પત્ત થયો રાજા ઘેર આવે કે વર ઘેર આવે તો, ઉત્તમજ દહાડો કહેવાય, તેવા પ્રસંગે ગો પણ વિધાન લખ્યું છે, તે મનુ અને યાજવલ્બય સુધી કાયમ રાખ્યું, પછી તેનો નિપેપ પડ્યો તે કલ્યાના કારણથી પડ્યો કલ્યાન એટલે બૌપ ખર્મની તકરાર ભાડ મૈરાંને પણ અનિહોત્ર લિપુ છે કુલાબાના બાબાજી દિવાનજી ના દિરુરા ખુડી રાજવિનાયક ઉર્મ ભાડ સાહેબ બિવલકર એ વસોં-રસ એક વે યજ્ઞ કરોને ઘણા રૂપીયા ખર્યો છે એ સાપ્રતકાળનો પ્રાચીન વાર્દુંછે, એને નારદ સ્તોણ મદ્દજો તે કોણ જાણો ?

तोपण उत्सर्ग विधि चाले छे, ब्राह्मण लोको तेनी सरत भुली जता नथी अने विर्गा न थाय तो न थाय, पण तेनी सरत राखवामा अने ते विधीना पुस्तको भणवामा पुण्य जाणे छे

मधुपर्क करवानी रीति ब्राह्मणमा हती एमज नहि पण अन्य देशमा प्राचिनकाळमा ए प्रमाणेज हतुं ऐं बायबल्नो पेहलो यंथ “जीनीसीस” एटले उपत्ती प्रकरण तेना अध्याय बढारमानो सातमो ल्कोक एमा इन्नाहिम पेंगंबरे एज प्रमाणे अर्ध्य, मधुपर्क कर्यानो दाखलो लख्योछे

आश्वलायन सूत्रमा अने बीजा सूत्रमा मधुपर्कनो विधि वाचीए तो गवालंभ मान लख्युं छे, बीजो काङपण विधि जणातो नथी.

३ कल्बोमा संन्यास लेवो नहीं ऐं लख्युं छे तेनुं फारण ऐं जणायछे के आ काळमा लोको संन्यास लेइने तोकान अने पासंड करशे तेज प्रमाणे ययुं छे घणाक सं-यासी वाममार्गी होय छे अने घणा एक दौंगी होयठे खागीनो धर्म वीलकुल साचवता नथी अने उकटा लोभी थायछे, अने लोकेने बहु पीडा करे छे शंकराचर्म स्वामीए ब्राह्मणने संन्यासी कर्पा एटलुंग नहीं, पण शुद्ध सुधी चार वर्णमा संन्यासी कर्पा ते गोमावी रहेवाय छे तेज प्रमाणे वैष्णव लोकोमा वैरागी खागी कहेवाय छे अने भगव शिवाय बीजुं काँड कर्म करता नथी एमनी कर्मनो पदल पदतो जुदी छे कोइ परे लारे भंडारो करे छे गोजुं राइ र्म नरता नयो एमनो गायर्ग पण जुदी छे अने रेटलाक घरवारी कहेवाय छे ते घर धंधा पण मादे छे

४ “पलपैत्रीक” एटले भापमा पितृ निमित्य मास खावानुं, ए दितो पण एम जणाय छे ते पाचोन काळमा चपाय लोक हिसक हवा

अने मृगया करीने जीविता जे जनावरो मारीने लावता तेने देवने अर्थे होमीने बार्फी खाना एवी वैदिक काव्यमा चाल हती एम जणाय छे. सारपछी स्मृतिना वखतमा ए चालनो अपर्कष थयो ते एटले सुधी के जे विधी नियमीत थया हता, ते सीगाय कोइए मास खाउं नही स्मृतिअभोमा एबो निवंध करेलो जणाय छे. पछी पुराण थया तेमा पण विधीमा मास खावानी छुट छे, माटे वैष्णव लोक आवा पुराणने तामसी गणे, छे अने जे पुराणमा दया धर्म प्रतिपादन कर्यो छे तेने सांखिक पुराण कहे छे. वैष्णव लोको सांखिक धर्मने भागवत धर्म पण कहे छे श्रीमदभागवतमा सांखिक धर्मनुं प्रातिपादन वधोरे कर्यु छे माटे वैष्णव लोकोने ए पुराण बहु पसंद पड्यु छे, कारण हालमी रीतभातथी ते वह मळनुं आवे छे श्राद्ध विशेनिर्णयसिंधुमा वचन लर्ह्यु छे ते नीचे प्रमाणे,

यत्रमातुलज्जोद्वाहीयत्रवैवृपलीपतिः ॥

आन्दुनगङ्गेतदिप्राकृतंयच्चनिरामिषं ॥

अर्थ्.

मामानी कृत्या परणी होय ते के शुद्रनी कृत्या परणी होय एवा माणसने घेर श्राद्ध खावा जवुं नहीं अने जे श्राद्धमा मास नहीं ते श्राद्धमा रोइ ब्राह्मणे जमवा जवुं नहीं श्राद्ध विशेभागवतमा लर्ह्यु छे के.

नदद्याहामिषंश्राद्धनचोद्यात्यर्थतत्ववित् ॥

मुन्यन्नेस्यापराग्रीतीयथानपशुहिंसया ॥

भागवतस्कं० ७ ,

अर्थ.

श्राद्धमां मासं खवराववुं नहों कोदरा बावटाथीं श्राद्ध करवुं सारं पण पशु हिंसा करीने श्राद्ध करवा वाले कोइ धर्म जाणनारो कहेतो नयीं माटे अबयीं पितृनी तृप्ति याय छे तेवी पशु हिंसायी थती नयीं.

पण श्राद्धमा मास आपशा विशे वहु दचनो छे तेनुं कारण जे व-खत मासनो निय अहार करता ते वहत श्राद्धमां पण खाता रामचंद्र-जीए रामायणमा कुर्य छे के

### वयंयदन्नापितरस्तदन्नाः

### आध्यात्मरामायण

अर्थ.

जे आपणे अब खाइए ते पितृने आपीए मूळमा मरण शिषानो मतलब एठलो छे के जे भाणस मरी गयो तेने खावाने कोण आपशी एवी कल्पनायी एना सगा वहाला तेने पाणी अने पिंड आपता हता, अने एम जाणता हता के तेथो तेनी भूत्व, तरशा जशे, अने मरनार सुखो थदो, ते उपर ब्राह्मणोए मोडुं शिषान रख्ये अने तेनो त्रयोदशा मासिक, सावत्सरी इत्यादी श्राद्ध कल्पना करी तेमा अनेक दान दाखल कर्या, केटलाएक जंगली प्रदेशमा कोइ मरी जाय छे, आरे तेना वारस तेना छेदामा जार वपि छे, ने तेमां वैसो घाले छे, अने पछी दाटे छे, अने खांहा भागड एक माटलुं पाणीनुं मुके छे, जंगली भरानी लोक एवी रिते उत्तर कार्य करे छे, ते प्रमाणे हिंदुलोकोनी असलेमा चाल हती तेनो मुधारो करीने भंतेष्ठि कर्म लायुं, मुढ आक्ष. सापन मूत्रमा जोता ए विषी ढुको छे, अने मूत्रकु मुद्दल नयीं. हातमा देवेत्पीतिनो एठले धेवज पृथ नीपोग विषीर्थी उत्पन-

( ४५ )

करवानो निषेध कर्यो छे ते निषेध गोत्रनुं निषेध थयुं ते बखत आ  
निषेध थएलो जणाय छे. अने विधवाए ब्रह्मचारीने पेठे रहेवुं ए ठ-  
राव तेना अंतै करवो पढ्यो. ऋग्वेद संबिहतामां सातमा अष्टकमां  
आठमा अध्यायमां अढारमां वर्गमां देवर्वात्पञ्चिनो लेख छे ते मंत्र  
नीचे लख्यो छे.

**कोवाशयुत्राविधवेवदेवरंमर्यनयोषाकृणुतेसथस्थआ ॥**

**निरुक्त.**

**देवरःकस्मा । द्वितियोवरउच्चे ॥**

अैतरेय ब्राह्मणमा लख्युं छे के.

**नैकस्यावहवःसहपतयः**

**भाष्य**

**सहेतियुगपद्मुपतित्वनिषेधोविहितोननुसमयभेदेन ॥**

**अर्थ.**

एक ख्रोए एककाळे एकथी वधारे पणी करवा नहीं पण एक म-  
री गयो होय तो बीजो करवाने हरकत नर्थी.

नीयोग एटले जे ख्रीने संतान यतुं न होय तेने बीजा पुरुषने  
घेर मोकलवी अने ताहा संतति या पछी पणीने घेर आवे ते पुत्रनुं  
नाम “क्षेत्रज” ए प्रमाणे पांडव क्षेत्रज पुत्र हत्ता एवं भारयमा लख्युं  
छे मनु स्मृतिमा दादश पुत्रना नाम बताव्या छे ते

**औरसःक्षेत्रजःश्वैवदन्तःकृत्तमएवच ॥**

**गुढोत्पन्नापविदुश्वदायदावांधवाश्वपद् ॥**

कानीनश्चसहोदश्वक्रीतपौनर्भवस्तथा ॥

स्वयंदत्तश्चशौद्रश्वपडंदायादवांधवः ॥

मनु अ० ९ श्लोक १५९

रामानुज ब्राह्मण द्रविड देशमा छे तेमा वे पंथ छे "तिगळे" अने "वडघळे" तेमां तिगळे ब्राह्मण जे छे तेमने वैदिक आचार मुकी दोधो छे यज्ञमां पशुनो वध करता नयी, अने वडघळे छे ते करे छे, तेज प्रमाणे गुजरातो ब्राह्मण पण यज्ञ करता नयी विधवानु वपन करा विजे श्रुती स्मृतिमा वचन नयो गोसावीजी आपस्तंभ सूची तैलंग ब्राह्मण छे तेमना कुब्जा वपननी चाल नयो हिंदुस्तान अने दक्षणमा ए चाल थोड्ही छे, स्त्रीना वाढ न उत्तराववा ते विषे शास्त्र नीचे प्रमाणे.

विद्वद्विप्रनृपः स्त्रीणां निष्प्रेतके शवापनं ॥                    मयूख  
सर्वान्के शान्स मुधृत्येष्ठेदेयं दगुलहूयं ॥ एवं नारी कुमारी  
णां तिरसो मुंडणं स्मृतं ॥

यम, पराशार, आपस्तवं,

स्त्रीयोनुं स्वातंत्रं काढी लैँने तेमने दास कर्यां खारे नीचे लख्या  
प्रमाणे उत्तराव यदो.

न स्त्री स्वातंत्र्यमर्हते ॥ न स्वातंत्र्यं कवचि च लिख्यः ॥

अर्थः

वश्यो थोने कोइ प्रकारनी पण मुख्ती भारी नयो तेमने सर्वकाळ  
प्रतंत्र रहेवं.

वेदमूळमा काढ एक वखते थएलो ग्रंथ जणातो नयी जुदा जुदा काळमा जुदा जुदा ऋषीना जुदा जुदा मंत्र छे ते एक पुस्तकमा संवितासुपे जोवामा आवेछे, वेद ए शब्द बीजा ग्रंथने पण लगाडवानो चाल छे जेमके गार्धवेद, धनुवेद, आयुवेद, अने भारथ पण पाचमो वेद कहेवायछे, वेदना अक्षरने मंत्र कहेवायछे तेनो सार जोता तेमा प्रार्थनाछे ते परमेश्वरनी होय के बीजा देवनी होय कटलाएक देवना मंत्र कर्मना बोधक छे ते मंत्रने विधि कहेछे विधि एटले लखेली रुढी अने रुढी एटले जेने वेदादिकनो आपार नयी, तेने केवळ रुढी कहेछे, मूळ जे ऋषि हता ते क्षत्रीने घेर यज्ञादिक कर्म करता तेथी ते धर्माध्यक्ष धया, पछी तेमने लोकोना मनमा एम ठसाव्युं के सर्व देव अमारा कवजामा छे अने मंत्रथी जे देवनु आवाहन कराए ते हाजर थाय अने जेनुं वीसरजन कराए ते विदाय थाय अने जे अमे कहिए ते ते करशे, ए सिद्ध करवाने वास्ते हजारो ग्रंथ लखी गयाछे, सूर्य उगेछे ते, ब्राह्मण संध्या करेछे माटे उगेछे, एवं भारतमा काव्युं छे, ए समजुत जेम जेम मजबूत थती गइ तेम तेम धर्माध्यक्षनो अमल वहु जवरदस्त थइ गयो, भागवतमा काव्युं छे के, भगवान श्री कृष्ण बोल्या के अभि, सूर्य, ईश्यादिरुनो कोप थयो तो हुं बीतो नयी पण ब्राह्मणनो कोप थाय तो मने वहु बीक लागेछे, ते विशे वचन.

नाग्न्यकसोमानिलविन्नपास्यात् ॥  
शंकेभृशंब्रह्मकुलावमानान् ॥

ऋषि ए शब्दनो अर्थ, गानारो के फरनारो एम थाय छे पण  
रुढीमां अर्थ यंथ करता थाय छे अने प्राचिनकाळमा वधा देशना  
पर्माध्यक्ष पाखंडी अने ढोगी हतां अने ते राजाने पण गुलाम करीने  
राखतां हतां, अने किस्त्रयन् धर्मनो पर्माध्यक्ष पोप करीने छे तेना पा-  
शमांथी यूरोप खंड हजाँ छुल्युं नयी, ए लोकने पापनी माझी आपे  
छे, स्वर्ग चढवानो दाखलो आपे छे, अने नके जवानो पण दाखलो  
आपे छे तेथी घणा भोळा लोक, मरती वसते एनो आशिर्वाद ले  
वाने वाले हजारो रुपीआ आपे छे वधा लोकोने ए पहोचां शके नहीं  
माटे केटलाएक मुखसार फरवा मोकले छे, ए न्यात बहार मुके तो  
कोइयी एनो संग्रह न थाय मोटो बादशाह लाख फोजनो धणी होय  
तो एना आगल हाथ जोडीने उभो रहे, जेवो पर्माध्यक्षनो जुलम अ-  
न्य देशमां छे तेज प्रमाणे आ देशमां पण छे तेनुं कारण एम छे कै  
द्यां पर्माध्यक्षनो अधिकार वये छे बा एमना तरफयो एवो बंदोवस्त  
थाप छे के चीजो कोइ भणे नहीं लोक जेटला अभण रहे तटलो ए-  
मनो फायदो माटे वधी मिथा गुप्त राखवानी तजविज करे छे.

ब्राह्मण क्षत्री अने वैश ए ब्रण जणाने डिज एवी संज्ञा छे, आ  
त्रण जणानो अधिकार समान छे.

**ब्राह्मणःक्षत्रियोवैश्याःस्त्रयोवर्णाद्विजातयः॥**

**चतुर्थीएकजातिस्तुशूद्रोनास्तितुपंचमः ॥ मनु.**

केटलोक म्लेच्छजाति मूळमां क्षत्री हता एम लख्युं छे.

**शकायवनकांबोजातास्ताक्षत्रियजातयः ॥**

**वृपलत्वंपरिगतःनात्राह्मणानामूअदर्शनात् ॥ भारत**

पौदूकाः श्वौद्रद्रविडाः कांबोजायवनाः शका ॥  
 पारदापल्हवाश्चीनाः किरातादरदाखशाः ॥  
 शनकेस्तुक्रियालोपाइमाक्षत्रियजातयः ॥  
 वृष्टलत्वंगतालोकेन्नामादर्शनेन च ॥

मनु.

अर्थः—शक, यवन, अने कामभोज, ए क्षत्री जातना छे, पण ब्राह्मणनुं एमना उपरनो अमल उठी गयो, तेथी ए धष्ट थया छे प-  
 छो पुन्ड्रक, अंभ, द्रविड, कामभोज, यवन, शक, पारद, पलव, धीन,  
 किरात, दरद, खस, ए वधार्थी क्षत्री जातीन। छतां ब्राह्मणनो अने  
 एमनो मेलाप न रहार्थी भष्ट थया छे शत पथ ब्रह्मणमा क्षत्रीओनुं  
 श्रेष्ठपणुं वर्णन कर्यु छे ते निचे प्रमाणे.

एतानिदेवताक्षत्रिणिर्द्वोवरूणः सोमोरुद्रः  
 तस्माल्क्षत्रं परं नास्ति तस्माब्राह्मणः क्षत्रियात्  
 अधस्ताउपास्ते राजसूये

शतपथ ब्राह्मण

अर्थ

इद, वरूण, सोम, रुद्र, ए वर्ण देव क्षत्री छे, मोट क्षपो श्रेष्ठ  
 छे, राजसूय यजमां क्षत्री उपर येसे छे भने ब्राह्मणने मिचे येसुं पडे  
 छे. उपरना मंत्रमां नेवलाएक देर क्षत्री कस्या छे पण लिंग पुराण-  
 पा लस्यु छे के.

ब्राह्मणो भगवानस्त्रद्रोक्षत्रियः परमो हरिः ॥

वैश्यः पितामहश्चैव इदं द्रूढृश्च जायते ॥

क्षत्रिय न्यातमा दाह पीवानी चाल हतो एवु वेद उपर्थी मालम  
पडे छे, ऐतरेय ब्राह्मणमा क्षत्रिये राज्याभिषेक करवानो विधि आठमी  
पंचीकाना वीसमाखंडमा लख्यो छे ते ठेकाणे निचे प्रमाणे मञ्चछे.

इत्यथास्मै सुराकं संहस्तं आदधाति स्वादि

पृथ्या ० तां पिवेत् ऐ ०८-२०

अर्थ

राजानी हाथमा दाहनो लोटो अपयो अने स्वादीष या मञ्चभ-  
णीने ते पीवो ।

आ प्रमाणे अनेक राजाने राज्याभिषेक थया छे तेमना नाम,  
अने तेमना गोरना नाम वेदमा लख्या छे तेमा परिक्षीतीनो पुत्र  
जन्मेजयने राज्याभिषेक थयो ते बात पण निचे मुजब लखी छे.

नुरः कावपयो जनमेजयं पारिक्षितं मभिषेच

ऋग्वेदब्रा ०८-२१

ए उपरयो एम मालम पडे छ के जन्मेजय राजा थया पर्छा ए  
वेद लम्ही गयो दशे, एवी कृत्पना थाय छे आ लोकु एवु कहे छे के  
वेदनो केटलोएक भाग आसुरी अने राक्षसी लोकोने वास्ते छे, पण  
ए ऋत्पना केवल अज्ञानी लोकोनी छे एने कक्षो आधारनधी केट-  
लाएक रहे छे के गतगोटिनुं वर्णन जे लख्यु छे ते भविष्यनु छे,  
अने ए प्रकारे करीने वेदने अनादिल अने नित्यन प्रतिपादन करेछे  
) पण ते बरोबर बेसुं नधी प्राचिनकाव्यमा ब्राह्मण लोकोमा एवो अ-  
भिमान हतो के जे कोई नान करवा आवे तेने या कहेवी नहि, तेज

प्रमाणे शब्दीनो भभिमान एवो हतो के युद्धने वास्ते जे बोलावे तेने ना कहेवी नहीं आ भभिमान आज रहो नथी, पूर्वे शंकराचार्य वल-भाचार्य इस्यादि मोटा आचार्य थया, तेमने दिग् विजय कर्यो ते ए प्रमाणे वाद करवाने ब्राह्मण गामे गाम उभा रहेता माटे थएलो, पण आज कोई दिग् विजय करवा निकले तो तेने कोई गामम। जवान मलशो नहीं सारे दिग् विजय सानो थाय एनुं कारण ब्राह्मणे वधाय जड, मूढ थया कोई पासे विद्या नथी अने अभिमान पण नथी अने कोई राजा उत्तेजन अपे एवो नथी, कपट वधी गयुं ने मूर्ख छता प्रतिष्ठा मेळवानी आशा ते शी रीते मळे पर्म सभा के पर्षद कोई ठेकाणे रही नथी शिक्षा के शाला रहि नथी ओशिभाबपणुं बहु वधी गयुं,, ने स्वतंत्रपणुं ढुकी गयुं तेने लीधे ब्राह्मण न्यातिमा काइ जीव के उपदे रही नथी.

ब्राह्मणोने प्राचीनकालथी पिशाच्योनो वहु बीक हती कोई पण कर्म करवुं होय तो प्रथम पिशाच्य नसादवानो उपाय करवो पढेछे, संध्यामा मंत्र भणे छे ते नोचे प्रमाणे.

**अपक्रामंतुभूतानिपिशाचाः सर्वतोदिशं**

श्राद्धमा वेद मंत्र भणे छे ते

**पिशाचभूष्टिमंभूर्णपिशाचमिद्रसंभृणा ॥ सर्वरक्षोनि  
वर्हया ॥**

वेदशास्त्रमा मंत्र कामना चोधक अने कर्म दोधक आवे छे तेनो नमुनो नचे प्रमाणे

**भियंदधानादेययुशत्रवः पराजितासो अपनिलयंता ॥**

**ऋग्वेद.**

द्विषेतं महां रन्धयन्मो अहं द्विषेते रधं ॥

भर्य.

हे सूर्य मारा शमुनो नाश कर.

अहि । श्वसर्वान्जं भयं न सर्वाश्वयानुधान्यः

यजुवेद् ऋद्री.

भर्य

हे ऋद् सर्प अने पिशाच्य एनो नाश कर.

हृद्रोगं मम मूर्य हरि माण्डना शय ॥ ऋग्वेद्

अथ—हे सूर्य मारो कमलानो रोग नाश कर.

उर्वासुकमिव वंधनान्मृत्यो मुक्षीय मामृतात् ॥ ऋग्वेद्

अथ—हे व्यवक मने मृत्युर्थी उगार.

पुराणमा केटलोएक कथाओ छे अने ठेकाणे ठेकाणे प्रार्थना छे  
ते नीचे लखा प्रमाणे.

चोरान्मारय मारय मम शत्रूनु दुष्याटय

उच्चटय । कुठारेण भित्राणैः संताढय

खट्टां गेण विषेथय ॥ शिवकवच । स्तुं द पुराण ॥

वेदमा विषद् वचन ओवे छे तेना उदाहरण नीचे लखा छे.

गृत्समदक्षपिः ऋग्वेद सविता

अषुक २ अ० ६ वर्ग २४ ऋ ६

त्रिसायनवतिं चनवेदः पुरो व्यैरल्घ्वरस्य ॥

गृत्समदऋषिःऋग्वेदसं २-६-१३

अधर्यवोयःशतंशब्दस्यपुरोविभेदाश्मनेवपूर्वीः ॥

पर्ष्णेषोदैवोदासक्रिपिः

ऋग्वे० २-१-१९

मिनपुरोनवतिमिद्पूर्वेदिवोदासायमहिदाशुपेनृतो व  
ज्ञेणदाशुपेनृतो ॥ अतिथिग्वायशंवरांगेरेस्योअवा  
भरत् ॥

अर्थ

इह नामनो राजा हतो तेनो मित्र दोवोदास हतोतेना तरफथी  
शंवर नामनो दैत्य हतो तेनी जोडे इद्व घणी वार लखो से विश्वे  
कथा वेदम, घणे ठेकाणे अवे छे केटलेएक ठेकाणे इद्व छे ते परन्न-  
न्यधिपति देव छे एम पण कहेलु छे शंवरासुर दैखनां नवाणु गाम  
इद्वे उजड कर्यां एवुं एक मंत्रमा छे बीजा मंत्रमा सो गाम उजड  
कर्यानी वात छे अने बीजा मंत्रमा नेवुं गाम उजड कर्यानी रुथा छे.

इद्वनुं पराक्रम नीचे लखेला मन्त्रमा घणु वर्णन कर्यु छे तेनुं पहे-  
लुं वचन लख्यु छे तेमा एवु लख्यु छे के इद्वने मध्य वहु भावे छे माटे  
ते अपिमा रेडो.

गृत्समदऋषिः

अ० २ अ० ६ वर्ग १३

अधर्यवोभरत्द्रायसोममामनेभिःसिंचतामद्यमंधः॥

ए इद्वेत्रीक द्रुक् यमामा मद्य वहु पीपुं भने तेना मदमा सर्प मारी  
नाहर्पा एवुं एक मंत्रमा छे ते नीचे प्रमाणे.

निकटुकेष्वपि वत्सु तस्यास्य मदे अहिमिद्रो जघान ॥

गृत्समद २-६-२५-२

वीजे ठेकाणे सापने भने वीछीने पथराथी मारी नाखवा विशे ने-  
दमा लख्यु छे भा मच्यो सापनु अने वीछीनु वीष उनोर छे.

इयतकः कुपुंभकस्तकं भिनद्यश्चमना

अगस्ति २-१-२६-२५

अभिन देवनी प्रार्थना कुतरानो नाश करवाने वालो छे ते नीचे  
प्रमाणे.

अगस्तिऋषि,

ऋग्वेद २-४-२९-२४

जंभयतमभितोरायतः शुनो हतं मृधो विदधु स्तान्य श्विना

गीतामा कह्यु छे के:

यज्ञोदानं तपः श्वै वपावना निमनो पिणां

यह एटले इधर भजन, दान एटले परोपकार, तप एटले इंद्रिय  
दमन, ए मुख्य अर्थ छे पण पक्षपात मताभिमान थाय छे त्यारे नवां  
मवा अने अनुकूल पढे एबो अर्थ करे छे. मूळ कर्मनो 'अर्थ देवतानुं  
पूजन, तेनो परिणाम निर्दयपणा ऊपर गयो, तेज प्रमाणे ज्ञान एटले  
भनेक देवोने भुक्ती एक इधर जाणवो अने भूत दयाथी सम इष्टिरा-  
त्ववी, तेनो अपर्धश थइने अघोरी कौल वाम इसादि गार्ग ज्ञान मा-  
र्गमा निरुक्त्या, अने ए मार्ग मूळ हेतुयी धष्ट ययो, तेमज भाकि एटले  
इधरनी उपासना ते ठेकाणे हजारो कल्पित देव उत्पन्न यया तप

एटले डंड्रिय नियह ने ठेकाणे उर्ध्वबाहु धाढ़ेसरी पंचामो तापनार  
ए निकल्या अने तपनो हेतु भ्रष्ट थयो कहुं छे के

**अनाचारेणमालिन्यं अत्याचारेण मुख्यता ॥**

**विचाराचारयोग्यौगः सदाचारः स उच्यते ॥**

विचार नष्ट थयाथि अने लोक मनस्वी अने निरंकुश थयाथि दया  
मैत्रीन्याय जतो रह्यो लोक स्वछांदि थया ब्राह्मण, लोकोने सन्मार्ग  
न बतावता उपद्रव करता लाभ्या तेथी लोक अ संतोषि थइने केटला  
एक ब्राह्मणनु गोरपुद काढवाने यद्व करे छे नहियादमा सुतारलोके  
सराववुं नहीं एवो ठराव कयो छे कारण पाच रुपीया आपता गोर  
छुटको करे नहीं तेज प्रमाणे पुनामा जोति गोर्वेंदराव लोकोनी सं-  
मति मेल्वे छेको ब्राह्मण पासेथो काइ पण कर्म करवुं नहीं आवधाए  
तोफानो ब्राह्मणोना उन्मादथी याय छे, जेम जेम ज्ञान वध्यो तेम तेम  
बरावर ओळखाशे,

वेदना मंत्र भाग कूर छे पण उपनिषद भाग साखिक छे अने  
ते सागी अने संन्यासीनुं शास्त्र छे एम कहेवाय छे तेना उदाहरणो  
निचे लख्या पमाणे.

**सत्यवद । धर्मचर । स्वाध्यायान्माप्रमदः ।**

**अन्नं बहुकुर्वीत । कुशल्यञ्च प्रभृतिव्यं ।**

**तैतीर्थ्यरण्यक प्रणाठक ७**

अर्थः

सय नोल, धर्म रीते चाल, भणवा विषे गफलत न कर. अनन्ती  
रूदि कर, मुख्यनो त्याग न कर.

है वौ वा गनुवदाति स्तलयित्नु दददहाति । दाम्यतद  
त्तदयध्वमिति । तदेतत्र्यं १ शिक्षेदमंदानं दया  
मिति ॥ वृहदारण्यक १४-५-२

अर्थः

क्षेव, मनुष्य, अने अमुर, आ चण जणाए पोताना गुरु प्रजाप-  
तिने प्रभ कर्यो के अमारो धर्म रो ते उपर्यो प्रजापतिए चण वस्त  
द, द, द, एवं बोल्यो अने पुछयुं के तमे आ चण दनो अर्थं समज्या  
गरे तेमणे कह्युं के अमे समज्याके दम दान अने दया त्यारे प्रजाप-  
ति बोल्या के आज प्रमाणे चालो आज तमारो धर्म ते वस्त आकाश  
वाणी ते प्रमाणे यड यजुरवेदनुं शत पथ ब्राह्मण चौद कांडनुं छे तेनुं  
छेलुं कोड “वृहदारण्यक” कहेवाय छे तेना पांचमा अध्यायमा वीजा  
ब्राह्मणमा ए कथा छे भवेक्ना कम्पसुचमां ए कथा दासल करी छे.

ओपधिभ्यो अनं तैतिरीयारण्यक प्र० ८

अर्थः

भौषणी एट्ले वनस्पति ए मनुष्यनुं अस छे.  
तस्यैवं विदुपोयज्ञस्यात्मायज्ञमानः अद्वापत्तिश्चरीरमि  
व्यहृदयं यूपः कामभाज्यं मन्युः पशुः स्तपो इन्द्रं मः  
शमयीता ॥

नारायणउषानैपद

अर्थः

जानीनो यज्ञ शी रीते धाय छे तेनी विगत् आत्मा छे ते यज्ञ

करनारो छे हृदय छे ते यूप, एटले जनावर वाधवानों खीलो अने आपणी श्रद्धा छे तेज पत्रि छे, होमगमे वास्ते धी जोडए ते आपणी वासना छे, मारवाने वास्ते जनावर जोडए ते आपणो कोप छे, अमि जोडए ते आपणुं तप अने जनावरने मारनारो जोडए ते आपणो दम एटले विवेक छे.

ए उपनिषदमा उपर लख्या मुजव घणी लाकी विगत लखी छे अने तप हपो यज्ञ नताव्यो, आ उपनीषदनुं नाम प्राणामिहोत्र छे.

सदरहु प्रमाणे वेदनां वाक्यो छे, अने स्मृतिओमा पण केटलाएक वाक्यो सारा छे केना उदाहरणो.

शतेषु जायते शूरो सहस्रे पुचंडितः ॥

लक्ष्मेषु जायते वक्ता दाता भवति वानवा ॥

नरणेनि निते शूरो विद्यया चन पंडितः ॥

न वक्ता वाक्यदत्तेन न दाता दान कुदुवेत् ॥

इंद्रियाणां जयेशूरो धर्मेचराति पंडितः ॥

सत्यवादि भवेत्वक्ता दाता भूत हितेरतः ॥

व्यासस्मृति.

अर्थ.

सोमा एक शूरो, हजारमा एक पंडित, लक्ष्मा एक भाषण करनार अने दाता तो विरलाज होय छे, रणमाथो जीते ते शूरो नही, अने वहु भण्यो ते पंडित नही, अने वहु भाषण करे ते वक्ता नही, अने वहु दान करे छे ते दाता नही, इंदियो जीते ते शूरो कहेवाप,

अने रिते चाले छे ते पंडित कहेवाय, अने सत्य बोले ते वका कहेवाय, अने सर्व जीवनी दधा जेना मनया छे ते दाता कहेवाय.

**द्वाविमौपुस्पोलोकेसूर्यमंडलभेदिनौ ॥**

**परिवाट्योगयुक्तश्वरणेचाभिमुखोहतः ॥**

**यन्त्रयन्त्रहतेःशूरःशत्रुभिपरिवेष्टिः ॥**

**अक्षयान्त्रभतेलोकान्यदिळीविन्नभापते ॥**

**जितेचलभतेलक्ष्मी, मृतेचापि सूरांगना ॥**

**क्षणविध्वंसिनीकायाकांचितामरणेरणे ॥**

**पराशरस्मृति.**

**अर्थ.**

सभ्यासो अने रणमा जे शुरा मरे, ते वें जणा सर्व लोकमा जाय छे, शत्रुना हुमलामा जे सूरो वीक राखतो नथो, ते रणमा मरे तो मुक्ति पामे छे, आ शरीर छे ते गमे ते प्रकारे पण नाश पायशो, माटे मुरा पूर्व्ये विचार करतो के, आपणे जीतोशुं तो मृत्युलोकनु सुखम-बढ्दो, अने मरीशुं तो सर्वगनु सुख मढ्दो, माटे मरणानी चिता रा-खवी नहीं.

**मयुषमा वृहसपतिनु वचन लख्युं छे ते नीचे प्रमाणे  
केवलं शास्यामुहिद्यनकर्तव्योहिनिर्णयः ॥**

**युक्तिहीनेविचारेत्तु धर्महानिः प्रजायते ॥**

**अर्थ**

केवल शास्य जोड्ने निर्णय करतो नहीं यूक्तियो तपासदु अने

युक्ति मुरुशो तो पर्म दुवशो.

यथैवात्मापरस्तद्वद्गृह्यःसुखमिठताः ॥

सुखदुःखानितुल्यानीयथात्मनितथापरे ॥

दक्षस्मृति

अर्थ.

जेवो पोतानो आत्मा सुख मागे छे तेज प्रमाणे पारकानो आत्मा सुखनी ईछा राखेछे योताने सुख दुख थाय छे तेज प्रमाणे पारकाने पण थाय छे एम समजबु.

आत्मौपम्येनसर्वत्रसमंपद्यतियोर्जुन ॥

सुखवंवायदिवाहुःखंसयोगीपरमोमतः ॥

गीता अ० ६

अर्थ.

पोताना प्रमाणे पारकाने समजबु पोताने सुख ते पारकाने सुख ने पोताने दुःख ते पारकाने दुःख ए प्रमाणे समजशो सेने योगी कहेवो.

वृद्धौचमातापितरौसाधीभायीसुतःशिशुः ॥

अण्कार्यशतंकृत्वाभर्तव्यामनुरक्षित् ॥ गौतमस्मृति

अर्थ.

माता अने पीता वृद्ध होय तो, स्त्री सुशालि होय तो, अने पूत्र नाहानो होय तो, सो पंथा करीने तेमनुं रक्षण कर्तुं.

भरणंपोष्यवर्गस्यप्रशस्तंस्वर्गसाधनं ॥

दक्ष ॥

## अर्थ

आपणा उपर जे निर्वाहने वाले वळगेला छे तेमनुं पोषण फरवू  
ए सर्गनुं साधन छे.

सदरहु उदाहरणोयी एम मालम पडशे के शास्त्रमा केटलाएक  
वाक्यो सारा छे प्राचीन ग्रंथोनो घणो भाग निःपयोगी छे पण प्रा-  
चीनकाळमा लोकनी शी स्थीती हत्ती ते जणाववाने वाले वेदनो घ-  
णो उपयोग छे अने वेदनुं संरक्षण ब्राह्मण लोकोए कर्यु ते विशेष  
आपगे एमनो पाड मानवो जोईए वेदनो हजारो शाखा अने करोडो  
बीजा ग्रंथ छे ते हाल काइ उपयोग पढे एवा नवी हिंदुलोकोने घणा  
काळ सुधी फुरसद, अने निर्भय, अने खावा पीवानी समृद्धी हत्ती, तेना  
अंदर अनेक ग्रंथ उपन्न थया ते तपासता एवु मालम पढेछे के वे-  
रुळ, अर्जठा, धारापुरी, रुनेरी, कारला, अने शीवनेरी ईस्यादि ठे-  
काणे मोटा मोटा हुंगर कोरिने माहाल बनाव्याछे ते उपर करोडो  
रुपीआ खरच कर्या हशे, पण ते विहारनो कोइने उपयोग नयो, माटे  
जोनास्ने आभ्यर्य लागेछोके, आ पर्वतमा गुफाओ शुरु रखा करी हशे,  
ते प्रमाणे आ सद्कृत यथ जोता एवु आभ्यर्य लागेछे के आ ग्रंथ  
शा वास्ते बनाव्या छे, जे काढे ए बनाव्या ते बखत ए ग्रंथनो उप-  
योग घणो हशे, एम धारदुज जोइए, नहीं तो यंथ ननाववानी मेहेन-  
त कौण करे, माटे जे बखत ए यंथ बनाव्या ते बखत ए ग्रंथ ब-  
नाववार, देवोनी पेठे, पुजाया हशे, अने ए बनाववार अने तेमनी  
सततीए लाखो रुपीआ ए यंथ उपर रळचा हशे एमा संशय नयो,  
घणा वरसमुपी ए ग्रंथ उपरलोगोनो आधार रह्यो नदोयोना अने गा-  
सना पाटातमो लखवानो पधो घणा वर्ष मुषी चाल्यो पिंड करवा

ने लोटना फरवा के भातना सरग ढाभ ढाभी बाजुए मुख वा इत्यादि  
निहपयोगी तक्षरारोमा घणो फ़ाल गयो छेली वरे भक्तिमार्ग निष्ठब्जो  
तेमा रुम्हांडनी घणी चाँदा पह अने ठराव्यु के—

**तपःपरं कृतयुगेन्नेतायां ज्ञानमुच्यते ॥**

**द्वापरेयज्ञमेवाहुदानमेकं कलौ युगे ॥**

अर्थ ।

कृतायुगमा तप करता हता चेतायुगमा ज्ञानी थया, द्वापरयुगमा  
यज्ञ करता लाया अने कविमां दान करवुं एज मुख्य छे.

**यस्मिन्नृभिः प्रहुतं श्रद्धया । हमश्चामिकाभं न तथा । अग्निहोत्रे ॥**

**भागवत स्कंद ५ अ० ५ श्लोक १३**

अर्थ ।

भक्तिधी पुजा करे छे तेथी परमेश्वर तृप्त थाय छे अग्निहोत्रधी  
थतो नयो,

**यथातरो मूलनिषेचने न तृप्त्यां तितत् स्कंधभूजोपशारवाः ॥**  
**ग्राणोपहाराच्च पर्यं द्वियाणां तथैव सर्वार्हण मच्युतेज्या ॥**

अर्थ ।

एक अच्युत परमेश्वरनुं भजन कर्याधी सर्व देवनी तृप्ति थाय छे  
उदाहरण जेमके दृक्षने मूळमा पाणी रेडता सर्व शाखा तृप्तु थाय छे  
पेटमा अन घालता सर्व इंद्रियनी तृप्ति थाय छे से प्रमाणे.

**कृतेतुध्याय तेविष्णुं न्नेतायां यजतो मखैः ॥**

**द्वापरेपरिचर्यायां कलौ तद्वरिकीर्तनात् ॥** भागवत

रामनामैवमुक्तिस्यान् कलौनान्येनकेनचित् ॥

विप्रादिपद्गुणयुतादरविंदनाभपादार ॥

विंदविमुखाः श्वपचंवरिष्ठं ॥

भागवत ॥

अर्थ

काळियुगमा भगवाननु भजन कर्या विना बीजो धर्म नथी विद्वान ब्राह्मण अने धेढ भक्त होयतो, भक्त मोटो समजवो.

प्राचीन काळमा ब्राह्मण उत्तर कुरुमा एटले हिमालयनी पेली तरफ रहेता एवं वेद उपर्युक्त जणाय छे

येकेचपरेण हिमवंतं ननपदाउत्तरकुस्त्रवउत्तरमद्राइति ॥

ऐ० ८-२४

यदाब्राह्मणोत्तरकुस्त्रनूजयेमथ ॥

ऐतरेयब्राह्मण पं० ८ खं २३

घणा एक शास्त्रमा मामानी कन्या न करवी एवं लख्यु छे ने मामानी कन्या अने भाइनी कन्या एमा काइ ज्ञाहु अंतर नथी पण वेदमा लख्यु छे.

तृत्यां बुहुर्मातुलस्येवयोपांभगस्तेषैत्यसेयीवपामिव ॥

ऋग्वेद

सदरहु मंवना आधारे मामानी कन्या करणानो वहीवट चाले छे, आज सुधी लोक भजान हता, तेथी वपाप लोकोनो मत एवो वंपाइ गयो हतो के, कोइ बातपर शोका के प्रभ करवो नही जे मढी चालतो हयो ते प्रमाणे धालवू तेमा वांपो के संशय कीद्दै लेवो नही

पछो तेमा सारं होय के नरतुं होय, पृथ्वी उपर जुलम वे प्रकारना छे, एक पर्माध्यशनो अने एक राजानो, ए प्रमाणे जुलम जे माण-स उपर थाय, ते माणसनी मदद बधाय लोकोए करवी जोइए कोइ माणसना मंदिरना अधिकारी जोडे तकरार पढे छे यारे मंदिरना अधिकारी तेने दर्शन बंध करे छे, आवा प्रसंगे जे माणसनुं दर्शन बंध थाय छे, ते अन्यायथी थपु होय तो बीजा बधाए कहेवुं जोइए के ज्या सुधी आ माणसनो छुटको नहाँ थाषु, त्या सुधी अमे कोइ दर्शन करवाना नयी, तो मंदिरना अधिकारी पगे लागीने ए माणसनो छुटको करशे, पण लोकोमा आठलो, भूत दया अने परोपकार बुद्धी अने न्यायनो अभिमान नयी, तेथी गमे तेवी रीतनो जुलम<sup>1</sup> करे तो नभे छे, अने एज प्रमाणे केटलाएकने, महाजन बहार करे छे, केटलाएकने ज्ञाती बहार करे छे, केटलाएकने चोराशी बहार करे छे, ते ववतमा आवा माणसना जोडे कोइ उभो रहेतो नयी, अने बधाय एम जाणे छे के, लोभधी के लुचाइथी आ जुलम ययो छे, अने पाच पचास स्पीआ अपि तो तेनो छुटको थाय छे, तोपण ते माणसने छोडाववाने वास्ते कोइ उभो रहेतो नयी, तेथी जुलमनो प्रवाह चाले जाय छे, लोकोए एम सप्तजुं जोइए के, जे माणस स-दो वीस्ट चालतो हशे तेमा छेक अनिती न होयतो, तेनी वास्तु लोकोए पकडवी जोइए, अने एम थाय तो जुलम नहु ओछो थदो, पण लोकोमा ए बुद्धी नयी, तेथी पचास भेंसो मोटी बळवान होय, अने भरवाडनो छोकरो आठवर्षनो होय तो लाकडीलेइने एमने हासी जाय छे, अने भेंसोने बबर पडती नयी के हमारु बळ फेटलु अने आ छोकरानुं बळ केटलु, ए अग्नानधी, छोकरानी लाकडीनी नीक सप-

धर्म वगडवानो सारपछी राज्य वगडवानो ए पण साधारण नियम छे तेज प्रमाणे जे बखत सुधारो थशे तेनो पण नियम एमज छे कै प्रथम धर्म सुधरक्षे ने पछी राज्य सुधरक्षे एनुं कारण, धर्मनी सुधारणाथी राज्यनी सुधारणा करवो मुशकेल छे कारण राजा बळवान छे अने धर्माध्यक्ष निर्बल होय छे माटे जे लोक धर्म सुधारणा करवाने तैयार नयी तेमनाथी राज्य सुधारणा कदापि थाय नही.

अढार पुराण छे अने तेटलाज उप पुराण छे तेमानुं एक काली-का पुराण करीने छे तेमानो छासटमो अध्याय बालिदान विषय छे तेमाना केटलाएक श्लोक नचि लख्या छे आ पुराण आगममा सम-जर्व तेनो नीच्य थतो नयी, तोपण उप पुराण छे अने ए वर्षो अ-ध्याय भगवाननुं वचन छे एम लख्युं छे माटे अहोया दाखल कर्यो छे ते उपर्यी घणी होसानुं प्रतिपादन थएलुं मालम पडशे, माणसनौ बळी पण लख्यो छे हरएक किलामा आगल माणस बळी आपेला तेनी जगाओ आज सुधी पूजाय छे, वेदमां नरमेध लख्यो छे तेमा डोसियो अने भाणेज पण लख्यो छे.

१ तैतिरीयब्राह्मणे ३ कांडे

४ प्रपाठके १९ अनुवाके

आशायैजामिम् प्रतिक्षायैकुमारिम्

ग्रमुदेकुमारीपुत्रम् आराध्यौदीधिषूपतिं

भाष्य.

आशायैजामिं । निवृत्तरजस्कांभोगायोग्यांस्त्रियं ।

प्रतिक्षायै । कुमारीं । अनूढामूकन्यामालभते ।  
ग्रमुदे । दुहिनुःपुत्रं । आराध्यै । दिघपूषति । द्विर्वि  
वाहंकृतवतीस्तीतस्याःपतिं ।

एवा अनेक प्रकारना मनुष्यनो यज्ञ वेदमा आवे छे.  
राजस्थानमा केठलाएक मंत्र शास्त्री ढाँगो लोक कार्य सिद्धिने  
बाले हस्या करे छे ऐबु साभव्यमा ओवे छे तेनुं मूळ शास्त्रमा मले छे  
खातमुहुर्तं करवामा शोषअनंत वराह देवीनो पूजा करे छे तेमा बडी  
दान लख्युं छे. ए सर्व अज्ञान मूलक छे. एमा संज्ञय नयी एवा हस्या  
चाहनारा देव खोटा अने तेमना भक्त पण पाखडो छे एवो निश्चय  
थायछे

## ॥ रुधिराध्याय ॥

श्रीभगवानुवाच ॥ पक्षिणः कछपायाह्यामत्स्यानविधामृगाः॥ महिपोगोधिकागावःछागोवत्रश्वशूकराः॥  
खरश्वकृष्णसारश्वगोधिकाशरभोहरिः॥ शार्दूलश्वनरश्वैवस्वगान्नरुधिरस्ताथा ॥ चंडिकासैरवादीनांवल्यंपरिकीर्तिताः ॥ वलिभिःसाध्यतेमुक्तिवलिभिः  
साध्यतेदेवं ॥ वलिदोनेनसततंजयेछत्रूनृपानूपः॥  
कालित्तंत्रभितिप्रोक्तधर्मकामार्थसाधनं ॥ पूजनादत्रि  
रादेवीसर्वान्कामांददातिच ॥ मत्स्यानांकछपानांतुरु

धिरैः सततं शिवा ॥ मासैकं तृप्तिमाप्नोति यहैर्मासा सुन्त्री  
 नथा ॥ कृष्णसारस्वस्थधिरैः शूकरस्य चशोणितै ॥  
 आग्नोति सततं देवी तृप्तिमिद्वादशवार्षिकी ॥ अजाविकाना  
 स्थधिरैः पञ्चविंशतिवार्षिकी ॥ महिषाणां चखड्डाणां स्थधि  
 रैः शतवार्षिकी ॥ सिंहस्य शरभस्याथ सगात्रस्य चशौ  
 णितैः ॥ देवी तृप्तिमवाप्नोति सहस्रं परिवत्सरान् ॥ कृ  
 ष्णसारस्य मां सेनतथा खड्डेण चंडिका ॥ वर्षान्यं चश  
 ता न्येव तृप्तिमाप्नोति केवलां ॥ नरेण ब्रलिना देवी सहस्रं  
 परिवत्सरान् ॥ मन्त्रपूतं शोणितं तु पीयूपं जायते सदा ॥  
 तस्मानुपूजने दद्याद्वलेः शोर्पि सलोहितं ॥ यज्ञार्थं पश्वः  
 सृष्टास्वयमेव स्वयं भुवा ॥ अतस्त्वं धातयिष्यामीत स्माद्य  
 ज्ञेव धोवधः ॥ पात्रं स्थधिरदानाय कर्तव्यं विभवावधी ॥  
 वातयेच्चंद्रहा सेनते न मन्त्रेण संस्कृतं ॥ काणं पंगुचापिवृद्धं  
 रोगिणं च गंलहृणं ॥ क्लीबंहीनां गमथवा विदुलिंगकुलक्ष  
 णं ॥ स्त्रियं नदद्याच्चांडालिंदत्वानरकमाग्रुयात् ॥ न  
 ब्राह्मणवलिंदद्याच्चांडालमपि पार्थिवः ॥ राजपुत्रस्तथा  
 मात्यः सचिवः सौरिकादयः ॥ दद्युर्नरवलिंभूपः संप  
 त्पाविभवाय च ॥ महिषस्य शिरः छिन्नं समदीपं शिवाः

पुरः ॥ हस्ताभ्यांयः समादाय अहोरात्रं तु तिष्ठते ॥  
 सचिरायुः पुनर्मूर्तिरिह भुक्तवा मनोरमान् ॥ नरस्य शी  
 र्पमादाय संधकोदक्षिणेकरे ॥ वामै सर्वधिरं पात्रं गृहि  
 त्वा निश्चाजायतः ॥ यावद्रात्रं स्थितो मत्योराजाभवति  
 चैव ही ॥ मृते मम पुरमात्यगणानां मधियोभवेत् ॥ क्षण  
 मात्रं वलिनांयः शिरोरक्तं करहये ॥ गृहित्वा चिंतयेद्दे  
 वां पुरस्तिष्ठतिमानवः ॥ सकामानि ह संप्राप्य देवीलोके  
 महीयते ॥ शिराङ्गिलावलिंदद्याकृत्वा च म्यनुमंत्रितः ॥  
 रक्तमाल्यधरं कृत्वा रक्तवस्त्रधरं तथा ॥ तेनोक्तरशिर  
 स्कंतं कृत्वा खड्डेण छेदयेत् ॥ वालिदानाच्च तु वर्गफलमां  
 ग्रोत्य संशयं ॥ कथितो सर्वधिराध्याय उपचारान् शृणु ष्व  
 मे ॥ इति कालिका पुराणे वलिदनि पट्पष्टित मोध्यायः ॥  
 आमिषं परमान्नं च दधि संपिः सशक्तं र ॥ महादेव्यै निवेद्याथ  
 वलिमेधफलं लभेत् ॥ देवीलोके चिरां स्थित्वा राजाक्षिति  
 तले भवेत् ॥ दीर्घायु वहुभोगचिपुत्रपौत्र समन्विताः ॥

कालिका पुराण ॥

सदगहु उपरथी एक प्रश्न नहीं है जो तो एवी के पृथ्वी उपर अ-  
 पूर्ण यात्रा हो जो ने देव देवमालोक परडी रथाछे तोमारी जह कीयु

एनो निश्चय बुद्धि विना कोण फरशे अने कदापी एम कहीए मे बी-  
जा देशना शास्त्रनो आपणे शी जहर छे आपणा देशमा जे शास्त्र  
छे तेज खरु एम कहीए तो नाभण लोकोए लखेला शास्त्र तपाशीए  
तो तेमा केटलाएक नठारा छे अने केटलाएक साराछे खारे तेमा  
कीया मान्य करवा ते बुद्धीने आधारे रहेलुं छे तेथी धर्मनो आधार  
बुद्धी ठे एम जणाव छे शास्त्र अनेक प्रकारना छे अने एक वाजाने  
वीरुध छे एकमा दाह पीवो ने मास खावुं एम लख्यु छे ने वीजामा  
एनो नियेध कयों छे खारे एवा शास्त्रनो आधार थाय नहाँ माटे यु-  
वित यकी सार असार विचार करीने जे योग्य मालम पडग्गे तेज  
लेवुं एवो निश्चय थाय ठे पवित्र मन अने सांखिक बुद्धि अने निर्मळ  
अत करण्यो जे इश्वरी ज्ञान प्राप्त थाय छे तेज धर्मनो मर्यादा छे.

मनुष्य मात्र अशक्त प्राणी ठे तेथी आपणे साये इश्वर छे ए  
मान्या विना चालतुं नथी अने इश्वर भवितव्यनी प्रेरणा मनुष्यनी बुद्धि  
ने स्वभाविक छे अने मनुष्य मात्रनी निती अने न्याय संरक्षण थवाने  
वास्ते इश्वरनी वीक अने इश्वरनो भक्ती अवश्य छे माटे जगतमा  
बधाय लोक इश्वर छे ए वात रुपुल करे छे श्रावक, वौध, इत्यादिक  
लोक इश्वरने मानवा नथी तोपण केटलाएक माहा पुम्पो केवळ  
गती पाम्या छे एम समजीने तेमनेजे प्रभु करे छे अने तेमनाज उ-  
पासना फरे छे

तर्कने कथाना आधारथी अनेक देवोनी कटपना करी छे केटलाएक  
कहे छे के रामकृष्ण, हनुमान इत्यादिक देव छे केटलाएक पच-  
महाभुतादिक एटले पाणा, भग्नि, सूर्य, वायु, इत्यादिरुने देव कहे छे  
ए उपाय देन उपकार बुद्धियी कृत्या रद्दो पण सर्वसाक्षरुं सीधात ए .

मज छे के परमेश्वर एकज छे, अने एने कोई सहीयारी नयी, अने जोडीदार नयी, उपनीषदादिक जे सारशास्त्र छे तेमा ए प्रमाणे निश्चय छे अनेक देवने तो अव्युत्पुदि लोक माने छे, अने मूर्ति करवी ए पण अव्युत्पुदिनुं काम छे.

**अग्नौक्रियावतांदेवोदिविदेवेमनीपिणां ॥**

**प्रतिभास्वल्पवुद्गुनांसर्वत्रसमदाईनां ॥१॥**

मूर्तिनी कल्पना करी एठले तेमा अनेकत्व आवे छे एके भायडानी कल्पना करी तो एके बायडिनी करी एक अष्टभुजानी करे तो एक चारभुजानी करे एम करता करता अनेक देवनी पारणा थायचे गामोगाम ने रानोरान ने नातानात जुदा जुदा देव थया छे माटे अनेक देवोनी कल्पना मिथ्या जणाय छे.

कर्मकाढमा जेटलुँ देह संरक्षणार्थ कर्म छे तेटलुँ अवश्य छे गीतामा कस्युँ छे के.

**शारीरंकेवलं कर्मकुर्वन्नाप्रोतिकिल्विपं ॥**

केवल शरीर कर्म छे ते बंधन करतुँ नयी अने वाकी बधुँ छे ते मोक्षनुँ पतीबंधक छे माटे करवानी जहर नयी अने गीतामा ब्राह्मणना नव प्रकारना पर्म कृत्या छे तेमा मानसीक पर्म बधाय कृत्या छे ते एव रु.

**शमोदमःस्तपःशौचंक्षांतिराज्ञवमेवच ॥**

**ज्ञानंविज्ञानमास्तिक्यंव्रह्यकर्मस्वभावजं ॥**

ऐपो एम जणाय छे के यजादि रुनी अवस्थकता नयी,

न्याय अने भूत दया मनुष्यना स्वभावमा अवस्थ्य छे ज्ञातिभेद ए  
यवहारीक छे परमार्थमा ज्ञातियो कर्दै पण कायदो थतो नथी विद्या,  
वैभव, पराक्रम, सदगुण, अने सत्कर्मयो मात्र उच्च नीचनो भेद पडेछे  
ते मात्र खरो बाकी वधो काल्पित छे असलमा चार ज्ञाती हती तेनी  
चारसो थई तेनो आधार जोता कशो नथी अने ते स्वार्थ बुद्धीयी वंश  
परंपरा यइ गइ ज्ञातीनो निर्णय गीतामा कर्यो छे के.

### चानुर्वर्ण्यमयासृष्टिगुणकर्मविभागशः।

गुण कर्म प्रमाणे ज्ञाती समजबी एज अभिप्राय खरो हाल लो-  
कोमा अज्ञान वहु वधो गर्यु तेथी मेहेनत करीने जे पैसा रक्षे छे ते बढो  
वरा अने लगनमा खरचे छे अने जे छोकराना लगनमा हजार रुपी-  
या खरचे छे तेम पाच रुपीया तेने विद्या भणावामा खरचता नथी  
तेथी निरूपयोगी माणस घणा पेदा थाय छे एवा अनेक नठारा रुढी  
मार्गयो लक्ष्मी, विद्या, ने जकि ब्रणे गया तेथी आगळ जे लोक क-  
हेता के हिंदुस्तानमा देव रहेतापण आज जोता देव तो रक्षा नथी  
पण पिशाच रक्षा छे.

देव वे प्रकारना छे एक मंत्रोक्त अने बीजा लिंगोक ए वधाय  
देव कल्पनीक छे माटे सर्व कर्मना अंसे तूर्य तत्त्वनो उच्चारकरेछे.

### “ तत्सब्रह्मार्पणमस्तु ”

एम बोले छे, मंत्रनो अर्थ देवनी प्रार्थना एज मुख्य छे, यजमा-  
नण प्रकार छे १ प्रशंसा २ यजन ३ गायन ए ब्रण घण वेदधी  
धाय छे ते ए प्रमाणे । ऋभि शंसति । यजुभिर्यजति । सामेन गो-  
पते । शूद्र ज्यारे मोटा थया आरे शूद्र रुमलास्तर विगोरे थयं ब्राह्म-

ણોએ લખશ અને તેને આપારે શુદ્ધનું ગોરપદુ કરવા લાગ્યા. મ્લેછે મોટા થયા ખારે તેમનું ગોરપદુ કરવાની આજા કરી. બતરાજ પ્રથમા લખ્યું છે યવન મ્લેછ ઇણાદિક વ્રત કરે તો તેમને અધિકાર છે.

- કવચિલમેઠાનામણધિંકારોહેમાદ્રાદૈવિપુરાણે ॥

વૈઠ્યૈઃશ્રૌદ્ર્ભેક્તિયુક્તૈલ્મેછૈઃરન્યૈશ્વમાનવૈઃ ॥ સ્થિમિશ્વ  
કુરુશારુલતાદ્વિધાનમિદંશ્રણુ ॥

યવન ચંદ્રિકા કરીને બીજો ઘ્રંથ છે તેમા યવન લોકોએ જે કર્મ કરું તે લખ્યું છે. પણ હાલ મ્લેછ લોકોમા ક્રિસ્ટિયન અને મુસ્લિમાની ધર્મનો વૃદ્ધ થગથી તે લોક મૂર્તિ પૂજક અને તોત્રિસકોઠિ દેવને પુજનારા હિંદુ લોકોને માનતા નથી તેથી બ્રાહ્મણોનો ઉપાય નથી.

શ્રાવક પર્મસા સ્થિયોને સંન્યાસો કરે છે અને પારશિયોમા સ્થિયોને જનોડ દે છે. આ અધિકાર બ્રાહ્મણ લોકોએ કાઢી નાખ્યો અને સ્થિયાતિ ઊપર ઘણો જુલમ કર્યો તેથી સ્થિ જે રબ કહેવાય છો તે જારના દોણાની કિંમતે વેચાય છે ઔદ્દિચ્ય બ્રાહ્મણ વિગેરે જ્ઞાતમા એથી વધારે કંન્યાની કિંમત નથી. લોકોને શિલાવાની વેપી કરી અને પારદેશમા જગાની વેપી કર્યાયી અજ્ઞાન વહુ વધ્યું તેથી હજારો વરસર્થી મુસ્લિમાની પર્મના આરચ મૌગલ તુર્ક અજ્ગાન ઇણાદિ લોક અને ક્રિસ્ટિયન ધર્મના યુરોપિયન લોક ફરોડો આન્યા પણ હિંદુ લોક એ આન્યા પહેલા હતા તેગાજ હણો છે એમને રુદ્ધી ખગર નથી હિંદુ લોક સ્વભાવથી શાન છે કૂર નથી પણ અજ્ઞાનથી ઘણો અન્યાય કરેછે સત્તિ એ જ વાયતા કંન્યાએ જ મારતા નરવળો એ જ કરતા એમને ઠેકાળે લાવવાને ચાનો ડિપેજ સરકાર નિર્માણ થયું છે તેથી ઘણો મુખારો થતો જાય.

છે પણ હાલ દેશી રાજા છે તૈમા એક પણ એમની બરાબરી અથાપે કરો શકતા નથી બધાષ દેશી રાજા મૂર્ખ ગણાય છે, એમને સુશિક્ષા લાગતીજ નથી એવો કર્મનો યોગ છે.

વેદમા કેટલાએક મંત્રના ઋષી ક્ષત્રિય અને શૂર છે કાશ્ચિત् અને વિશ્વામિત્ર એ ક્ષત્રિ હતા કવષ ઐલુષ એ શૂદ્રદાસો પુત્ર હતો એને કથા એતરેય બ્રાહ્મણમા છે.

કેટલાએક પ્રાચિન આચાર નરમેધ, ગોમેધ, અશ્વમેધ, અનુસ્તરણી, નિયોગ, શૂલગવ, દિયરવટુ, દ્વાદશ પુત્ર, પલપૈતૃક, માહાત્મેત, મધુપર્ક, ઇખાદિ અનુષ્ઠાનો બંધ યાય છે તોપણ તે અનુષ્ઠાનના મંત્ર પઢણ અને પારાયણ કરવામા લોક પુણ્ય સમજે છે, મૂळ વિધિ ન થાય તો તેનો પ્રખાસાય ફરે છે બાળવામા માસના પિંડને ઠેકાણે લોટનો પિંડ કરે છે, આરે જે કર્મ કરવું નહીં તે કર્મની કથા અને મંત્ર વાચવામા અને તેનો પર્યાય કરવામા પુણ્ય છે કે નહીં એ વિશે ઘણો સંશય છે અને યજમા પદ્મ બહુજ કુરપણાથી મારવા અને તેના માસનો હોમ કરવો, અને ભધણ કરવું એ કેટલાએક લોકોને ગમતું નથી તેજ પ્રમાણે ગોમુત્ર, છાણ, દુધ, અને ઘી, એકત્ર મેલ્લવીને પીતા, દેહ શુદ્ધ યાય છે એ પણ સમજવાને મુખ્યકેલ છે, તેજ પ્રમાણે તાત્કાલિક મત, અતિ વિ-પરિત છે, તે છાની રીતે કાશી ઇખાદિ શેહેરોમા બહુ ચાલે છે અને શીવનો પૂજાઓ લિંગ રૂપેયાયછે, તે વાત વૈણવ લોકો માન્ય કરતા નથી અને લિંગનું દર્શન કે તિર્ય પ્રસાદ લેતા નથી, કાશીએ જાય તો વિશેખરનું દર્શન ફરતા નથી અને હીંગબાજ માતા છે ત્યા ગોસવિ લોક દર્શન કરવા જાય છે પણ ચારે સંપ્રદાયના વૈણવ લોકો જતા નથી, નેતું વાગ્ણ એમ બતાવે છે કે એ માના ભાગઢ હોસા યાય છે

माटे अमे दर्शन करता नथी एम कहे छे सेहेजानंदस्वामीए शोकी-  
पत्रिमा, एम लखुं छे के जे देवने मश्य मासनुं निवेदन थाय छे, ते  
देवनुं दर्शन सन्तर्जग्गिए करवुं नहो, पुष्टीक मार्गवाळा मरजादी अने  
समर्पणीए अनन्य भक्ति करे छे, अने शिवांलगनो तर्थ प्रसाद लेता  
नथी, मध्य संप्रदाइ छे ते शिवनो भूर्त होय तो दर्शन करे छे, अने  
लिंग अपूज्य गणे छे होम हवन करवानो कुड करे तो सेमा उपर  
योनी चिन्ह करे छे ए पण तावीक विषय छे तेज प्रमाण चंडीपा-  
ठमा मश्य मासनुं प्रतिपादन फुर्युछें, तोपण तेनो पाठ हवन चाले  
छे, तेपण वैष्णवलोको मान्य करता नथी, पशुने ठेकाणे कोळुं ना-  
रब फापे छे, अने मंत्र जनावरनो भणे छे, निंगले रामानुंज विधवा-  
नुं वपन करना नथी गुजराती मारवाडी ब्राह्मण यज्ञ करता नथी आ  
प्रमाणे केटलीए सुपारणा थवी आवी छे अने केटली एक थवानी  
छे ते उपर आज लोको लक्ष देवा लाग्या छे, कामाक्षी देवी ए योनी  
भाग छे एम फहंचाप छे, पुराणमा एवी कथा छे के दक्ष प्रजापतिए  
पाँचनी बटी मुआ योर तेना ककडा करीने पृथिव उपर केफी दीधा  
ते शोट ठेकाणे हाथ बोट ठेकाणे पग, बोट ठेकाणे मूर, कोइ टे-  
काणे नाखी पञ्चाथीने ने ठेकाणे उय पीठ थयुं, नेमा कामाक्षी मि-  
नाथी मातापूर नुच्जापूर कलसता विष्या वासीनी इस्यादि उम्रपीठ  
गगाय छे, जेगा शिवना योत्त लिंग तेवा ए देवीना पीठ गणाय छे,  
पण ए वथापमा मश्य मास व्यंप नेथी गं-यासी गोसाई रानफटा नाथ-  
पथी वाममार्गी, गौलीन, अघोरी एमना ए बोटाध्यम छे, वैष्णव लो-  
टो याता जना नथी, हाल परमार्थ प्रतिपादन शास्त्रधरी लोकोने स-  
मार्ग नद्याद् गारा जेवी युदि होय अने जेग पापद अने दंभभी

नाश थाय, एवो जेनी इछा हशे एने भूनदया, देशाभिमान, न्याय-भिमान, स्थापन करवाने वास्ते जे चोहे छे तेमणे आ यंथनो काइ पण उपयोग पडशे तो आ यंथ करवामा जे श्रग लोधा छे तेनुं सार्थक थशे.

आ यंथमा मूळ यंथना वाक्यो लख्या छे ते कलकत्तामा अने बनारसमा जे यंथ पेंडिलोए शुद्ध करीने छाप्या छे, ते उपरथी लिखा छे, तेनुं कारण के, तेनी मतलब लखीए, तो असलमा ते प्रमाणे छे के नहीं, एवो संशय आवे, माटे असल यंथना वाक्यो दाखल कर्या छे तेथी ए संशय रहेशो नहीं, अने आज कबीयुग समजबुं के न समज खुं ए विशे, शास्त्रमा अंदेशो छे, पण कोई कहे के हाल कलीयुगज छे, तो बीजो प्रभु उत्पन्न थाय छे के, कलीयुग थई रहेशो, त्यारे आ यंथमा बतावेला बधाय कर्म पुनरपी चालता करशो, अने करीशुं, एम कहेशो तो आयुगाने कबीयुग कहेवुं के, पैला युगने कहेवुं ए मोटो स वाल छे, एनो जवाब सत्य रीते कोई देशे एवी आशा छे.

आ शिवाय बीजा केटलाएक प्रभु छे ते "आगम प्रकाश" नाम नो यंथ प्रगट थशे तेमा लखवामा अंवशे.

---

# निगम प्रकाश अंथनी अनुक्रमणीका.

प्रकरण	विषय	पृष्ठ.
१ ब्राह्मणोना तावामा सर्व देव रहेछे ते विशे वचन	१	
२ ब्राह्मण विद्वान होय के अ विद्वान होयतो पण तेमने मानवा विशे मनूनु वचन	१	
३ ब्राह्मणना जमणा पंगमा सर्व तिर्थ रहेछे ते विशे वचन	१	
४ ब्राह्मणनी प्रार्थनना क्लोक तेनो मतलब के ब्राह्मण देव सूप अने तोर्थ सूपछे तेमनी चरणनी पुळी उडेतो जीवनु कल्याण थशे.	२	
५ दुष्ट ब्राह्मण होयतो पण तेनो पूजवो ते विखे पराशारनु वचन	२	
६ ब्राह्मण भोजननु महात्म मतलब के ब्राह्मण जमाढवार्थी कल्याण थशे.	२	
७ ब्राह्मणने अंगे देवता रहेछे ते वीशे वेदनु वचन	३	
८ परमेश्वरनु ब्राह्मण मुखछे ए वीशे वेदनु वचन	३	
९ वेदमा लख्या प्रमाणे ब्राह्मणो ए कर्म करनु ते वडे ते स्व- गें जवाना ते विशे मनूनु वचन	३	
१० ब्राह्मणोए सर्वदा वेदनो अभ्यास करवो ते वीशे वचन	३	
११ सर्व शास्त्र करता वेद मोटु शास्त्रछे ते विशे वचन	४	
१२ प्रवृत्ति वाङ्ने मांस खावानो अने मदा पिवानो दोष नयी अने निवृत्ति मार्ग वाल्लाए न खावु ए विशे मनूनु अने भागवतनु वचन.	४	
१३ निवृत्ति करता प्रवृत्ति मार्ग सारो ए विशे गीतानु वचन	५	
१४ पुराण वचनंधी वेद भने हृती रद पतो नयी ते विशे वचन.	५	

१५ हाल कलीयुग नथो ते विशे भागवतनु अने भारतनुं

वचन

६

१६ वेद एट्ले संविता अने ब्राह्मण ए विशे वचन

८

१७ मनुनु पर्म शास्त्र वधा करतां मोटुछे ते विशे वेद प्रमाण

७

१८ ब्राह्मणोनो द्वैष करता, नखोत् जायछे, ते विशे वचन

७

१९ ब्राह्मणने द्वीज कहेवानुं कारण

८

२० सत्तं यज्ञ प्रथम करवाना तेमना नाम

८

२१ बीजां यज्ञ पछि करवाना तेमना नाम

८

२२ यज्ञमां शुं शुं जोईएछीए तेनो याद

८

## ॥ ऐतरेय ब्राह्मण ॥

२३ ऋग्वेदनुं ऐतरेय ब्राह्मणमां यज्ञ करवा विशे आज्ञाछे

से वचन

१०

२४ पशु मारवा विषे वेदमां प्रेष लख्यो छे ते

१०

२५ पशु एट्ले बकरो मार्या पछो तेना ककडा करीने शो

रिते यज्ञ करनारा ब्राह्मणोमां वेहैचवा ते वीशो मंत्र

११

२६ सदरहु बकरो स्वर्गमा जायछे ते विशे वेदनो मंत्र

११

२७ बकरानी वपाकाहाडवा विशे मंत्र

११

२८ बकरानुं जे नीरप्योगो शरीर रहेशो ते दाटवा विशे मंत्र

१२

२९ पशुने मारती बखत दया न करवा वीशो वचन

१३

३० वपा होमती बखत तेना उपर घी रेडवुं तेनु वचन

१३

३१ वपायागपो ऊमर वपेछे अने भरे स्थारे स्वर्ग मळेछे ते

विशे वचन

१३

प्रकरण	विषय	पृष्ठ.
३२ पशुना भंगनो विभाग गीरजा रूपीए बनाव्या छे तेना कथा।	१३	
३३ हरीश्वंद राजाए मनुष्य यम झरवानो पायो हतो तेनो कथा वेदमा लखीछे ते	१४	
३४ हिंसाविना यम थतो नथो ते वारे मच्छ पुराणनु वचन।	१४	
। कृष्ण यजुर्वेदांतर्गततौतिरीय।		
ब्राह्मण एने आपस्तंभ शाखानुं ब्राह्मण कहेछे तेमाना वाक्यो।		

३५ पशु मारवा विशे आज्ञा १	१	१४
३६ हिंसा करवी ए निर्दयपणानुं काम छेपेण तेनी उपर्योगान करवी ते विषे सायनाचार्यनूं भाष्य २-३	२	१४
३७ धेनुं उपाकरण ४	४	१५
३८ वत्सोपा करण ५	५	१०
३९ यजनी प्रशंसा ६	६	१५
४० अश्वमेध ७	७	१५
४१ पशु एकादशनी ८	८	१५
४२ अन्य पशुपा करण ९-१०	९	१५
४३ अश्वमेधनी प्रशंसा ११	११	१६
४४ गव्य पशुपा करण १२	१२	१६
४५ शानोपा करण १३-१४	१३	१६
४६ अश्वमेधनु फल १४-१५	१४	१६
४७ नगमेध विधान १६	१६	१६

प्रकरण	विषय	पृष्ठ.
४८ अष्टादश पशु विधान १७		१६
४९ आपस्तंभ व्रायणमा जे जे प्रकरण छे तेनु ओळीयु		१५
५० कर्मकाडमा पशु मारवाने अर्थे पाच पारिभाषिक शब्दछे तेनो अर्थ.		१९
५१ आर्य विद्या सुधाकरमा उपार करण शब्दनो अर्थ,		१९
५२ नरमेघनु वर्णन.		१९

### यजुर्वेदनु अरण्यक.

५३ अनुस्तरणीनो विधि		२०
५४ पारिभाषिक शब्द.		२१
५५ अनुस्तरणीना मंत्र १ भाष्य सहित.		२१
५६ प्रेतने शुद्धे लेई जवु ते विशे मंत्र २		२१
५७ प्रेत गाढामा लेई जवानो मंत्र ३		२१
५८ गोहनन मंत्र ४ भारद्वाज सूत्र सहित.		२१
५९ खीने खसेडवानो अने पुनर्विवाहना उपदेशनो मंत्र ५		२२
६० गोरुसर्ग मंत्र ६		२२
६१ वार्षमामा मास भोजन करवानो मंत्र.		२२
६२ चार वेद शी रीते धया.		२२

### गुरु यजुर्वेद संवित्ता.

६३ शुद्ध यजुर्वेद शी रीते उपच धयो.		२२
६४ शुद्ध यजुर्वेद वातवल्य क्षयीए प्रसीध कयों ते विषे वंद- नु वावय १		२३
६० माध्यदीनी मंविता ४० अध्याय छे तेना विषयम्		

प्रकरण	विषय	पृष्ठ.
ओलीय.		
६६ आ वेद उपर भाष्यकार थया छे तेमना नाम,	२४	
६७ पशुना पाश छोडवानो मंत्र १	२४	
६८ पशुने युपने वापवानो मंत्र २	२४	
६९ पशुनु प्रोक्षणना-मंत्र ३-४ ५	२४	
७० वपायाग. ६	२४	
७१ अध्यमेधमा अथ अने राणीनुं संवेशन विधि ७ - -	२९	
७२ उपहासिक भाषण ८०९-१०	२९	
७३ अध्यमेधनुं वर्णन ११-थी ३१ सुधी अनेक पशुनुं विधान.	२९	
७४ पुष्टमेध ३२	२७	
७५ पितृमेध ३३	२७	
७६ पशु शब्दनो अर्थ.	२९	
७७ गंगा यात्रानुं कळ अध्यमेध जेवु छे	२९	
७८ भरथ राजाए पण वावन अध्यमेध कर्या तेनी वेदमा तारीफ. ३०	३०	
<b>शतपथ ब्राह्मण.</b>		
७९ एकादश पशु विधान ३	३०	
८० शतपशु विधान.	३०	
गो पशु विधान.	३०	
<b>अथर्वणवेदनुं.</b>		
८१ पशु विभाग.	३०	
८२ यजकम.		
८३ ख्वो कोवा शुद्धे वेद भणबोनही ते विश्व भागवतनुं वचन. ३१	३१	

प्रकारण	विषय	पृष्ठ.
८४	चार वेदना चार आचार्य अने दरेकनो शाला भेद.	३१
८५	शाखाना नाम.	३२
८६	ज्ञानणने दश नाम उपनाम इत्यादि धायछे तेनीविगत.	३२
८७	ज्ञानणना पेटामा जातीभेद.	३३
८८	शुश्र पञ्चवेदना वाजसनेय शाखाना सतरभेद.	३३
८९	वेदमा जो घंथ गणाप छे तेनी विगत.	३३

## ॥ ऋग्वेद संविहिता ॥

९०	ऋग्वेद संविहितामाना अथमेध मंत्र.	३३
९१	वेदनी नौदा कर्त्तो महा पातकछे.	३४
९२	वेदमा लख्योछे तेज धर्म ए विषे वाक्य.	३५
९३	ज्ञानदेवे वेद प्रगट कर्या ते विशे वचन,	३५
९४	सूत्रवेद प्रमाणेष्ठे ते विशे वचन.	३५
९५	स्वामीनारायणनी शीक्षापत्रीनुं वचन मतलब के सूत्र प्र- माणे ज्ञानण, वाणीआए चालवुं	३५

## ऋग्वेदनुं आश्वलायन सूत्र.

## ॥ श्रौतसूत्र ॥

९६	पशु मारवा विशे आजा. १	३६
	एक दसमा बेवार पशु कर्त्तो तेनुं वचन. ३	३६
९७	नाना प्रकारना यज्ञ अने तेना पशु. ४-५-६-७-८-९-	
९८	सुधी.	३६
९९	अथमेध. ११	३७
१००	पशु दिव्याय १२	३७

प्रकरण	विषय	पृष्ठ.
१००	उत्तर क्रतुनी विगत.	३८
१०१	अपीहोत्रीनु वर्णन.	३८
१०२	गृथ सूचमा लखेला संस्कार.	३९

## ॥ गृह्यसूत्र ॥

१०३	प्रहस्थने पशु करवानो विधि, १	३९
१०४	पशु प्रोक्षणना मंत्र २-३	९९
१०५	उपाकरण, ४-५-६	४०
१०६	वपा काढवानो मंत्र, ७-८	४०
१०७	छोकराने अन्न प्रथमज आपवानो विधि,	४१
१०८	सदरहुमा मांस खवरावानो विधि	४१
१०९	मधुपक्ति विधि.	४३
११०	अष्टका विधान पशु सहित	४३
१११	अन्यष्टका विधान पशु सहित.	४४
११२	अतेष्ठि अनुस्लरणी सहित.	४४
११३	शुलगव विधि,	४४

## आपस्तंब सूत्र

११४	मद्या मद्य (निर्जय)	४८
११५	मधुपर्क,	४९

## कात्यायन सूत्र.

११६	मधुपर्क,	४९
११७	अन्न प्राशन	४९

प्रकरण	विषय	पृष्ठ.
११८ शुलग्र.		९०
११९ भाद्र विष.		९०
<b>स्मृती।</b>		९१
१२० स्मृति लखनारा कविनां नाम.		९०
१२१ पश्चस्मृतिनो इतिखंड.		९१
१२२ तेनो अर्थ.		९२
१२३ याज्ञवल्क्य स्मृतिमा शु खावु शु न खावु तेनो विचार.		९३
१२४ याज्ञवल्क्य स्मृतिमा भाद्रने दिष्टे ब्राह्मणने शो रीते भो- जन करावु अने पितृनो तृष्णि शो रीते याय ते विते दि- चार.		९०
१२५ याज्ञवल्क्य स्मृतिमा विनायक शाति विषे लख्यु छे ते		९०
१२६ याज्ञवल्क्ये मह यज्ञ विषे लख्यु छे ते.		९१
<b>पुराण।</b>		९२
१२७ मस्स पुराणमा श्राध विषि लख्यो छे ते		९१
१२८ मार्कोदय पुराणतर गत चंद्रीपात्रमा पूजा प्रकार लख्यो छे ते.		९३
<b>भारत।</b>		९४
१२९ भारत इतिहासमाना केदला एक श्लोक.		९३
१३० भगवत् गीताना वचनो.		९४
<b>रामायण।</b>		९५
१३१ अथाम रामायणमु वचन.		९५

करण	विषय	पृष्ठ.
-----	------	--------

### निवंध ग्रंथ.

१३२ महानिवंध कौस्तुभमा मधुपर्फ लखुं छे ते	६९
१३३ श्राद्ध विवेकमा श्राद्धने दिवसे शु खायु तेनी पंचित	६९

### नाटक.

१३४ उत्तर रामधरित्रमा वशिष्ठ अने तेना शिष्यनो संवाद.	६८
--	----

### पुराण.

१३५ पद्मपुराणमा रामाश्रमेधनी कथा छे तेमाना श्लोक	६९
--	----

### विविध विषय.

१३६ संस्कृत ग्रंथना धरण प्रकार	७०
१३७ मंत्र शब्दनो अर्थ	७०
चरण शब्दनो अर्थ.	७०
१३८ आश्वलायन कोण हतो ते विषे ईतिहास	७०
१३९ गीत गोविंदकाव्यमा बौध अवतारनु वर्णन	७१
१४० दया धर्मनो फेलाव	७२
१४१ गर्भाधाननो मत्र ऋग्वेदनो	७२
१४२ कर्मकाडनी निंदा उपनीषदमा अने गीतामा	७३
१४३ अनेक देवनी भक्तिनी निंदा	७४
१४४ यज्ञोपवित धारणे करवानु कारण	७४
१४५ स्वामीनारायणनी शोधापचीमा सत्शाख ठराव्या छे तेना नाम	७५

## शंकर. विजय.

१४६	शंकरविजयमा शंकर स्तामीनो अने शावकनो दया पर्म विषेसंवाद थयो छे ते.	७५
१४७	शंकरस्तामी देवि उपासक हना ते विषेशंकरविजय यंथनो दाखलो.	७७
१४८	बौद्ध लोकोने मार्या बाबत शंकरविजयनो दाखलो.	७७
१४९	जैन देहेरामा अने अपाशारामा जवा विषेशिष्ठ.	७८
१५०	भक्तिमार्ग निकल्यो ते बाबत ईतिहास.	७८
१५१	हरिनाम महात्म	७८
१५२	शंकराचार्यनो मत,	७९
१५३	कळीयुगनुं महात्म	८०
१५४	यज्ञविषेशुकाराम साखुनुं अभंग	८०
१५५	कळीयुगमा न करवाना पर्म	८१
१५६	उपर लखेला पर्ममार्थी केटलाएक चालेछे	८२
१५७	हाल कळीयुगछे के नर्थी ते विषेशिष्ठ	८५
१५८	कळीयुगमा पर्म केरवानुं कारण	८६
१५९	हालना पर्मनो स्थिति	८८
१६०	बेहुद्धिए बनावेलाछे के इधरे बनावेला छे ते विषेशिष्ठ	८९
१६१	अनेक देवताने मुक्ती ब्रह्मशुंछे ते जाणवा विषेशिष्ठ उपनिषदना वारयो	९१
१६२	आधलापन सत्रमा देवतर्पण लस्युछे तेनी मादो	९१

प्रकरण	विषय	पृष्ठ.
१८३ शतसाहित्रिय मंत्रमा रुद्रदेवनुं वर्णनछे अने रुद्रनी प्रार्थनाछे तेने नमक ने घमक एवं कहेछे तेनो नमुनो		८९
१८४ जलदेवे यज्ञनी उपत्ती करी अने यज्ञनो प्रसाद खाय ते मुक्ति पामे ते विश्वे गोतानुं चन.		९२
१८५ अनेक मत्तनी उत्तपत्ती महि मनमा बतावी छे ते		९२
१८६ प्राचीनकाळमा चण वेद हता तेनो पुरावो.		९३
१८७ चारखण्ड परमश्वरना चार अंगमाथी निकलचा तेनुं प्रमाण.	९३	
१८८ गोतामां पण चण वेद कष्टाछे तेनुं प्रमाण.		९३
१८९ ऊपनीयदमा भर्थर्व वेदने पुछडु कस्युंछे ते वाक्य		९३
१९० वैधर्यमिवालाए वेद उपर दोष मुक्योछे ते		९४
१९१ वेदमा सर्वनुं भनन		९४
१९२ वेदमा वपायागनो मंत्र		९४
१९३ शब्दु अने चोर नाशनो भंत्र		९४
१९४ शड्शास्त्रनी उत्तपत्ती		९५
१९५ शीव गोतामा कर्मनी निंदा		९५
१९६ प्राकृत कवि तुकारामनो नात विश्वे मत		९५
१९७ शुद्धादिकने पर्मार्थ मेळवाने हरकत नथी ते विश्वे गोतानुं वाक्य		९६
१९८ पूर्वयगमा एक नात हती ते विश्वे भागवतनो क्षोक		९६
१९९ भक्तिमार्गनी उपत्ती अने अनेक देवनी उपासना		९७
२०० सात्त्विक, राजस, ने तामस यंथ		९८
२०१ वैष्णव मत्तनी प्रशंसा		९८

प्रकरण	विषय	पृष्ठ.
१८२ शैवमत्तनो प्रशंसा	-	१००
१८३ अनेक कथिता अनेक मत	-	१०२
१८४ वेद शिवाय स्फटी मार्गमा हिंसा धाय छे तेनु कारण,	-	१०३
१८५ शिखा वंधननो मंत्र	-	१०४
१८६ बब्ली मागानार देवोनुं वर्णन	-	१०५
१८७ बौध अवतारनुं वर्णन	-	१०६
१८८ सलवादीनुं वर्णन	-	१०७

---

# • निगमप्रकाश यंथना परिशिष्टनी अनुक्रमणिका.

प्रकरण

पृष्ठ.

१ वेदनो अभिप्राय, .....	१
२ वृपावतार अने कल्पितुग, .....	१
३ भारतनो काल अने अभिप्राय.....	१
४ वेद परमेश्वरना मोहर्थी निकलनो ते विषे सायनाचार्यनु वचन. ....	२

## सामवेद.

५ ताण्ड्य महा ब्राह्मण, सामवेदनो यंथ छे तेमां पश्च लख्या छे तेनि याद,.....	३
६ विर्वर्णनु कर्म एक छे, विर्वर्ण एटले ब्राह्मण, क्षति, गणीया, ४	४
७ सामवेदना ताण्ड्य मटा ब्राह्मणमाथि काढेला वचनो, .....	४
८ पश्चनो इतिहास, .....	५
९ सदरहु वचनोना अर्थ.....	५

## अथर्ववेद.

१० अथर्ववेदना गोप्य ब्राह्मणमाथि काढेला वचनो,.....	६
--	---

## ऋग्वेद.

११ ऋग्वेदना आश्वलायन सूत्रमाथि काढेला वचनो, .....	६
१२ सदरहु वचनोना अर्थ .....	७

## सामवेद.

१३ सामवेदनु लालायन ऋषीना सूत्रमाथि काढेला वचनो ..	८
---	---

३२	कर्मथी चित्तनी शुद्धी धूयछे के नहीं तेजो विचार.....	२६
३३	भारतनो अभिप्राय.....	२६
३४	त्यागी अने भोगी सखा छे एम ठराव्युं ते विशे वचन, २७	
३५	सुदीना जोर विशे.....	२७
३६	मेध्य विशे विचार.....	२८
३७	अनन्नो तोटो हतो माटे कधी लोक हिंसा करता एम कोइ पांडित बोले छे ते विशे विचार छे,.....	२८
३८	गुजरातमां वैदिक हिंसा बंध थइ तेनुं खरु कारण,.....	२९
३९	मूर्ति पूजन विशे विचार .....	२९
४०	वलभाचार्ये पसंद करेला शास्त्री, .....	३०
४१	शास्त्र सारु कियुं, अने नठारु कियुं, एनो निश्चय कर- वाने बुद्धि शिवाय बोजुं साधन नयी, .....	३१
४२	वेदांतिनो मत एवो छे के सर्व ज्ञेय समजतुं, कोइनामां दोष काढवो नहीं, .....	३२
४३	सदहुं मतनुं व्यर्थत्व, .....	३२
४४	ब्रत अने दान विशे, .....	३२
४५	ब्रतनी कथाना नमुना,.....	३२
४६	पुराणकथानु सार .....	३३
४७	संस्कृत पांडितोनुं भोक्षियापणु .....	३४
४८	दानप्रकर्ण .....	३४
४९	ब्रतप्रकर्ण .....	३५
५०	ब्रतदेवता.....	३५

११	कल्पियुग विषे निर्णय .....	३७
१२	श्राद्धप्रसर्ण .....	३७
१३	क्रष्णव्रण .....	३८
१४	ऋषेदना मंत्र .....	३९
१५	देवयज्ञ पितृयज्ञ ब्रह्मयज्ञ .....	३९
१६	दक्षणमार्ग अने वाममार्ग .....	४०
१७	दौव अने वैष्णव प्रस्थान .....	४०
१८	प्राचीन भूक्ते अर्वाचीन वेदांत मन .....	४०

# निगमप्रकाशनी प्रस्तावनानी अनुक्रमणिका।

प्रकरण	विषय	पृष्ठ.
१	हिंदु धर्मना चण काढ.....	२
२	आ यंथनो हेतु.....	२
३	मंत्रनु सामर्थ्य.....	४
४	मंत्रनु सामर्थ्य शार्थी घटी गयु.....	५
५	वेदनुं प्राचीनपणु.....	५
६	संस्कृत विद्याना वर्म.....	५
७	वेदमा धर्म शो छे.....	६
८	प्राचीन वर्णी रजानी कथा.....	७
९	आगळ यत थएला तेनी जगाओ.....	७
१०	वेदनो अने बुधनी त्रुकरार शा माटे पडि.....	७
११	वेदमा किया देव छे अने वेदना विभाग.....	८
१२	उपनिषदनो सिद्धात.....	८
१३	वे मिमास शाख पूर्व अने उच्चर.....	९
१४	भक्ति मार्ग.....	९
१५	बाम अने दक्षण मार्ग.....	९
१६	ऋणीनुं वर्णन.....	१०
१७	हिंसा विषे भागवतनो मत.....	११
१८	सख्युग साह के कछियुग साह.....	१२
१९	संकोच वाच्य विश्व विचार.....	१२

१०	साप्रतनी ज्ञानोनी स्थिति.....	१०
२१	हाल केवो ज्ञान मास खाय छे.....	१२
२२	हिंसा बंध करनारा मुख्य श्रावक अने वैष्णव छे.....	१३
२३	धर्मनो भाष्यार तर्क अने कथा.....	१३
२४	धर्म पुस्तको लखनारा विश्वे विचार.....	१४
२५	सुधारो न करवानु कारण.....	१४
२६	यज्ञयी देश पश्चिम याय छे.....	१४
२७	कल्प भेद विश्वे तर्क.....	१५
२८	यज्ञनु महात्म.....	१५
२९	विद्योनो अधिकार छिनाव्यो ते शी रीते.....	१६
३०	पुर्वविवाह विश्वे अर्थवदेनो अभिप्राय.....	१७
३१	पूर्व पुगमा लममा मुहूर्त काढता नहता.....	१७
३२	नाहानी छोडिनु लम करता नहीता.....	१८
३३	चारे दर्जमा कन्योनो व्यवहार हतो.....	१८
३४	खिमोने शुद्ध ठरावी.....	१८
३५	हिंदुस्थानमा प्राचीन लोक.....	१८
३६	स्त्रीयी धर्म शास्त्र अने बोलियी व्याकरण याय छे.....	१९
३७	कर्म सुक्ष्मा करता अड्डु करे तो सारु.....	१९
३८	अग्रान काल प्राक्रम काल अने निवृत्ति काल.....	१९
३९	जबरदल अपर्म करे तेनो दोष नयी.....	२०
४०	कारण तिना कायदो धतो नयी.....	२१
४१	विपदा सौर विश्वे विचार.....	२१



६४	हिंदुस्थाननी विशा,.....	३९
६५	दया पर्मवाणि कर्मने मुख्य गणे छे.....	३९
६६	कृतिर्मा.न.करवाना पर्म,.....	३९
६७	पराजार.कृषी वैष्णव,हता, .....	४०
६८	अमिहोच वंध करवानुं कारण,.....	४०
६९	गुजरात विवाय बीजा प्राचमा यज्ञ करे छे.....	४१
७०	गोहिंसन्नो इतिहास,.....	४१
७१	सन्यास लेवानुं वंध कन्तु.तेनुं कारण, .....	४२
७२	श्राद्धमा मांस.साका विषे साधक बाधक वचनो, .....	४३
७३	दोपरे साथे लप्त रुरवामी चाल वंध थद तेनुं कारण,....	४४
७४	खियी विजो पृति थाय ते विषे क्रमेदना मंत्र, .....	४५
७५	द्वादश.पुत्र,	४५
७६	खीने उपमयन करवा विषे वचन.....	४६
७७	खीने स्वतंत्रता न आपवा विशे, .....	४६
७८	देव करता न्नालण मोटा .....	४७
७९	कष्टि शब्दनो अर्थ, .....	४७
८०	दिज शब्दनो अर्थ,.....	४८
८१	यवन असलमा धनी हता, .....	४८
८२	क्षत्रियनुं श्रेष्ठता.....	४९
८३	शिवनी अने विष्णुमी जाति, .....	४९
८४	रात्याभिषेकमा राजाने मथ आपनानो मंत्र,.....	५०
८५	गनमे जपनी वेदमा कथा, .....	५०

८६	वेदमां पिशाचनामंत्र, .....	५१
८७	वेदना मंत्र शत्रु अने रोग नाशनार्थ प्रार्थना छे.....	५१
८८	वेदमा केटलिएक कथा भिज्ञ भिज्ञ प्रकारयी लखी छे. ५२	
८९	मद्य होमवानो वेदनो मंत्र, .....	५२
९०	सर्व धारवा विशे वेदनो मंत्र.....	५३
९१	सर्व नाश करवा विषे मंत्र, .....	५३
९२	कुत्रां नाश करवा विषे मंत्र.....	५४
९३	सदाचारनु वर्णन, .....	५५
९४	अपनिषदमां ज्ञान उपदेश छे ते विशे वचनो.....	५५
९५	संस्कृत यंथमां सदा चरण विषे वचनो .....	५७
९६	हलकी बाबतो मोटी थइ पडि छे.....	५०
९७	भागवत् संप्रदाय,.....	५१
९८	मामानि कन्या करवा विषे क्रमवेदनो मंत्र,.....	५२
९९	जुलमनु वर्णन,.....	६३
१००	यजुर्वेदमां नरमेध लख्यो छे तेनु वर्णन, .....	६५
१०१	कालिका पुराणनो स्थिराध्याय, .....	६६
१०२	अनेक शास्त्रयी अनेक तर्क थया,.....	६९
१०३	अनेक देव थया,.....	६९
१०४	अवश्य कर्म कियु, .....	७०
१०५	भक्ति मार्गमां ज्ञातिनो आधार नयी,.....	७१
१०६	गुण अने कर्मयी ज्ञाति समजबी,.....	७१
१०७	ज्ञायार्पण करवानी रुति,.....	७१

- १०८ व्रत नियम करवा विशे म्लेछने अधिकार छे..... ७२  
 १०९ श्रावक लोक स्थियोने सन्यासि करेछे..... ७२  
 ११० वेदना कहीं केटलाएक, सत्रि अने शुद्र छे..... ७३  
 १११ प्राचीन अनुष्ठानों बंध थया छे तो विशे..... ७३  
 ११२ जे कर्म करवू नहीं तेनो विधि वाचता पुण्य धारणे के नहीं. ७३  
 ११३ स्वामि नारायणनो मत..... ७४  
 ११४ तैगबे अने बडघबे ए वे जातना रामानुज ..... ७४  
 ११५ देवीनो पिठ एठले स्थानक ..... ७४  
 ११६ हाल कल्युग छे के नहीं ? ..... ७५  
 ११७ फरी सख्युग भावज्ञ तरे नंध पढेला कुमा फरी चलावरो  
     के केम ? ..... ७५
-

# नीगम प्रकाश.

## वैदीक कर्मकान्ड.

हिदुस्तानमा प्राचीनकालयो वेदमा लखेलो धर्म चाल्यो आव्यौ छे. अने वेदना अभीमानी अने धर्माध्यक्ष जे ब्राह्मण वेदने घण्टुज मान आपेछे अने केटलाएक वेदनुं पारायण करावीने साभब्लेछे, नै केटलाएक मरती वखते वेदमो धोप करावेछे, अने ब्राह्मणनुं मान पण वेद भण्यार्थीज छे. भगवान श्रीकृष्ण एम बोह्या छे कैः—

देवाधीनं जगत्सर्वं त्राधीनं च दैवतं  
ते मंत्र ब्राह्मणाः धीनां ब्राह्मणो मम दैवतं

वेदना अधीकारी ब्राह्मण बीजा कोड वर्णने वेद भणवानो अ-  
धीकारी नथी कारण मनु कहेछे के—

अविद्वांश्वैव विद्वा श्व ब्राह्मणो दैवतं महत्  
प्रणीत श्वा प्रणीत श्वयथा मिदैवतं महत् ॥

मनु. अध्या ९ श्लोक ३१७

बीजे ठेकाणे एवं लख्युं छे कैः—

पृथिव्यां यानि तीर्थानि तानि सर्वानि सागरे  
सागरे सर्वतीर्थानि पदे विग्रस्य दक्षिणे

आ भापार्थी केटलाएक धर्म नीष्टलौक ब्राह्मणना जमणा प..

# नीगम प्रकाश.

## वैदीक कर्मकान्ड.

हिंदुस्तानमां प्राचीनकालथी वेदमालखेलो धर्म चाल्यो आव्यो छे. अने वेदना अभीमानी अने धर्माध्यक्ष जो ब्राह्मण वेदने घणुंज मान आपेछे अने केटलाएक वेदनुं पारायण करावीने सांभब्देछे, नै केटलाएक भरती वस्त्रे वेदनो घोष करावेछे, अने ब्राह्मणनुं मान पण वेद भण्याथीज छे. भगवान श्रीकृष्ण एम बोल्या छे के:—

देवाधीनं जगत्सर्वमंत्राधीनं च दैवतं  
तं मंत्रब्राह्मणाः धीनां ब्राह्मणो मम दैवतं

वेदना अधीकारी ब्राह्मण बीजा कोइ वर्णने वेद भणवानो अ-  
धीकारी नयी कारण मनु कहेछे के:—

अविद्वांश्चैव विद्वा श्वब्राह्मणो दैवतं महत्  
प्रणीतश्चाप्रणीतश्चयथाग्निदैवतं महत् ॥

मनु. अध्या ९ क्षोक ३१७

जोजे ठेकाणे ऐं लख्यु छे के:—

पृथिव्यां यानि तीर्थानि तानि सर्वानि सागरे  
सागरे सर्वतीर्थानि पदे विग्रस्य दक्षिणे

आ भाषाखी केटलाएक धर्म नीष्टलोक ब्राह्मणना जमणा प..

गनो अंगुठो पाणीयी धोइने ते पाणी पीएछे, ते बसत जे श्वोक  
बोलेछे ते नीचे मुजव —

आधिव्याधीहरंनृणांमृत्युदामिद्रनाशनं  
श्रीपुष्टिकीर्तिदंवंदेविप्रश्रीपादपंकजं ॥१॥

विग्रौघदर्शनाक्षिप्रंक्षियंतेपापराशयः  
वंदनात्मंगलावासिर्दर्चनाअच्युतंपदं ॥२॥

समस्तसंपत्समवासिहेतवेसमुत्खितापः  
कुलधूमकेतवः॥ अपारसंसारसमुद्रसेतवः  
पुनंतुमांत्राह्याणपादपांसवः ॥३॥

आपब्रह्मांतसहस्रभानवःसमीहितार्थीपण  
कामधेनवः॥ समस्ततीर्थांबुपवित्र  
मूर्तयोरक्षांतुमात्रांह्याणपादपांसवः ॥४॥

ब्राह्मणनुं शील गुण केवा छै ते जोवानी जरुर नयी कारण —

दुःशीलोपिद्रिजःपूड्योननुशुद्रोजितोंद्रियः  
कःपरित्यज्यगांदुष्टांदुहेच्छीलवतींखरीं ॥

पारशर पर्मशाख अ०८ श्वोक २५

ब्राह्मणने भोजन आपवान् पुण्य शास्त्रमा यहु मोटु वर्णन कर्युछे

ब्राह्मणस्यमुख्यक्षेत्रांनिस्त्परमकंटकं

वापयेत्सर्वबीजानीसारुपीः सार्वकामिकी

पाराशर० थ० १ श्लोक ९९

वेदमा ब्राह्मणनुं माहात्म हेठल लख्या प्रमाणे वर्णन करेलुंछे—

यावतीवैदेवतास्ता: सर्ववेदविदिब्राह्मणेव सं  
न्तिस्माद् ब्राह्मणेभ्योवेदविद्योदीदेवेन मस्कुर्या  
ब्राश्लीलंकीर्तयेदेताएवदेवताः प्रीणाति ॥

तैन्निरीये आरण्यके २ प्रपाठक १५ अनुवाक ९ मंत्र

अर्थ— सर्वदेव ब्राह्मणना शरीरमा रहेछे, पाटे नीत्य ब्राह्मणनो  
सनमान करवो, ने तेनी नौदा न करवी, तेथी तेने आगे रहेला देव  
बधा प्रसंन थायछे, वीजे ठेकाणे वळी एम लखेछे के—

**ब्राह्मणोस्यमुखमासिन्**

तै० था० ३ प्रपाठक १२ अनुवाक १३ मंत्र

एठले ब्राह्मण छे, ते परमेश्वरना मुखमाथी उत्पन् थया छे,  
ब्राह्मणनुं कर्म ऐवं लख्यु छे के—

वेदोदितं स्वकं कर्मनित्यं कूर्यादतं द्रितः  
तद्विकुर्वन् यथाशक्तिप्राप्नोति परमांगतिं

मनु० ४--१४

वेदमेव सदा भ्यस्येस्तपस्तद्विजोतमः  
वेदाभ्यासो हि विप्रस्यतपः परमिहोच्यते

मनु० २--१९९,

अर्थ—वेदमा लखिलुं कर्म हमेशां करखुं तेथी ब्राह्मणनी सदगती पायछे. वेद भणवो एज ब्राह्मणनुं मुख्य तप छे.

बीजे ठेकाणे एवुं लख्यु छे कोः—

सत्यंसत्यंपुनसत्यंमुधृत्यभुजमुच्यते

वेदाच्छास्यपरंनास्तिनदेवःकेशवात्परं

अर्थ—वेदयी बीजुं शास्त्र नयो अने वीणु शविय बीजो मोटो देव नहाँ ए धर्वार व्यासजी कहेछे.

वेदनी जे नाँदा करेछे तेमने नास्तीक गण्याछे. वेदना नाम घणाछे. १. वेद २. श्रुति. ३. छंद. ४. व्रंति. ५. आमनाय. ६. मंत्र. ७. चीवीध्या. ८. निगम. ईत्यादी. ऐ यंथ मुख्य गणायछे. तेभी उत्तरता सुत्र अने संहीता आ बेने स्मृतीयो कहेछे. ए यंथमां बे खर्मछे. एक प्रवृत्ती अने नीवृत्ती. प्रवृत्तीनुं बीजुं नाम कर्म कान्ड. अने नीवृत्तीनुं बीजुं नाम ज्ञान कान्ड ए बीशो शास्त्रमां अभीप्राय भोचे लख्या मुजबछे:—

नमांसभक्षणेदापोनमद्येनचमैथुने

प्रवृत्तिलक्षणोर्धर्मनिवृत्तिस्तुमहाफला ॥ मनु,

लोकेव्यवायामिपमद्यसेवाजंतोस्तिनित्या

नहितचचोदना । व्यवस्थितिःस्तत्राविवाह

यज्ञेसुराग्रहेरासुनिवृत्तिरिष्टा ॥ भागवत ॥

सन्यासाःत्कर्मयोगश्वनिःश्रेयसकराउभौ

तयोस्तु कर्मसन्यासात्कर्मयोगोविशिष्यते ॥ गीता ॥ ४-२

यज्ञदानतपः कर्मनत्याज्यं कार्यमेवतत् ॥ गीता ॥ १८-४

ए प्रमाणे केटलाक शास्त्रमां निवृत्तिने वरोष कहीछे. ने केटलाक शास्त्रमां प्रवृत्तिने वरोष कहीछे. सर्व यंथमां श्रुतीनु प्रमाण मोटुं गणायछे. कारणः—

श्रुतिस्मृतिपुराणां नां विरोधो यत्र जायते

तत्र श्रौतं प्रमाणं तु द्वयो है स्मृतिर्वरा ॥

पुराणश्च खल्विदं नशक्तो ति श्रुतिं स्मृतिश्च ब्राह्मितुम् ॥

श्रुतिं ० ॥ इत्यादिव्यासस्मरणात् ॥

गोभिलियसूत्र १ प्र. ४ कांड.

जुदा जुदा युगना जुदा जुदा धर्मछे. एम समर्जने कर्म कान्डने ठेकाणे उपासना कान्ड उत्पन कर्योछे तेमां वे तडछे थेक दधान अने बीजु वाम. ते उपरथी केटलाएक कर्मने पुर्व युगनां कर्म कहेछे. पण कब्जीयुगना ३६००० वर्ष सुधी पुर्वयुगनो संध्यांश गणायछे. एमानां ४९७३ वर्ष गयांछे माटे बाकीनां रखा ते वीत्या सुधी पुर्व युगनां धर्म चालवाना तेनुं प्रमाणः—

कृतं त्रेताहापरं चकलिश्चोते च तु युगं

द्विव्यैर्ददशभिर्वैः सावधानं निस्तुष्टिर्तं

चत्वारीन्नीणीद्वै चैकं कृतादिपुयथाक्रमं

संख्यातानि सहस्राणीद्विगुणानि शताता

निच ॥ सध्यांश्च योरंतरेण यः कालः शतसं

। । ख्ययोः ॥ तमेवाहुर्युगंतज्ञायन्नधर्मोविधीयते ॥

भागवत ३ स्कृप्त.

### श्रीधरीव्याख्या.

युगस्यादौसंध्याअंतेसंध्याशःउक्तानिशतानीसंख्या-  
गवालंभादिधर्मविशेषोयन्नविधीयतइत्यर्थः ॥

### विजयध्वजी व्याख्या.

शतसंख्ययोःसंध्यासंध्याशयोर्तस्योयःकालःतत्र  
तत्तद्युगधर्मोविधियते      । । । ।  
सहस्रमेकंवर्णाणांततःकलियुगंस्मृतं  
तस्यवर्पशतेसंधिःसध्यांशश्वततःपरम् ॥ भारत-वनपर्व.

ए प्रमाणे अन्य पुराणमाणण अेज वात लखीचे माटे कर्मकाढ  
ते शु अे वीषे विचार उत्पन यायचे

हरेक कर्मने आरभे संकल्प यायचे तेमा—

श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थे  
आ मुजव वोलायचे अने अते

तत्सत्त्वद्वार्णमस्तु

ए प्रमाणे ब्रह्मार्णवोलेचे शृंती एटले—

मन्त्रव्राह्मणयोवेदा

होता ए बे, तेमां सुत्र एतो वेद तुल्य गणायछे तेथी उतरती स्मृतीयो  
तेमा मनुस्मृती मुख्य गणायछे. कारण श्रूतीमा मनुनं वर्णनं कर्यु  
छे ते ए प्रमाणे:—

**मनुवैयत्किंचिदवदतद्वेष्टिंताया ॥ छांदोध्यब्राह्मणे ॥**

**मनुवर्धिपरितानुयास्मृतिःसानशस्यते ॥ बृहस्पतिः ॥**

वेदना मंत्रवडे कर्णने ब्राह्मणोने श्राप अने आशीर्वद आपवानुं  
चहु मोटुं सामर्थ हतुं एवुं पुराणोमा लख्युँछे. जेसके ब्राह्मणना श्रा-  
पथी सगरराजानो वंश वळी गयो; दुर्वासना श्रापथी विष्णुने अवतार  
लेवा पड्या; दक्षना श्रापथी शीवनो यज्ञभाग बंध थयो; गौतमना  
श्रापथी इंद्र दुःख पाय्यो; मान्द्रध्य क्षषीना श्रापथी यमने चास पड्यो;  
अगस्तीयी समुद्र सुकाइ गयो; जन्मु क्षपीए भागीरथीने पगमा, घाली; प्-  
रीक्षतराजाने एक ब्राह्मणनो श्राप थयो तेथी ते सात दीवसमा मरी ग-  
यो; दशरथने श्राप थयो तेथी रामनो जन्म थयो; यादवकुब्जने ऐक ब्रा-  
ह्मणनो श्राप थयो तेथी तेओ वधा मरी गया; जमदग्नीना श्रापथी स-  
हस्तार्जुन, मरी गयो; वामनना श्रापथी वळी पाताळे गयो; नंहुपराजा  
सर्व थयो; अने बेनेराजा श्रापथी दग्ध थयो. आ प्रमाणे हजारो  
रुथा अने ब्राह्मणनुं महात्म श्रुती, स्मृती, पुराणमा लख्युँ छे. ब्रा-  
ह्मणनो द्वेष न करवो:—

**ब्रह्मद्वेषो कुलक्षयः**

ब्राह्मणनी हवा रुर्वी ए महापातरमा गण्युँछे. ब्राह्मणनी मीलकृत  
कोइ रागा रूबा चोरे लेवी नहीं. वधाए ब्राह्मणनी सेवा रुरी सन-  
पान रुखुं. दान रुहुं ते पण ब्राह्मणने रुहुं. ब्राह्मणनुं प्रतीपालन

करवुं ए राजानो धर्म; पृथ्वी उपर ब्राह्मण देव गणायछे तेथी तेममे  
भूदेव कहेछे.

ब्राह्मणनो देह सोळ संस्कारथकी पवित्र थायछे. अने ए संस्कार  
थया पछी तेने द्वीज कहेछे. द्वीज एटले फरी अवतार थएलो; पेहे-  
ला जन्मना उत्पन्न करता माता पीता अने गायत्री तथा गुरु द्वीजा  
जन्मना उत्पन्न करता; ए द्वीज थया पछी ब्राह्मणने श्रुत्युक्त कर्म ए-  
टले वेदमां कहेला कर्मनो अधिकार मळेछे. प्रथम ऋगवेदनो ऐत-  
रेय ब्राह्मण लेइने तेमां ह्वर्ग प्राप्त्यर्थ जे वीधी लखी छे तेनु नाम यज्ञ.  
वधा यज्ञनी प्रकर्ती अपीष्टोम अने ए प्रकर्तो उपरथी वीकर्ती घणी  
थायछे तेना नामोः—

### सप्तसंस्था.

१ सोळशी २ अतिरात्र ३ वाजपेय  
४ अत्यग्नीष्टोम ५ असुर्याम ६ उकथ ७ ज्योतिष्टोम

उत्तर क्रन्तु.

१ सत्र २ राजसूय ३ सर्वतोमुख ४ पौडरीक  
इत्यादि.

दाकतर हौ साहेबे. ऐतरेय ब्राह्मण शुद्ध करीने छाप्युछे, ते के-  
लवणी खातामां चालेछे. तेमां यज्ञमंडपनो नकशो बतावेलोछे तेमां  
अग्नीनु स्थापन, ऋत्विजनु वर्णन एटले नेमणुको शी रिते थायछे  
से बताव्युछे:—ते आ प्रमाणे.

आभी पुरोहित

पावे वस्थाने

अनुष्टाने

२ आहवनी १ अवर्यु

१ इष्मा

१ दक्षिणायिईष्टि

२ गार्हपत्य	२ प्रतिप्रस्थाता	२ वर्ही	२ प्रायणीयझटि
३ दक्षीणामनी	३ आग्नीधि	३ धृष्णी	३ आतिभव्हईटि
४ शामित्रानि	४ उम्रेता	४ सुचा	४ घर्म
	५ होता	५ चमस	५ अग्नेषोमिया
	६ मैत्रावस्थण	६ यावण	६ पशु
	७ ब्राह्मणाछंसी	७ स्वसु	७ सूत्या
८ नेष्टा	८ उपर्व		८ प्रातःसवन
९ पोता	९ द्रोणकलश		९ माध्यानसवन
१० आछावक	१० वायव्यकलश	१० तृतीयसवन	
११ उद्धाता	११ ग्रह	११ सोमपान	
१२ प्रस्तोता	१२ इडसुनु	१२ आश्विनपशु	
१३ प्रतिहर्ता	१३ स्वधीति	१३ ऐद्राग्नपशु	
१४ सुब्रह्मण्य	१४ पुरोडाश	१४ अवभृत	
१५ यावस्तोता	१५ पुतभृता	१५ वस्त्रणोटि	
१६ ब्रह्मा	१६ यज्ञशाला	१६ वपायाग	
१७ सदस्य	१७ महावेदि	१७ पशुउपाकरण	
१८ शमिता	१८ वहिर्वेदी	१८ पशालंभनं	
१९ सोमक्षी	१९ अंतर्वेदी		
	२० शामित्रशाला		
	२१ चात्वार		
	२२ संचार		
	२३ प्रामंश		
	२४ सद		
	२५ मार्गालिया		

११ अमिभ्रियामार

१२ पत्नीशाला

१३ द्वार

१४ प्रतिग्रह

१५ यूप

१६ हविर्धन

१७ शालामुखी

१८ घर्म

‘ए प्रमाणे यज्ञनी क्रीया अने सामग्री बतावोछे. द्वितीय पंचिकाने आरंभे एवं लख्युं छेकोः—

२ यज्ञेनवैदेवाउध्वाःस्वर्गलोकमायस्ते  
त्रिभयुरिमन् नोदृष्ट्वामनुज्याश्चऋप  
यश्चानुप्रज्ञास्यातिति

द्वितीय पंचिका प्रथम खंड

मतलबः—देवपक्ष करीने सर्वे गया तेथी मनुष्य अने ऋषीए यज्ञ करवो अने युप स्थापन करवो. युप एटले यज्ञार्थ जे पशु आण्यो होय तेन बाधवानी धाभलो. पछी ते पशुने शमन करवानी आज्ञा लखीछे—

२ दैव्याःशमितारआरभध्वमुतमनुज्याइत्याह०  
उत्तोचनिंअस्यपदोनिधत्तात्सूर्यंचक्षुर्गमयता  
द्वातंप्राणमन्ववःसृजतांदंतरिक्षमसुंदिशः

ओन्नपृथिवींशरीर०

अन्वेनमातामन्यतामनुपितानुभ्राता

सग्रह्योऽनुसखासयुध्यद्विजनिवैरे

वैनतत्समनुमतमालमंत्. ६ खंड

ए प्रमाणे आ वेद मन्त्रयो पशुना मावाप पासेयी आ पशु अमने आपो  
एवी प्रार्थना करे छे खार पछी अधर्यु जे मुख्य पुरोहित तेनी आज्ञा-  
यी पशुने शामित्र शालामा लेइ जइने उत्तरतरफ एना पग राखीने श-  
मीता एने मुष्टी वडे एनो जीव ले छे, खार पछी स्वपीती एटले सुरो  
अने इडा सुनु एटले लाकडाना ढीमचा उपर ते पशुने लेइ तेने-  
फाडी तेनुं मास कहाडे छे एनो होम करिने जे बाकी रहे तेनी व-  
धा पुरोहितमा वहेचण करे छे ते निचे प्रमाणे.

३ अथातःपशोर्विभक्तिस्तस्यविभागं

वद्मामोहनुसजिव्हेग्रस्तोतुः०७४८चिका१ खंड

यज्ञ पशुने देवताओ स्वर्गमा लेइ जाय छे, ते विशे एवं लख्यु छे के

४ तदेवाअब्रुवन्नेहिस्त्वर्गवैत्वा

लोकंगमयिष्वामद्विति २ पं ६ खंड

पशुने काढीने एना अंग कहाडवा विशे एवं लख्यु छे के

५ वपामुत्तिवदतादंतरेवोष्माणंवारय

ध्वदिति० श्येनमस्यवक्षः छुनुता

तूप्रशासा वाहुशलादोषणीकश्यपे

वासाऽछिद्रेशोषीकवषोस्त्वेकपर्ण  
ऽष्ट्रोवंतापडविंशतिरस्यवंक्रयस्ताअ  
नुष्टयोन्वावयताद् गात्रं गात्रमस्यानुनं हृ स्वंड

अर्थ—छातीमाथी कबुतर जेवो गोबो काढवो अने कोहोवाडी  
जेवो पाठ्ठना पगमाथी वे ककडा कहाडवा अने आगलना पगमाथी  
‘ तीर जेवा कहाडवा, अने वे खभामाथी काचवा जेवा वे कहाडवा,  
अने केहेड आखी कहाडवी, अने ढोचणमाथी वे ढाल जेवा कहाडवा,  
अने आ पाशळीओमाथी अनुकमे २६ वीस ककडा कहाडवा अने ते  
वपा आखा थवा जोइथे अने जे काइ भव्यमुन्न इसादीक पदार्थनि-  
कळ्शे ते भौंयमा दाटवाने वीशे लखुछे के.

६। उवध्यगोहंपार्थिवं हृ स्वंड

होतार हेठल लख्या प्रमाणे बोलेछे.

७। अध्रिगोशमीध्वंसुशमीशमिध्वंशमीध्वमध्रिगार्त

ईतिनिबूयात् स्वंड ७

अर्थ—सारीपेटे मार्ये वाकी राखशो नहीं ए प्रमाणेछे  
रक्त रक्षसने आपगनु कह्यु छे.

८। यद्स्नारक्षः संसृजतादित्याह् स्वंड ८

पछी वपाहोम आ प्रमाणे लख्यो छे.

९। तस्यवपामुत्खद्याहरंति

वामध्वर्युः सुवेणाभिधारन्नाह स्वंड १२

આ આખ્યાન જાણવાનું ફક્ત એજ છે કે આયુષ્ય વૃદ્ધિ થાય છે.

**૧૦ સર્વમાયુરેતિયએવેદ** ૨ પંઠ ૭ ખંડ

વપાયાગનું ફક્ત નચે લખ્યા પ્રમાણે લખ્યું છે —

**૧૧ વપાયામેવહૃતાયાંસ્વર્ગોલોકઃ**

પ્રાખ્યાયતઃ ૨ પંખંડ ૧૩

**૧૨ સોऽઅશ્રેદૈવ્યોન્યાંઆહૃતિભ્યઃ**

સંભૂયહિરણ્યશરીરઊર્ધ્વઃસ્વર્ગલોકમેતિ

૨—૧૪ ખંડ

પશુનો વીભાગ કરવો તે લખ્યા પ્રમાણે ૩૬ વીભાગ કરવા જો-  
દીએ, અને એમ કરે તે સ્વર્ગ લોકમા જાયછે, અને એ પ્રમાણે વીભાગ  
કરવાની રીતાં દેવભાગ ક્રષીએ ઠરાવી તે મર્યા ગયા પછી કોઇ દેવે  
ગારિજા ઋષીને બતાવી તેનો અભ્યાસ કરવો તે વીશે એવું લખ્યું છે કે —

**૧૩ તત્સ્વર્ગાશ્વલોકાનામુર્વંતિ**

ગ્રાણેપુચૈવતસ્વર્ગેપુલોકેપુ

ગ્રાતિતિષ્ઠંતોયીત૦એતાં

પશોવિભક્તિશ્રૌતઋપિદેવ

ભાગોવિદાંચકાર૦ગ્રિજા

યવાભ્રવ્યાયોમનુષ્યઃપ્રોવાચ ૭ પંઠ ૧ ખં.

હરીભંડ નામે એક રાજા હતો તેને પુત્ર હતો નહોં માટે વરુણ  
દેવની આજા ધર્મ અર્જિગર્ત ક્રષીનો પુત્ર શુનશોષ વેચાથી લેઝેને તેને

( १४ )

मारिने यज्ञ करयानुं पायुं हनुं ते वीशो वीगतवार कथा वेदमा कहीछे:—

## १४ हरिश्चंद्रोहवैधसरेक्ष्वाको

राजाऽपुत्रभास० उप० स० ०५३-१४-१५-१६

सदरहु यथमा जेटला यज्ञ लख्याछे ते बधायमा हीसा आवेछे,  
ए वीशो मच्छ पुराणमा कहुँछे के:—

## हिंसास्वभावोयज्ञस्य

आ प्रमाणे चारे वेदमा श्रेष्ठ जे ऋगवेद तेनुं वर्णन थयुं पछी  
कृष्ण यजुर्वेद जेने तैतीर्य कहेछे अने शुक्ल यजुर्वेद एठले जेने वाज-  
सनीय कहेछे तेनो वीचार करीशुं प्रथम तैतीरीय ब्राह्मण वाचता  
एम मालुम पढेछे के आ वेदमा यज्ञयागर्ना क्रिया वहुज वधारीछे.  
अने यज्ञ अनुष्टानमा चारे वेदनो खप पढेछे तेमा यजुर्वेदनो खप  
घणो अने यजुर्वेद भणेलो जे ब्राह्मण होय तेनेज अध्ययुं नीमवामा  
आवेछे. तैतीरीय ब्राह्मणमा हेठल लख्या प्रमाणे लख्युँछे के:—

## १ दैव्याःशामितारउत्तमनुष्वाआरभव्यं

३ काड ६ अभ्याप ६ अनुवाक

२ अध्रिगोशामीध्वमूसुशामीशामीध्वम्  
शामीध्वमध्रीगो ३-६-६

## सायनाचार्यभाष्य

३ कुरंकमौसिमत्वातदुपेक्षणंमाभू

दितिपुनःपुनर्वचनम् ॥

जे प्रमाणे क्रग्वेद ब्राह्मणमा पशु मारवाने सारू आशा लखीछे  
तेज प्रमाणे उपरना वेदवाक्यमां लखीछे। तेनो मतलब के आ नी-  
दर्दयपणानुं काम छे तोपण अवश्य करवुं, वीजां वाक्यो नीचे लख्या  
प्रमाणे मळेछे:—

### ४ द्यावापृथिव्यांधेनुमालभन्ते वायव्यंवत्समालभन्ते

१ कांड २ अध्याय ५ अनुवाक.

५ एपगोसवः २---७---५

६ प्रज्ञापतिपशूनसृजत । एतेनवैदेवाजत्वानि  
जित्वा । यंकाममकामयन्तमान्पुवन् २-७-२४

७ ग्राज्ञापत्योवाअश्वः । यस्याएवदेवतायाः  
आलभ्यते । तथैवेनैसमर्धयति ३-८-३

८ यदेनैएकादशिनाःपश्चावाआलभ्यते ३-९-२

९ नानदिवत्याःपश्चावोभवन्ति । आरण्यान्  
लोकादशीनआलभ्यन्ते । अस्मैवलोकाय  
ग्राम्यापश्चावआलभ्यन्ते ॥ ३-९-३

१० ग्राम्यारश्वारण्यारश्वउभयान्पशुनालभते ३-९-३

११ तेजसावाएपत्रक्षावर्चसेव्यृध्यते।  
योअश्वमेधेननयजते ।

१२ यदजावयश्चारण्याश्चरेत्वैसर्वे

पशवः | यदूव्याइति । गव्यान्पशु

नुतमेहनालभते ॥ ३-९-९

१३ शुनःश्चतुरक्षस्यप्रहीन्ति ।

सैध्रकमुसलभवति । ३-८-४

१४ पशुभिर्वाएषव्यृध्यते । योअश्वेमधेन

यजते । छगलंकल्मापंकिकिदिवं

विदिगयमिति । त्वाप्तान्पशूनालभते । ३-९-९

१५ तानैवोभयानूप्रोणाति ३-९-१०

१६ न्राह्णेन्नाह्णमालभते ३-१-१

१७ यदष्टादाश्चिनआलभ्यन्ते ३-९-२

अर्थ—शावा पृथ्वी देवताने वास्ते पेनु एटले गायनो यज्ञ थाय  
छे. वायु देवताने वास्ते बाछडानो यज्ञ थायछे. आ प्रमाणे गायनो  
यज्ञ थायछे. प्रजापती देवे पशुने उत्पन्न कृत्या ते पशु लेइने बीजा  
देवे यज्ञ कृत्या सेखी तेमनी मनकामना पूर्ण थई छे. प्रजापती देव-  
ताने घोडां योग्य पशु छे माटे ए देवताने सारु घोडानो वध थाय  
छे ए तेम करत्यां समृद्धी मढेछे. एकादश एटले अग्निभार पशु-  
नो पण या थायछे. अनेक प्रकारना देवछे तेमने अनेक प्रकारना  
पशु यज्ञमा अपायछे. अरण्य पशु दश पण यायछे. ग्राम्य पशु पण  
गाहमा अविछे. गाममा तथा बागडामा बने ठेवाणे रहेनारा पशु यज्ञने

सारु वध करवा योग्यछे. अश्मेध यज्ञ जे करेछे ते मुं तेज वधेछे, वगडाना पशु लेइने यज्ञ करवो ते करता. गाय वीशेश योग्यछे माटे सारो दिवश होय ते दिवशो गायज लेवो. कुतरु लाकहीरी मारीने अश्वना पग तळे नाखवुं जे अश्मेध यज्ञ करेछे तेना घरमा पशुनी वृद्धी थायछे. बकरानुं बच्चुं, तीतर पक्षी, पोळो बगलो, अने काढा टपका वाळा घेटा. ए सधला लष्टा देवताने सारु यज्ञमा लेवायछे, तेणे करीने आ लोकमा तथा परलोकमा सुख मळेछे. ब्रह्म देवताने सारु ब्राह्मणनी पण यज्ञ थायछे. अराढ पशुनो पण यज्ञ थायछे, यजुर्वेदना ब्राह्मणनी अनुक्रमणिका जोता नाना प्रकारना यज्ञवीर्धी मालुम पढेछे तेमाथी केटलाएक प्रकरण नीचे दाखल कर्यायछे.

### संस्कृत नाम,                    अर्थ.

१ सौत्रामणी,	१ मद्यनो यज्ञ.
२ सुराम्रहण मंत्र.	२ मद्य पीवानो मंत्र,
३ ऐदपशु.	३ इद देवताने वास्ते बकरानो वध करवो,
४ गौसव.	४ गायनो यज्ञ
५ अत्पुर्याम.	५ एक प्रकारना यज्ञनु नाम छे.
६ वायवीयश्चेतपशु	६ वायु देवताने सारु बरुरानो वध.
७ काम्पपशु	७ मनोरथ पूर्ण थवाने सारु पशु यज्ञ.
८ वत्सोपाकरण.	८ वाढानो वध करवानो.
९ पौर्णमासेष्टि.	९ पुनमने दिवशो करवानो यज्ञ
१० नदाच्चेष्टि.	१० नक्षत्रदेवताने वास्ते करवानो यज्ञ.
११ पुहपयज्ञ.	११ मनुराय यज्ञ

१३ वैश्वपशु.	१२ वीर्णुदेवताने सारू वकरानो यज्ञ.
१३ ऐद्राम पशु.	१३ इद्रामी देवताने सारू वकरानो वध.
१४ सावित्रपशु.	१४ सूर्य देवने सारू वकरानो वध.
१५ अश्वमेध.	१५ घोडानो यज्ञ.
१६ रोहितादिपश्चालंभन.	१६ लाल वकरा वीगरे पशु यज्ञ.
१७ अष्टादशपशुविधानं.	१७ अराढ़ पशुनो यज्ञ.
१८ चातुर्मास पशु	१८ चातुर्मासनामना यज्ञमा वकरानो वध.
१९ एकादशीन पशु विधान.	१९ अगोआर पशुनो यज्ञ.
२० ग्राम्यारण्य पशु प्रशंसा.	२० वगडानो तथा गामना पशुनो यज्ञ.
२१ उपाकरण मंत्र.	२१ पशुनो संस्कार.
२२ ग्राम्यपशु विधान	२२ गायनो यज्ञ.
२३ सत्र.	२३ वहु दिवशा सुधी चालवानो यज्ञ.
२४ कृष्णपालंभविधानं.	२४ वढद मारवानो वीर्पी.
२५ अश्वालंभ मंत्र.	२५ घोडो मारवानो मंत्र.
२६ अश्वसंगमनं.	२६ घोडो मारवानी वीर्पी.
२७ अश्व मनुष्य अजागो पशु प्रशंसा.	२७ घोटो, मनुष्य, वकरो, गाय, आवधानो यज्ञ वीर्पी.
२८ भ्रादिय देवताक पशु.	२८ सूर्य देवताने सारू पशु.
२९ सोमस्ता.	२९ सोम देवताने सारू यज्ञ.
३० ऋद्धमपति सत्र.	३० ऋद्धमपति देवतानो यज्ञ.
उपर प्रमाणे भनेक यज्ञ याग, ईटी, मग, शनु, उत्तरवनु, राय, ईयादो भनेक प्रवारना याग नेदमा दनाव्याहे ते वधायमा पशुनी हाँ-पा भने माम भक्तण प्राप्त थायले कोई रुटेशे एम वे हीतानो भाग गुदो	

कहाडीशुं अने अ हींसानो भाग जूदो कहाडीशुं, तो हींसानो भाग कहाडेयो बीजुं काइज रहेवानु नथी; कोरण जेमा हींसा नथी एवो बीलकुल कोइ भाग छेज नहीं. पशुने मारवाने ठेकाणे वेदमा पाच शब्द वपरायछे:—

### आलभन करण उपाकरण शमन संज्ञपन

सुरतना यज्ञेश्वर शास्त्रीए आर्य वीद्या सुधाकर नामनो व्रंथ छापा योडा दिवश उपर प्रसिद्ध कन्यो छे तेमा अनेक प्रकारना यज्ञवीधि, पशुयाग, अंगछेदन, ईत्यादि वेदमा लख्या मुजव बताव्यु छे तेमा आलभन शब्दनो अर्थ लख्योछे ते नीचे प्रमाणे:—

### उपाकरणंनामदेवकमोपयोगी

त्वसंपादकःपशोःसंस्कारविशेषः

एतदादीसंज्ञपनपर्यतःक्रीयाक

लापआलभनशब्देनाभिधीयते२ ग्रकाश ८१ पृष्ठ

अर्थ—देवताने अर्थे पशुनो सस्कार करीने वध करता सुधी जे जे क्रीया यायछे ते सर्वेने आलभन कहेछे:—

नरमेधनु कर्म ज्या वेदमा लख्युछे तेमा अनेक प्रकारना, अनेक जातीना, अनेक स्वरूपना, अनेक धंधाना वसे दश माणस (२१०) लख्याछे, ते बद्दा पुप एटले खीले वंधायछे अने तेमनुं प्रोक्षण पुस्प सुक मंत्रधी करयानुं लख्युछे. केटलेक ठेकाणे पशु नापीने छोटी देवो के जेने उच्छर्ग कहेछे, तेम पण लखेलुँछे. परंतु ए गौण पथ छे, मुख्य पथ नथी. केटलेक ठेकाणे वीकर्त्त्वे करीने लखेलुँछे पण मूळवेदना मंत्रमा "आलभन" एज शब्दनो प्रयोगछे तेथी मुख्य प.

क्षाहिंसा जणायचे. ए प्रमाणे यजुर्वेदांतर गत तैतीर्थ शाखाना ब्राह्मण जेमां संवित्ताना मंत्रनो विनियोग लख्योचे ते तपासता सदरहु मुजव मालुम पडेचे. हवे एज शाखानो आरंण्यक दस अध्यायचे तेना नाम जूदा जूदांचे. पांच उपनीशद गणायचे अने पांच कर्मोप नीशद गणायचे. तमानो छठो अध्याय पित्रमेध वीशोचे, तेमां ब्राह्मण क्षत्री अने वैश मरी जाय यारे शी रीते बाळवो तेनो वीथी लख्योचे. ते उपर भारद्वाज तथा वौधायन सुत्रचे तेमां ए अध्यायामां जे जे मंत्रचे तेनो उपयोग वतावेलोचे. तेमां वटी एम लख्युचे के प्रेतनी जोडे एक गाय मारिने तेनां अंग प्रेतना अंग उपर मुकवां अने पछी चीता सळगाववी. अने प्रेत गाडामां घालीने अथवा शुद्धने सभे उच्चकावीने लेई जवुं अने ए मरनार पुरुषनी वायडी पण स्मशान सुधी लेइ जवी अने तेने एम कहेवू के तारो पणी मरी गयो माटे तारे पुनर्विवाह करवानी मरजी होय तो सुखेयी करजे ए प्रमाणे उपदेश करी पाची लाववी एम लख्युचे. आ यंथ ऊपर शायनाचार्यए भाष्य कयुचे. तेमा तपसीलवार वेदना सुत्र मेलवीने अर्थ करेलोचे. भाणस मरी गयापछी तेना वारमाने दिवशे जव तथा वकराना मासनुं भद्राण भरतास्ना संबर्धिने करवानुं लख्युचे. आ पुस्तक वेदनां बद्दी पुस्तक करतां वधारे पर्यंत गणायचे. बद्रीभोने काने एनो एक पण शब्द पढवा देवामो भावतो नयो अने कोइ एकात्त स्थळमां जंगलमां भणवामां आरेचे. बद्रीभो तेमज शुद्धने काने पण पढवा देता नयो. सभामां ब्राह्मणो उपारे भेगा यायचे यारे संहीता भणेचे परंतु आरंण्यक भणाय नही. पीथमेधना अध्यायामां जे गाय बाळवानी लखीचे तेनुं नाम नीये मुजवाहे:—

राजगवी. अनुस्तरणी. सयावरी.

आ अध्यायमाना केटलाक मंत्र भाष्यसहीत नीचे दाखल कर्याछे —

१ परेयुवाैसंप्रवतो ॥ ६० प्र० तै. आ.

भाष्य.

पित्वृमेधस्यमंत्रास्तुदृश्यंते १.स्मिन् प्रवाठके पितृमेध  
मंत्राणां विनियोगो भरद्वाजकल्पेवौ धायनकल्पेचाभिहितः

२ अपैतद्धयदिहाविभः पुरा ॥

भाष्य

कल्प. दासाः प्रवयसोवहेयुः अथैनं अनसावहंति  
त्येकेषां ॥

३ इमौयुनज्ञिमतेवन्ह असुनीथायवोढवे ॥

भाष्य

इमौवलिवदौशकटेयोजयामि.

४ पुरुषस्य सयावरी विते प्राणमसिस्त्वासां ॥

कल्प. अथास्थाः प्राणान्विस्त्रं समानाननुमंत्रयते हेषु पुरुषस्य  
सयावरी-राजगवीतव प्राणं शिथीलकृतवानस्मि-  
पितृनृउपेहि अस्मिन् लोके प्रजया पुन्नादिकया सह  
द्वेमं प्रापय.

कल्प. अन्तराजगवी उपाकरोति-भुवनस्य पतेऽति जरवीं

मुख्योऽतज्जघन्पांकृष्णांकृष्णाक्षीकृष्णबालां, कृष्ण  
खुरामपि, वा, अजां, बालखुर, मेवकृष्ण, एवंस्यादिति।  
पाठस्तु । तस्यांनिहन्यमानायांसव्यानिजानून्यनु-  
निग्रंतः ।

### ५ उदीर्जनार्थभिजीवलोकं ।

भाष्य-हेनारीत्वउत्तिष्ठत्वंदिधिषोऽपुनर्विवहेत्तोपत्युःजनि-  
त्वंजायात्वंसम्यक् प्रान्युहि ॥

६ अपश्यामयुवतिमाचरन्ती ॥ ६ प्र० १२ अनुवाक  
राजगव्याहननमुत्सर्गश्वेतिद्वौपक्षो-तत्रहननपक्षोमं  
त्राःपुर्वमेवोक्ता : अथोत्सर्गपक्षोमंत्राउच्यन्ते

७ अजोसि० द्वेष्टांसी

८ यवोसि० द्वेष्टांसी.

सदरहु पुस्तक तपाश्चा पछी माध्यदिनी शाखानी संहिता चा-  
र्चीस अध्यायनीछे तेनी जोडे चौद अध्यायनु शतपथ नाल्यण छे.  
ते तपाश्चाये एम कहेवायछे के व्यासजोए वपा वेदना मंत्र भेगा  
करीने तेमना त्रण यंथ वाच्या. एकनु नाम ऋगवेद संहीता, ते  
मुमंतु ऋषीने आपी. बीजानु नाम यजुर्वेदनो संहीता ते वैशंपायन  
ऋषीने आपी तेमनी पासे एक याज्ञवल्क्य नामनो शीर्ष्य हतो ते  
वपा सदरहु ऋषी लट्ठा तेथो याज्ञवल्क्ये सुर्यनो उपासना करीने

नवो वेद रच्यो तेनुं नाम शुक्ल यजुर्वेद शतपथ ब्राह्मणमा छेलु वाक्य  
नीचे प्रमाणे छे:—

**१ आदित्यानीमानिशुक्लानियज्ञौ पिंवाजसनेयेनयाज्ञव  
लकीयेनाख्यायंते । श० ब्राह्मणे १४ अ०**

आ वेदनी संबिहतामा चालीस अध्याय छे तेनी अनुक्रमणिका,

दर्शपौर्णमास	१-२	शतरुद्रियमंत्र	१६
आधान	३	चितिवसोर्धारा	१७-१८
अग्नीष्टोम	४	सौत्रामणी	१९-२०-२१
आतिथ्येष्टि	५-६	अश्वमेध	२२
उपाशु यहमंत्र	७	आश्वेलभाषण	२३
आदित्ययहमंत्र	८	पशु प्रकरण	२४
वाजपेययज्ञ } राजसूययज्ञ }	९	अश्वमेध	२५-२६-२७
			२८-२९
सौत्राभणीयज्ञ	१०	पुरुषमेध	३०-३१
चयन	११	सर्वमेध	३२-३३
चित्ति १२-१३-१४-१५		पितृमेध	३४-३५
		शातिपाठ	३६
		प्रायश्चित	३७-३८-३९
		वानकाड	४०

आ यंथ उपर चार भाष्य थया छे एक महीधर—बीजुं उव्हट—  
बीजुं सायन—चोथु कर्क. आ शीघ्राप द्विवेदाग भने देवयाजिक ए वे  
बीजा छे एम रहेवायछे. आ मंथमाधी केटलाग वाक्यो नीचे लरयाछे.

१ ऋतस्यवादेवहर्विःपाशेनप्रतिमुंचामिधर्षीमानुपः

६ अध्याये

हेदेवहर्विःदेवानांहविरूपयज्ञस्यपाशेनत्वांप्रतिमुंचामि।  
एवंपशुसंबोध्यशामित्रेसमर्पयति । व्यामदूयपरिमिताया  
कुशकृतयारज्वानागपाशंक्लत्वाशृगंयोरंतारालेपशुङ्छागं  
वधातिपाशंप्रतिमुंचेदितिसूत्रार्थः ॥ महीधरवेदादिपे

२ देवस्यत्वासविनुः० ६ अ०

युपेपशुंवधातिइतिसूत्रार्थः

३ अग्निषोमाभ्यांजुष्टनियुनज्जिम ॥ अग्निषोमदेवताभ्यां  
जुष्टमाभिरूचितंपशुंनियुनज्जिमनिवधामि

४ अदभ्योस्वौपधीभ्योऽनुवामाता०पशुंग्रोक्षणीज्जिःप्रो  
क्षतोति । मेध्यंकरोति

५ वाचंतेशुंधामि । प्राणंतेशुंधामि०पलिमृतस्यपश्चोः  
प्राणान्मुखादोन्यष्टैप्राणायतनानिप्रतिमंत्रशुंभ्रति । अद्विः  
सृशति

६ घृतेनद्यावापृथिवी०

वपामुखेद्य-द्यावापृथिवीऽइति । पशूदरावतूवपांनिष्का  
न्यभाड्येत् ।

७ ताडभौचनुरःपदःसम्प्रसारथाव० ॥ २३ अ० २० पंत्र  
 एवं संवेशनप्रकारः । अधिवासेन प्रछादयति अश्वमहिष्यौ ।  
 अश्वर्युर्वदति । हेऽश्वमहिष्यौ युवां स्वर्गेलोके अस्यायज्ञभू  
 मौ आछादयत मू अश्वशिस्तमुपस्थेकुस्तेवृषावाजिति । ८  
 हिष्यस्वयमेवा अश्वशिश्वमाकृष्यस्वयोनैस्थापयति

८ उत्सक्षणावगुदं०

९ यकासकौशकुन्ति०

१० माताचतेपिताचतेग्रं० ॥ २३ अ०

इत्यादिआश्लीलभाषणं ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

११ अश्वस्तुपरोगो मृगस्तेग्राजीपत्योः ॥ २४ अ०  
 अश्वमेधिकानां पशुनां देवतासंबन्धविधाय नोऽध्यायनाच्य  
 न्ते । तत्राश्वमेधेएकविंशतियैषाः सन्ति-तत्रमध्यमायुषो सत्प  
 दशपश्चानियोजनीयाः । शांतत्रयसंख्याकानां पशुनां म  
 ध्येपंचदशपंचदशपशुनेकैकस्मिन्यप्युनत्क्ति ।

१२ रोहितो धूम्ररोहितः कक्षिन्धुरोहितस्ते  
 रोहितः सर्वरक्तः । धूम्रवर्णः इत्यादिपशुवर्णनं

१३ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो०

शुभ्रवालः मणिवर्णकेशः इत्यादि ।

१४ पृश्नस्तिरथीन०

विचित्रवर्णा ।

१५ कृष्णग्रीवाआग्रेयाः

कृष्णग्रीवाः इत्यादिआग्रेयाः

१६ उत्त्रतऋषभोवामनस्त०

उच्चऋषभः त्रये द्रावैष्णवाः

१७ कृष्णभौमा०

१८ धूमान्त्रसंतायालभते०

१९ अग्रयेऽनिकवतेप्रथमजालभते०

२० धूमावत्रुनिकाशाः पितॄणां०

इत्यादिपश्चावः

२१ वसंतायकपिंजलानालभते०

अथारण्याः पश्चाव उच्चन्ते, कपिंजलादिस्त्रयोदश

२२ सोमायहरैसानालभते०

२३ अग्रयेकुट्टुनालभते

२४ सोमायलबानालभते०

२५ भूम्याऽआखुनालभते०

२६ वसुभ्यक्तरूपानालभते०

२७ इशानायपरस्वतआलभते०

२८ प्रजापतये पुरुषान्हस्ति नालभते ०

२९ ऐण्यन्होमण्डूको

३० श्वित्रआदित्यानामुष्टो

३१ खड्गेवैश्वदेवः

एवं षष्ठ्यधिकं शतदूय मारण्याः सर्वे मिलित्वा षट्क्षता निनवा  
धिका निपश्च वोभवन्ति । तेष्वारण्याः सर्वे उत्स्थष्टव्यानन्तु  
हिंस्याः ॥

३२ देवः सवितः प्रसुवः ३० अ०

इत उत्तरं पुरुषमेधः चैत्रशुक्लदशम्यारंभः अन्तर्यौपैकादशिः  
निभवति । एकादशाग्निषोमियाः पृश्च वोभवन्ति ।

तात्रियुक्तां पुरुषां सहस्रशीर्षां पुरुषद्वितीयां लङ्घनक्रमेण  
यथादेवतं प्रोक्षणा दिपर्यग्निकरणानं त्तरद्वं ब्रह्मणे इत्येवं सर्वे  
षां यथा स्वस्वदेवतो हैशो नत्यागः ततः सर्वान्यौपृश्यो विमुच्यो  
त्सृजति । ततः एकादशिनैः पृश्च भिः संज्ञपनादिग्रधानया  
गांतं कृत्वा । सन्यसेत् ॥ अथवा गृहं ब्रजेन् । महीधर-

३३ वहं वपा जातवेदः ३५ अ० २० मंत्र

मध्यमाष्टकागोपशुनाकार्यात् स्याधेनोर्वपां जुहोति-वहं वपा  
मंत्रेण.

अर्थ—उपर लखेला पैहेला मंत्रमा पशुने डाभनी दोरीथो, पा-  
भले वापवो, अने पछो शामीत्रने सौपवो, पशु छे ते देवनु भक्षण छे,  
एम कहेलुँछे, बीजा मंत्रमा सदरहु मुजुबज चतावेलुँछे, त्रीजा मंत्रमा  
अमी घोमदेवताने पशु बहु भावे छे एम लेखेलुँछे, चोथा मंत्रमा  
पशु उपर पाणी छाटी प्रोक्षण करवानु लख्युँछे—पाचमा मंत्रमा पशु  
मरो गया पछी यज्ञ करनारनी खीने हाथे मार्जन करवानु लखेलुँछे,  
छठा मंत्रमा पशुनी वपा एटले काबजु कहाडी ते उपर धो चोपडी  
तेनो होम करवानु लख्युँछे। सातमा मंत्रमा अश्वमेध यज्ञमा वधे थ-  
येलो धोडा तथा राणी बेनेने वस्त्र ओराढी दाकवानु लख्युँछे, आठ,  
नव, दशमा मंत्रमा राणी तथा भोरनी बचे मशकरी तरीके भाषण  
लख्युँछे, ते तथा सातमा मंत्रमा जे प्रकारे लख्यो छे, ते बहु बीर्भा-  
ठे छे तेनो अर्थ लखवा थोग्य नथी मुठे जेने थीकीच्छा होय, तेणे  
बेदना मंत्र तथा ते उपरनु भाष्य कहाडीने जोवुँ अगीयार्मार्य, ते  
एकतरीसमा मंत्र सुधी, (८०९) छसो नव अश्वमेधमा बीजा पशु जो-  
इए, तेना नाम लख्या छे तेमा अनक रंगन, बकरा अने बढद, त-  
रो हेरेहनो पक्षी नथा बीजा नाहाना जोव, उंदरडा तथा देढका,  
उंठ, तृथा गोदा ईखाडो सर्व जातना पशुनो कृपत करवानु लख्युँछे,  
ते सैकी—२०७—बगडाना जीव छे ते छोडी देवा, एवं भाष्यकार म-  
हीयर पंडिति लख्युँछे, वर्तिमा मंत्रमा भरमेध श्वर शुप ३०  
थी करवानो लम्हो छ, तेमा पशु पांचवाना अगीयार थामिलो रोप-  
वा ने सेणे अगिमार बकरा तथा जिसो माणस चोपीने! तेनु प्रोक्षण,  
न्याग, नीतेदून करीने जे माणस बाध्या होय तेमने छोडी देवा, अने  
भगीभार बकरा जे रथो नेमनो वध वरीने तेनो होम करवो एम एज  
भाष्यकार अधे छे, ते बीसमा मंत्रमा माणसने बाढवानी वापते गा-

पनी वषा एटले काळजानो होम करवानुं लख्यु छे. आ अनुष्ठाननु नाम पित्रमेधः—

‘ जे ठेकाणे पशु शब्द अोवे छे ते ठेकाणे तेनो अर्थ बकरो कर्वो. एवुं यज्ञेश्वर शास्त्रीए आर्यवीदा सुधाकर यथमा बतायुं छे:—

**यत्रपशुसामान्योक्तिस्तत्र**

**छागःपशुर्याह्योभवति । पृ० ८१-**

यज्ञनुं पृष्ठ बहु मोटुं छे एवुं वधा शास्त्र तथा पुराणम् वर्णन कर्यु छे. जे ठेकाणे कंड पण पृष्ठ कर्मनुं वर्णन करवुं होय ते ठेकाणे यज्ञनी तुलना लेखी छे. जेमके अनायप्रेत संस्कार करे तेने अनेक यज्ञनुं फळ मब्बेहे. सो यज्ञ करे तेने इंद्रनुं राज्य मब्बेहे. तेथी इंद्रनुं नाम शतकतुं पडयुं छे. यज्ञ करता अश्वेषनुं फळ बहु मोटुं छे. गंगानी जात्राए जाय तेने डगले डगले अश्वेषनुं पृष्ठ लख्यु छे.

**पदेपदेयज्ञफलमनुपृष्ठीलभातिते । पाराशार ३-४०-**

पूर्वे भरतराजा यह गया तेना नामयी आ देवने भरतखड कहे छे. - तेणे पचाश ने पाच अश्वेष यज्ञ कर्या एवी वात, कगवेदना ऐतरेय द्वाष्टाणमा लखि छे:—

**भरतोदौष्यंतिर्यमनामनुगंगायावृत्रघ्नेवभात् च पचाशा  
तं हयान् । महाकर्मभरतस्यनपुर्वेनापरेजनाः । - प० २३ खं० ५**

शोवाय राष्ट्रचंद्रजीए ब्रह्महत्यानुं पाप कहाडवा सारु अश्वेष क-  
यों तेज प्रमाणे पाण्डवोए अश्वेष यज्ञ रुयों तेनो इतिहास रामा  
श्वेष तथा जी मिनी अश्वेष ए वेमा लख्यो छे. आवी कणाओ भ-  
नेक ठेसाणे पुराणोमा मालम् पदे छे:—

यजुर्वेदनुं शतपत्र ब्राह्मण छे अने ते ऊपर कात्यायनी सुब्र छे  
ए वे यथा वहु मोटा, माहाभारत जेवा छे, तेमा तमाम महकीया व-  
तवेली छे, तेनुं तारण कहाडता पार आवे एवो नयी तिमाना एक वे  
वाक्य नीचे लख्या छे:—

१ पंचचित्तयःस्तद्यपशुशीष्याण्युपधाय

२ श्वितिःश्विनोत्येतैरेवत्तिष्ठिरेतानिकुर्सिन्ध्यानिसं-  
दधाति । ६ अध्याय १-४-११

३ यदैकादशिनान्पशूनालभते-१३ अ १-१४-२

४ शतमालभते- १३ अ० १-१४-४

५ गव्याउत्तमेहन्नालभत १३ अ २-७-३

एज प्रमाणे सामवेदनो तंहिता अने तेने जोडेला भाठ ब्राह्मणमा  
यस कीया लखेली छे, माटे ए वीशो वीशीष लखवानी जहर नयी:—

चोपो वेद अथर्वण अने तेने जोडेलुं ब्राह्मण गोपय ब्राह्मण आ  
वे यथमां एवोज वीषय छे, अने घणुं करीने एक वेदना मंज वीजा  
वेदमा ए मुजब सेळभेड थयेलुं छे: ते बताववानी शास्ते गोपय ब्राह्म-  
णमायी वे वाक्य नीचे लख्या छे:—

१ अथातःसवनीयस्यपशोर्विभागंवक्ष्यामः

३प्र०१८खडे०

२ अथातोथज्ञक्रमाःअग्न्याधियमग्नाधीयात्पूर्णाहुतिः

पूर्णाहुतेऽर्द्धिनहोत्रमग्निहोत्राद्वद्वैष्णमासौ । ददर्शैषीर्ण

मासाभ्यामात्रयणं । आग्रयणाश्वातुर्मास्यानि । चा  
तुर्मासिक्षेयः पशुबन्धः । पशुबधाग्निष्ठोमौ । आग्नि  
ष्ठोमाद्राजसूयो । राजसूयाद्राजपेय । वाजपेयादश्व  
मेधः । अश्वमेधात्पुरुषमेधः । पुरुषमेधात्सर्वमेधः ।  
सर्वमेधादक्षिणावन्तो । दक्षिणावज्योददक्षिणाअद  
क्षिणा । सहस्रदाँशिणेप्रत्यतिष्ठस्तेवारतेयज्ञक्रमः ॥

५ प्र० ७ खं०

छपर लख्या प्रमाणे यथानो वीस्तार बतावेलो छे ते घणुकरीने  
एकना एक प्रमाणे चारे वेदमा छे शाखानो भेद काँवा वेदना भेदयी  
कर्ममा थोड्हो फरक परचुरण बावतमां पडे छे ते एवो के एक कहेछे  
के धीनुं वासण जमणी बाजु मुकुं ने बीजा कहेछे के धीनुं वासण  
झाभी बाजु मुकुं ने एक कहेछे के उभो रहने मंत्र भण्वो ने  
बीजो कहे छे के बेसीने भणुं आवी परचुरण बावतोमा ज्ञाइणोनो  
घणो आयह असलयी पढेलो छे माटे एक शाखाना ज्ञाइण जेने  
चरण कहेछे ते बीजो शाखानुं कर्म करता नयी असलमा शाखा एक  
एक प्रदेशमा हती पण दुष्काल, आवर्षण, राजकाती, परचक,  
युद्ध, दंगा, अने प्रदेशमा पेट भरवाने वास्ते ज्ञानां इछा इवादो  
कारणोनी एक एक ठोकाणे भनेक शाखाना लोक भेगा पई गयाछे  
ज्ञाइण सीवाय बीजा कोइने वेद भण्वानो भणीकार नयी.

स्त्रीशूद्राद्विजवधूनांत्रयीनश्रुतिगोचरः ॥ भांगवत् ॥

मूळ वेदना मंत्र अनेक रूपों पासे हता ते विधान्यासमीए भे-

गा करीने चार वेदनी संबोधिता बाधी अने पोताना जे शीघ्र हता ते  
चार जणाने अकेको वैचो आपी तेना नाम.

१ पैल	वैशंपायन	जैमिनि	सुमतु
२ ऋग्वेद	यजुर्वेद	सामवेद	अथर्ववेद
३ ऐतरेय	तैतिर्य	ताड्य	गोपयन्नाल्यण
४ भेद	८६भेद	१०००भेद	५ भेद

ते एक एक आचार्यना पेटामा अनेक भेद उपर वताव्या प्र-  
माणे यथा तेनी संख्या प्राचीन ग्रन्थमा लखी छे, ते प्रमाणे हाल जो-  
वामा आवता नयी पण हाल जे शाखा मझे छे तेना नाम

१ ऋग्वेद	१ सांख्यायनि	२ शाकल	३ वाष्कल
	४ आश्वलायनि	५ माङ्क	
२ यजुर्वेद	१ आपस्तंव	७ हिरण्यकेशी	३ मैत्राणी
कृद्ग तैतीर्य } ४ सत्याषाढ		८ वौधायनी	
२ यजुर्वेद	१ कण्व	२ माध्यंदिनी	३ कालायनी
शुक्र वाजसनेयी }			
३ सामवेद	१ कौयुमी	२ राणायणी	३ गोभिल
४ अथर्ववेद	१ पिपलाद	२ शौनकी	

एक एक शाखाना जे आचार्य यई गया तेमने पोतानी शा-  
खाने वास्ते एक एक सञ्च बाघुछे ते प्रमाणे ते शाखाना ब्राह्मण क-  
र्म करे छे तेथी हरेक ब्राह्मणने नाम थाय छे तेनी तपसोल.

१ नाम	२ उपनाम	३ गोत्र	४ प्रवर	० सूत्र	६ वेद	७ शाखा
दामोदर	पैड्या	कपि	आग्नीरस	१ सांख्यायन	ऋग्	सांख्यायन
				२ आमहीयन		
				३ दशपति		

८ मत ९ कुलदेव १० जाति,

स्मार्त शक्ति नागर

आ दश सीर्वाय न्याती भेदधी ब्राह्मण वर्णना पेटामा ज्ञातीनुं  
नाम, नागर, अवदीच, चीतपोवन, गौड, द्रविड, इत्यादि थोयछे.

१ वैश्यम् पायन कर्त्ती अने याज्ञवल्क्ये कर्त्ती लद्या तेधी यजु  
वेदमा शुक्ल यजुर्वेद उपनिषद् यथो तेमा । २ शास्त्राओ छे तेमनु नाम  
बाजसनीय पञ्चु छे तेमाना पुंदरनु ठेकाणु नयी अने बे हाल चाले  
छे तेनु नाम कृष्ण अने माध्यंदिनी ॥

३ वेदना यथ हेठल लख्या प्रमाणे छे । ॥ १ ॥

१ संविद्विता, २ ब्राह्मण, ३ अरण, ४ उपनिषद, ५ परिशिष्ट

एमा चार अने पाच प्रकारना यथमा भेळ वह यई छे जेनेवेद-  
नी आधार जोइतो हतो तेणे आ यथ नवा बनाव्या छे एनो दाख-  
लो अलोपनिषद, ए अकबर बादशाहाए करावेलु छे.

### ऋग्वेदसंविता

अ० २ अ० ३ वर्ग ७।८।९।१०।१।२।२।३

अश्वमेध।दीर्घतमाओैचथः। त्रिष्टुप् ।

एप्छागपुरोअश्वेनवाजिनापूणोभागोनीयतेविश्वदेव्यः ॥  
यदश्वस्यक्रवियोमक्षिकाशयद्वास्वरौस्वधितौरेमम  
स्ति ॥ यदुस्तयोःशामितुर्यन्नखेपुसर्वात्ततेअपिदेवेष्वस्तु ॥  
यदूवध्यमुदरस्यापवातियआमस्यक्रवियोगंधोअस्ति ॥ सु  
कृतात्तद्वितारःल्प्वन्तमेष्वशतपाकंपचन्त ॥

चतुःस्थिंशद्वाजिनोदेववंधोर्विक्रीरश्चस्यस्वधितिःसमे  
ति ॥ अछिद्रागात्रावयुनाकृणोतपर्स्यगुरुंघुष्याविशस्त् ॥  
सुगव्यनोवाजीस्वश्वयंपुंसः पुन्नांउत्तविश्वापुंपरायं ॥  
अनागस्त्वनोअदितिः कृणोतुक्षत्रनोअश्वोवनतांहविष्मान् ॥  
अजः पुरोनोयतेनाभिरस्यानुपश्चात्कवयोयांतिरेभाः ॥  
उपप्रागात्परमंयत्सधस्थमवैअछापितरंमातरंच ॥  
अद्यादेवाऽज्ञुष्टतमोहिगम्याअथाशास्तेदाशुपेवार्याणि ॥

अर्थ—घोडाना आगळ आ बकरो पुषा, अने बीजा देवोने वास्ते  
लाव्योछे, आ घोडानु जे कंइ मांस माखीओ खाशे अने जे कंइ छरा-  
ने वळगी रहेशे अने जे कंइ अश्वने मारनारना नखमा रहेशे ते अश्वने  
साथे स्वर्गमा जशे.

आ घोडाना पेटमार्थी जे कंइ धास काचु नीकळशे, अने जे कंइ  
काचु मास ते स्वच्छ करीने सारी पेरे राधुं घोडाना अंगमा चोबीस  
पासलीओछे तेमा छरो युक्तिथी केरवीने कोइ भागी न बगडता अंग  
जूदा जूदा रुहाडवा आ अश्वमेध कर्याधी अमने धर्णी दोलत मळशे  
अने गायो अने घोडा अने आरोग्य अने संतान अमने प्राप्त थशे, घो-  
डाना आगळ बकरो बाप्तवो अने तेने पछवाडे मत्र भणनारा ब्राह्मणो  
उभा रहेवा, आ घोडाने हृष्याथी तेना उपाहा मा अने बापछे एवो जे  
देवोनुं स्यानक त्या ए घोडो जशे अने होम करनारने अनेक ला-  
भ आपशे.

त्रह्योवधंवेदनिंदाकौटसाक्षयंसुहद्वधः ॥ गहिंतानाय

योजग्निः सुरापानसमानपद् ॥

पद्मपुराण

अर्थ—ब्रह्म हत्या, वेद निंदा, खोटी साधा, मित्र वध; सूरापान असत्ता ए छे अपर्म समान छे.

वेदप्रणिहितोधमौहृष्मर्मःस्तद्विपर्ययः। वेदोनारायणः  
साक्षात् इति मैनि श्वितामतिः ॥

व्यास  
नके चिद्रेदकर्ता रो वेदस्मर्ताचतुर्मुखः ॥ तथैवधर्मस्म  
रतिमनुः कल्पांतरे द्वापि ॥

अर्थ—वेदमां जे लख्युं छे एनुजं नाम धर्म तेना विहृद्वचाले तेनुं नाम अपर्म, वेद ए साक्षात् नारायण छे एनि संशय जाण्वुं एवं मारुपतछे एवुं व्यासजी कहे छे.

वेद कोई ए बनावेलो नयी चतुर्मुख जो ब्रह्मा तेणे पूर्व कल्पमा जे वेद चालतो हतो तेनी सरत राखिने आ कल्पमा प्रकाश कर्यां तार पछाँ बद्धानी जे पूर्व मनु तेमणे तेजं धर्म आगंड चलाव्यो.

त्रिधावद्वौ वृपभोरोरविति  
मन्त्रब्राह्मणकल्पैश्च ॥

वेदनुलपद्गतियास्काचार्येणोक्तः

अर्थ—यज्ञ रूपी धर्म मंत्र, ब्राह्मण, अने कल्प, एत्रणं पूस्तकयोर्धायचे मार्ट्तं कल्प छे ते वेद तुल्यं छे एवुं यो संकाचार्ये लख्युं छे!

स्वामिनारायणनि शिधांपत्रिमासूत्र प्रमाणे कर्म करवानुं लख्युं छे.

संस्कारारात्र्यान्हिकं श्राद्धयथाकालं यथाधनं। स्वस्वगृ

ह्यानुसारेण कर्तव्यं च द्विजन्माभिः १११

अर्थ—संस्कार अने निख कर्म अने, श्रद्ध जे काळे प्राप्त याय ते आपणा वैभव प्रमाणे ब्राह्मण, क्षत्री, वाणीयाए पोत पोतानु गृह्यसूत्र प्रमाणे करुनु गृह्यसूत्र एटले कल्प.

### आश्वलायनसूत्र

दरएक शाखानु सुन्नु तेमा वे भाग होयचे १ श्रौत, २ गृह्य, ३ पैकीश्रौतमा यज्ञ किया लखेली होयचे, अने गृह्यमां यहस्थना पर्म लखेला होयचे, आ धंधु स्मृतिमा गणाय छे पण वीजा ग्रंथ करता सूत्रनी योग्यता मोठी छे सुन्न वेद तुल्य गणाय छे, अनेक शाखानाभ्यं नैक सूत्रो छे ते बधायनो वीषय एक रेतनो छे माटे, आ ग्रंथमाना एक बेनो क्षमास कर्हिए प्रथम आश्वलायन शाखानो श्रौत सूत्र लड्डने तेन। वारयो हेठल लख्या छे.

१ दैव्याशामितारभारभद्वं० । ३ अध्याय ३ कं

२ दैवतेनपशुनानात्वं० । ३ अ० ७ कं

३ पाण्मास्यःसांवत्सरोद्व ॥ । ३ अ० ८ कं

सोऽर्यनिस्तृपशुःपट्सुपट्सुमासेपुकर्त्तव्यः । संवत्सर संवत्सरेवा ।

४ सौत्रामण्यां । ३--९ नारायणवृत्ति

५ आश्विनसारस्वतैद्वाःपशवःवाहिस्यत्योवाच्चतुर्थः ।

ऐद्रसाविनवास्णाःपशुपुरोडाशाः ३-९

६ दर्शपीर्णमासाभ्यामिद्विष्टपशुचानुर्मास्यैरथसोमेन

७ अथसवनीयेनपशुनाचरन्ति ५ अ० ३

८ अग्निष्टोमोऽत्यग्निष्ठोमउक्थःषोडशीवाजपेयोऽति  
रात्रोऽसोर्यमद्विसंस्थाः ६--११

९ आग्नेयैन्द्राग्नैकादशिनाःपश्वः उत्तरपद्मक ३-२

१० वायव्यपशुः ३-२

११ सज्जमश्वंपत्न्योधून्वंति ०, ३-०४-८

१२ तस्यविभागंवक्ष्यामः ॥ ४८७-६-९ ॥

अर्थ,

१ पशुने मारो। ॥

२ देवने जूदा जूदा प्रकारना पशु जोइए। ॥

३ छ महोने के वरणे खरतो निरुद्ध पशु करवो। ॥

४ सैत्रामर्णनु वीथान। ॥ ४८८-२-५

५ आशीन—सारस्वत—इंद्र ए त्रणे देवताने पशु आपवा अने  
बहस्पतीने चोथो पशु औपवो—इंद्र—सर्वेता तथा वर्णें ए देवता,  
ओने पण पशु जोइए। ॥

६ पुनम तथा अमासने दिवशो अने चातुर्मास अनुष्टानमा पशु  
मारवीः— ॥ ४८८-२-६

७ सवनी अनुष्टानमा पशु वध करवो। ॥ ४८८-२-७

८ सात यज्ञमें संस्था कहेहो॥ ८-४८८-२-८

९ अमिष्टोम् १३ असमिष्टोम् ३ उक्थ.

१० शोडशी ५ वाजपेय ६ अतीरच.

७ असुर्याम् त्रौत्तमां ॥

९ अपि तथा इद्वापि आ देवोने अग्नियार पशु जोइए

११२ १० वायु दवताने एक पशु जाइए।

११३-मेरी गएला अभ तथा प्रहंकरनारनों, छोंए बनेने वज्र नीचे  
दाकूवा ॥ १४-१५-१६ : ॥ १७-१८ :

१२ वर्ष करेला पशुनु कहुका उरीने यज्ञ करावनार ब्राह्मणोम्  
शी रीते वहेचवा तेनो प्रकारः—

आश्वालायन श्रौत सूत्रनावारे अध्यायछे तेमाना छमा पुर्व ब्रते  
लख्याछे, अने द्रोजा छमा उत्तर कतु लख्याछे। तेमना नाम.

१ राजसुय २ गवामयन.

३ गोपत्र. ४ अश्वमेध.,

५ आग्निरस कतु ॥ ॥ ६ साकमेध.

७ पंचवारदीप ८ वीश्वजीत.

९ पौर्णिमेध.

१० भर्त द्वादशाह

११ सवधर सत्र १२ माहात्रत.

१३ तारत्रीसत्र १४ शतरात्र

१५ सोम.

१६ द्वादश संवत्सर

१७ सुहृष्ट सवत्सर,

आ शीवाय चार अध्याय गृह्य सूत्रनाछे, तेमां ग्रहस्ताना पर्व ल-  
स्याछे गृह्यमा तथा श्रौतमा तकावत् एटलोछे के जे ब्राह्मण एक  
भिन्नो कुण्ड के जेनु नाम स्मर्तायि जे राखेछे तेनु नाम ग्रहस्थ —  
ए अपि लयने दिवशे उपन यायछे, अने जे ग्रहस्थ त्रण अपि उ-  
पन करीने अपि होइ लेछे तेने श्रौतापि कहेछे, तेना नाम —

दक्षिणामी ॥ गार्हस्पत्न्यात् ॥ आहवनी ॥

आवा अमिहोत्रीने यज्ञ करतानो अधीकार यायच्छे; ते अमीहोत्रीनां कर्म भौत सुन्तमां वर्णन करेलांछे. अने ग्रहस्थाश्रमीना धर्म गृह्य सुन्तमां छे. घोणांक ग्रहस्थ हाले अस्त्रादपासना करत्वासारू राखता नथी पण ते बाबतनुं प्रायक्षित करेछे. उच्चणादिवश सुधी जे ग्रहस्थ अमि राखे नहीं ते शुद्ध धाय छे एम-पर्मशास्त्रमां कहेलं छे. ग्रहस्थाश्रम लमयो शरू यायच्छे. अने लम यया पछी प्रजा उत्पन्न यायच्छे. ते प्रजोने व्राह्मण करत्वा सारूप्यांस्त्रियांस्त्रियां लख्यांछे. गृह्य सुन्तमा आ संस्कार लखेलांछे. तेमनां तामःकृत्यांहनां ॥

गर्भादान पुंसवन जात कर्म अन्नप्राशनं चूडा  
उपनयन विवाह अंत्येष्टि० इत्यादि०

असलभा बखतमा राजा लोको अमिहोत्र लेता हता अने राज सूप अश्वमेध वीगरे यज्ञ करता हता. सुन्तने कल्प-धर्मसुन्त-समयचारीक सुन्त-एवा नाम कहेछे. अश्वलोयना चीर्यन्त सुन्त केवळ क्षगवेदनो सारच्छे एम कहेवायच्छे. तेनो श्रीत्वाभाग वीश्वा उपरू लख्युंछे; अने अमीहोत्री शीवायना ग्रहस्थना धर्म गृह्य सुन्तमा केवी रीतना वर्णन करेलांछे ते नीचे लख्युंछे.

२ अथपशुकल्पः १ अ ११-१

२ उत्तरतो अग्नेःशामित्रस्यायतनंकृत्वा । पशुमा  
त्याव्य । सप्तलाशयाद्दशाखयापश्चादुपस्पृशेत् ।  
त्वाजुप्रियउपाकरोमिति । १-११-२

३ विहीयवभातिभिरद्विः पुरस्तान् प्रोक्षीति अमुष्मै वाजु  
पि एष प्रोक्षामि । १-११-३

४ आवृत्तै वृपर्यंगिकृत्वोदश्चंनयन्ति । १-२१-५

५ सस्य पुरस्ता दुल्मुकं हरन्ति ॥ १-२१-६  
६ शामित्र एष भवति

७ वपा श्रपणभियां कर्त्तापशुं मन्वारभते । १-२१-८

८ पश्चात्त्वामित्रस्य प्राक् शिरसं प्रत्यक् शिरसं वोदक्  
९ पादं संज्ञप्पुरानामेस्तृणमतधीयवपुं मुत्तर्खिद्य ।  
१० नारायणवृत्ति

शामित्रस्य पश्चिमेदेशो वहिरुपस्तृणति कर्ता । “तं य  
त्र निहनिष्यन्तो भवन्ति तदवधर्युर्बहिरधस्ता दुपास्यते” इति  
भुतेः तत्स्तं स्मिन् वर्णहिं प्राक् शिरसं वोदक् पादं पशुं शमय  
ति शामित्रावपास्थानज्ञात्वा तिर्यक् छित्वावपां उद्धरेत् । शा  
मित्रेष्टाप्यतां वर्णमभिघार्यजुहुयात् ।

अर्थः

१ गृह्ण सुरना प्रथमाध्यायं वर्णान्वां अग्नीयारम्भी कंडीकाना प्रथम सु-  
ब्रह्मो पशु यागनु वीणान लखेष्टे ॥ ॥ ॥

- २ अमिना उत्तरमा पशु वध करवानी जेगा उराववी, अने पशुने नहराववो, अने खालरानी लौली ढाँडीयी तेने स्पर्श करवो अने बोलवुं के तु देवनुं भक्षछे माटे तने भक्षण योग्य करूँ छुं.
- ३ डागर तथा जव पाणीमा नाखी ते पाणी पशु उपर छाटवुं.
- ४ वबता डाभ लईने पशुनी प्रदक्षणा करवी, "
- ५ तेज वबता डाभ लईने पशुना आगळ चालवुं. " "
- ६ पशुने वध करवाने ठेकाणे लई जवुं:— " "
- ७ वपा यागनो मंत्र भणवो:— " "
- ८ वध करीने पशुनी नाभीने ठेकाणे वपा होय छे ते ते ठेकाणे छेदोने ते वपा कहाडवो:— " "

नारायण वृत्ति:—

वध स्थळमा डाभ पाथरवा ने ते उपर पशुने मारवो:—  
एवी वेद आजाछे माटे ते मुर्जब करीने पछो पेट छेदन, करीने वपा कहाडवो, अने वध स्थळना नर्जीक आमि, उपर सुपाववी तार पछो ते उपर घी रेडवुं ने सारवाद अग्निमार्हाम करवो.—

बीजा अध्यायमा छोकरानो अनप्राचन संस्कार, लख्यो छे तेना सुत्र नोचे लख्या प्रमाणे. " " " " "

१ षष्ठेमास्यन्नप्राशनं २अ० १६० कं १८० सु०

२ आजमन्नाद्यकामः १-१६०-२ " " "

३ तैत्तिरंब्रद्ववर्चस्कामः १-१६०-३ " " "

अर्थः " " "

१ जन्मधी छटा मासमा अन प्राशन संस्कार करवो

२। वकरान्तु मास ए सस्कारमा खवरावीए तो धन धान्यनी वृद्धि करे छे।

३। तीतर पक्षेनु मास खवराववामा आवे तो,

ब्राह्मणमा ब्रह्म तेजनी वृद्धि धाय छे।

"गृह सूत्रना दथमध्यायनी चेविसम्म कंडकामा, मधुपर्क वीर्धी लख्यो छे तेना सूत्र नचि लख्या प्रमाणे:-

१। ऋत्विजोवृत्तामधुपर्कमाहरेत् । १-२४-२

२। स्नातकायोपस्थिताय । १-२४-२

"३। राजेचं ।

४। आचार्यश्शुरापितृव्यमानुलानांच ॥ ४

५। आचार्यान्तोदकायगावेदयन्ते ॥ ५

६। हतोमेपाप्यापाप्या मेहत । इति जपित्वा कुरुते ते

कारयिष्यन् ॥ २४ ॥

नारायणवृत्ति.

इमं भंत्रं जपित्वा ओऽमूकुरुते ति न्द्रयान् यदिकारयिष्य

न्मारयिष्यन् भवति तदाचदा ताआलभ्नेत् ।

७। नामांसोमधुपकोऽभवति भवति ॥ २५

नारायणवृत्ति

मधुपर्काड भोजनं अमांसं न भवतीत्यर्थः पशुकरण

पक्षेत नमांसो न भोजनं । उत्सर्जनं पक्षेमांसान्तरेण ।

अर्थ-

१ यज्ञ करवा सारू ऋत्विज नीमती बखत तेने मधुपक्क आपवो जो-इये तेज प्रमाणे लग थवा वास्ते जे वर घरमा आवे अने संजा घरमा आवे अथवा।

४ आचार्य एटले गह घरमा आवे अथवा ससरो घरमा आवे अगर काको अगर मामा आवे तो तेमने मधुपक्क आपवो जोइये।

५ मोहो साफ करवा सारू पाणी आपीने तेमना मोह आगङ्ग गाय मुकवी।

६ सुन्नमा लखेला मंत्र भणीने ओम् कहीने घरना मालेके गायनो वध करवो।

७ मधुपक्कने अंगे जे जमणवार थायछो ते मास वीना शरीर नर्थी मा टे पशुनो वध पुर्वक मधुपक्क कर्य होय ते तेज पशुनु मास जमण वारमा काममा आवे अने पशुने छोडा दीधो होय तो वीजी रीते मा स मेळवीने भोजन करावुन

८ द्वितीया अध्यायमानी चोथी कंडीकामा अष्टका वीथान लख्यु छे तेमा पशुनो वध करवानु लखेलुछै तेनु सुन्न नीचे मुजाहौ

पशुकल्पेनपशुसंज्ञर्यग्रोक्षणोपाकरणवर्जिवपामुत्रिवद्य

जुहुयानू । २-४-१३

अर्थ-

पाछला अध्यायमा पशु वधनु वीथान बतावेलुछै तेज प्रमाणे पशु एटले बकरो मारी तेनु कालजुं काहाढी तेनो होम करवो।

बछी वीजा अध्यायनी पाचमी कंडीकामाना पेहेला सुन्नमा अन्व-ष्टका अनुष्टान लख्युछे तेमानीचे प्रमाणे लखेलुछै।

१ अपरेत्युरन्वष्टुक्यं २-५-२

२ तस्यैवमांसस्यप्रकल्प्य २-५-२

### नारायणवृत्ति.

अपरस्मिन्बहनिनवम्यांमन्वष्टुक्यंनामकर्मकार्यमित्यर्थः।  
योअष्टम्यांपशुःकृतःतस्यैवमांसंब्राह्मणभोजनार्थप्रकल्पसकृत्येत्यर्थः।

अर्थ

- १ नोमने दिवशे भवद्वका कर्म करवुं
- २ जे पशुनो वध कर्यो होय तेनु मास ब्राह्मणने जमाढवुं  
वढी चोया अध्यायनी प्रथम कंडीकामा अमिहोत्री ब्राह्मण मरे  
तो तेने बाल्यानो वीधी लख्यो छे, ते सुन नीचे मुँजव.

१ आहिताग्निश्चेदुपतेष्ठाच्यामुदिच्यामपराजितायां  
वादिश्युदवस्येत्-अ-१-१

२ अगदःसौमेनपशुनेष्टेष्टावस्येत् ॥४-१-४

३ आनिष्टवा ४-१-५

४ विठ्वक्तेष्णगोयुक्तेनेत्येको ४-२-३

५ अनुस्तरणो

४

६ गां

५

७ अजांवैकनणाम्

६

८ कृष्णमेके

१७

९ सव्येवाहुवध्वानुसंडालयन्ति।

१८

१० अनुस्तरण्यांवपामुत्खिवद्यशिरोमुखंप्रछादयेन्

४-३-१९

११ वृक्षाउधृत्यपाण्यारादध्यात्

२०

१२ हृदयेहृदयं

२१

१३ सर्वायथाङ्गवनेक्षिष्पचर्मणाप्रछादये

२४

१४ तांउत्थापयेहैवरः। उद्दीर्णनार्यभिः०

४-२-२८

१५ सएवंविदादह्यमानःसहैवधूमेनस्वर्गलोकंमेतीतिहवि

ज्ञायते

४-४-७

अर्थः—

१ श्रौत्री ब्राह्मण आजारी पडे तो तेने अग्निसहीत गाँम बहार कोई ठेकाणे लई जई राखवोः—

२ जा सारो धाय तो एक पशुनी इष्टि करीने घेर आणवोः—

३ कदी मरी जाय तोः—

४ गाडामां घाली स्मशानमां लई जीवोः—

५ अनुस्तरणी एठले एक जनावरी साये लेवूः—

६ ए जनावर गाय जोईयेः—

७ अथवा एक रंगनी बकरी जोईयेः—

८ अने ते बकरी काढी जोईयेः—

- ९ ते जनावरने गळे दोरी बाधी मढदाने जमणे हाथे ते दोरीनो  
बंजो छेढो बाधवो ने तेने मढदानी साथे चलावुं —
- १० अनुस्तरणीनो वध करी तेनी वपा कहाडी ते 'वत्ती प्रेतनु माथु  
ढाकवुं —
- ११ तेना यकृत कहाडी प्रेतना हाथमा मुकवु —
- १२ हृदय ते प्रेतना हृदय उपरज मुकवु —
- १३ ए मुजब सर्व अंग प्रेतना अंग उपरमुकी अनुस्तरणीना चामडा  
वते ते प्रेतनु वधु अंग ढाकी देवुं —
- १४ प्रेतनी पत्नीने पुनर्विवाह करवानो उपदेश करी खशेडवी —
- १५ आ प्रमाणे जेनु प्रेत वाल्वामा आवेछे, ते माणस स्वर्गमा जापछे,
- १६ गृह्ण सुन्नना चोथा अध्यायनी नवमो कडीकामा शुलगवनामक  
पह लखोछे तेना सुत्रो नीचे लख्या प्रमाणेछे ।

१. अथगूलगवः	१४-१-१
२. शरदिवसन्तेवार्द्यया	२
३. शेषुस्वस्यूथस्य	३
४. अकुष्ठिपृपत्	४
५. कल्मापामत्येके	५
६. कार्मकृष्णमालेहवांश्चेत् „ „	६
७. वीहीयवमतीभिराद्विराभिरपेन्प	७
८. शिरस्त्वाभसत्त	८
९. रुद्रायमहादेवायज्ञुषेवधस्वेति	९

१० ग्रोक्षणादिसमानं पशुनाविशेषान्वक्ष्यामः । १५  
 ११ पात्र्यापलाशेनवावपां ब्रुहुयात् इति हविज्ञायते १६  
 १२ हराय मृडाय शर्वीय शिवाय भवाय महादेवायोग्राय  
 भीमाय पशुपतये रुद्राय शंकराये शानाय स्वाहे  
 ति. १७

१३ सुएपशूलगवोधन्योलोक्यः पुण्यः पुञ्यः पशुव्य  
 आयुष्योयशस्यः ३६

१४ इष्टान्यमुत्सृजेत् ३७

- १ शुलगव अनुष्टान ए प्रमाणे करुं —
- २ शरदऋतु एटले आसो तथा कारतक तथा वसतऋतु एटले  
चैतर तथा बैशाख मासोमा अथवा जे दिवशे आदर्शनिधन  
होय ते दिवशे शुलगव यज्ञ करवो —
- ३ जोरावर बब्लान आखलो होय ते लेवो —
- ४ ते आखलो रोगी होवो नही जोइये —
- ५ वळी ते आखलो काबरा रंगनो जोइये —
- ६ काढा जांचु रंगनो होय तो चाले —
- ७ डांगेर तथा जबनुं पाणी करीने ते वते आखला उपर अभीज्ञाक  
करवो —
- ८ माथाधी ते पूछडा सुधी —
- ९ माहादेवने गृहण करवा योग्य थान आ मत्र भेणवो —

१० वीजा पशुनुं प्रायण तथा वध बीजे ठेकाणे कहेलुं छे तेज मुजव  
करवूँ—

११ खाखराना लाकडाना वासणमा तेनी यपा एटले फाळजु मुक्ती  
तेनो होम करवोः—

१२ होम करवो ते शोवना वार नाम देईने करवो—।

१३ ए प्रमाणे शुलगव नामनो यज्ञ करे तेने पाण्य-कार्त्तिपूष्य-पुत्र-  
पशु समृद्धि-आयुष्य वृद्धि-तथा यश प्राप्त थाय छे—।

१४ सदरहु प्रमाणे यज्ञ करीने फरीथी यज्ञ करवा वास्तो बीजो आ-  
खलो नीमीने छोडी देवो—।

सदरहु प्रमाणे क्रम्मवेदी आश्वलायन ब्राह्मणनुं धर्म सूत्रनो अर्थ  
उपर लख्यो छे, पुराणमा बहु ठेकाणे क्रष्णी रजा वीगरे आव्यायो म-  
धुपकं सहीत पूजा करीने सत्कार कर्यो एवा दाखला मळो आवे छे,  
तेषो ते वेळा मधुपक्कनो रीत वहु हत्ती एम मालुम पडे छे, केट्ला एक  
ब्राह्मण आपस्तव शाखाना फैहेवायछे, तैलंग अने माहाराष्ट्रदेशमा  
ए शाखाना ब्राह्मणो घणा छे तेमनु आपस्तंवीय धर्म सुत्रनामक शा-  
ख छे ते उपर हरदत्त वृत्ति करीने टीका छे, ते सुत्र हाल मुबद्देमा  
सरकार तरफथी छपाई बाहार पडेलुं छे तेमाथी योडाक सुत्रो नचिं  
दाखल कर्या छे.

प्रश्न पठल-सू०

१ धेन्वनदुहोर्भद्यम्	१-५-३०
२ व्याकुभोज्यमितिहित्राह्यणम्	२८
३ गेध्यमानदुहगितिवाजसत्तेयकम्	३१

( ४९ )

- ४ गोमधुपकाहेवेदाध्यायः २-४-२
- ५ आचार्यऋत्विक्स्नातकोराजावाधर्मयुक्तः २-४-३
- ६ आचार्यायत्विजेश्वशुरायराज्ञइतिपीरसंव  
त्सराटुपतिष्ठद्वोगोमधुपकश्च । २-४-७
- ७ धर्मज्ञसमयःप्रमाणवेदाश्च १-१-२

अर्थ—

- १ गाय तथा बब्द भक्षण करवा योग्य छे:—
- २ पक्षी भक्षणने लायक छे एम ब्राह्मण यंथमा कह्युँ छे:—
- ३ बब्द यज्ञ पशु छे एम वाजसनीय कहे छे:—
- ४ गायनो वध करीने मधुपर्क करवो एवी वेदाज्ञा छे:—
- ५ आचार्य-ऋत्विज-वर-तथा राजा एमने मधुपर्क आपवो जोइये:—
- ६ ससरो-इलादो एकेक वरसने अंतरे घेर आव तो ते मधुपर्क वरवा  
योग्य छे:—
- ७ धर्म जाणवानी जेनी इच्छा होय तेणे वेदनुँ प्रमाण राख्युँ:—

कात्यायनकल्पसूत्र

मधुपर्क

पडधर्याभवंति।आचार्यऋत्विग्रौवाह्योराजाग्रियस्नातक  
इति। गौरितित्रिःग्राह ॥ आलभेत्

अन्नप्रशान

भारद्वाजमांसेनवाक्यंसारिकामछकपिंजलमांसेनान्ना

द्यकामस्यमत्स्यैर्जवनकामस्यकृकरवावा । आयुः कामस्य।

शूलगवः स्वर्गपश्चात्यः

रौद्रं पशुमालभेत्

नवकंडिकाभ्राद्धसूत्र

अथतृप्तिः । छागोमिपानालभयनस्वयं मृतानाहृत्यपचेन्मांस  
द्वयं तु मत्स्यैर्मांस त्रयं हारिणे न च तुरः और भ्रेण पंचशाकु  
नेन षट्क्षागेन सप्तकौ मैणा षट्वारो हेण न वमेप मांसे न द्रादश व पाणि  
हिष्णै कादश पार्पते न संवत्सरं तु वाध्रीन मांसे न द्रादश व पाणि  
खद्ग मांसं कालशाकं लोह छागमा संमधु महाशत्को अक्ष  
यत्तृप्तिः ॥

अर्थ—माध्यधिनी शाखाना जे ब्राह्मण छे ते काल्यापन सूत्रनो उ-  
पयोग करेछे ते भा मधुपर्क, अन्नप्राशन, शूलगव, श्राद्ध, ए चारे अनुष्ठा-  
नमा हिंसानु प्रतिपादन कयु छे ते आश्लायन सूत्र प्रमाणे छे माटे  
तपशीलवार विस्तार कर्यो नयी जेने विस्तार जाणवानी ईछा हशे  
ते उपर लखेला सस्कृत वाक्यो वारे तो तेना ध्यानमा आवश्यो

ब्राह्मणो नी जेटली शाखाओ छे एटलो सूत्र छे ते बधा तपासता  
पार आवे तेवो नयी माटे भर्म सूत्रना यथ मुकी स्मृतियो नो तपास  
करीपे स्मृति यथ एकदर पचास साठ छे ते दरेक क्रपिना ना-  
मयी ओळखाय छे तेना नाम

१ भनु २ याज्ञवल्क्य ३ विष्णु ४ हरित ५ उशना

દ્વા અંગેરા ૭ યમ / આપસ્તંબ ૯ સંવત્ ૧૦ કા-  
ત્યાયન ૧૧ વૃહસ્પાતે ૧૨ વ્યાસ ૧૩ શંખવાલિખિત  
૧૪ દક્ષ ૧૫ ગૌતમ ૧૬ શાત્રાત્પ ૧૭ વસ્તિ  
દ્વાત્યાદિ.

આ ઉપર વત્તાબ્યા તે તથા બીજા ઘણા છે એ સર્વ યંથોને ધર્મ  
શાસ્ત્ર કહેવાય છે તેમાં મનુ તથા યાજ્ઞવળ્ય એ વે શ્રેષ્ઠ ગણાય છે  
અને એ વે જણના બનાવેલા યંથ પેણ મોટા છે, અને તેમના યંથના  
અચાર—ચ્યવહાર—તથા પ્રાયશ્રીત એવી રીતના ત્રણ ભાગ કરેલા  
છે. મનુસ્મૃતી ઉપર કુલુકભટની ટીકા છે તે પ્રસીદ્ધ છે તે શિવાય મેધા  
તીયી બીગરેની ટીકાઓ છે. મનુનુ વચન પ્રમાણ છે એમ વેદમા પણ  
કહેલું છે. યાજ્ઞવળ્ય સેહોતા ઉપર મીતાધરા નામની ટિકા છે તે  
બીજાનેશ્વર નામનો પંડીત થદ્દ ગયો છે તેણે ક્રાંતીલીછે. એ વે યંથમાયો  
પ્રથમ સ્વાયંભુ મનુનું કે જે બ્રહ્મ દેવનો છોકરો હતો એવું તે પોતાની  
સ્મૃતીમાં લખે છે તેનું ધર્મ શાસ્ત્ર તપાસતા નીચે લખ્યા પ્રમાણે વચનો  
મદ્દી આવે છે:— આ યંથનો ગુજરાતી તરજુમો જલ્હેરીલાલ ઉમ્રીયાં-  
કર યાજ્ઞોને પ્રસિદ્ધ કર્યો છે તેના આપાર સાથે અર્થ લખવામા આવદો:—

### મનુસ્મૃતિ

અ શ્લો

- ૧ ઇદં શાસ્ત્રંતુકૃત્વાસौમામેવસ્વયમાદિતં ૧ ૫૮  
૨ ત્રાહ્યણો જાયમાનો હિપૃથિવ્યામધિજાયતે,  
ઇશ્વરઃ સર્વભુતાનાં ધર્મકોશસ્ય ગુપ્તયે ૧ ૯૯

- ३ सर्वस्त्रियाणस्येदंयत्किञ्चिद्गतीगतं  
श्रैप्रयेनाप्तिज्ञेनेदंसर्वविश्रान्ताणोहन्ति २-१००
- ४ वेदाभ्यासोहनिषाणांतपःपरमिहोच्यते २-१६६
- ५ श्रुतिस्मृत्युदितंवर्ममनुतिष्ठतिमानवः  
दहकीतिंमवाप्नोतिग्रेत्यचानुत्तमंसुखं २-११
- ६ धर्मजिज्ञासगानानांप्रमाणंपरमंश्रुतिः २-१३
- ७ अग्निवायुरविभ्यस्तुत्रयंत्रत्वसनातनं ।  
दुदोहयज्ञासिध्यर्थमृग्यतुःसामलक्षणं ॥ २-२३ ॥
- ८ तिलैविंहियवैर्मार्पिरादिमूलफलेनवा  
दत्तेनमासनृष्टिविधिवसितरानृणाम् ३-२६७
- ९ द्वोमासौमत्यमांसेनत्रोन्मासान्हारेननु ३-२६८
- १० पण्मासच्छागमांसेनपाप्तेनचसुप्तवै ३-२६९
- ११ दशमासास्तुनृष्टिन्तिराहमहिपामिपैः  
शशकूर्मयोस्तुमांसेनमासानेकादशैवनु ३-२७०
- १२ वधिणसस्यमांसेननृसिद्धादशावार्पिकी ३-२७१
- १३ कालशाकंमहाशल्काःखड्डुलोहामिपंधु ॥  
आनंत्यायैवकल्पयन्तेमुन्यन्नानिचसवैशः ३-२७२
- १४ ग्रोटितंभक्षयेन्मासंत्राद्याणानांश्वकाम्यया ।

यथाविधिनियुक्तस्तुप्राणानमेवचात्यथी । ५-२७

२५ ग्राणस्यान्नमिदं सर्वप्रजापतिरकृपयन् ॥

स्थावरं जंगमं श्वैवं सर्वप्राणस्यभोजनं ५-२८

२६ वभुवुहिं पुरोङाशभद्र्याणां मृगपक्षिणां ।

पुराणेष्वपि ज्ञेपुत्रहक्षत्र सवेपुच ॥ ६-२३

२७ देवान्पितृं श्वाचार्चायेत्वाखादं मां संनभुयते । ६-३२

२८ यज्ञार्थपश्चवः सृष्टास्वयमेवस्वयंभुवा ॥

यज्ञस्यभूत्यै सर्वस्यतस्माद्ज्ञेवधोवधः ५-३९

२९ औपध्यः पश्चवो वृक्षास्तिर्थः श्वपक्षिणः स्तथा ॥

यज्ञार्थनिधनं प्राप्ताः प्रान्पुर्वत्युसृतिः पुनः ५-४०

२० मधुपक्षेचयज्ञेचपितृदैवतकर्मणी

अत्रैवपश्चवो हिंस्यानान्यत्रेत्यब्रवीन्मनुः ५-४१

२१ एष्वर्थेषु पश्चून् हिंसन् वेदतत्वार्थविद्विजः ॥

आत्मानश्वपश्चूश्वैव गमयत्युतमांगतिम् ५-४२

२२ चृथापश्चुधः प्राप्तोत्तिप्रेत्यजन्मनिजन्मनि । ५-३८

२३ नवेदविहिताहिंसामापद्यापि समाचरेत् ५-४३

२४ यावेदविहिताहिंसानियतास्मिन्चराचरे ॥

अहिंसामेवतां विद्यादेहात्ममौहिनिर्बभौ ॥ ६-४४

२५ पाठीनरोहितावायौनियुक्तौहव्यकव्ययोः ५-१६  
 २६ नकृत्वाप्राणिनांहिंसामांसमुत्पद्यतेक्षवाचित् ।  
     नचप्राणिवधःस्वर्ग्यतस्मान्मांसविवर्जयेत् ५-४८

२७ नियुक्तस्तुयथान्यायंयोमांसंनातिमानवः॥  
     सप्तेवपशुतांयानिसंभवानेकविंशतीम् ५-३५

२८ श्वमांसमिछन्नेतौन्तुधर्मधर्मविचक्षणः॥  
     ग्राणानांपरिरक्षार्थवामदेवोनलिङ्गवान् १०-१०६

२९ क्षुधातंश्वान्तुमध्यागाद्विश्वामित्रःश्वजाघनीम् ॥  
     चाण्डालहस्तादादायधर्मधर्मविचक्षणः॥१०-१०८

- १ आ शास्त्र रचीने ब्रह्माये मने वीर्धी पुर्वक भणाव्युः—
- २ ज्ञान्यण ज-मे छे सारथीज ते पृथ्वी उपर श्रेष्ठ भणाय छे, अने सर्व प्राणीनो उपरी छे, पर्व हर्षी भडास्तु रक्षण करवानु काम एने सोपेनु छे.—
- ३ जे कोई वस्तु संसारमा छे ते सर्व ज्ञान्यणनी पोतानीज होय एम छे, केमके ए प्रथम ब्रह्माना मुख्यी उत्पन्न थयेलो छे. अने सर्वधी श्रेष्ठ छे, तेथी सर्व वस्तुओंनो स्वामी ज्ञान्यण थइ सको छे.—

४ वेदाभ्यास छे ते ब्राह्मणनु परम तप कहोलु छे.—  
५ ध्रुति तथा स्मृतिभा कहेला धर्म प्रमाणे चालनारा मनुष्यो आ  
लोकनीं कीर्तने तथा परलोकना उत्तम मत्वने पामे छे —

- ६ खर्म ज्ञाणवानी इच्छा राखनाराओनुं परम प्रमाण भुति छे:—
- ७ अग्मि-वायु-तथा सुर्यमार्थी अनुक्रमे क्रमवेद यजुर्वेद-अने सामवेद ए व्रणे वेद यज्ञ सोदीने सारु दोही कहाड्या होय तेवी रीते उत्पन्न कर्याः—
- ८ तल-डांगेर-जव-अडद अथवा मूळ-फुल एओमार्थी कोइ एक वस्तु शास्त्रवानी रीते आप्यार्थी एक मास सुधी पित्रियो तृप्त थाय छे:—
- ९ माछलाना मासथी वैमास तृप्त रहेछे. अने हरणना मासथी त्रण मास रहेछे:—
- १० बाछडाना मांसथी छमास सुधी तृप्त रहेछे. अने चौक्र मृगना मांसथी सातमास सुधी तृप्त रहेछे:—
- ११ भुंड तथा भेंशना मासथी दशमास सुधी तृप्त रहेछे. अने ससला तथा काचबाना मांसथी अग्नियारमास सुधी पित्रि तृप्त रहेछे:—
- १२ लाला कानवाळा घोला बकराना मासथी बार वर्ष सुधी पित्रि तृप्त रहेछे:—
- १३ “काळशाक” नामनुं शाक, “माहाशाल्क” नामना मत्स्य अथवा गेंडा, लाल बकर, एमाना कोइ एकनुं मास आप्यार्थी, मध्यर्थी अने सर्व प्रकारना क्रषी धान्य अने दनवगडामा जे थाय छे ते आप्यार्थी अनंत वर्ष सुधी पित्रि तृप्त थाय छे.—
- १४ यज्ञने अर्थे जे मासनुं वेद मंत्रथी प्रोक्षण थयुं होय अने ब्राह्मण तेनुं भद्यण करवानी आज्ञा करे अगर प्राण जवानी धास्ती लागती होयतो तेनुं भक्षण करुँ:—
- १५ ब्रह्माये प्राणना रक्षण सारु सृष्टि सरजाछे. माटे स्थावर जंगम सर्व पदार्थ प्राणना उक्षभोगने अर्थे छे.—

- १६ अगाडना काळमा ग्रामण तथा क्षत्रीयना यज्ञमा भक्षणने योग्य एवा जनावर तथा पक्षीना मासनुं देवताने नैवेद करवामा आवतुं हतुः—
- १७ देवनी तथा पित्रिनी पुजा करी रक्षा पछी मासनुं भक्षण करतो तेने दोष नयीः—
- १८ स्वयंभुए पोते पशुने यज्ञने अर्थे सरज्या छे. अने यज्ञ आ सर्व जगतनी बृद्धि सारु ठराववामा आव्यो छे. माटे यज्ञ सारु पशु नी हिंसा करनार हिंसक नयीः—
- १९ औपधी-पशु-वृक्ष-जनावर-अने पक्षीओनो यज्ञने अर्थे नाश थाय तो ते परलोकमा उत्तम जन्म पामे छे:—
- २० मधुपर्कने समये-यज्ञमा-अने पीत्री कर्ममा तथा देवना कर्ममा एट-लेज प्रसंगे पशु हिंसा मनुए कहेली छे:—
- २१ ऊपर कहेले प्रसंगे वेदना अर्थ तथा तत्त्व जोणनारो द्विजाती वर्णवाळो पुरुष पशु हिंसा करे तो ते पोते तथा पशु ऊपर उत्तम गतीने पामेछे:—
- २२ मास भक्षणनी ईच्छा पूरी करवा सारु पशु हिंसा करनार पुरुषने ते पशुना शरीर ऊपर जेटला बाबछे तेटला मृत्यु तेणे जन्मो जन्म परलोकमा थाय छे:—
- २३ वेदनी आज्ञा वीना आपसिकाळमा पण पोताना अगर गुहना घरमा अथवा अरण्यमा पशु हिंसा करवी नहीः—
- २४ वेद विहित हिंसा स्थावर जंगम जगतमा करवामा आवेछे तेने हिंसा गणवी नही कारण के वेदमाथी धर्म निष्पन थयो छे:—
- २५ पाठीन तथा योहितनुं मास हव्य कव्यमा आव्यु होय तो ते परोणा-ने खवगवतुः—

२६ पशु हिंसा विना काई मास मबी सकत् नथी पण प्राणीनी हिंसा करवायी स्वर्ग प्राप्ती नयी माटे मास भक्षण तदन वर्ज्य करुं जुखनु छै —

२७ धर्म शास्त्र प्रमाणे धर्म कार्यमा लागेलो पुरुष जो मासनु भक्षण न खरेतो ते मुवा पछी एकवीस ज म सुधी पशु अवतरे छे —

२८ धर्म अधर्म समजवामा विचिभण एबो वामदेव पण घणी भुखथी पीडायो हतो थारे प्राणनु रक्षण खरवा साहु कुतरानु मास खावानी तेनो ईच्छा थई परतु तेथी काई तेने दोप लाग्यो नही —  
२९ तेमज धर्म अधर्म समजवामा जेनो बरोबरी कोईथी थई न शके एबो विचिक्षण ऋषि विश्वामित्र तेणे पण ज्यारे कुधायी मरवानी तैयारीमा हतो थारे झुखरानु मास चढाउना हाथथी लेई खावानो नीथ्य कीधो —

सदरहु प्रमाणे मनुना धर्मशास्त्रमायी वउनो लख्या छे, हवे यज्ञवल्य स्मृतिमा आचार अध्याय छे तेमाना केटलाएँ वउनो नीचे लख्या छे —

### ग्रहस्थधर्मग्रकरणं

महोक्तंवामहोजंवाश्रोत्रियायोपकल्पयेत् ॥ १०८

यज्ञेश्वरशास्त्री

पान ७५

ग्रतिसंवत्सरंत्वधर्यस्नोत्तिकाचार्यपार्थिवाः॥

प्रियोविवाह्यथतथायज्ञेप्रत्यत्विजपुनः १०९

अर्थ—श्रोत्रिय एठले अभिहोत्री ब्राह्मण आपणे घेर आण्या

होय तो मोटो बळद अथवा मोटो वकरो तेमने भक्षणार्थ आपवो; ए उपर टीकाकार एम लखे छे के.

॥ अस्वर्ग्यलोकविद्विष्टं धर्ममप्याचरेन्नत्विति । निषेधाच्च ॥

स्नातक, आचार्य, राजा, मित्र, जमाई, एओने मधुपर्क पूजा प्रतिवर्षे करवी तथा ऋतिज्ञनी प्रत्येक यज्ञमा करवी एम लखीने आश्लायन भूत्वां वचन दाखल कर्यु छे.

मनुमा 'कल्पयेत्' आ शब्दनो अर्थ एवो लख्यो छे.

॥ प्राणस्यान्नामिदं सर्वप्रजापतिरकल्पयत ॥ ५-२८२

आ उपर्यो 'कल्पयेत्' आ शब्दनो अर्थ भक्षणनो जणाय छे. पण टीकाकार ते वात उडावी दीपी छे. वीजुं एम लखे छे के.

॥ अर्धशब्दोमधुपर्कलक्षयति ॥

आ प्रमाणे मोटो माणस घेर आवे तो तेने अतिथि, के अभ्यगत कहेवाय छे अने तेनो सत्कार करवाने वास्ते मधुपर्क छे:—

अने दक्षणमा जमीनदार लोक अने वर्णी मा, राजा, ईर्यादिकने खेट वकरानी कीमत आपगानी आजे वहीवट चालेछे. ईराण-देशमा भोटो मांगस आवे तेने वास्ते वळद के गाय मारी नाखवानो वहोवट चालेछे ते भोदुं मान गणाय छे ए प्रमाणे ईराणना ईतिहास उपर्यो जणाय छे. हवे भव्या भक्षण प्रकरणमा लखे छे के

॥ भक्ष्याः पञ्चनखाः सेधागोधाकच्छपशालकाः ॥

॥ शशश्वमत्येष्वापीहीसिंहतुंडकरोहिताः ॥ १७६ ॥

॥ तथापाठीनराजीवसशालकाश्वद्विज्ञातिभिः ॥

।। अतःशृणुधर्मांसस्यविधिंभक्षणवर्जने ॥ १७७ ॥  
 ॥ प्राणात्ययेतथाश्राद्धेप्रोक्षितांद्विजकाम्यथा ॥  
 ॥ देवान् पितृन् समभ्यर्च्यखादन्मासंनदोषभाक् ॥ १७८ ॥  
 ॥ वसेत्सनरकेघोरोदिनानिपशुरोमाभिः ॥  
 ॥ समितानिदुराचारोयोहत्याविधिना पशून् ॥ १७९ ॥  
 ॥ सवन्निकामानवाग्रोतिहयमेधफलंतथा ॥  
 ॥ गृहेषिनिवसन्निवप्रोमुनिर्मासविवर्जनात् ॥ १८० ॥

अर्थः

१ पाच नखबाढा प्राणीमाधी शाहुडी, पाटलागो, काचबो, शत्क,  
 ससलुं, गेडी, ए प्राणी भक्षण करवामालेवाय अने पाठीन अने  
 राजीव ए वे जातना माछला द्विजने भक्ष्य छे.  
 २ मासना भक्षणनो तथा परिखागनो विधि सामनो.  
 ३ प्राणसंकटमा तथा श्राद्धर्मा मास भक्षण करवुं. प्रोक्षित मास  
 तथा ब्राह्मण भोजनने सारु अथवा देव पितृ कार्यने सारु  
 सिद्ध करेलुं मास देव पितरनी पुजा कर्या पछी बाकी रख्यु होय  
 ते भक्षण करे तो दोष नयो. 'प्रोक्षितं' एटले प्रोक्षण नामनो  
 संस्कार करीने यज्ञ कर्या पछी बाकी रहे ते प्रोक्षित मास कहे-  
 वाय छे. तेनु अवश्य भक्षण करवुं कारण न करे तो यागनी स-  
 माति न थाय.

४ जे माणस विधि विना पशुनो जीव लै ते नरकमा जाय —  
 ५ जे मास ल्यागी छे तेने अश्वमेध यज्ञनु फळ मळे छे अने ते गृ-  
 हस्थ छता मुनी जाणबो. आ वचन टोकाकार लखे छे के. अ-

वृथ भथण फरवु जोइए तेवु प्रोसितादो मासना परियागने  
माटे नयो ॥

## ॥ श्लोक ॥

- १ ॥ हविष्यन्निनवैमासंपायसेन्नुवत्सरम् ॥ २५७ ॥
- ॥ मात्स्यहारिणकौरभशाकुनच्छागपार्पतैः ॥ २५७ ॥
- २ ॥ ऐणरौरववाराहशाशौमसैर्यथाक्रमम् ॥
- ॥ मासवृद्धयाभितृष्यांतिदत्तैरहपितामहाः ॥ २५८ ॥
- ३ ॥ खड्डामिपंमहाशाल्कंमधुमुन्यन्नमेवच ॥
- ॥ लोहानिपंमहाशाकंमांसंवार्द्धिणसस्यच ॥ २५९ ॥

## अर्थ

- १ अबवडे एक मास, दृधपकिवडे एकवर्ष मत्स्य, हरण, घेठो, पक्षी बकरो, काढो हरण, सामर, भुंड, समलुं ए प्राणीओनुं मास पीतृ गणने आप्याधी एक मास अधिक तृप्ति पाय छे
- २ गेढानुं मास, महाश्वल्क करीने एक मस्यनी जात तेनुं मास, मध अने बनमा ययेला थाय, लाल रंगनो बफरो तेनुं मास, काल-शाक अने वार्धीणस एटले थोको बकरो तेनु मास आप्याधी अनत फल दायक छे
- त्रिनायक शातिमा वचन छे ते नोचे प्रमाणे ॥

## ॥ श्लोक ॥

- १ ॥ मत्स्यान्पकास्तथैवामान्मांसमेतावदेवतु ॥ २८६ ॥
- २ ॥ पुष्पांचित्रेसुंगधंचसुरांचन्निविधामपि ॥ २९७ ॥

अर्थ — राचा पारा मत्स्य अने तेंज मास पुष्प, सुगंधि पदार्थ अने नण प्रकारनी दान एठले गोळ, मटुडो, तथा लोटनी ए पदार्थनो विनायक अने तेनी माता अविकाने निवेद करवो.

यह यज्ञ नरवानी विधिमा लखे छे के — ॥ ५ ॥

२ ॥ गुडौदनंपायसंचहविष्यंक्षीरपाइकम् ॥ ३०३ ॥

॥ दध्योदनंहविश्वर्णमांसचित्रान्वेवच ॥ ३०३ ॥

२ ॥ दद्याद्यहक्तमादेवद्विजेभ्योभोजनंदिजः ॥ ३०४ ॥

॥ शक्तितोवायथालाभंसल्कृत्यविधिपूर्वकम् ॥ ३०४ ॥

अर्थ । ३०४ ॥

१ गोळ, दुधपाक, ऋषिधान्य, धीर, दहीं भात, धीं भात चटणी, मास, केशरी भात इत्यादि गृह तृप्ति नरवा वास्ते न्राघणोने ए पदार्थों वडे जगाडवा

सदरहु प्रमाणे स्मृतीयोनो विचार यो हवे पूराणनो तपास करीये, प्रथम भृत्य पूराणना १७मा अध्यायमा श्राध्यकर्त्वं लख्यो छो तेनो श्लोक

अन्नंतु सदधिक्षीरं गोघृतं शक्तरान्वितं म् ॥ मासं प्रीणाति-

दै सर्वान् पितृनित्याह कैशव, ३० श्लोक. अध्या १७

द्वौ मासौ मत्स्यमांसे न चिन्मासान् हरिणे न तु ।

और खेणाय च तुरः शाङ्कु नैना थ पंचवै ॥ ३१ ॥

षष्ठ्मा संछागमांसे न तृप्तं तिपितरस्तथा ।

सप्तपार्षतमांसे न तथा षष्ठ्मा वेण जेन तु ॥ ३२ ॥

दशमासास्तुनृपंतिवराहमहिषमिषैः

शशकुर्मजमांसेनमासानैकादशैवतु ३३

सवत्सरंनुगव्येनपयसापायसेनतु

व्याध्याःसिंहस्यमांसेनतृष्णिर्दादशवापिंकी ३४

कालशाखेनधानंताखड्गमांसेनचैवह्नि ।

यत्किञ्चिन्मधुसंमिथंगोक्षिरंघृतपायसं ॥ ३५

दत्तमद्यमित्याहुःपितरःपूर्वदेवताः ॥ ३६

उपर लखला क्षोरनो अर्थ, उपर स्मृतियोनो अर्थ लखयो छे तेमा जणावेलो छे, माटे फरी लखदानुं कारण नयो, हवे मारकंड ऋषीनुं पूराण छे तेमाना १३मा अध्यायमा देवीनुं महात्म छे तेमे घंडो पाठ कहे छे ते लोक घणा वाचे छे अने ते उपरथी जप होम पूजा इवादि अनुष्टान करे छे तेमा हेठे लखया प्रमाणि क्षोक मळे छे.

बलिप्रदानेपुजायामग्निकायेमहोत्सवे अ० १२-१०

पशुपुष्पाधैभूपैश्वर्गंधदोपैस्तथोत्तमैः अ० १२-१०

सधिरोत्तेनबलिनामांसेनसुरथानृप ॥

रहस्य अ० १५ क्षोक १८

अर्थ—देवीनो पूजामा बलिप्रदान करवुं अने गध पुष्प तथा जनावर पण आपवा अने लोही युक्त मास अने भद्रदेवीने अर्पण करवुं

हवे भारत ए शोटो इतिहासनो गंथ छे तेमा पण जे जे राजा

बहु शीकार ऊरता अने वहु जनावरो मारता तेमनो कीर्ति व्यासजीए बहु बर्णन करे छे; ते विशेषो घोडा बधनो नीचे लखया छे,

( ६३ )

१ ॥ ततस्तेयौगपद्येन ययुः सवैचनुदैशम् ।  
 ॥ मृगयां पुरुषपव्याघ्राब्लणार्थं परंतपाः ॥ ४ ॥  
 भारते द्रौपदीप्रमाये प्रथमसर्गे ॥

२ ॥ ततोदिशः संप्रविहत्यपार्थमृगान्वराहान्महिपांश्च  
 हत्वा ॥  
 ॥ धनुर्धराः श्रेष्ठतमाः पृथिव्यां, पृथक् चरन्तः  
 सहितावभूतः ॥ ५ ॥  
 द्रौपदीप्रमाये पष्टमसर्गे-

३ ॥ ततो मृगसहस्राणि हत्वा सबलवाहनः ॥  
 ॥ राजामृगप्रसङ्गेन वनमन्याद्विशेषह ॥ २ ॥  
 शकुन्त. तृतीयसर्गः, प्रथमश्लोकः--

अर्थ.

- १ ब्राह्मणोने वास्ते वहु हरण मारी लाभ्याः—
  - २ धनुर्धर, श्रेष्ठ राजाए वहु हरण तथा ढुकर तथा बगडानी भेंशो मारीने आणी—
  - ३ ए बलवान राजाये हजारो मृग मारीने बीजा मारवा साह वनमा चाल्यो—
- एज भारतना भीष्मपर्वमा भगवत गीताना मकरंथ प्रसिद्ध छे ते वेदाती तथा भक्तिमर्गवाला बने वाचे छे. तेमा नीचेना वचन मल्लो आवे छे.

सहयज्ञाप्रजासृपूरोवाचः प्रजापतिः—

अनेतप्रसविष्यधमेपवोस्तिष्टकामधुक् १० अ० ३

यज्ञशिष्टासनः संतोमुच्चिते सर्वकिल्बिपैः ॥

यज्ञाद्रुवतिपर्जन्योयज्ञः कर्मसमुद्रवः १४

३ यज्ञोदानंतपः श्वैवपावनानिमनीपिणाम्

यज्ञादानंतपः कर्मनत्पाड्यं कार्यमेवतन् अ० १८ श्लो.५

अर्थः—

१ ब्रह्माये सृष्टोऽध्यक्ष करी तेज वस्त यज्ञ करवानी यज्ञा करीने कहुं के यज्ञ करो एटले देवताओं प्रसंन थई तमारा मननी कामनाओं पुरो कर्त्तव्यः—

२ यज्ञ करीने वाकी जो रहे ते खाप तेनुं सर्व पाप बढ़ी जशे यज्ञ करेतो जर्द वरसाद पडशे अने यज्ञ ब्रह्मदेवनी आज्ञा प्रमाणे छे:—

३ यज्ञ दान-तथा तप मनुष्यने परिच रुरे छे माटे ते कर्मनो खाग कोईए रुरो नहीं ते अवश्य करवा.—

रामायण नामनो काव्य ग्रंथ छे ते मुल वाल्मीकि कृष्णिनुं करेलुँ-छे अने ते उपर्थी पुराणमां अनेक रामायण लखाया छे तेमानुं मुख्य अध्यात्म रामायण छे तेमाना उत्तरकान्दमा रामचंद्रजी रावणने जोतो सोताने लई इयारे अपोध्यामा आव्या सारे वीभासी-बृगु-अगो-रा-रामदेव- अगस्ती इयादी क्षणी रामचंद्रजनि आशीरवादने साह आव्या ते वस्त, मधुपकं पूजा करी रामचंद्रजाए क्षणीओने मान आ-पुं, ते विशे श्लोकः—

दृष्टरामोमुनीनशेवंप्रत्यायरूतांजलिः

पाद्याधर्षादिभिरापुज्यगानिवेदयथाविधि

उत्तरकांडे अ० १० श्लोक १३

टिका.

गांमधुपकर्थेवृपभंच । महोक्षंवामहो

जंवाश्रुत्रियोपकल्पयेदितिस्मरणात्

अर्थः—रामचंद्रजीए मुनीयोना देखताज उभा थइ हाथ जोडी पग पोवानुं पाणी अने अर्ध्य इत्यादि पुजा करीने वीर्धी प्रमाणे गायो-नोवेदन करी ए उपर टीकाकारलखे छे के मधुपक पुजा करवाने साह गाय अथवा बछद आपबो जोइए एबो वीर्धी स्मृतिमाँ रहेली छे.

स्मृति पुराण-इतीहास तथा काव्य आ यंथो क्रष्ण लोकोये करेला तेथो आर्ष रहेवाय छे खार पठी लोकोए एवं मानुं के हवे दु-नीयामा क्रष्ण नयो परंतु जे रथ्या छे ते मनुष्य छे अने ते मनुष्ये करेला यंथ तेने पौरुष यंथ कहेवाय छे अने तेवीज जातना यथने निबंध पण कहेवाय छे आवा निबंध संस्कृत भाषामा घणा छे अने मापद-हेमाद्री-कमलाकर इत्यादि निबंधकार घणा थइ गया छे केटलाकोए व्याकर्ण शास्त्र उपर पोताना नीबंध लख्या छे तेमज केटलाकोए धर्मशास्त्र, वैदक इत्यादि उपर लखेला छे अने तेमणे पोताना नीबंध रचवामा आर्ष यंथनो आधारलीपेलो छे आवा निबंध करनारा मानो कोस्तुभकार वीवाह प्रकरणमा छापेला यथने पाने २१७ मे नीचे मुजब लखेलु छे —

अन्नजयंतः । गौःप्रतिनिधिल्लेनछागआलभ्यते ।

उत्सर्जनपक्षेपिछागएवनिवेदनीय इति ।

गौणौरितिगविमनसिधृतायांद्वान्तिंशत्पणात्मकनिष्क्रय।

चागेमनसिधृतेषणात्मकोनिष्क्रयोदेयः ।

नामांसोमधुपकोभवति । इतिसूत्रात् ।

उत्सर्जनपक्षेपिअन्येनमांसेनभोजनदानमिति ।

वृत्तिलक्ष्यंतादिभिरभिधानाच्च ॥

अर्थः—गायने ठेकाणे बकरू मारवुं जोइये गाय छोडी मुकुवानो पक्ष लीधो होय तोपण बकरो नीवेदन करवो, ने गायने बदले तेनी कीमत आपवी होय तो तेना ८३२) आपवा बकराने बदले ८१) आपवो, मास वीना मधुपर्क यतु नयी एवुं आश्वलायन आचार्य पोताना धर्म सुव्रमा लखे छे माटे उत्सर्जन पक्ष लीधो होय तोपण वीजा प्रकारथो मास लावीने भोजन आपवुं एवुं जयंतादीकि वृमिकारनो अभीप्राय छे:—

### अत्थविवेकमा

अथमांसानि ॥ गंडकमांसंविष्णुसमयानुत्थितशृंगछाग  
मांसंसर्वलोहितछागमांसंहरिणविचित्रहरिणकृष्णहरिण  
शंखरमृगमेष्ठशक्करूर्मा८८४दरण्यदरहमांसान्तिस्तिरिला  
वकवर्तकीशलकीक्रकरएपांपक्षिणांमांसानिक्रकरःकरा  
तइतिप्रसिद्धवार्धिणसंमांसोन्निपिवंत्विन्द्रिपक्षिणंशेत्वृद्धभ  
जापतिंवार्धिणसंतुतंप्राहुर्याङ्गिकाःपितृकर्मणिकरण्याश्रीवो

रक्तशिराः श्वेतपक्षोविहंगमः सवैवार्द्धिणसः प्रोक्तदत्येपानै  
गमीश्रुतिः छागपक्षिणोवार्द्धिणसौतयोर्मासंमन्त्रसंस्कृतमांसं  
यदाञ्छागादिकं प्रभुमालभ्यमांसमुपादीयतेतदाप्रथमं मन्त्रे  
णषशुप्रोक्षणं कर्तव्यम् ॥ मन्त्रश्व ॥ ओ॒म् पितृभ्यस्त्वा  
बुष्टं प्रोक्षामि ॥ एकोद्दिष्टेनुपित्रेत्वा जुष्टं प्रोक्षामित्यादिस्त्वः  
अनालंभपक्षेसिंहादिहतमांसादिपुनमन्त्रसंस्कारापेक्षेति सिं  
हव्याघहतहरिणं मांसं लब्धकीतछागादिमांसम् मस्थराद्य  
भिवातछागादिमांसं ॥ अथ मत्स्याः ॥ महाशल्करोहित  
राजीविषाठिनश्वेतशल्काअन्येषि ॥

### काशिमां छापेलि प्रतनुं पान१६

अर्थ— श्राद्ध विवेक करीने एक यंथ छे तेमा मावापना श्राद्धना  
विधि अनेक प्रकारना लख्या छे तेमा श्राद्धमां अनेक जनावरना मास  
भक्षण करवा विशे लख्युं छे, तेनी विगत, जंगलीभेस, बकरो, हरण,  
रोज़, घटा, ससलु, काचवा, जंगलीभूंड, अने तेतर, लावक, इया-  
दिक पक्षि, अने जनावरे, मन्त्रयो पवित्र करीने पाणी छाठीने, अने  
एवो मन्त्र भण्वो के, मारा पिचीने वाले योग्य करवा सारु पवित्र क-  
रुछुं, एवं भणीने तेनुं मास लेवुं, अथवा पशु हिंसा करवाने अनुकूल  
न होयतो, व्याघ के सिंहे मारेला जनावरनुं मास लेवुं, अने एवं जना-  
वर मळे तो मन्त्र भणवानी जरुर न थी, अथवा बेचाथी लाववुं, एज प्रमाणे,  
महाशल्क, लाल माछला, राजाव, तथा पाठिण, इसादि श्राद्धमा  
योग्य छे

भवभुती कवी जे भोजराजाना वखतमां ययो तेणे उत्तरराम च-  
 रीन नाटक लख्यु छे ते प्रसीद छे अने नीशाळोमां पण चालेछे तेना  
 नोपा अंकमां वशीष्टना शाश्वत सौधानक अने भान्डायन ए बनेनो  
 संवाद लख्यो छे तेमां प्रसंग एवो छे के राजा दशरथ वशीष्ट मुनीने  
 घेर आव्या लारे एक वाछडु मधुपर्कने साह मार्यु. लार पछी जनक  
 राजा थोव्यो लारे मधुपर्क कर्यो नही कारण ए राजा नीवृत्तिमार्गनो  
 हतो माटे मधुपर्कनी जहर नथी ते वीशो नीचे मुजव संवाद छे—  
**सौधातक--मयापुनज्ञातंव्याघोवा**  
**वृकोवाएपद्धति ।**

**भांडायण--आःकिमुक्त्तभवति--**

**सौ० तेनसावत्सतरीभक्षिता ।**

**भा० समांसमधुपर्कद्वत्माम्नार्यवहुमन्यमानाः**

**श्रोत्रियायाभ्यागतायवत्सतरी ।**

**महोक्षंवामहोजंवानिर्विपंति । गृहमेधिनः ।**

**तंहिधर्मसूत्रकाराःसमामनेति**

**सौ० येनआगतेपुवसिष्टमित्रेपुवत्सतरीविश्वसिता ।**

**अद्वैवप्रत्यागतस्यराजर्पजनकस्यभगवतावाल्मी**

**किनापिदधिमधुजिरेवनिवर्तितोमधुपर्कः**

**भा० अनिवृत्तमांसानामेवकल्पंमूपयोमन्यते**

**निवृत्तमांसस्तुतत्रभवान्जनकः ॥**

पश्चपुराणना पताकावंडमा रामाभमेपनो कथा छे तीना साठभ  
स्थाय छे तेमाना तातगा भस्यायमां एवं लक्ष्य छे के रामचंद्रजनि  
अपोस्थामा आध्या पछी बटु पक्ष्याताप थयो के यूद्धमा पोताना हाथयी  
बहु वाङ्गण रावणादीरु मरीगया तेनुं पाप केम जशे एयो प्रभु पुछा  
थी असीए जराब आध्यो के ए सबै पाप नाश थवा सारु अभमेप यरा  
करयो ते शोवाय बीजो उपाय नथी अने आगळ जे मोहोटा मोहोटा  
राजाओ धर्द गया छे तेमणे अभमेप करीने स्वर्गवास कर्यो तेज  
मुजब तुं कर एटले तारुं सरवे पाप वट्टी जशे ते बीजो नीचे लख्या  
मुजबनां वचन छेः—

**रामउ० न्राह्मणास्तुपूजाहोदानसन्मानभोजनैः ॥**

तेमयानिहताविप्राः शारसंघातसंहितैः ॥

कुर्वतोवृत्थिपुर्वमेत्रह्महत्यासुनिंदिताम् ॥

इत्पुत्त्ववंतंतंरामंजयादसतपोनिधिः

**शेपउ० शृणुराममहावीरलोकानुग्रहकारक ।**

विप्रहत्यायनोदायतवयद्वचनंत्वुवे ।

सर्वसपापंतरतियोक्तमेधंयजेतत्वै ॥

तस्मात्वयजविश्वात्मन्वाजिमेधेनशोभिना

सवाजिमेधोविप्राणांहत्यातापापनोदनः

कृतवान्यंमहाराजोदिलिपस्तवपूर्वजः ॥

मनुश्वसगरोराजामस्तोनहपात्मजः ॥

एतेतेपुर्वजाः सवैयज्ञान्कत्वापदेगताः ॥ ३५८.७॥

उपर मुजवनां सधवा शास्त्रोना यथं तपासता मालुम पडे छे के बधा संस्कृत ग्रन्थना धण भाग करेला छे:—

## २ छादस २ आर्य ३ पौरुष

छादस एटले परमेश्वरे करेला यथं-आर्य एटले ऋषिभोए करेला यथं, पौरुष एटले मनुष्योए करेला यथं, तेमा छादस यथं एटले वेद, तेमा भंत्र तथा ब्राह्मण, भंत्र एटले कर्मनी प्रवृत्ति करनार वचनः:—

मंत्रराशिवेदद्युच्यंते

कर्मप्रवर्तकामंत्राः

ए भंत्र जुदा जुदा ऋषीयोग्ये भणावाधी शास्त्रा भेद पञ्चो तेनु नाम “चरण” पण छे:—

अध्ययनभेदाश्चाखाभेदो अनादिः

चरणशब्दः शास्त्रावेशो ध्यापन

परैकतापन्नजनसंघवाची ॥

आश्वलायन शौनक कर्णोनो शीघ्र हतो, शौनके पण वेद उपर ऋग्वेदिपान, सर्वानुकम, इत्यादी यथं कर्या छे, अने आश्वलायने पर्म सूत्रकृत्य छे.

शौनकस्य तु शिष्योऽभूत्भगवान् आश्वलायनः ॥

कल्पमूत्रचकाराद्यं महापिंगण्याज्जितः ॥

ए प्रमाणे अनेक शास्त्राना अनेक आचार्य यथा छे, पर्म शास्त्रमासु यथं वेदना वरोवर मानेला छे कारण ए ग्रन्थो वेदने घणा मळ.

ता छे अने वेदार्थ लेइनेज रचेला छे. अने सुत्र उपरथी शोक बंध स्मृतियो थयेलीयो छे. वेद जोता मास खावाने के हिंसा करवाने काई नाषेध जणातो नथी. स्मृतिना काळगा एटले कबीयुगना आरंभमा वैदीक धर्म उपर एक मांहोटु बंड उभु थयुं ते उभु करनार बुध नामनो मगध एटले गयानो राजा हतो तेणे ब्राह्मणोनी बहुज नीदा करी अने वेदनो पीकार कर्यो ते वीशे जप देव स्वामी पोताना गीत गोवींद राव्य यंथमा पेहेली अष्टपदीमा दशावतारनं वर्णन कर्मु छे तेमा बुद्ध वीशे लखे छे के —

**निंदसियज्ञविधेरहहःश्रुतिजातं**

**सदयत्वदयदर्शितपशुघातं ॥**

**केशवधृतबुद्धशरीरं ॥ १ ॥ गीतगोविंद.**

अर्थ — भगवान वीष्णुये बुध रूप लेइने वेदमा कहेला यज्ञ वीधीनी नीदा करी कारण के ए वीधीमा जे पशु मरता हता तेमनी भगवानने दया आवी. एज यंथमा एक श्लोकमा दशावतारनु वर्णन कर्मु छे. तेमा बुध विशे लख्युं छे के —

**कारुण्यमातन्वते**

अर्थ — बुधे दया धर्म प्रगट कर्यो —

ए यंथना आचार्य अने पडीत देशोमा फरी फरी उपदेश करता उत्तरमा चीन देश ब्रह्मदेश सुधी बौध धर्म स्थापन कर्यो दक्षाणमा लंकामा पण ए धर्म चाले छे हिंदुस्थानना ब्राह्मण एम बोलवा ला ग्या के कबी उपन्न थयायी वैदीक धर्म ढुधी गयो कबी एटले ठंटो. ए ठंटो शह थपो खारथीज जुग जुदो मानेलो छे. बुधना तकरार .

चालता बीजो एक तकरार ऐसी उत्पन्न थइ के केटलाक लोक साख्य  
शास्त्रनो अभ्यास करीने एवुं फहेवा लाग्या के ब्राह्मण लोको अमी, वायु,  
सुर्य इत्यादी अनेक देवोनी उपासना करे छे, अने तेमना नामधी यज्ञ  
याग करे छे; पण ए देव शाना, एतो पदार्थ छे, अने आ जगतनुं  
आदी कारण तो एक ब्रह्म छे माटे रुम कान्ड तमाम खोटु छे. आत्म-  
ज्ञान एन मुख्य छे ए लोकोए उपनिषेदनो आधार लीथो. आवा  
बैने तरफथो वैदीक मार्गवाङ्मा ब्राह्मणोनी बहुज नोंदा धवा लागी  
अने तेमना उपरलोकोनो बहुज धोकार थयो, तेथो वेदना पुस्तक ढा-  
की मुकुवानी जहर पडी, अने केटलीक तरेहनो वीथीनो खाग कर्यो,  
अने पुराण वीगेरे यंथमा कब्जिमा फलाणी चीज करवी नही एवा वच्च-  
नो पण दाखल कर्या, अने बैद्ध धर्मने मङ्गतुं आवे एवो घाट रच्यो.  
अने केटलीएक युक्तिये कहाडी ते एवी के आगवना ऋषी जे यज्ञ  
करता ते जनावरो मारे पाछा जीवंत करता ते मोटा सामर्थ्यवाङ्मा  
हता. केटलाक फहे छे के मन्त्रनुं सामर्थ्य तेओनी साथे गयुं पण ए विषे  
शास्त्रमा कोइ दाखलो मङ्गतो नथो एवो दाखलो मङ्गते छे के जनावर  
मारीने होमता, अने खाता, अने ते बखत जे वेद हता तेज वेद आज  
पण छे, परंतु ते मुजन आज कोइ करे तो तेनी फजेती धाय.

मगुपर्व, भनुस्तारणि, सूलगव, अश्वमेहमा संवेशन प्रकार, आलीलभाषण,  
इत्यादी रुम आज कोइ करे तो तेनी सोबत कोइ लोक ऊझो नही,  
अने तेनी साथे वेहेवार राखदो नही अने ए रुम जोता ढैड बाधरे  
पण करे नही तेवा छे गर्भाधान संस्कारमां मेंत भणे छे ते.

तांपुर्यंशिवतमामैरयस्वयस्यांवीजं

मनुष्यास्वपंति ॥ यानउविंशतिविं

अयातेयस्यामुशंतःप्रहरामशेषं ॥

ऋग्वेदः अ० ८

आवा मन्त्रनो अर्थ बतावे तो वहु अ मर्यादा थाय माटे छानु छे  
तेज सारु छे. कर्म कान्डना जे अनुठानो हता ते उपनीषद भागमा  
अपरा विद्यामा वर्णन करेला छे अने अध्यात्म विद्या श्रेष्ठ ठरावी छे.

तत्रापराऋग्वेदोऽज्ञुवेदःसामवेदोऽथर्ववेदः

गिक्षाकल्पोव्याकरणंनिसूक्तंङ्गदोऽज्योतिपामिति ॥

अथपराययातदक्षरमाधेगम्यते ॥ मुँडकोपनिषत्

अध्यात्मविद्याविद्यानां ॥ गीता.

एज उपनीषदमा कर्म कान्डनी निंदा फरी छे ते नीचे प्रमाणे  
अविद्यायामन्तरेवर्तमानाःस्वयंधीराःपण्डितमन्यमानाः ॥  
जघन्यमानाःपरियन्तिमुढाअन्धेनैवनीयमानाः

यथान्धाः ॥ ८

अविद्यायांबहुधावर्तमानादयंकृतार्थाइत्यभिमन्यन्ति

बालाः ॥ यत्कर्मिणोनप्रवेदयन्तिरागातेनातुराः

क्षिणलोकाःश्चवन्ते ॥ ९ ॥

इष्टपूर्तमन्यमानावरिष्टनान्यच्छ्रेयोवेदयन्तेप्रमुढाः ॥

नाकस्यपृष्टेतेसुकृतेऽनुभूतेमंलोकंहीनतरश्चविशंनिता ॥ १०

मुँडकोपनिषत्

त्रैगुण्यविषयावेदानिस्त्रैगुण्योभवार्जुन ॥

यामिमांपुष्पितांवाचंग्रवदंत्यविषयश्चितः ॥ गीता.

आ प्रमाणे निंदा करने एवं ठराव्यु के जे अनेक देवने भजे छे ते, नीचे गतीने पामे छे, अने जे एक ईश्वरने भजे छे ते अक्ष-धामने पामे छे.

यांतिदेवब्रतादेवान् पितृन्यांतिपितृब्रताः

भूतानियांतिभुतेज्यायांतिमद्याजिनोपिमाम् ॥

गीता अ० ९-२५

अनन्याश्चितयंतोमां ॥ २२

ततःपदंतत्यरिमागितव्ययस्मिन्गताननिवर्त्तिभूयः

अ० १६-४ गीता

आ प्रमाणे नीर्णय थयो ने ते उपरथी केटला एक लोक बोलेछे के अमे कर्म कान्डो नथी, नीबृत्ति मार्गमा छोए, अने एक परब्रह्मनी उपासना करीये छोये पण कर्म कान्डना केटलाक कर्म तेमना करवामा आवे छे, अने पड़ कर्म करवानो अधीकार धारण करवानुं जे यज्ञो पवीत ते धारण करे छे ए रीती मुक्ती देता नथी, फक्त ने संन्यासी थाय छे तेज मात्र यज्ञो पवीत परण रुक्ता नथी, खारे जे पहस्य कर्म कान्डने मानता नथी तेमने यज्ञो पवीत शु रुखा राख जोईए ए पण एक सवाल छे अने यज्ञो पवीत यज्ञ सौध्यर्थ छे ते वीजे वेदमां नीचे मुझव लख्यु छे:-

प्रसूतोहैयज्ञोपवित्तिनोयज्ञोपसृतोनुपवीतिनोयत्किंचब्रा।

णोयज्ञोपवीत्यधीतेयजतएवतत् । तस्माद्यज्ञोपवीत्येवाधी  
यीतयायजेत् वायज्ञस्यप्रसृत्या

तै० अरण्यक अ० २ अनुवाक २

स्टेजानंद स्वामीए शीक्षापत्री लखी छे तेमा केटलाएक ग्रंथो  
सत्तशास्त्र ठराव्या छे ते नीचे लख्या मुजब —

वेदाश्वव्याससूत्राणिश्रीमद्भागवताभिधम् ॥

पुराणंभारतेनुश्रीविष्णोर्नामसहस्रकं ९३

धर्मशास्त्रांतर्गताचयाज्ञवल्क्यऋषेःस्मृतिः ॥

एतान्यष्टमेष्टानिसछान्नाणिभवंतिहि ॥ ९५ ॥

शीक्षापत्रि

.अर्थ—वेद याज्ञवल्क्य समृद्धी ए सत् शास्त्र छे एथी एम् ज्ञानाय  
छे के एक ईश्वरवादी अने भक्तिवादी एमणे वेदनो आपार मुक्यो नयी  
शंकरस्वामीनो यथ आनंद गीरी कृत छे तेना छवीसमा अध्या-  
यमा जईन आचार्य अने शंकरस्वामीनो सवाद थएलो ते बीशो लखे-  
लु छे तेमा शंकरस्वामी बोल्या छे के वेदमाहिंसा लखी छे ते हाँसा  
नयी ए तो धर्म छे ते भाषण नीचे लख्य छे —

इदंआह । सर्वप्राण्यहिंसापरमोधर्मः । परमगुरुभिरिदमु

च्यते ॥ रेसौगतनीचतरकिंजल्पसि ।

अहिंसाकथं धर्मो भवितुर्महति । यांगीयहिंसा

य । धर्मस्त्वात् तथा हिंसिन्द्रोमादिक्रन्तः

छागादिपशुमान्यागस्यपरमधर्मत्वात् ।

सर्वदेवतृप्रिमूलकत्वाच्च । तद्वारास्वर्गादिफले  
दर्शनाच्च । पशुहिंसाश्रुत्याचारतत्परैरडि  
करणीयातद्यतिरिक्तस्यैवपापंडत्वानुत्तदा  
चाररतानरकमेवयान्ति ।

वेदनिन्दापरायेनुत्तदाचारविवर्जिताः॥

तेसर्वेनरकंयान्तियद्यपिन्रह्मवीजज्ञाः॥

इतिमनुवचनात्॥ हिंसाकर्तव्येत्यत्रवेदाः सहस्रं प्रमाणं वर्तते ।  
ब्रह्मक्षत्रैश्यशुद्धाणां वेदोत्तिहासपुराणाचारः प्रमाणमेव ।  
तदन्यः पतितो नरकगामी चेति  
सम्यगुपदिष्टः सौगतः परमगुरुं नत्वा निरस्त्तसमस्ताभिमा-  
नः पद्मपादादिगुरुशिष्याणां पादरक्षधारणाः धिकारकुश-  
लः सततं तदुष्ठिष्ठानभक्षणपुष्टतनुरभवत् ॥ इत्यनन्ता  
नंदगिरिक्ष्टोपद्विशप्रकरणं ॥

उपर मुजबनु शंकरस्वामीनु वचन साभली ए जैनाचार्य ए स्वा-  
मीनो नोकर यई रथो एवु एमा लख्यु छे. सदरहु शंकरस्वामी शाक-  
मार्गी हत । एबु लोको कहेछे कारण जाहा जाहा, एमना मठ छे त-  
दा-तदा शक्तीनी उपासना बीशेप चाले छे अनेक द्वारीकामा एमनो  
चारदा मठ छे थाहा “श्रीचक” स्थापन पधरा उपर कोरने कन्यु छे.  
चेष्टणा परम हंस कौलीक अघोरी-बौममार्ग । सरंभंगी ईत्यादी न-

દ્વા માર્ગ કેહેવાપ છે પણ મદ્ય માસ પીયેછે ખાયછે શ્રીચક્ર વામમાર્ગ  
નું પુજા કરવાનું દૈવત છે તે શંકરાચાર્ય સ્વામાણિ ઠરાવેલું છે. એ વીજો  
શકરવીજયના ચોસઠ તથા પાસઠમા અધ્યાયમાનોચે મુજબ વચનો છે -

યાદેવીસર્વભૂતેષુજ્ઞાનરૂપેણસંસ્થિતાદ્વાતિમાર્કડૈયેવચનાત्  
પરાદેવતાકામાક્ષિતિ । અ ૦ દ્વ ૪

એવેમેતસ્મિન્નર્થોનિષ્પત્તેપરશક્તિલખસ્યાભિવ્યંજકંશ્રીચક્ર  
નિર્માણંક્રિયતેભવદ્વિરાચાર્યૈઃતત્ત્રશ્લોકંમ् ।

વિંદુન્ત્રિકોણવસુકોણદશારયુગ્મમન્મખનાગદલસંયુ  
તપોડશારમ् ॥ વૃત્તત્રયશ્વધરણિસદનત્રયશ્વશ્રીચક્રમેત  
દુદિતંપરદેવતાયા: ॥

શ્રીચક્રંશિવયોવૈપુ: ॥

ઇત્યાદિવચનૈ:શ્રીચક્રસ્યશિવશક્ત્યैક્યરૂપત્વાત् ।  
મુક્તિકાંક્ષિભિ.સવૈ:શ્રીચક્રપૂજાકર્ત્વોતિસર્વોપાંમોક્ષ  
ફલગ્રાસ્યેદર્શનાદેવશ્રીચક્રઆચાર્યોનેમિતમિતિ ॥

પંચષાષ્ટિપ્રકરણ ॥

પછી શકરાચાર્યને રજા લોકોનું ધર્ણો મદદ મળ્યો અને બુદ્ધ ધ-  
ર્મના લોકો સાથે લદાડ કરી અને એ ધર્મના ઘણા લોકોને મારી  
નાખ્યા એ વીજો માપવાચાર્યે વીજો શકરવીજય લખ્યો તેમા નીચે  
મુજબનો વચન મળ્યો અવિછે —

આસેતુરાતુપાર્દ્વત્વાનંવૃદ્ધબાલકં

नाहंतियासहंतव्योभृत्यंदृत्पवसंनृपाः ॥

नावदेत्यवंनोभापांप्राणैःकंठगतैरपि ।

हस्तिनाताडयमानोपेनग्छेजैनमंदिरं ॥

सार पछी तु द धर्मनु खडण थयु ने वैदिक मह चात्यु परंतु ते पण लोकोने पसद नही आव्याधी भक्तीमार्ग चात्यो अने यज्ञने ठेवाणे पुजा क्षेवा करवानो प्रथा पञ्चो अने ब्राह्मणो कर्म कान्दमा ज्यां दर्भ वापरता हता ते जगोए आ भक्तीमार्गवाळाओए तुङ्गशी वापरी अने पुरो ढाश एटले यज्ञमो शेष भागने बदले प्रसाद दाखल थयो. अने अधिने ठेकाणे मुर्तियो यई अने माहाकलुने ठेकाणे छपन भोग ईखादि मोहोछव करवानु शह थयु अने वेद पठनने ठेकाणे माळा फेरवानु आव्यु अने प्रायश्चित्तने ठेकाणे नाम स्मरण आ०यु अने अनुष्टाननी जगो उपर भजन आव्यु मधुपर्कने ठेकाणे अर्ध्य एटले पाणीनो लौटो भरी आपवो, तोपण भक्तीमार्ग नीची पदवीनी उपासना गणाय छे ते बीशे कह्यु छे के —

अश्रौक्रियावतांदेवेदिवदेवेमनोपिणां

प्रतिमास्वल्पवुत्थिनांसर्वत्रसमदर्शनः ॥

क्षेपेनुतापोवैयस्यपुंसःप्रजायते

ग्रायश्चितंतुतस्यैकंहरिंसंस्मरणंपरं ॥

मनसापिस्मरेद्यस्तुवासुदेवंहरिपरं ॥

चांद्रायणश्चतंसाग्रलभतेनात्रसंशयः

अश्वमेधादशगुणंप्रवदंतिमनोपिणः

पौडरीकसंयज्ञस्यफलं प्राप्नोति मानवः ।

अ कामो वा स कामो वा ये समरंति च माधवः ।

हरेः संकोर्तनं चैव सर्वपाप प्रणाशनं ।

ये न राना भिजानं ति वं चिता स्ते न संशयः ।

त स्मात्सर्वग्रयले न हरेन्मानुकीर्तनं ।

शंकराचार्यना मतमां आत्मा एज ब्रह्म छे वीजा वधा देव नीचा  
छे, ब्रह्मचौतनीका—तथा ज्ञान भास्कर ग्रंथ छे तेमा, नीचे लखे-  
लां बचन मढ़ी आवेछे:—

अहमेव परं ब्रह्म वा मुदे वा ख्यमव्ययं ।

इति स्याच्चितो मुक्तो बत्थ एवं न्यथा भवेत् ॥

आत्मानं सततं ब्रह्म संभाव्य विरहं तिये ।

तन्महापातकं हंतितमः सूर्यो दयो यथा ॥

अहं विष्णुरहं विष्णुरहं विष्णुरहं हरिः ॥

आनंदो हं मशो पो हं अजो हं मृतो स्म्य हं ॥

अन्युतो हं मनं तो हं गो विंदो हं महं हरिः ॥

नित्यो हं निर्विकृत्यो हं निरक्ता रो हं पत्तयं ॥

सच्चिदानं दस्पो हं पंचकोशाति गो स्म्य हं ।

आदिमध्यांतं मुक्तो हं न बत्थो हं कदाचन ॥

ब्रह्म वा हं न संसारी मुक्तो हं मिति भावयेत् ॥

आनंदः सत्य बोधो हं मिति ब्रह्मानुच्छितनं ॥

अयं प्रपंचो मिथ्यै व सत्यं ब्रह्मा हमद्युम् ॥

नाहं देहो न मैदैहि के वलो हं सनातनः ॥

एकमेवा द्वितीयं ब्रह्मने हना ना स्ति किं चन ॥

सदरहु मतने अद्वैत मत कहेछे अने भक्तीमार्गने द्वैत मत कहे छे. पण आ बंने मत रूर्मकान्डने खंडन करनारा छे. तेज प्रमाणे बौध मत पण खंडन करनाराछे. ते उपर्यी ब्राह्मणनो अधिकार धर्म करीने जवा लायो ने तेथी ब्राह्मणो पोकार करवा लाया के कब्जियुग आव्यु अने धर्म डुववा लायो ते बीशे एवं लख्युछे के:—

धर्मः प्रवृजितः तपः प्रचलितः सत्यं च दुरंगतः ॥

पृथिमं दफलानृपाक पटिनो लोल्पं गता ब्राह्मणः ॥

नारीयौ वनग्रवितापररता पुत्रापि दुर्दोषिणा ॥

साधुः सीदाति दुर्जनः प्रभवति ग्रायः प्रविष्टैकलौ ॥ २ ॥

र्मकान्डनी नीदा करनार वधाय देशमो उप्सन यया दक्षणमा तुकाराम कवो ययो ते लखेछे के —

मुखबांधु निमेंढामारा । ह्यणति सोमयाग करा ।

ह्यणति सज्जीव तुङ्ग सीतोडा । पुजानि र्जिवदगडा ॥

करति वेला तोडा तोडि । शिवाला खोलिरोकडि ॥

नागपूजाया लाजाति । सापदेखुन डांगा घोति ।

कोण जाणे खरेखोटे । भजन चाल लेउ फराटे ।

तुकाह्यणे भात्ति भाव ॥ तेणे भात्ता पावेदेव ॥

कमङ्गार भट्ट निर्णय सिंधुमा तृतिय परीषेदना पथम प्रकरणे अंते अनेक पुराणमा रूपीयुगमा जे करवु नहीं तर्हुं वर्णन फरेलु छे तो वपु आ जगाये एकदु फरेलु छे. तेमाना वचन नीचे मुजः-

## १ समुद्रयानुःस्वीकारःकमंडलुविधारण ॥

द्विजानामसवर्णसाकन्यापयमःस्तथा ॥

देवराज्ञसुतोसात्मधुपकेपशोर्वधः

मांसदानंतथाश्रादेवानंप्रस्थाश्रमस्तथा ॥

दत्ताक्षतायाःकन्यायाःपुनर्दीनंपरस्यच

दीर्घकालंत्रिव्याचर्यनरमेधाश्वमेधकौ ॥

महाप्रस्थानंगमनंगोमेधश्वतथामर्खः

इमान्धर्मान्कलियुगेवर्ज्यानाहुर्मनिपिणः

वृहन्नारदपुराणे

## २ उठायाःपुनरुद्धाहंब्योष्ठांशंगोवधःस्तथा ॥

कलौपंचनकुर्वितभातृजायकमंडलुं ॥ हेमाद्रि

## ३ गोत्रान्मातृःसपिंडाच्चविवाहोगोवधःस्तथा ।

नराश्वमेधौमद्यंचकलौवर्जीद्विजातिभिः ॥ ब्राह्मे.

## ४ विधवायांप्रजोत्पत्तौदेवरस्यनियोजनं

बालायाःक्षतयोन्यासुवरेणान्येनसंस्थातिः

कन्यानामसर्णीनांविवाहश्वद्विजन्मभिः

आततायिद्विजाय्याणांधर्मयुद्देनहिंसनम् ॥

द्विजस्याब्धौतुनौयातुःशोधितस्याप्यसंग्रहम् ॥

सत्रदिक्षाचसर्वेषांकमंडलुविधारणं ॥

महाप्रस्थानगमनंगोसंज्ञसिश्वगोसवे ॥

सौन्रामण्यांमपिसुराग्रहणस्यचसंग्रहः ॥

अग्नीहोत्रहवन्याश्वेलेहोलीढापरिग्रहः ॥

वृत्तस्वाध्यायसापेक्ष्यमद्यसंकोचनंतथा ॥

प्रायश्चित्तविधानंचौविग्राणांमरणांनित्कं ॥

संसर्गदोषास्तेयान्यमहापातकनिष्ठतिः ॥

आदित्यपुराणे

५ वरातिथिपितृभ्यश्वपशूपाकरणक्रिया

दत्तौरसेतरेषांतुपुन्नत्वेनपरिग्रहः ॥

शामिनंचैवविग्राणांसोमविक्रयणंतथा ॥

कलौकर्तैवलिप्यते ॥ इतिव्यासोक्तेः ॥

महापापेरहस्यरूपेत्रायश्चित्तनेत्यर्थः ॥

६ अग्निहोत्रंगवालंभंसन्यासंपलैषैतृकं ॥

देवराच्चसुतोमातिःकलौपंचविवर्जयेत् ॥

सन्यासश्वनकर्तव्योब्राह्मणेनविजानतः ॥

यावद्वर्णविभागोस्तियावद्वेदः प्रवर्तते ॥ ।

सन्यासंचाग्निहोत्रं चतावकुर्यात्कलौयुगे ॥ ।

एतेन चत्वार्यब्दसहस्राणी चत्वार्यब्दशतानि च  
कलेयदागमिष्यं तितदात्रेतापरिग्रहः ॥ ॥

### सूतिचंद्रिकायां

#### अर्थ

१ एक जगोए नीचे मुजबना धर्म कल्पयुगमा नहीं करवा विषे  
बोचारंत माणसे ऐवुं कहेलुं छे —

- |                          |                          |
|--------------------------|--------------------------|
| १ समुद्रमा जर्वुं        | २ संन्यास लेवो           |
| ३ नीचो जातनी कन्या परणवी | ४ दीप्यत्वदु करवुं       |
| ५ मधुपर्कमा जनावर मारवा  | ६ श्राधमा मास खर्वावंवुं |
| ७ वानप्रस्थाश्रम लेवो    | ८ परणेली कन्यानो पुन     |
|                          | ९ विवाह केरवों           |

९ वहु वर्ष सुधी ब्रह्मचर्य राख्वुं १० मनुष्य यज्ञ करवो.

- |                     |                          |
|---------------------|--------------------------|
| ११ घोडानो यज्ञ करवो | १२ जन्म सुधी यात्रा करवा |
| १३ गायनो यज्ञ करवो  | फरवुं । । ।              |

२ वक्ती बीजे ठेकाणे नीचे मुजब नहीं करवा विषे लख्युं छे —

- |                          |                               |
|--------------------------|-------------------------------|
| १ बोधवानो पुनर्विवाह । । | २ मोटा भाडने मोटो भाग आपवो    |
| ३ संन्यास लेवो           | ४ भाइनो बोधवा साथे परणवुं । । |
| ५ गोवध करवो.             | — । । ।                       |

३ बीजे ठेकाणे नीचे मुजब करवा मना करेलो छे.

- |                                |              |
|--------------------------------|--------------|
| १ मामानी दीकरी साथे लम वार्वुं | २ गोवध करवो. |
|--------------------------------|--------------|

निवर्तितानिविद्वद्विव्यवस्थापूर्वकंवुधैः ॥

**परीछेद ३ प्रकरण १ निर्णय०**

ब्राह्मणोने उपनयन, विवाह, मरण कार्य इत्यादिक संस्कार, गृहसुत्र थकी थाय छे, वीजो आधार जणातो नयो एम छता अदु खह अदु खोटु एम शी रोते थाय अने पुराणना वचन लेडए तो एक पुराणमा चार क्षोक धारे अने वीजो प्रतमा ओछा एटले तेमा कीया क्षोका नवा बनावटना मुकायेला छे ते तपाशी शकातु नयो, अने जेम जेम गरज पडतो गइ तेम तेम पुराणमा नवा क्षोक घुलाय छे, क्षोक वह स्मृतीओमा पण एवो गरबड थइ छे अने हाल गोसाइ, वेरागी, साधु, बावा, इत्यादीक चारे वर्णना लोक एकत्र जमे छे अने अनेक जातीना साधु यथा छे जेवोके नाभाजी भक्तमाळनो योर्धक-रनारए जातनो पेढ हतो, अने कबीर मुसलमान हतो, तेथी एम जणाय छे के परमार्थमा वर्णात्रम धर्म रह्योज नयो, फकात व्यवहारमा मात्र रह्यो छे, हालनो धर्म एक रीत उपर नयो पण पंचमुख छे ए-टले केटला एक वेद विधी, केटला वेदात, केटला एक भक्तिमार्ग केटला एक वौध मार्ग, अने केटला एक रुद्धी, एवा पाचने आधारे चाले छे मूळ चार वेद अने चार उपवेद तेमा आयु धनु, शिव्य, गार्धी आ छे, अने छ अग एमा व्याकरण वेदनु मुख कहेवाय छे, अने सुत्र हस्त कहेवाय छे, जोतोष नेत्र कहेवाय छे, शिक्षा नाक गणाय छे, छंद पग कहेवाय छे, नीहक कान कहेवाय छे, ए प्रमाणे वेद रघी जे पुरुष तेना शरीरना ए भाग कहेवाय छे, जे चौद विद्या कहेवाय छे ते आनु नाम छे वेदने लगता येँ आठलाजे छे, एमा देवता वगेरे आजना जेवा नही विजी प्रसारना छे, जेमके असी, म-

सूर्य, इंद्र, वसुण, सुर्य प्रजापती, पुरीलोचन धनुर्धर, नान्दीमूख, पुरुषार्द्धव इत्यादीक अने तेनी भक्ती यज्ञ अने, होम द्वारा एथाय छे. शौनक सूषीए ज्यारे वेदनो सर्वानुक्रम लख्यो खारे एणे एवो ठराव कर्यो के मंत्रमा जे पदार्थनुं वर्णन आवे ते तेनी देवता ठराववी तेथी केटला. एक मंत्रभी देवता घासने ठरावी छे केटला. एकनी देवता देड़का थया छे. तेथी देवतानी संख्या पण वधी छे पण वेदमा मुख्य देवता तो पंच तंत्र छे. अने बोध अने, ब्राह्मण वचे ज्यारे तकरार पडी ते, वसुत वेदना मंत्र परमेश्वरथी थयेला छे एम पूर्वमिमासा वाळा ए ठराव्युं पण ए मत घणुं प्राचनि नथी. घणे ठेकाणे वेद छे ते सूषी वाक्य छे एवुं लख्युं छे.

**शौनकोक्तसर्वानुक्रमपरिशीषि-परीभाषाखंडमां**

**यस्यवाक्यंसक्रृपिः । यातेनोच्यतेसादेवता ॥**

**यदक्षरपरिमाणंतङ्गंदं ॥**

**नमोवाचस्पतयेनमऋषिभ्योमंत्रलृद्योमंत्रपतिभ्योमामामृ-  
ष्योमंत्रलतोमंत्रपतयःपरादुर्मा ॥**

**तैत्तिरीये अरण्यके ४ प्रणाठक २ अनुवाक १**

ऋग्वेद संहितामा घणे ठेकाणे एवुं लख्युं छे के हाषिओए मंत्र उत्पन्न कर्या तेमानुं एक वचन नुचि लख्युछे.

**ऋषेमंत्रलतास्तोमैःकश्येषोदर्धयन्गिरः ॥**

वेद ब्रह्मदेवे निर्माण कर्या एवुं जे रहेछे तेनु कारण एमछे के ब्राह्मण ए ब्रह्मानुं मूख छे माटे जे ब्राह्मणे कर्यु ते ब्रह्माएज कर्यु एमज

- ३ नरमेध करवो, ४ अश्वमेध करवो।  
 ५ दाढ़ी पीवो.  
 ६ वढ़ी चौथे डेकाणे नीचे मुजबं कढ़ीयुगमा नही करवा लखेलुँ छे,  
 ७ दीयखटुँ ८ पुनार्विवाह ९ दाढ़ी  
 ३ नीची जातनी सन्धा ४ युधमा ब्राह्मणने मोरवो,  
 परणवी,  
 ५ समुद्र यावा करवो, ६ सत्र नामनो यज्ञ करवो.  
 ७ संन्यास लेवो, ८ जन्म सुवी यात्रार्थ फरवुँ  
 ९ गोसव नामना यज्ञमा १० सौन्नामणी नामना यज्ञमा दा-  
 गोवध करवो, ११ रुपीवी,  
 १२ मरण प्रायश्चीति,  
 १३ संसर्गदोश, १४ दत्त अने औरस शीवृप्य वी-  
 जा पुत्र करवा,  
 १५ शामीच एटले पशुने १६ सोम विक्रिय,  
 यज्ञार्थ मारवानुँ काम.  
 ५ वढ़ी वज्जे देकाणे नीचे मुजब नही करवा लख्यु छे,  
 १ अमिहोत्र, २ गोवध, ३ संन्यास,  
 ४ श्राद्धमा भास भक्षण, ५ दीयखटुँ,  
 आ मुजब कर्म करवा नही ने संसर्गनो दोश नथी अने छानु पाप  
 पाप ते गण्यु नही, संन्यास तथा अमिहोत्र, वेद तथा वर्ण उप्या सुधी  
 चालतुँ होय त्यासुधी फरवुँ:  
 उपर लखेला कर्ममाधी केटला एक चाले छे ने केटाकर्मनथी  
 चालना, चाले छे से; १मासानो फँणा परणे छे, २मोठा भाइने मोठो

भाग अपाय छे २बहुकाल ब्रह्मचारी रहेहो. इसंयासले छे ५भिटो-  
री ब्राह्मण छे ६ दरीआमा नारमा वेसीने लोकु जाय छे ७ संसर्ग  
दोष पण गणाय छे. अने ८मटा प्रस्थान एटले जन्म सुधी जात्रा क-  
रवाने अर्थे फरखुं ते पण लांक फरे छे. ९मात भक्षण पण गौडब्राह्मण,  
सारस्वत, राघ्यकुब्ज, मेधील अने केटला एक उत्कलपण करे छे.  
अने १०पंच द्रावीडमा यज्ञ यागादीक कर्ममा भक्षण करे छे. ११कळी-  
युगमा अश्वमेष फरानानो नायेष छे. पण सवाड जेशाग राजाए जयपुरमा  
कराव्यो हतो एम संभवाय छे. अने १२सोम विक्रिय अने १३शामित्र ए  
केटलेक ठेकाणे थाय छे. वळी बीजुं एम छे के या कळीगमा फलाणुं  
काम न करखुं एवु ड्या लख्युं छे. या ते शावत उपर दोष मुक्तेले  
नथी पण फक्त भलाभण तरीके लखेलुं छे. के विचारावंत माणसे न  
करखुं. जे गोसाइ वेरागी विगरे लोको देशोदेश फरे छे, तेओ वधा म-  
हा प्रस्थानमा गणाय छे.

आ शिवाय कळीना धर्म, हाल चलाववा के नही चलाववा ए विशे  
संशय छे. कारण के केटला एक कहे छे के छत्रीस हजार वर्ष सुधी  
कळीयुग गणवो नही, केमके तेटली मुदत सुधी, पूर्व युग प्रमाणे व-  
र्त्तवुं, केटला एक कहे छे, चार हजार, केटला एक कहे छे दश ह-  
जार, एम कहे छे. आ सिवाय बीजो एवो संशय छे के, वेदना वचन  
अने सुन्नना वचन एनुं खेंडन पुराण वचनथी शी रीते थाय तेथी. य-  
गने माटे विषेष शास्त्रार्थ जे लख्यो छे ते अडचण लाग्याथी लख्यो  
ह्यो अने एनु प्रमाण निर्णयसाँधुमा एम लख्युं छे के, लोकना संर-  
क्षणने माटे रुपीओए ठराव कर्या.

एतानिलोकगुप्तर्थकलेरादौमहात्मभिः ॥

समजवुं जोईए गीतामा कह्यु छे के

**ऋषिभिर्बेहुधागीतंछंदोभिर्विधैः पृथक् ॥ गीतार्थां**

अर्थ—अनेक छंद रुपिओए गायन कर्या अने रुपिओ ईश्वरना  
मूल हता ए विशे भारथमा लख्युछे के

**ब्रह्मवक्त्रंभुजौक्षत्रंकृत्स्नंमुखदरंविशः ॥**

**पादौयस्याश्रिताःशुद्रास्तस्मैवर्णात्मनेनमः ॥**

**भोग्यस्तवराज ६८**

अने जे रुपि मन्त्र कर्त्ता गणाता तेमने द्रष्टा ठराव्या, एनु का-  
रण एके ए पुस्तकनी विहृद्द कोई तकरार न करे तेने माटे एम क  
रेल जणाय छे पछो<sup>१</sup> वेद धर्म चालता चालता लोकोने कंठालो  
आव्यो अने हजारो देव अने हजारो अनुष्टान अने हाँसा ए ठीक  
लायु नहो तेथो ब्रह्मज्ञासा उपन्न थई अने से बाबत उपनीषदमा  
एवा वाक्य जणायछ

**अधीहीभगवोब्रह्मोति**

**नकर्मणानप्रजयाधनेनत्यागेनैकेअमृतत्वमाशुः ॥**

**ब्रह्मविदाप्नोतिपरम्**

**तद्वज्ञासस्व, यतोवाईमानिभुतानिजायंते ॥**

**अथातोब्रह्मज्ञासा.**

कर्म उपर्यो श्रधा उठी अने ब्रह्मउपर आवो एवु उपरना वा-

मनोधी जणाय छे भने वैदोक पुस्तकोमा जे देवता अने सेमनी पार्थना

जे मल्हेछ तेनो नमुनो बताववाने वास्ते गृह्यसुन्नना त्रितीया ध्यायना  
चोर्थी रुंडीकाना पेहेला सुन्नमा तर्पण करवानी देवतानी याद लखी  
छे तेमा देवता निजे प्रमाणे.

१ प्रजापती. २ ब्रह्मा. ३ वेद. ४ देव ५ कठी. ६ सर्वाणी  
छन्दासी. ७ उंकार. ८ वषट्कार. ९ व्यात्तत्या १० सावित्री  
११ यज्ञ. १२ द्यावाप्रथीवि. १३ अंतरिक्ष. १४ अहोरात्र. १५ संख्या  
१६ सिद्धा. १७ समुद्रा. १८ नद्या. १९ गिरय. २० सेत्रोषधीविन-  
स्पतिगंधर्वांप्सरसा. २१ नागा. २२ व्यासी. २३ गावा. २४ साध्या.  
२५ विमा. २६ यथा. २७ रक्षासि.

आजना लोक आ देवता विषे तो केटलोक वाधो काढे. अने नाग  
डंगर, दूरीयो, नदी, वनस्पति, संख्या व्याहती, वषट्कार, यज्ञ.  
ईयादिने देव केहेवाने आचको खाय

प्रार्थना करवामा शतरुद्रीय के जेने रुद्रिकेहेछे. ए महामन्त्र गणाय  
छे तेमा शिवनुं वर्णन छे तेना खोडा वाक्य नीचे लख्या छे  
नमोस्तुनीलयोवाय-सहख्याक्षायमीद्विषे-विड्यंधनुःकपादें  
नो-नमोहिरण्यवाहवे-वनानांपतये-निषंगोणेस्तेनानांपतये-  
वंचतेपरिवंचते-तस्कराणांपतये-नक्तंचरदुवः-गिरिच  
गाय-तक्षभ्यः- ॥

असौयः ताचो- अस्तुः- ॥

अहींश्चसर्वाङ्गंभयं ॥

रथकारेभ्यः-कुलालेभ्यःकर्मारेभ्यःवभ्यः-भृपातेभ्यः-

शितिकठः कवचिने-आरात्तेगोप्रउत्पूरुपन्ने-अग्रेवधाय  
 दुरेवधाय-कुल्याय-शब्द्यायचपर्णीय-सिकताय-त्रजाय-  
 इपुलदूयः धन्वलदूयः-गव्हरेप्राय-धन्वलदूयः पशुनामाभे  
 मा-मारीरीपा-मानस्तोकेमानधि-भेषधि-विशिखासः-अ  
 संख्यातानि सहस्राणीयेसद्राः-येपथांपथिरक्षय-येतीर्थानि  
 प्रचरंतियेअन्वेपुविविध्यांति-दशग्राचीर्दशादक्षणादशप्रती  
 चीर्दशोदिंचीदशोध्वयश्वनोद्देष्टंमेपांजंभेदधामि.

वाजश्वेमेक्तनुश्वमे-यज्ञेनकल्पेताम्-ओजश्वमे-शं  
 चमे-रथिश्वमे-ग्रीह्यश्वमे-अद्माचमे-अग्नोश्वमेआग्रयण  
 श्वमे-स्तुचःश्वमआयुर्यज्ञेनकल्पतां ॥

सुद्दि

देवायद्यज्ञांतन्वानाअबभ्रंपुरुषंपशुं ॥ नारायण सूक्त

अर्थ—नमस्कार कर छुं तारो कंठ काढोछे. तने हजार आख्यो  
 छे बळो तुं जळनी बृष्टि करनार छे. तासं धनुष तैयार छे. तुं जटा-  
 वाढोछे तारो खापे सुर्खेना अलकार छे. तु वगडानो राजा छे. तु  
 खडगपारी छे, ने गुप्त चोरोनो उपरी छे तु दगावाजी करनारो अने  
 तु चोरनो पर्णी छे. रावे करनार, दुंगरमा करनार अने सुतार पण  
 तु छे. बळो तु लाल अने भगवो पण छे. सर्व ठेकाणेना सर्व मारनार  
 नै छे. गाढो करनार तु छे. कुभार तु छे लुहार पण तु छे तु कुत्तू  
 छे अने कुत्तरानो पालनार पण तु छे पोला गळावालो छे. ने बकत-  
 र पेटेलो छे बळो तु गायोने मारनार अने पुरुषोने मारनार सामो

આવે તેને મારનાર અને દુર હોય તેને મારનાર ઝાડમા રહેનાર અને ઘાસમા રહેનાર તું છે. બંધી પાદઢામા રહેનાર રેતીમા રહેનાર, ઢોરાના ટોબામા રહેનાર તીર કરનાર, ધનુષ કરનાર, જંગલમા રહેનાર, જનાવરોને બીવડાવશો નહોં, મારશો નહોં, અમારા છોકરાને<sup>o</sup> ન મારશો: તું વૈદછે તારે શિખા નર્થી છે તારી મુર્તી ગણતી નહીં એટલી છે. તું રસ્તા વચે બેસેછે કેટલા એક તીર્થમા રહો છો કેટલા એક રસે-દમા વીઘ કરો છો પર્વ દોશમા તમે દશ, દક્ષણમા, દશ પઞ્ચમિમા દશ, ઉત્તરમા દશ, અને આકાશમા પણ તમે દશ છો. જે અમારો શબ્દું હોય તેને તું દાઢમા ઘાલીને ચાર્ચી જા. અન્ન આપ, યજ્ઞ કરવાની શક્તિ આપ, યજ્ઞ કરવાને ઉપયોગી કર તૈજ આપ કળ્યાણ આપ દ્રવ્ય આપ ડાગર આપ તું પથરા આપ અમ્રી આપ આપયણ નામનો યજ્ઞ કરવા સામર્થ આપ યજ્ઞના પાત્રો તે આપ, આયુષ આપ તે યજ્ઞના કામમા ઉપયોગ અવિ એવું કર.

સુદ્રિમા સુદ્રદેવની પ્રાર્થના છે તેમાં યજ્ઞ કરવાને સર્વ પ્રકાસની સામર્થી મને આપ્ય અને તે સામર્થી વિગતવાર લખી છે તે નીચે પ્રમાણે.  
**દુધમઃશ્રેમેવહિશ્રેમેવેદિશ્રેમેધિપિણયાશ્વમે<sup>o</sup> શતસુદ્રિય**

ઉપર મંત્રનું મૂળ બનાયું છે પણ મંત્ર તો બે વ્રણ વર્ગ સુધી લાંબા છે તેમા વિગતવાર યજ્ઞના લવાજમા વાસ્તે મહાદેવની પ્રાર્થના કરી છે તે ઉપરથી એમ માલમ પડે છે કે યજ્ઞ રૂરવાનું લોકોને બટુ ગમતું હતું અને માધ્યંદીની શાખામા યજ્ઞ વિધિ બહુ બતાવ્યો છે માટે એ શાખાના જ્ઞાનણ હિંદુસ્તાનમા, ગુજરાતમાં, ને દક્ષણમા ઘણા છે મહારાષ્ટ્ર દેશમા અશ્વલાયન જ્ઞાનણ ઘણા અને તેલંગાનામા આપસ્ત્ર શાખા-ના જ્ઞાનણ ઘણા બગાલામા સામવેદના જ્ઞાનણ ઘણા તુલારાદમાં ભ

पर्वेदो ब्राह्मण धणा छे पण माखंदीनी ज्ञानाना विस्तारने कोई पो होचे नहीं बौध पर्मवालाए एम विचार कुर्यो के चारेवेदमा यज्ञ सिंगाय वीजो कोई सात्त्विक पर्म नयी अने यज्ञमा हिंसा आये छे माटे ए चारे वेदनो आपणे त्याग फरवो एम समजने फक्त बृद्धीनो आधार लेईने दया पर्म चलाव्यो ।

नारायण सुक्तमा लख्यु छे के देवोए यज्ञोनी वृद्धि करीने दुहप पशुने वाख्यो ।

अने गीतामा अनके यज्ञ ज्ञानाना मुखथी उत्पन्न थया, तेनो शेष जे भक्षण करे छे, तेने मूळि मढे छे एवु लख्यु छे ।

एवंबहुविधायज्ञावितताब्रह्मणोमुख्ये ॥ गीता. अ०४-३२  
यज्ञशिष्ठामृतभुजोयांतिब्रह्मसनातनम् ॥ ४-३२ गीता

ब्रह्मानु मुख ते ब्राह्मण, ब्राह्मणना मुखथी जे विधि निकल्या ते ब्रह्माना मुखथी कहेवाय अने आज्ञाएज मुख छे वेदमा ऋषीकेटला एक शुद्र छे केटला एक क्षत्री छे, ऐतरेय ब्राह्मणगा एक कथा छे तेमा कवप ऐलुप ए दासो मुत्र छता ऋषी पद पाभ्यो तेज प्रमाणे कक्षिष्वत राजा क्षत्री छता वेदनो ऋषी थयो विश्वामीत्र पैण एज प्रकार्णो छे, पुराणोमा नहुप, वेण, सहस्रार्जुन आ चण जणा बाल्यानो साथे लख्या अने परशुरामे क्षत्रीओ साथे युद्ध कर्यु बौध पण क्षत्री हतो, वेद पछी अनेक पंथ नीकल्या, ते महोमनस्तोत्रमा एक ठेकाणे वर्णन कर्या छे ।

त्रयोसाख्यंयोगंपञ्चुमतंवैष्णवमिति ॥

अर्थ.—वेद, असल चण हता चोथो पाष्ठवधी यएलो होय एम जणाप छे कारण के घणे ठेकाणे वेद त्रयी एवु आवे छे

असलना वयतमा वेद चण हता कारण घणेरु ठेकाणे वेदत्रयी

एम लखाय छे अने वेदमा घणे ठेकाणे नृणज, लख्या छे ॥ १ ॥

**ऋक् चमेसामचमेस्तोमचमेयजुश्वमे ॥**

ऋष्णयज्ञुः संविहताशतस्त्रियसूक्त  
तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतऋचः सामानिजाज्ञिर ॥  
छंदासिजाज्ञिरेतस्माद्यज्ञुः स्तस्माद्यज्ञायत ॥

**ऋग्वेदसंविहतापुरुषसूक्त**

अर्थः—ऋग्वेद अने सामवेद अने यजुर्वेद एव चणे, मने आप  
ए प्रमाणे भक्त, रुद्र देवताने पार्थना कर छ.  
पुरुष यज्ञ फरनि ऋग्वेद अने सामवेद अने यजुर्वेद ब्रह्माए नि-  
र्माण कर्या ॥

ब्रह्मवक्त्रं भुजैक्षत्रं क्लस्तं मुरुदरं विशः ॥

पादौ च स्यास्ति ताः शुद्रास्तस्मैवणीत्यनेनमः ॥

भारतः

अर्थ—ब्राह्मण इश्वरनुं मूल छे धर्मी ए इश्वरना खभा छे वाणीया  
ए इश्वरना सायब छे शूद्र ए इश्वरना पग छे ॥

**ऋग्यजुः सामएवच ॥**

**त्रयिविद्यामांसोमपाः ॥** गीता

ब्रह्मवहि उपनीषदमा अर्थवेदने पुछ रह्ये छे.

तस्युरुषपाविवतां तस्तय बुरेवाशिरः ऋग्दक्षिणः पक्षः

सामोत्तरः पक्षः। आदेश आत्मा । अथर्वांगिरसः पुङ्ग्रतिष्ठा

बौधे वेद उपर दोष मुक्ष्यो छे. के वेद वाक्यमा पुनरुक्ति अने विहृद आवे छे अने अनृत आवे छे.

**अनृतव्याघातपुनरुक्तिदोषेभ्यः**

उपर जे वेदनो नमुनो बताव्यो छे ते उपरधी मालुम पढशे वीजा दाखला

नमोस्तु सर्पेभ्यो येके च पृथ्वी मनुः ।

ये अंतरिक्षे येदि वितेभ्यः सर्पेभ्यो नमः

होता यक्षद श्विनौ छाग स्यवपाया मेद सो बुपेता १ हविहो तय न  
होता यक्ष सरस्वती मेष स्यवपाया मे ०

होता यक्षा दिन्द्र मृषभ स्यवपायां मे ० २१-४१

या । अस्मभ्य मरातीया द्यश्वनो द्रेष्टे जनः

निद्रायौ अस्मा निधप्सा च सर्वतं भस्म साकुस्त ॥ अ ०११-८०

ये जने पुमलि मूल वस्ते नास स्तस्त करावने ॥

यक्षे व्यघाय नस्तांस्ते दधामि जंभ्योः ॥ अ ०११-७९

। - शुक्रयजु संविहता.

उपला भंत्रोमा पहेला भंत्रमा सर्पनी स्तुती छे बीजामा वपायाग छे. बीजामा शब्द नाशनो मरे छे अने चोथामा चोर नाशनो मरे छे चौथे ने धर्म चलाव्यो नेमा वेद, वीर्या, वर्ण, आ चण वाना काढी नाष्प्या ने दयार्थी सत्य, नप डयादीरु प्रगत भ्यां नेवीरु धर्ममा तप

एटले स्वाध्याय एटले भणवुं एनेज तप कहेता बोजुं देह दंडनुं तप हतुं  
नहीं, बौध पछी जे बोजा पंथ नीकळया ते बधा ए बेदने माने छे  
एटले तेओ बेद विरुद्ध बोलता नर्थी पण तेमनो धर्म बेदर्थी घणो  
बेगळो छे. यार पछी ज्यारेलोकोनी बेदमा कहेला धर्म उपर्थी आ-  
स्ला उठी गइ यारे एक इश्वर फोयो तेनो तपास करवाने पडू शास्त्र  
चांध्या तेना नाम.

रुना	नाम
गौतम.	न्याय.
कणाद.	वैशोषिक.
पतंजली.	योग.
कपील.	साख्य.
जयमिनी	पूर्वमीमांसा
ब्यास.	बेदात.

आ यंथ उपर्थी एक इश्वर को अनेक देव नर्थी ए नको यह  
गयुं अने कर्मकान्डनुं वजन ओझुं धयुं अने शम, दम, उपरती, ती  
सीक्षा समाप्ति, भ्रदा, नीलानीय वस्तु विवेक इत्यादिक सापन उपर  
नीषा बेठी फक्त एओ गानने मानता हता तीर्थाद्विकने मानता  
नहोता बेदात गारमा कस्युं छे के.

तनुंत्यजतिवाकाश्यांश्वपचस्यगृहेथवा ।

ज्ञानसंप्रात्यसमयेमुक्तोसौविंगताशयः ॥

नकर्मणामनुष्टानैलभ्यतेतपसापिंवा ॥

कैवल्यंलभतेमत्यःकिंतुज्ञानेनकेवलं ॥ शीवगीता

कुटस्थानेहोंकर्मणीकोटिजन्माजितानपि ॥  
 ज्ञानेनतुविनश्यतिननुकर्मयुतैरपि ॥ शी० अ० १३  
 तीर्थेचांडालगेहेवास्मशानेवासुरालये ॥  
 परित्यजनदेहमिदंज्ञानादेवविमुच्यते ॥  
 कुरुतेयत्रकुत्रापिभक्ष्ययंवाभक्ष्यमेवच ॥  
 शेतेस्वेक्षालयगतोज्ञानात्मापरिमुच्यते ॥ शी०  
 कर्मणावध्यतेजंतुविद्ययाचाविमुच्यते ॥  
 तस्मात्कुर्मैनकर्वतियतयःपारदशिनः॥उपनिषदभाष्य.  
 सदरहु विषे प्राकृत, कवी तु कारामे कद्युं छे के.  
 तुह्यानकाकरुगर्व ॥ नीचयातिह्यणुनीसर्व ॥  
 शुंकशोणिताचिखणि-तुह्याभ्रह्यायेकच्योनि ॥  
 रक्तमांसचम्महाडे ॥ सर्वाठाईसमपाडे ॥  
 अन्नउदकघरोवरी ॥ निष्टानाहीहोदुसरी ॥  
 तुकाह्यणेहचिखरे ॥ नाहिदेवाशीदुसरे ॥५॥  
 शुनिचैवश्वपाकेचपाङ्गिताःसमदर्शनः ॥ गीता  
 स्त्रियोवैश्यास्तथाशूद्रास्तेष्यांतिपरुंगति ॥ गीता ॥  
 आदौकृतयुग्मेवणोनृणांहेसद्वातिस्मृतः ॥  
 क्षत्तेष्वल्प्याप्रजाजात्यातस्मात्कृतयुग्मिदुः ॥

सदरहु प्रमाणे ज्ञानमार्गीं लोकोए वर्णाश्रमने कर्मनो उपहास  
 कर्यो केटलाएक वरस सुधी आ प्रमाणे ज्ञानमार्ग चाल्यो त्यार पछी  
 उपासना मार्ग उत्पन्न थयो अदार पुराण अने उपपुराण एओ उपास-  
 सना मार्गनुं प्रतीपादन करे छे तेनी अंदर शैव अने वैष्णव आ बे सं-  
 प्रदाय बहु बधेला छे तेमा शैवमार्ग पुरातन छे, अने वैष्णवमार्ग त्यार  
 पछी थएलो छे, वैष्णवना मुख्यधार संप्रदाय १ रामानुज, २ नीतार्क,  
 ३ मध्य, इविष्णुस्त्वामी, ए चारे जणाए शंकराचार्ये स्थापेलो अद्वैतमत  
 खेंडन करी द्वैत मत चलाव्यो, एमने आधार घणु करीने पुराणनो, अ  
 ने श्रूतीनो आधार लेवाने वास्ते केटलाएक नवा उपनीषद दुनाव्यां,  
 रामतापीनी, गोपाल तापीनी, नृसींहतापीनी इत्यादिक—पण वेदनां मंत्र  
 भागमा उपासना विषे कई जणातुं नयो, तेमां जे उपासना छ ते  
 अग्नीद्वारा, अने पंचमहाभूतादिकनी छे, पण पुराणमां अवतारादीक-  
 नी छे, आ उपासना पुराणो थया, यारथी ते आ संप्रदाय नीकर्क्या  
 त्या सुधी उपासनाना विषय घणा नीकर्क्या, जेवा के—कोइ शीवमा-  
 गी, कोइ विष्णु, कोइ गणपती, कोइ राधाकृष्ण कोइ वाढकृष्ण कोइ  
 हनुमान, अने पोतपोताना उपासक देवने परब्रह्म कहे छे, केटला  
 एक एकबोजाने उंचा नीचा गणे छे, कहुं छे के,

गणेशांपूजयेद्यस्तुविभ्रंस्तस्यनवाध्यते ॥

आरोग्यार्थं चयेसूर्यधर्मोक्षायमाधवं ॥

शिवंधर्मोक्षायचतुर्वर्गायचंडिका ॥

पछी अफेक संप्रदाय बाबाए पोतपोताना संप्रदायना चिन्ह ठ-  
 राव्या, शीवमार्गांत भस्म, स्त्राय, बाणलौंग इत्यादीक वैष्णवे, तसमुद्दा-

तुलसी, गोपीचंदन, शार्वीयाम इत्यादीक नीशानीओ ठरावी तेओ  
चंदन विष्णुपादाकृती करे छे. कोइ श्रीनु चीन्ह धारण करे छे आ  
मुख्य वे मार्गोनी तकरार वध्याथी एकना विस्फु बीजाए वहु शाखा  
लख्यां छे. तेमां एक बीजानी नीदा करो छे. ए वाक्यो क्षेपक अथवा  
कक्षीति के असलनां हशे तेनो नीर्णय करवानुँ मुक्तिल छे. पुराण  
अने क्रष्ण उपर पण ए लौकोए दोष मुकेलो छे. केटला एक पुराणी  
साक्षीक ठराव्यां छे. केटला एक तामसी पुराणो ठराव्यां छे.

सत्यंपाराशरंवाक्यंसत्यंवाक्त्विमकमेवच ॥

व्यासवाक्यंक्वचित् सत्यं असत्यं जौमिनीवचः ॥

साक्षिकामोक्षदाप्रोक्ताराजसास्वर्गदाशुभा ॥

तथैवतामसादेवीनीरयप्राप्तिहेतवे ॥

वैष्णवेनार्दीयं चतथाभागवतःशुभं ॥

गारुडं चतथापाद्यांवाराहोराजसस्मृतः ॥ इत्यादी

अने एक बीजां उपर दोश मुक्यां छे ते निचे प्रमाणे.

वैष्णवमतमां

ब्राह्मणः कुलज्ञो विद्वान् भूमधारी भवेददी ॥

वर्जयेतादशं देवीमद्योऽछिष्टघटयर्था ॥ २ ॥

वेदांतचिंतामणी

त्रिपुद्गुद्रकं ल्पानां शूद्राणां च विधीयते ॥

त्रिपुद्गुद्धारणात् विश्रः प्रतितस्यान्न संशयः ॥ ३ ॥

योददातिद्विजातिभ्यः श्वंदनं गोपि मदितं ॥ १ ॥  
 अपि सर्षेषमत्रेण पुनात्यासप्तमं कुलं ॥ २ ॥  
 उधर्वपुंड्रविहीनस्य स्मशान सदृशं मुखं ॥ ३ ॥  
 अवलोक्य मुखं ते षामा दित्यमवलोक्येत् ॥ ४ ॥  
 यज्ञोदानतपश्चैव स्वाध्याय पितृतर्पणं ॥ ५ ॥  
 व्यर्थभवति तत्सर्वं उधर्वपुंड्रविनाकृतं ॥ ६ ॥  
 शालग्रामोद्वंद्वेदवेदारावतीभवः ॥ ७ ॥  
 उभयोसंगमोयन्तत्र मुक्तिर्न संशयः ॥ ८ ॥  
 शालग्रामोद्वंद्वेदं शौलं चक्रांकमंडितं ॥ ९ ॥  
 यत्रापि नियते तत्र वाराणस्यां शताधिकं ॥ १० ॥  
 मलेष्ठदेशो गुच्छौ वापि चक्रांकोयन्त्रतिष्ठति ॥  
 वाराणस्यां यवाधिक्य समंताद्योजनत्रयं म् ॥ ११ ॥  
 यन्मुले सर्वतीर्थानीयन्मध्ये सर्वदेवताः ॥ १२ ॥  
 यदग्रे सर्ववेदाश्च तुलसीतांनमाभ्यहं ॥ १३ ॥  
 पुष्कराद्यानितीर्थानीगंगाद्यासरीतस्तथा ॥  
 वासुदेवादयोदेवावसंतितुलसीदले ॥ १४ ॥  
 तुलसीकाष्टमालां तु प्रेतराजस्य दूर्तकाः ॥ १५ ॥  
 दृष्टानश्यं तिद्वेण वातो धूतं यथारजाः ॥ १६ ॥

तुलसिमालिकांधृत्वायोभुञ्जीगरिनंदिनी ॥ ३२ ॥  
 सिवथे सिवथे सलभतेवा जपेयफलं शुभं ॥ ३३ ॥  
 तुलसीकाष्टमालांयोधृत्वास्नानं समाचरेत् ॥ ३४ ॥  
 पुकरेच्च प्रयागे च स्नातितेन मुनेश्वर ॥ ३५ ॥  
 आलोक्य सर्वशास्त्राणीविचार्यच पुनः पुनः ॥ ३६ ॥  
 इदमेकं सुनिष्पन्नं ध्येयो नारायणः सदा ॥ ३७ ॥  
 चक्रलाङ्घनहीनस्य विप्रस्याविफलं भवेत् ॥ ३८ ॥  
 क्रीयमाणं च यत्कर्म वैष्णवानां विशेषतः ॥ ३९ ॥  
 ऋष्णमन्त्रविहीनस्य पापेष्टस्य दुरात्मनः ॥ ४० ॥  
 श्वानविष्टासमं चान्नं गलं च मदिरासमं ॥ ४१ ॥

शैवमंतमां

विनाभसंमन्त्रिपुरुषेण विनास्त्राक्षमालिया ॥  
 पूजितोपि महादेवनतस्य फलदोभवेत् ॥ ४२ ॥  
 महापातकयुक्तो वायुक्तो वाचोपपातकैः ॥ ४३ ॥  
 भस्मस्नाने न तत्सर्वदहत्याग्निरवेधनं ॥ ४४ ॥  
 पृथिव्यां यानितीर्थानेषु ष्यान्यायतनाय च ॥  
 शिवलिंगे वसंत्येवता निसर्वाणी नारद ॥ ४५ ॥  
 महेशाराधनाद्यन्यनास्ति सर्वार्थदायिकं ॥ ४६ ॥

अतः सदासावधानं पूजनीयो महेश्वरः ॥ ४ ॥  
 अमितान्यपिषाणं निर्दयति शिवपूजया ॥ ५ ॥  
 तावत्पापानितिष्ठतनयाविछवपूजन् ॥ ६ ॥  
 लिंगाच्चनविहीनस्य समस्तानिष्कलाक्रीयः ॥ ७ ॥  
 तेतः सर्वार्थसिद्ध्यर्थलिंगपूजाविधीयते ॥ ८ ॥  
 सर्वेषांश्रमाणां च कलौ पार्थिवमेव ही ॥ ९ ॥  
 लींगं महीजं संपूज्य शिवसायुज्यमाग्रयात् ॥ १० ॥  
 दशीनात्विल्ववृक्षस्य स्पशीनात्विदनादाप ॥  
 अहो रात्रकृतं पापं न द्यतीनात्र संशयः ॥ ११ ॥  
 अस्त्राक्षधरो भूत्वायात्काचित्कर्म वौदेकं ॥ १२ ॥  
 कुर्वन्विप्रस्तु मोहेन नरकेपति ध्रुवं ॥ १३ ॥  
 देवाधिदेवः सर्वेषां ज्यंत्रकः स्थिपुरांतकः ॥ १४ ॥  
 तस्यैवानुचराः सर्वेन्द्रह्याविष्णवादवः सुरः ॥ १५ ॥  
 विहाय सांवर्मीशानं यजंते देवतांतरं ॥ १६ ॥  
 तेमहाघोरसंसारेपतंतिपरिमोहिताः ॥ १७ ॥  
 तेऽन्याशिवपादपूजनपराः अन्योनं धन्योजनाः ॥ १८ ॥  
 सत्यं सत्यमिहोच्यते मुनिवरासत्यं पुनः सर्वथा ॥ १९ ॥  
 ऊंचक्रेता परित्वायस्य हेह प्रदद्यते ॥ २० ॥

सजीवः कुपणः स्त्याजः सर्वधर्मत्रहिष्टताः ॥ १३ ॥

यस्तु संतमुद्राभिः लिंगां किरतनुर्नराः ॥

स सर्वयातनाभोगीचांडालोजन्मकोटिषु ॥ १४ ॥

भक्त्यापन्चाक्षरे णैवयः शिवसरुदर्चयेत् ॥

सापिगङ्गेत्वश्वस्थानं शिवमंत्रस्यगौरवात् ॥ १५ ॥

पंचाक्षरे णमंत्रेण विल्वपत्रैशिवाचर्नं ॥

करोति श्रद्धयायूक्तो सगछेदैश्वरं पदं ॥ १६ ॥

आवां वचनो हजारो ज नहीं ज पण लक्षा वधी मोटा मोटा यथ-  
मां मल्ली आवे छे ते यी लोकोंने ब्यामोह वहु धाय छे के आठला मा-  
र्गमां खरो कीयो था वचन मानवु के पेलु मानवु देव पण घणा यथा  
छे. पुराणना देवाते जुदा, गाम गामना ते जुदा, देश देशना जुदा  
अने प्रखेकनुं प्रस्थान जुदु अने एक बीजामां अपवाद घणा, धर्म शा-  
खनी व्यवस्था पण आवीज छे पण घणा मत यथाधी फलाणु मत  
खह छे एम कहेवातु नयो धर्म शास्त्र कामधनु जेवु युं छे. जे वातनी  
इछां करो ते तेमां मल्ली आवे पुनर्वीवाह वावनं मां रम्यर्थ सार मं-  
यमां एक वचन लख्यु छे तेथी शी रीते मत भेद पङ्गो छे ते जणावे.

मृतेन्यस्मै प्रदातव्यामृते सप्तपदात्पुरा ॥

पुरापुरुषपंसयोगान्मृतेदेयेति केचन ॥

ऋतावदेषु कंन्यैव पुनर्देयेति केचन ॥

आगर्भधारणात्कन्यां पुनर्देयेति चापरे ॥

प्राचीन काळमां ब्राह्मण लोक पोतानों पर्म अने विद्यानों आभि-  
मान राखता अने जे वाद करवा अबे तेनो पराभव करवाने वास्ते  
वहु महेनत लेता ते उपरथी केटला एक लोकोए दीर्घीजय कर्यों  
आजना ब्राह्मणोए ए शरम मुकी दीर्घी छे. एज प्रमाणे क्षत्री पण जे  
युद्ध करवा आवे तेमने ना पाडता. नहोता पण आज तो वधाए लोक  
तेजहीन थया छे. कोइ कोइने जवाब देतो नथी के पुछतो नथी विद्या  
वहु घटी गइ छे. शिवंगितामां लख्यु छे के.

शक्तिवादरताः सांख्याः बुध्याबौध्यात्मवादिनः ॥

इश्वरात्मैतिवैशोष्यामीमांसाकर्मवादिनः ॥

सर्वनास्तितिचार्वाकविदांताब्रह्मवादिनः ॥

एवं ब्रह्मतिवैसर्वेशास्त्रमोहसमन्विताः ॥

तस्मात्सर्वप्रयत्नेनशास्त्राभ्यासंत्यजेब्दुधः ॥

आ सर्व विचार उपरथी पर्मनो सुधारणा अवदय छे के नहीं आ  
प्रश्न उत्पन्न थशोः—हाल जे ब्रह्मसमाज बेगाली पेंडीतोए नवो संप्र-  
दाय चलाव्यो छे तेमा वेदात्माथी एकेश्वरमत् ले, छे अने, हैतमूर्यी  
उपासना लेछे अने कर्मकाड थोडु राखेछे. ए संप्रदाय साप्रतकाङ्क्षी  
स्थीतीनो अनुकूल छे के नहीं ए पण विचार गहन छे एनो निर्णय  
यशी माणस न करेतो काळ करेतो एमा संज्ञय नथी. आद्य पर्म  
जे हक्को ते आज चाले एबो नथी. ए सिद्ध थयु छे. अने अनेक देवीनी  
उपासना हाल चाले छे ते पण नभशे एवु लागतुं नथी माटे आ  
नथो विचार विचार खंत लोकोए ध्यानमां राखवा लायक छे एज विनंती.

वेदादिक शास्त्रमा जे हिंसा करवानी लखो छे तेनुं बयान कंरी

बताध्यु छे हवे हिसा फरवानी शाखा विना जे रुढी छे ते बीझे वि-  
 चार करीये छीये, हिसामु मुल एज छे के लोकोए नाना प्रकारना  
 देवताओ छे एम मान्यु अने से देवता शा-त तथा सब गुणी छे,  
 ऐसु मानेलुं नही, बधा देवता एवा मानेला छे के ते जोकोने पी  
 डा ररी सरे छे अने जुदा जुदा प्रकारना विघ्नो उपन्न करे छे, वृ-  
 ष्टोने हरकत करे छे ने तेयी मनव्य तथा पशु बालक तथा छोडे  
 सवबाने दुख दे छे अने देव माहाकुर तथा नोर्दय छे अने ते-  
 मने मद्य मास अने आणो विना तेमनी तोसि थार्य नही ऐसु मुळधी  
 पारेलु तेथी तेमनी तृप्तीने वास्ते अने पोतानी पीडा मटवाने सार  
 हिसा करीने देवताओने भक्त आपुवानी चाल पडी वेदमा जे देवोनु  
 वर्णन करेलु छे ते एज प्रकारनु छे तंषमा जे वर्णन करेलु छे ते पण  
 एज प्रकारनु छे मत शाखमो अने रुढीमा जे देवताओ मानेला ते  
 पण आवाज प्रकार्त्यी ब्राह्मणनी सत्यामा पश्चाचोने नसाडवं सार  
 भैरव, अने चामुङ्डा आ वे देवोनी पार्थना छे ते बने क्षोक नीचे  
 मुगब — .

उर्ध्वकेशीविरूपाद्धीमासशोणितभोजनी ॥१॥  
 तिष्ठइवीशिखावद्वेचामुडेह्यपराजिते ॥२॥  
 तिक्ष्णदंष्ट्रमहाकायकल्पांतदहनोपम ॥  
 भैरवायनमरतुभ्यंअनुज्ञांदानुमर्हसी ॥२॥  
 अपक्रामंतुभूतानिषिशाचाःसर्वतोदिशं ॥  
 सर्वेषामविरोधेनब्रह्मकर्मसमारभे ॥३॥

रमेश्वरने बब्डान आपे छे अने ते ईद जीलहेज महीनामा आवे छे.  
जीलहेज एटले मुसलमानोनी जात्रानु ठेकार्णु जे मफा ताहा' जवानो  
महीनो, जे माणस मके जई आवे छे तेने हज करो आव्यो फे हे छे.  
जे जात्राए जाप छे ते ताहा जात्रामा बब्डान आपे छे अने नही ग-  
यो होय ते पोताना घरमाज आपे छे अने पशुनो वध कर्यो ते "नी-  
यत" एटले विस्मीलहा कहीने करवो. "भीस्मीलाह ए शब्दनो अर्थ  
फक्त परमेश्वर दयालु छे एटलोज छे, उपर मुजब "नीयत" भण्या  
शीवाय वध जनावरनो धाय छे तेने ते लोको हराम केहे छे एटले  
तेवा पशुनु भक्षण करवु ते अपवीत गणाय छे अने "नीयत" भणी  
जेनो वध थयेलो तेवा पशुनु भक्षण करवु ते हलाल एटले पवीत गणे  
छे. एज मुजब ब्रह्माण लोकोमा जाहा वैदीक कर्म धाय छे ताहा  
"आप्यायन संस्कार," "प्रोक्षण संस्कार" "उपाकरण संस्कार" जे पशुने  
थयो होय तेनु मास हव्य सथा कव्य समर्जने भक्षण करवानो निषिप्त  
राखता नहता, उपर मुजबनी ब्राह्मणनी, व्यवस्ता हत्ती, हवे, शुद्रा  
दोक लोको शास्त्रनो आधार बीलकुल राखता नथी तथा कुर्ह जात-  
नो संस्कार पण करता नथी परतु बब्डान घणा करे छे, दस्तराने  
बीवी घोटानी पायगामा, हाथीखानामा, रथखानामा, इयादी, अराढे  
कारखानामा बकरा मारे छे, तोपो आगळ पण एज प्रमाणे करे छे.  
अने शमीनु पुजन करवा स्वारे जाप छे ताहा पण पाडानो वध करे  
छे अने होबीमा केटलाक गामीमा अने रजवाडामा जीवतु बकर्ह  
सोमेछे, काशी पासे विध्यावासनी देवी छे खा वारे मास आवी तरेहना  
नकराना बब्डे चालु रहे छे. एज मुजब पुनानी पासे कोङ्डनपुर छे  
लापण उपर मुजब चाल छे, तेषी पोस मासमा द्यारे जात्रा ए कुङ-

नपुरमा भराय छे खारे आखो ए मारा खा लहुनी नेहेर चाले छे,  
 पुनानीज पासे कब्जी बीजु जेजोरी गाम छे खा खेडोया नामना देवर्नु  
 देवल छे, आ खेडोयाने हजारो न्राष्ट्रण पोतानो इट देव माने छे  
 खा पण बलोदान आपदानी रोत छे, पण खा आवा काममा न्राष्ट्रणो  
 सामेल थता नथी कारण के ए खडो मार्ग गणे छे शास्त्र मार्ग छे  
 नहीं एम न्राष्ट्रणो कहे छे, परंतु बंगालमा एवाज, स्पानको छे याहा,  
 आवी रीतना कर्म करखामा न्राष्ट्रणो सामेल थाय छे अने श्रौत  
 यज्ञ ज्याय थाय छे तेमा वधा देशना न्राष्ट्रणो सामेल थाय छे, अग्नि-  
 होत्री शीशाय बीजो कोइ यज्ञ करतु नथी, पशु यज्ञ अन्निहोत्र, संन्ध्या-  
 स आ गुजरात प्रात्मा तथा मारखाडमा विशेष च्यालता नथी तेनु  
 कारण आ प्रातोमा आवक, वैष्णवनो वस्ती घणी छे माटे न्राष्ट्रण पोते  
 पारे ते प्रमाणे करी शकता नथी पण दावीट, तेलंग, कर्नाटक, मा-  
 हाराट, हिंदुस्थान, काशी प्रयाग सुधा प्रातोमा यज्ञ थाय छे, वैष्णवी  
 मार्गना न्राष्ट्रणो छे ते लोटभो पशु करे छे पण शंकराचार्यना पंथना  
 जे स्थार्त न्राष्ट्रण छे ते तेमनी नौदा करे छे ते विशे केटलाक पीट  
 पशु भीसासा इत्यादिक पंथ लखाया छे, बीनायकराव पेशवा स्थार्त-  
 छता पीट पशुनो यज्ञ कर्यो माटे काशनिना तमाम न्राष्ट्रणो ए एने न्यात  
 बहार मुक्यो हतो, सवाइ जेइसीधराजा जयपुरमा एक कब्जीयुगमा अ-  
 भ्रमेध कर्यो तेथी ते यज्ञ करावनारा, न्राष्ट्रणो हजु सुधी नात बहार  
 छे, दक्षणमा “वारकरी” एठले बीठावानो पंथ थोडा वरसधी एक नवो  
 नीकळ्यो छे ते लोक बीजा, वैष्णव पंथना लोको प्रमाणे बनती महे-  
 नत करी हाँसा बंध करे छे पण हाँसानो पंथ प्राचीन काळ्यो मोटो  
 चाल्यो आन्यो ते मुजब चालनारा लोको घणा छे, केटलाक लोक  
 अज्ञानथी एम समजे छे के छोकराने ताव आन्यो के क्षय रोग थयो

तो ते देवनो एठले पोताना इष्ट देवनो कोप थयो माटे ते इष्ट देवमी  
 जगो होय या जइ दस पाच रुपैया सरच करी बळीदान करे छे.  
 आ मुजब लोको चाले ते उपरथी तेमने आपणे कुर विगेरे विशेषण  
 लगाढी शकीये नही कारण के ते लोको मात्र पोतानी चालती आ-  
 वेली रुढी मुजब चाले छे, यारे तेभोने सत्पर्म तथा एक खरा इ-  
 खरनु ज्ञान थशे यारे तेभोना मनवी देवताओ भक्त मागे छे विगेरे जे  
 हाल कल्पनाओ छे ते पोतानी भेळेज मनमाथी निकिळी जशे. ब्राह्म-  
 णो समजे छे के यज्ञ कर्या शिवाय वरसाद थाप नही ते उपरथी एम  
 विचार करे छे के वरसाद थाप यारे हजारो जीवनुं कल्पयाण थाप ते-  
 मा दस पाच जीवनो कदी नाश थाप तो ते काई पाप ना कहेवाप.  
 कारण आवा कुटुंबनुं सरथण थनुं होय तो तेमाना एकनो नाश थ-  
 वानो होय तो यश देवो एवुं शास्त्र मुजब छे. अनें एक कुटुंब  
 नाशयी आखुं गाम बचतुं होय तो ते कुटुंबनो नाश यश देवो.  
 अने गाम बचाववुं. एक आखा गामनो नाश यतो होय ने आखा  
 देशनो बचाव थतो होय तो देशने बचाववो अने गामनो नाश यश  
 देवो एवी नीती छे ते प्रमाणे देवता न्यारे पसंन थाप छे अने वरसाद  
 समुद्री विगेरे सघळी जोइतो वस्तुभो आपो देशने आवाद करे छे यारे  
 यज्ञ वारी थोडा पशु बळीदानमा आपवां तेमा शी चिन्ताछे एवो विचार  
 करी लोको बळीदान भोप छे हवे आ वात साची हशे तो बळी कर-  
 नामा दोश नयी ए वात उघाडी छे पण ए वात बाबत हाल आपणे  
 गशय वाहाटी शर्मीए छीए. परंतु जे वावतना लोकोए आ धर्म प्र-  
 गट रुही चलाव्यो तेमने कशो संशय पड्यो होय एम मालम पट्टुं  
 नयी. तेमनो एयोज नीध्य इतो के उपर मुजब यज्ञ विगेरे करेयो  
 शेंको तहर गुव्हो थाप छे तेमने ए भायाय मालम पड्यो नही पण

पत करना ते न्याय प्रमाणे छे एम समजता, ए विशे मोटी तक्कारवौं  
इये जलायी पण चैध भवतार थइने वैदीक पर्म दुकान्यो एवां पण  
तचनो घणेक ठेकाणे लखेला भडी ओव छे, पण नोहपाय होवायी  
केटलाक नाखण दया पर्म मानवा लाखा, पण वेद शाखा छे ते  
कायम छे तेयी वेद पर्म दया पर्मने बीहद छे के नयी ए समजबुं  
मुझ्केल नयी, उयां सुधी नाखण वेदने माने छे खासुधी ए वेद प-  
र्मिंज रुहेवाय पछो मतलबने वास्ते गमे तेम बोले तेजी झीकर नयी,

**बुद्धरूपंसमास्थायसर्वस्तपरायणः**

**मोहयन् सर्वभूतानितस्मैमोहात्मनेनमः ८६.**

**भीष्मस्तवराजभारते**

जे माणस एम कहे छे के वेद मारु पर्म पुस्तक छे अने यह  
करायने वास्ते हुं यहो पवित्र पारण करुं छुं तेणे दया पर्म प्रतिपा-  
दन रुखानो अधिकार नयी, स्वामी शंकराचार्य पण एम नोत्या छे.  
हालना नाखण कोई अज्ञान पणायी, प्रतिपादन करे तो एटलुन  
केहेवाय रो वेदशाखा अने यहो पवित्रनो अर्य जाणतो नयी, कीवा  
जाणीने स्वार्थने वास्ते कपठ करे छे वेदनुं खंडन करीने जे करदो  
ते सखवादी जाणवो नहि तो शाखामाएक पेटमा एक मोहमा एव,  
एवुं जे चलावदो ते सखवादी केम धाय, ?



## शुद्धि पृष्ठ.

---

पृ.	पं.	अशुद्ध.	शुद्ध.
२	६	अच्युतं	दच्युतं
४	१०	त्रिविद्या	त्रिविद्या
२९	७	छापा	छापि
३१	७	दक्षिणे	दक्षिणे
४३	१४	द्वृतीया	द्वितीया
४४	१४	त्	त्
५७	२२	ओतीय	ओत्रिय
६६	२	रा	सं
६८	८	ज्ञा	ज्ञा
७२	२३	उ	उरु
७७	२०	पार्दि	पारार्दि
९६	८	कुर्मनकुर्वति	कर्मनकुर्वति

---

# निगम प्रकाश

## ग्रंथनु परिशिष्ट.

हिंसा विशे वेदमां कशि तकरार छेज नहीं, जनावरोनी दया  
ए ग्रंथमां नयी, एटलुज नहीं पण मनुष्यने पण बळि करता, अने  
नरमेधना मोटा विपानो लखेलां छे, नरमेध थयेला तेनि कथा पण  
वेदमां ठेकाणे ठेकाणे छे, ऐतरेय ब्राह्मणमां शुनःशेषाख्यान छे ते  
एज प्रमाणे छे, भागवतमा जडभरतनी कथा एज प्रकारनी छे, वै-  
दिककालमा हिंसा विषे कोइना मनमां संशय हतोज नहीं, शाक  
भाजो क्रांपवामां तथा समारवामां अने साचामां हाल झोइना मनमां  
संशय नयी, ते प्रमाणे ते कालमा जनावर विशे हतु, तेना प्रकार  
ब्रण छे, देवकार्य अने पितृकार्यमां जनावर मारवा ए पुण्य गणता, केवल  
स्वर्गे जवानु साधन एनेज समजता, मनुष्य पोताने निर्वाह अर्थे खा-  
यतो विधि छे एमां पाप के पुण्य काँइ गणता नहोता, अने विना  
कारण कोइनो जीव लेबो ए पाप, ए प्रमाणे वेदनु अनुशासन छे,  
पछि वौध्य अवतार थयो अने कब्जि उत्पन्न थयो आरे हिंसा अहिंसानो  
मोटोटंटो उभो रह्यो, वौध्य मतनो सारी पेटे असर थयो ते बखत भारत  
यंथ थयो एम लागे छे, ब्राह्मण, धनि, वैश्य, एमणे पोतानां वेदनो  
अभिमान छेक मुझ्यो नहतो अने वौध्यनो उपदेश एमना मनमा सा-  
री पेटे असर थई गयो हतो तेथो भारतमा हिंसा ए शुं? अहिंसा ए  
शुं? मांस खावू के न खावू? ए विषे घगी तकरारो अने प्रश्नोत्तर लखेला  
छे, ते सर्वनो इसर्थ एटले सारांश एम जणाय छे के वेद विहित

हिंसा करवी अन्यत्र आहिसा पाळवी, ते वस्त वे पंथ निकल्या हता एक प्रवृत्ति अने वीजो निवृत्ति. प्रवृत्ति मार्गवाळा वेदने अनुसराने चालता, अने ते वेदना अभिमानी हता, आजना अग्निहोत्रि, दिक्षीत, श्रौति, याजिक, इत्यादि कर्मकाड चलावेछे तेवा ए प्रवृत्ति मार्गवाळा हता. वीजा निवृत्तिवाळा तेमणे वेद मार्गनो खाग कर्यो अने सापु सन्धाशी थया हता तेमनो आग्रह एवो हतो के कोइ प्रकारर्थी हिंसा न करवी वेदमा मंजूर करी होयतो फिकर नहीं पण वैदिक कर्म न करवा.

केटलाएक वेदना अने श्रौत सूत्रना वचनो निगम प्रकाश पुरो थया केढे जोवासा आव्या, तेनो संग्रह आ परिशिष्टमा कर्यो छे, तेज प्रमाणे भारतनो यंथ मुंबईमा छाप्यो छे ते उपरयी क्षोक लख्या छे ते पण वाचवा लायक छे,

### ताण्डव भावाह्यण.

आ यंथ सामवेदना पेठासा छे, ते उपर शायना चार्यनु भाष्य छे तेमा एम लख्युछे के,

यस्यनेऽश्वसित्वेदायोवेदेभ्योखिलन्जगत् ॥

निर्ममेतमहंवन्देविद्यातीर्थमहेश्वरं ॥१॥

तत्कटाक्षेणतदूपंदधद्बुक्महीपतिः ॥

आदीशत्सायनांचार्यवेदार्थस्यप्रकाशने ॥२॥

अर्थ—वेद ए परमेश्वरनो शब्द छे वेदधी सर्व जगत् निर्माण यथु छे माड ते इश्वरज बुकराजा उपर कृपा करी छे तेनो आजापी

वेदनो प्रकाश करवाने वास्ते भाष्य कर्यु छे. ॥ ए सायनाचार्य ५१०  
वरस पहेला विजयनगरीमा कर्णाटक प्रातमा, बुधराजानो आभित  
हतो एने मापद पण कहे छे. अने संन्यासि थया पछि विद्यारण्य स्वा  
मि पण कहेछे.

आ ग्रंथमा अनेक क्रतु विधानो लख्या छे तेना नाम.

१ अग्निष्ठोमादिसत् क्रतु	१ राट् क्रतु
१ औपसद क्रतु	१ ज्योति क्रतु
१ चतुष्ठोम क्रतु	१ कषभरूप क्रतु
१ उद्घादलभित क्रतु	१ कुलायाख्य क्रतु
१ इदस्तोम क्रतु	१ त्रिकटुक षड्ग्रन्त
१ निधन क्रतु	१ प्रजापति सप्तरात्र
१ वसिष्ठ चतुर्गत्र	१ ऐदसप्तरात्र
१ विश्वामित्रसंजय चतुर्गत्र	१ जनक सप्तरात्र
१ पंचशारदोय पंचरात्र	१ देव नवरात्र
१ विश्वजित् एकादशरात्र	१ विश्वातिरात्र
१ प्रक्षाख्य क्रतु	१ ऋषि त्रिशङ्कुरात्र
१ चैत्ररथ क्रतु	१ चत्वारिंश द्राव
१ गर्म क्रतु	१ एकघाटिरात्र क्रतु.
अंगिरसामयन क्रतु	सहरन संवत्सरसत्र
शत्ररात्र क्रतु	सर्प सत्र
द्वादश संवत्सरसत्र	विश्वसृजमयन क्रतु
षह्निश रसंवत्सरसत्र	आदित्यपृष्ठगमयन क्रतु
सारस्वतसत्र	संवत्सरसत्र.

सर्वं सूत्रमां ब्राह्मण धात्रि वैशा आ त्रि वर्गनु रूपं, उपनयन वि-  
वाह, अंत्येष्टि, इत्यादि थोडा फरकथी प्रतावेला छे यज्ञ करनानो पण  
ए त्रि वर्गने अधिकार छे.

ताण्डय ब्राह्मणना वचनो नाचे लख्या छे.

परिश्वौपश्चनियुञ्जन्ति । अध्याय २७ खण्ड १३ मंत्र ४  
वैश्ययाजयेत् ॥ १८--४--५

एतद्वैश्यस्य समृद्धं यत्पश्चावः पशुभिरेवैन ए  
समर्धयति ॥ १८--४--६

ज्योतिर्वारेषोऽग्निष्ठोमोऽज्योतिष्मंतं पुण्यलोकं जयति य ए  
वं विद्वानेतेन यजते १९--११--११

स्वाराज्यं गछति य एवं वेद ॥ १९--१३--२

परमेष्ठितां गछति य एवं वेद ॥ १९--१३--४

अथैषविघ्नः ॥ १९--१८--१

इद्वोऽकामयत पाप्मानं भ्रातृव्यं विहन्यामिति सु एतं विघ्नम  
पश्यत् ॥ १९--१८--२

एकादश शरणा एकादश पश्चावः एकादश यूपा भवन्ति ॥

२०--२--४

तया समुद्दत्यारात्यायं यं कामं कामयते तं तं मध्य श्रुते  
य एवं वेद ॥ २०--२--५

अज्ञोग्निपोमियः	२१--१४--११
ऐन्द्रामास्ताउक्षाणीमास्त्योवत्सतर्यः	२२--१४--१२
पशुकामोयजेत्	२२--१६--२
सौमपौषंपशुमुपालभ्यमालभेन्	२३--१६--४

एक एक क्रतु करवामा फल लख्यु छे कोइथी इंद पद, कोइथी ब्रह्मानुं पद, कोइथी प्रजा, पशु, अन्न, राज्य अधिकार, इत्यादि प्राप्त थाय छे ते विशेषणाएक अर्थ वादस्पे प्राचीन इतिहास लख्या छे, के प्रजापतिए वरसाद रोक्यो त्यारे फलाणो यज्ञ कर्यो तेथी सासे वर्साद पड्यो अने प्रजा सुखो थई जनावरो मरी जता हता ते वस्त जनावरोनो स्वामिश्वद्र पशुपति, तेने वास्ते यज्ञ कर्यो, त्यारे जनानर रत्ना अने वृद्धि पाभ्या एवी एवी कथा पण लखेली छे तेथी ते क मनु प्रयोजन बताय्यु छे विधान अने मंत्र विनियोग लख्यो छे ए प्रमाणे अनेक प्रकारना क्रतु लख्या छे चारे वेदमा अने सूत्रमा एज विषय छे

### उपर लखेला वचनोनो अर्थ

यूप, न होयतो परिधिने जनावर बाध्यु	१० १३-
वाणियाए यज्ञ करवो	१८-४-०
तेगे करीने वाणियानि लक्ष्मी वर्धेणे	१८-४-६
आमिष्ठोम यज्ञ कर्यार्थी मनुभ्य पुण्य लोकमा जाय छे	१९-११-११
आ वात जे जाणेछे ते स्वर्गमा जाय छे	१९-१३ २
मध्यदेवना स्थानमा जाय छे	१९ १३-

विघ्न यज्ञ बतावुछुं	१९-१८-१
पुर्वे इन्द्रदेवे इच्छाकरी, के आपणा शत्रु शि रिते मरशो,	
त्यारे तेणे आ यज्ञ विधि कर्यो	१९-१८-२
अग्नीयार दोरडा वडे अग्नीयार थाभलाने अने अग्नीयार जनाव-	
रो वाधवा.	२०-२-४
आ यज्ञ कर्यार्थो जे मनमा धारे ते सिद्ध धाय छे,	२०-२-५
अग्निष्ठोम देवने बकरो आपवो	२१-१४-११
इद अने मस्त देवने गाय आपवो अने मस्त देवने वा-	
छडो आपवो.	२१-१४-१२
जेने पशुनि वृद्धि जोइये तेणे यज्ञ करवो	२२-६-२
सोम अने पुषा देवताने अर्थे पशु मारवो	२३-१६-४

गोपथ ब्राह्मण, द्वितीय प्रपाठक ॥

ॐ मा ॐ सीयन्तिवाआ हिताग्नेरग्नयः तएनमेवाग्नेऽ  
भिध्यायन्तयज्ञमानंय एतमैद्राग्नंपशुष्टेष्टेमासैआलभते ॥

### आश्वलायन

श्रौतसूत्र, उत्तरपट्टक, ६, ६्याये

सत्पमोक्षिणिका

वैश्वकर्मणमृपमंमहाव्रते १३

नारायणवृत्ति-

एते सर्वेंगोपश्चावः

अन्वहंवैकैकशएकादशिनाम् ।

नारायणवृत्ति

एकादशिनामेवएकैकमादितआरभ्यअहन्यहनीक्रमेणा  
लभेरन्

उत्तरषड्क ३ ध्याये

सूर्यस्तुतायश्चस्कामः

गोसवविवधौपशुकामः

वाजपेयेनाधिपत्यकामः

४ अध्याये

ज्योतिर्ज्ञादिकामस्यनवसत्पदशःप्रजातिकामस्य

५ ध्याये

आङ्गिरसंस्वर्गकामःचैत्ररथमन्नाद्यकामः

अत्रैश्वतुर्वीर्वीरकामःजामदग्नेषुष्टिकामः

ऋतूनापड्हंप्रतिष्ठाकामःसंभार्यमायुष्कामः

संवत्सरग्रवलहंश्रीकामःअथगवामयनंसर्वकामः

अर्थ —प्रत्येक छ छ मासे ऐंद्रामि देव प्रीत्यर्थं पशुनो यत न र

वे गोपथ ब्राह्मणे

महा नृत यज्ञमा ऋषभ एटले बळद आपनो आभ्लायन

पशु एकादशनोमा निय एक एक पशु मात्रो	आस्तायन
सर्व स्तुता यज्ञ कर्याधी जश मळेछे	आ०
गोसव यज्ञ कर्याधी पशु प्राप्ति थायछे.	आ०
वाजपेय यज्ञ कर्याधी अधिकार मळेछे	आ०
उयोति॒ यज्ञ कर्याधी संमृद्धि थायछे,	आ०
नव सप्तदशथी प्रजा थायछे	आ०
आडिरसथी स्वर्ग प्राप्ति थायछे	आ०
चैत्ररथथी पा-य वृद्धि थायछे	आ०
अत्रेश्वतुर्वार कर्याधी पैर्य वृद्धि थायछे	आ०
जापदः यथो प्रकृते सारी थायछे	आ०
पद्महथो प्रतिष्ठा मळेछे	आ०
सभार्यथो आयुष्य प्राप्ति थायछे	आ०
सर्वसरप्रवत्तहथी लक्ष्मी मळेछे	आ०
गवामयनथी सर्व कामना सिद्ध थायछे	आ०

### लाटचायनियथ्रौतसूत्र

उभाचेदनूवंध्य औद्धणोरन्धे

प्रथमप्रणाठक.पाण्डिकण्डिका.सूत्र ४२

ऋपभआर्पभ.	२--६--४३
अजआजिंग.	२--५--४६
मेपऔर्णवयं.	२--६--४७

वपायांहुतायांधीष्णयानुपतिष्ठेरन्	२--२--१०
नशूद्रेणसंभापेरन्.	२--२--१६
गोष्ठेपशुकामः	३--५--२१
स्मशानेऽभिचरन्.	३--६--२३
अनुवंध्यवपायांहुतायांदक्षिणेवेद्यतोकेशस्म श्रूणिवापयेरन्.	४--४--२८
प्रथमश्वाभिष्ठुवंपंचाक्षंकृत्वामासान्तेसवन विधःपशुः	४--८--१४
यथाचात्वालेतथायूपेशामित्रेचपशौ.	५--१--९
वपायाहुतायामिदमापद्वतिचात्वालेमार्ज यित्वासर्वपशूनांयथार्थस्यात्.	५--३--१७
अग्निषोमीयवपायांहुतायायांशेतमुदडआति क्रम्यचात्वालेमार्जयेत्.	५--९--१४
जनेतिस्त्रोवसतीतिराजन्यवंधुर्जनोत्राह्यणः समानजनइतिशाष्टिडल्य.	८--२--१०
विवाह्योजनःसगोत्रःसमानजनइतिधानं जप्यः	८--२--११
प्रतिवेशोजनपदोजनोयत्रवसेत्ससमानज	

नद्वितीशाणिडल्यायनः	८-२-१९
एतंमृतंयज्ञमानहविर्भिः सहजीपेयज्ञपात्रेश्वाहव नीये प्रहृत्य प्रब्रनेयुरितिशाणिडल्यः	८-८-६
आस्येहि रण्यमवधायानुस्तरणिवयागौ मुखं व पया प्रछाद्यतत्राग्निहोत्रहवनीतिरथीम्	८-८-२२
वैश्यं यं विशः स्वराजानः पुरस्कुर्वीरन्सगो सवेनयज्ञेता.	९-४-२२
विघ्राभ्यां पशुकामो यज्ञेता भिचरन्वा.	९-४-३३
राजाश्वमेधेनयज्ञेत.	९-९-१
पंचशारदीयेष पशुवन्धयज्ञेत.	९-१२-१०

## लाव्यायनसूत्रं

अर्थः

बद्धनो यज्ञ करता बद्धनो मंत्र भण्वो.	१-६-४२
आखलानो यज्ञ करता आखलानो मंत्र भण्वो.	१-६-४३
बकरानो यज्ञ करता बकरानो मंत्र भण्वो.	१-६-४६
गाढ़नो यज्ञ करता तेनो मंत्र भण्वो.	१-६-४७
काढ़जानो होम करता उपस्थान मंत्र भण्वो.	२-२-१०
यज्ञनो दीक्षा लोधा पछो शुद्ध साथे भाषण न करुं.	२-२-१६
गाय वापवाने ठेकाणे यज्ञ करता जनावरेनी वृद्धि धाय छे.	३-९-२१
स्मशानमा कर्यायी शब्दु नाश धाय छे.	३-९-२३

(२१)

जनावरना काळजानो होम कर्या पठी वतुं करावदु	४-५-१८
एक मास पठी पशु करवो.	४-८-१४
पशु उपर पाणि छाढवु	५-३ १७
अयि षोम देवने काळजानो होम करति वस्ते पाणि छाटवु ५९ १४	
भ्रातृण क्षत्रि वैश्य ए त्रण सामान्य छे एवुं शाडिल्याचार्ये कहूँ छे.	५-३ १०
सगा बहालां ए पण सामान्य छे एवुं धानजापाचार्ये कर्युँ छे. ८-२ ११	
स्वदेशीय जन समान्य छे एवुं शाडिल्य बोल्यो छे	८-२ १२
यज्ञकर्ता यजमान मरी जाय तो तेना उपर यज्ञना पाच नाखवा	८-८-६
तेना मौमा सुवर्ण घालीने गायनु काळजुँ काढीन तेना	
मुख उपर मुरुवु ए गायनु नाम अनुस्तरणी	८-८-१२
वाणियाए गोसव करवो	९-४ २३
विघ्न यज्ञथी पशु वृद्धि थाय छे.	९-४ ३३
राजाए अश्व एटले घोडानो यज्ञ करवो	९-९-१
पचशारदीय यज्ञमा पशु मारवो	९०१२-१०

॥ भारत ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥

गार्हस्यस्यचधर्मस्ययोगधर्मस्यचोभयोः॥  
अदुरसंप्रसितयोःकिंस्त्विश्रेयःपितामह ॥२॥

भीष्मउवाच ॥

उभौधर्मौमहाभागावुभौपरमदुश्वरौ ॥  
उभौमहाफलौतौतुसद्विराचारितावुभौ ॥

कपिलउवाच ॥

नाहंवेदान्विनिंदामीनविवद्यामिकर्हिंचिन्  
पृथगाश्रमिणांकर्माण्येकार्थानीतिनःश्रुतं ॥

स्थूमराश्मस्त्वाच ॥

स्वर्गकामोयजेतेति सततं श्रूयते श्रुतिः ॥  
फलं प्रकल्पपूर्वं हिततो यज्ञः प्रतायते ॥२॥  
अजश्वाश्वमेषश्वगौश्वपक्षिगणाश्वये ॥  
याम्यारण्याश्वैपधयः प्राणस्यान्नमिति श्रुतिः ॥  
तथैवान्वद्यहरहः सायं ग्रातर्निरूप्यते ॥  
पश्चावश्वार्थधान्यं च यज्ञस्यां गीमिति श्रुतिः ॥  
एतानिसहयज्ञेन प्रजापतिरकत्ययत् ॥  
तेन प्रजापतिर्देवान्यज्ञेनायजत्प्रभु ॥  
तदन्योन्यवराः सर्वैप्राणिनः सप्तसप्तधा ॥  
यज्ञेषु पाकृतं विश्वं प्राहुस्त्तमसंज्ञितं ॥

एतचैवाभ्यनुज्ञातं पूर्वैः पूर्वतरैस्तथा ॥  
 कोजातुनविचिन्वीतविद्यान्स्वांशक्तिमात्मनः ॥  
 पश्चात्श्वभनुष्याश्वदुमाश्वौपधिभिः सह ॥  
 स्वर्गमेवाभिकांक्षतेन च स्वर्गस्ततो मखात् ॥  
 औषध्यः पश्चावोवृक्षावीरुदाज्यं पयोदधि ॥  
 हविर्भूमिर्दशः अद्वाकालश्वैतानिद्वादश ॥  
 ऋचोयज्ञपिसामानियजमानश्वपोडश ॥  
 अग्निज्ञेयोगृहपतिः ससप्तदशउन्यते ॥  
 अंगान्येतानियज्ञस्ययज्ञो मूलमिति श्रुतिः  
 यज्ञार्थानिहिसृष्टिनियथार्थाश्रूयते श्रुतिः  
 एवं पूर्वतराः सर्वेष्वृताश्वैवमानवाः ॥  
 यज्ञां गान्यपिचैतानियज्ञोक्तान्यनुपूर्वशः ॥  
 विधिगविधियुक्तानिधीरयंतिपरस्परं ॥  
 न तस्य त्रिपुलो केषु परलोकभयं विदुः  
 इतिवेदावदंति ह सिद्वाच परमर्पयः ॥  
 यज्ञतः स्वर्गविधिनाप्रेत्यस्वर्गफलं लभेत् ॥  
 इति श्रीमहाभारतेशांतिपर्वणिमोक्षधर्मेण गोकर्णिलिये अष्टप  
 छ्यधिकद्विशततमोध्यायः ॥२६८॥

स्यूमरादिमस्वाच ॥

यथामातर माश्रित्यसर्वे जीवंति जंतवः ॥

एवं गाहेस्य माश्रित्य वर्तीत इतरा अमाः ॥

गृहस्थ एव यजते गृहस्थः स्तप्य तेतपः ॥

गाहेस्य मस्य धर्मस्य मूलं यन्किंचिदेजते ॥

सर्वमेतन्मया ब्रह्मन् शास्त्रतः परिकीर्तिं ॥

न ह्यविज्ञाय शास्त्रार्थं प्रवर्तते प्रवृत्तयः ॥ अ० २६९

युधिष्ठिर उवाच ॥

अहिंसा परमो धर्मः इत्युक्तं ब्रह्म स्त्वया ॥

आद्वेषु च भवाना ह पितृनामिष कांक्षिणः ॥

मां सैर्वं ब्रह्मिधैः प्रोक्तं स्त्वया आद्विधिः पुरा ॥

अहत्वाच कुतो मां समेव मेतदि रुद्ध्यते ॥

जातोनः संशयो धर्मैर्मांस स्य परिवर्जने ॥

दोषो भक्षयतः कः स्यात्कश्चाभक्षयतो गुणः ॥

भीष्म उवाच ॥

अ प्रोक्षितं वृथा मां संविधि हीनं न भक्षयेत् ॥

प्रवृत्तिलक्षणो धर्मः प्रजार्थिभिरुदात्वतः ॥

यथोक्तं राजशा दुलं न तुतन्मोक्षकांक्षिणां ॥

हवियत्संस्टतंमंत्रैःप्रोक्षिताभ्युक्षितंशुचि ॥  
 वेदोक्तेनप्रमाणेनपितृणांप्रक्रियासुच ॥  
 अतोन्यथावृथामांसमभद्यमनुरब्रवीत् ॥  
 एतत्तेकधितंराजन्मांसस्यपरिवर्जने ॥  
 प्रवृत्तौचानिवृत्तौचविधानमृषिनिर्मितं ॥  
 इति श्रीग्रहभारते अनुशासनपर्वणिदानधमेंगांसभक्षणनि-  
 पेधेपंचदशाधिकशततमोध्यायः ॥२१५॥

युधिष्ठिरउवाच ॥

किंचाभद्र्यमभद्र्यंवासर्वमेतद्वदस्त्वमे ॥  
 दोपाभक्षयतोयेपितन्मेवूहीपितामह ॥

भीमाउवाच ॥

एवमेतन्महावाहोयथावदसिभारते ॥  
 नमांसात्परमंकिचिद्रसतोविद्यतेमुवि ॥  
 सद्योवर्धयतिप्राणान्युष्टिमययांदधातिच ॥  
 नभद्र्योभ्यधिकःकश्चिन्मांसादस्तिपरंतप ॥  
 विवर्जितेतुवहवेगुणाःकौरवनंदन ॥  
 येभवंतिमनुप्याणांतान्मेनिगदतःशृणु ॥  
 विधिनावेदद्वष्टेनतदुक्तेहनदुष्यति ॥

यज्ञार्थेपशवः सृष्टाइत्यपिश्रुयते श्रुतिः ॥  
 अतोन्यथा प्रवृत्तानां राक्षसो विधि सुच्यते ॥  
 क्षत्रियाणां तु योद्धाणो विधि स्तमपि मेघाणु ॥  
 वीर्येणोपार्जितं मां सयथा भुंजन्न दुष्यति ॥  
 आरण्याः सर्वदैवत्याः सर्वशः प्रोक्षितामृगाः ॥  
 अगस्त्येन पुराराजन्मृगयायेन पूजिते ॥  
 अतोराजर्पयः सर्वैमृगयां यांति भारत ॥  
 नहिलिष्यंति पापेन न चैतत्पानं कंविदुः ॥  
 पितृदैवत यज्ञेषु प्रोक्षितं हवि सुच्यते ॥  
 प्राणदानात्परं दानं न भुतो न भविष्यति ॥  
 अनिष्टं सर्वभूतानां मरणं नाम भारतं ॥  
 सर्वयज्ञेषु वादानं सर्वतीर्थेषु वासुतं ॥  
 सर्वदानं कलं वा पिनैत्तु ल्यमहिं सया ॥  
 इति श्रीमहाभारते अनुशासनपर्वणी आनुशासनं दानधर्मं  
 अहिंसाफलकथने पोडशाधिकशततमोध्यायः ११६

व्यासउवाच.

यज्ञेन तपसा चैव दाने न च न राधिप ॥  
 पूर्यते न रशा दुलन रादुष्कृतका रिणः ॥

राजसूयाश्वमेधौचसर्वमेधंचभारत ॥  
 नरमेधंचनृपतेत्वमाहरयुधिष्ठिर ॥  
 यजस्ववाजिमेधेनविधिवदक्षिणावता ॥  
 वहुकामान्नवित्तेनरामोदाशरथिर्यथा ॥  
 इति श्रीमहाभारते आश्वमेधिके पर्वणी तृतीयो ध्यायः ॥  
 ततो युपो ह्रूये प्राप्ते पद्मावेल्वान् भरतर्पम् ॥  
 खादिरान् विल्वसमितास्तावतः सर्ववर्णितः ॥  
 देवदास्मयोद्वौ नुयूपौ कुरुपतेर्मखे ॥  
 श्लोऽमांतकमयं चैकं याजकाः समकलयन् ॥  
 इष्टकाः कांचनीश्वात्र चयनार्थकृताभवत् ॥  
 शुशुभेचयनं तद्दद्धस्यैव प्रजापतेः ॥  
 ततो नियुक्ताः पश्चवौयथाशास्त्रमनीयिभिः ॥  
 तं तं देवं समुद्दिश्य पक्षिणः पश्चवश्वये ॥  
 ऋषभाः शास्त्रपठितास्तथाजलचराश्वये ॥  
 यूपेषु नियताचासीत्पशुनां त्रिशतीतथा ॥  
 अश्वरक्षो त्तराय ज्ञैकीतेयस्य महात्मनः ॥  
 स यज्ञशुशुभेतस्य साक्षाद्वर्षिसंकुलः ॥  
 सिद्धविप्रनिवासैश्च समंतादभिसंवृतः ॥

तस्मिनसदसिनित्यास्तुव्यासांसेष्याद्विजर्जभाः ॥  
 सर्वशास्त्रग्रणेतारःकुशलायज्ञसंस्तरे ॥  
 नारदश्वब्रह्मवान्नतुवुरुश्चमहागुतिः ॥  
 इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकैपर्वणिअनुगीतापर्वणिअश्व  
 मेधारंभेअष्टाशितितमोध्यायः ॥८८॥

वैश्वांपायनउवाच ॥

अपाधित्वापशूनन्यान्विधिवद्विजसत्त्वाः ॥  
 ततुरंगंयथाशास्त्रमालभंतद्विजातयः ॥  
 ततःसंश्रयतुरगंविधिवद्याजकाःस्तदा ॥  
 उपसंवेशयन्राजसंस्ततस्तांदुपदात्मजां ॥  
 उधृत्यतुवपांतस्ययथाशास्त्रंद्विजातयः ॥  
 उपाजिधयथाशास्त्रंसर्वपापापहंतदा ॥  
 शिष्टान्युगान्वियान्यासंस्तस्याश्वस्यनराधिप ॥  
 तान्यग्रौजुहुवुर्धेराःसमस्ताःपोडशार्त्विजः ॥  
 व्यासःसशिष्योभगवान्वर्धयामासतंनृपं ॥  
 ततोयुधिष्ठिरःप्रादान्नाद्यणेभ्योयथाविधि ॥  
 गोविंदंचमहात्मानंबलदेवंमहाबलं ॥  
 तथान्यान्वृद्धिणव्रीरांश्चप्रदुम्नाद्यांन्सहस्रशः ॥

पूजयित्वामहाराजयथाविधिमहाद्युतिः ॥

एवंबभूवयज्ञः सधर्मराजस्यधीमतः ॥

वद्वन्नधनरत्नैद्यः सुरामैरेयसागरः ॥

सर्पिः पंकाहदाय च बभुव श्वान्नपर्वताः ॥

पशुनां वध्यतां चैव नां तं दद्यशेरेजनाः ॥

विषापाभरतश्रेष्ठः लृतार्थः प्राविशत्पुरं ॥

तं महोत्सवसंकाशं ल्लष्टुष्टुजनाकुलं ॥

इति श्रीमहाभारते आश्रुमोधि को पर्वणि अनुगीता पर्वणि

अश्रुमोधसमाप्तौ उननवाति तमोऽध्यायः ॥ ८९ ॥

अर्थः

युधिष्ठिर, धर्मराजा भीष्माचार्यने प्रश्न रखे छे, के प्रहस्य अने  
साधू आ बेमार्थी उत्तम पर्म कोनो?

ते ऊपर भीष्माचार्ये जवाब दीधो के बे पर्म सार्ते छे

पछि कपिलजी बोल्या के बेदनो निंदा हु ररी शरुतो नथी आ  
प्रम प्रमाणे पर्म हाँय, छे.

स्थुमरइमी कड्डी बोल्या के स्वर्गे जनाने यज्ञ करो ए प्रमाणे हमेष  
बेद बोल्यो छे तेथी परत्परार्थी यज्ञ करता आव्या छे. बकरानो, अने  
घोडानो, अने गाडरनो, गायनो, अने पखि जनावरोनो, यज्ञ धायच्छे.  
गाम्या अने सिम्मा जे जनावरो छे अने बनस्पाति छे ते सर्वे भक्षण  
करवा एवं बेदमा कल्युं छे अने जनावरो अने धाय आ बेधी यज्ञ धाय

छे एम वेद कद्युँ छे, ए प्रमाणे प्रजापति देवे ठराव करीने यज्ञ विर्भि, जनावरो, अने धान्य ए सर्व उत्तमन् कृपां ते प्रमाणे देव प्रजापतिना ठराव प्रमाणे यज्ञ करवा लाग्या, यज्ञने वास्ते जनावरनो उपयोग करतो ते ब्रह्मदेवनी आक्षा प्रमाणे छे, अने ते प्रमाणे पुर्वापर्यो करता आव्या छे, जनावर, मनुष्य, वनरूपति, ए सर्व स्त्रैं जडामी इच्छा करे छे, जनावर, धान्य, इत्यादि १२ प्रकारनी सामग्री यज्ञमा जोडए ते अने वेद मध्ये एकदर १६ अने सत्तरमो अभिभा प्रमाणे यज्ञनां सामग्री वेदमा लखी छे, तेथी पूर्वापर्यो मनुष्यो यज्ञ करवा लाग्या, आ सर्व पदार्थ यज्ञार्थ कर्या छे, एम वेदमा लख्युँ छे, एज प्रमाणे सर्व वेद, सिद्ध पुन्नप, महाकृष्णी ए सर्व जणनो एज पुकार, छ, यारे एमा पातक शानुँ होप १ यज्ञार्थी परभवमा सारुँ थाप छे,

शातिपर्वमा ए प्रमाणे कथा २६८मा अध्यायमा छे,

स्युमरास्मि ऋषी कहे छे के—सर्व जीव, गाना आश्रयधी जीवे छे, ते प्रमाणे ग्रहस्थने आश्रये, सर्व सापु इत्यादिक जीवे छे गृहस्थधी यज्ञ याय छे तप थाप छे माटे गृहस्थाश्रमीलौक धर्मनो देखो छे, आ चाहि बाबत शास्त्र विचार करीने मै कही छे.

आ प्रमाणे कथा २६९मा अध्यायमा छे,

धर्मराजा कहे छे हे आचार्य अहिंसा मोटो धर्म छे एम पण घणी वखतं कल्यूँ, अने तमेज आद्वमां अनेक प्रकार्तुँ मास खावानी छुट आपी छे, यारे हिंसा कर्या विना मास शी रीते भब्दो, मारो आ संशय जतो नयी, माटे एनो उलासो करो, यज्ञ सिवाय, अने शास्त्रे छुट आपी छे ते सिवाय, मास

न खावूँ एनुं नाम प्रवृत्ति धर्म परंतु मोक्षनी इछा होय तेनो आ धर्म  
मर्थी, वेदना मन्त्रधी पवित्र धरेलुं, अने पाणी छाटीने प्रोक्षण करेलुं  
मांस पवित्र छे ते खावानी हरकत नयी, आ सिवाय मांस खावूँ नहो,  
प्रवृत्ति अने निवृत्ति ए बे धर्म क्रथी लोके कहाँ छे।

अनुशासन पर्वमा ए कथा ११५मा अध्यायमा छे।

धर्मराजा पुछे छे के हे आचार्य शुं खावूँ ने शुं न खावूँ ए मने  
कहो, भीष्म जनावर दे छे के हे धर्मराजा, आ पृथ्वी उपर मांस जेवो  
उत्तम पदार्थ नयी, जीवने पुष्टि आपनार, शरिरने बृद्धि करनार, मांस  
जेवो विजो पदार्थ छेज नहो, तत्रापि तेमो त्याग करवामा, प्रण बहु  
गुण छे, वेदाङ्गा प्रमाणे मांस खावामा दोष नयी, कारण यज्ञार्थ पर-  
मेश्वरे पशु जनावरो आपना कर्यां छे, एम वेदमा लंख्यु छे, ते सिवाय  
मांस खावूँ ए रक्षसी कर्म छे, क्षत्रिय जातिनो धर्म छे, ते कहु छुँ के  
तेमणे पोताना बल्धी जनावरो मायी होय ते खावामा, सेमणे दोष  
मर्थी, आगात्मि क्राणिने प्रण सर्व मृग, पक्षी नुँ भूत आप्यु हस्तु, सर्व रा-  
ज्यांश्च शिकार करे छे, ते करवामा तेमने पाप नयी, श्रोद्धमा पञ्चमा  
जे मांस खाय छे, ते देवोनु डर्छिए खाय छे, प्राणे सर्वने प्रिय छे  
भाटे प्राण रक्षण करवो ए मोटु दानि छे, अहिसा राख्योथी सर्व यज्ञ  
तप तिर्थनु कळ मेळ छे।

ए प्रमाणे कथा ११६ मा अध्यायमा छे।

ध्यासजो कहे छे, पापी छे ते यज्ञ, तप, दानयो पवित्र याय छे,  
राजसूय यंग, अभ्यमेप यज्ञ, नरमेप एवा अनेक प्रकारना यंग छे,  
सेमानो घोडानो यज्ञ तु कर, पूर्वे रामचंद्रजीए ए पते कर्मी हतो।

છે એમ વૈદ કર્યું છે. એ પ્રમાણે પ્રજાપતિ દેવે ઠરાવ કરીને યજ વિધિ, જનાવરો, અને યાન્ય એ સર્વ ઉત્પન્ન કર્યા, તે પ્રમાણે દેવ પ્રજાપતિના ઠરાવ પ્રમાણે યજ કરવા લાગ્યા, યજને વાસ્તે જનાવરનો ઉપયોગ કરવો તે ન્નાદેવની આજા પ્રમાણે છે. અને તે પ્રમાણે પૂર્વપરથી કરતા આન્યા છે. જનાવર, મનુષ્ય, બનસ્પતિ, એ સર્વ સ્વર્ગે જવાની ઇછા કરે છે. જનાવર, ધાન્ય, ઇત્યાદિ ૧૨ પ્રકારની સામયી યજમા જોડાએ તે અને વૈદ મળી એકંદર ૧૬ અને સત્તરમો આપી આ પ્રમાણે યજનાં સામાય્યે વૈદમા લખી છે. તેથી પૂર્વથી મનુષ્યો યજ કરવા લાગ્યા, આ સર્વ પદાર્થ યજાર્થ કર્યા છે. એમ વૈદમા લખ્યું છે. એજ પ્રમાણે સર્વ વૈદ, સિદ્ધ પુરુષ, મહાકલ્ષ્યો એ સર્વ જણનો એજ પુકાર છે. ખારે એમા પાતક શાનું હોય યજાર્થી પરમભવમા સારું થાય છે.

**શાત્રિપર્વમા એ પ્રમાણે કથા ૨૬૮મા અધ્યાદમા છે.**

સુપરાદ્યમિ જ્ઞાયો કહે છે કે—સર્વ જીવ, ભાના આન્ત્રયથી જોવે છે. તે પ્રમાણે ગ્રહસ્થને આશ્રયે, સર્વ સાપુ ઇત્યાદિક જીવે છે ગૃહસ્થથી યજ થાય છે તપ થાગ છે માટે ગૃહસ્થાશ્રમો લોક પર્મનો ટેકો છે. આ બાધી વાચત શાસ્ત્ર વિચાર કરીને મે કહી છે. .

**આ પ્રમાણે કથા ૨૬૯મા અધ્યાયમા છે.**

ખરેરાજા કહે છે હે આચાર્ય આહેસા મોટો પર્મ છે એમ પણ ઘણી બખતં કર્યું, અને સમેજ ભાદ્યમા અનેક પ્રકારનું માસ ખાવાની છુટ આપી છે. ખારે દિસા કર્યા વિના માસ ઝી રીતે મળ્યો. મારો આ સંશય જતો નથી. માટે એનો ખુલાસો કરો. યજ સિવાય, અને શાસ્ત્ર છુટ આપી છે તે સિવાય, માસ

न खावू एनु नाम प्रयृति धर्म परेतु मोक्षनो ड़छा होय तेनो आ धर्म  
नयी वेदना मंत्रयो पवित्र थएलु, अने पाणी छाटीने प्राक्षण करेलु  
मास पवित्र छे ते खावानी हरकत नयी, आ सिवाय मास खावू नहीं,  
प्रदृति अने निवृत्ति ए दे धर्म क्रषी लोके कहा छे.

अनुशासन पर्वमा ए कथा ११५ भा अध्यायमा छे. ।

धर्मराजा पुठे छे के हे आगायै शु खावू ने शु न खावू ए मने  
कहो भीष्म जवाब दे छे के हे धर्मराजा, आ पृथ्वी उपर मास जेवो  
उत्तम पदार्थ नयी, जीवने पुष्टि आपनार, शारिरने वृद्धि करनार, मास  
जेवो विजो पदार्थ छेज नहो, तत्रापि तेमो खाग करवार्मा पण वहु  
गुण छे वेदाङ्गा प्रमाणे मास खावामा दोष नयी, कारण यज्ञार्थ पर-  
मेश्वरे पशु जनावरो उत्पन्न कर्मां छे, एम वेदमा लख्यु छे ते सिवाय  
मास खावू ए रक्षसी कर्म छे इति जातिनो धर्म छे, ते कहु छुं के  
तेमणे पोताना बल्द्या जनावरो मार्यां होय ते खावामा तेमणे दोष  
नयी, आगल्ले कायिने पण सर्वे मृग, पक्षीनु मृत ओप्यु हत्तु, सर्व रा-  
ज्यीं शिकार रहे छे, ते करवार्मा तेमने पाप नयी, श्रोदमा यज्ञमा  
जे मास खाय छे, ते देवोनु उछिष्ठ खाय छे प्राण सर्वने प्रीय छे  
माटे प्राण रक्षण करवो ए मोडु दान छे अहिंसा राख्योर्धा सर्व यत  
तप तिर्थनु कळ मळे छे. ।

ए प्रमाणे कथा ११६ भा अध्यायमा छे. ।

व्यासजी कहे छे पापी छे ते यज्ञ, तप, दानयी पवित्र धाय छे,  
राजसूय यज्ञ, अश्वमेध यज्ञ, नरमेध एवा अनेक प्रकारना यज्ञ छे,  
तेमानो घोडानो यज्ञ तँ कर पूर्वे रामचंद्रजीए ए यज्ञ कर्मां हत्ती

ए प्रमाणे अश्वमेध पर्वना ३ जा अध्यायमा ए कथा छे.

बिलिना, खेरना, देवदाहमा अनेक खोटा यस्तमा कर्या हता, इटो सुवर्णनी करो हनि, चयन कुँड सुंदर रच्यो हतो, अने एक देव ने वास्ते पशु पक्षी बढदौ जलचरजनावेरा एकदर ब्रणसे वाध्या हतो तेमा अश्व एटले घोडो बहु शोभिवंत देखातो हतो, सिद्ध अने ब्राह्मण, व्यासजी अने तेमना बहु शिष्य, सर्व कर्म जाणनारा अने नारदजी मोटा तेजस्वी अने तुवहक्कर्षी, सभामा हता.

ए प्रमाणे कथा ८८ मा अध्यायमा छे.

वैशंपायन कहे छे, पछो ब्राह्मणोए सर्व जनावरैनु मास राष्ट्रिने तैयार कर्यु, अने शास्त्र प्रमाणे घोडानुं मास पण राध्यु राजा अने द्रौपदी राजपत्रिने उपसंवेशन संस्कार थयो, सार पछो घोडानु काळजु ब्राह्मणोए राजाना हाथमा आप्यु तेथो राजानु सर्व पाप गयुं, वीजा अंगनु मासनो सोळ याज्ञि के मठीने हवन कर्यो ते सभामा नीकृष्णजी तेमनो भाइ बलदेवजी प्रद्युम्न विगेरे हता सार पछो ब्राह्मणोनो पूजा अने दान कर्या ए प्रमा ने पर्मराजाना घोडानो यज्ञ थयो, तेमा पन, धात्य, रत्न, अने दारु पोवानो पुष्कल आप्यो हतो, अने धीनो कादव थयो हतो, अने अश्वना पर्वत थया हता ने जनावर केटला भायां तेनी संख्या नहाते, ए प्रमाणे यज्ञ रुर्याथी राजानु पाप गयुं, जने प्रजा तृप्त थइ.

ए प्रमाणे कथा ८९ मा अध्यायम, अश्वमेध पर्वमाछे,

निगमशास्त्रना यंय हजार भातना छे तेथी यक्ष प्रभमा युधिष्ठिर राजाए पण एवो जवान दीधो के

श्रुतिर्विभिन्नास्मृतयोपिभिन्ना ॥

नानाकृष्णांमतयोपिभिन्नाः ॥

खारे आपणो तो शो हिसाब, शास्त्र भवलु अने चाले नहीं एवं  
 यथुं खारे रुढी एना साधापर चढ़ो बेठी, खरेखर विचार करता एवं न  
 यथुं जोइए; कारण के रुढीना कर्ता मुख्य लोक होय छे, अने शास्त्र-  
 ना कर्ता ढाह्या होय छे पण घणा वरसयो शास्त्र लखवानुं के सुधा-  
 रवानुं वंथ पड़युं अने घणो काळ विती गयो, खारे शास्त्र काढीने  
 जोइए तो साप्रतकाळने कशुं मळतुं नथी, अनेक भातना शास्त्र उ-  
 त्पन्न थया तेथी ध्रातिनो डुंगर लोकोनी आगढ पञ्चो, तेमाथी सार  
 असार विचार करवानी शक्ति बढाय लोकोने दयापी होय, पर्माध्यक्ष  
 अने हिंदुराजा सर्व मुख्यथया, शक्षिण पद्धति के परिषद रस्तुं नथी ते-  
 थी मन माने तेवा पंथ अने साप्रदाय निकल्या, चंगी, भंगी  
 लोको महंत यह पञ्चा, हावे प्रसंगे धुतारा लोकोने सारी पेरे फाल्युं,  
 आबसुं निरूपयोगी लोक खाय तेनुं नाम पुण्य, अने मेहेनतुं खाय ते  
 पाप, व्रत, तीर्थ, शाति, उद्यापन इत्यादि शातिक पौष्टिकना ग्रंथ मोटा  
 मोटा लखीने ब्राह्मण लोकोए पोतानो धंथो वधायों, तेथी भिल मा-  
 गनारनी संख्या देशमा बहु वधी, पण उद्योग वधयो नहीं, उद्योग अ-  
 ने विद्या तरफ कोईनु लक्ष नथी, अने ते काममा पैशो कोई आपतुं न-  
 थो तोकानी काममा देशनुं द्रव्य खर्चाय छे, माटे हावा काळमा जु-  
 ना लोकोने कशुं सुझतुं नथी, तेमनी अवकल काळना प्रखर प्रकाश  
 थी गुम थई छे, जवा लोकोए आ काममा मन धार्लीने तपास करवे  
 जोइए, अने सार शुं छे, असार शुं तेनो निर्णय करने लोकोए कि

ये रस्ते चालवु भने भीख भोछी थाय अने उश्मोग धे एवं पोजना करवा जोइए एज मनुष्य जन्मनु सार्थक हे परमेश्वर कृपा करीने जे बुद्धि आपशे ते खरी.

कर्मकाढ निरपयोगी हे, आ सिद्धात वेदमा एटले अरण्यक अ-  
ने उपनिषदमा लख्यो हे, यारे व्राक्षण रूम्फाडनी निशानी, शि-  
खा अने सूत्र तोडने कर्म अने उपासना उपरथी हाय उठावेहे,  
यारे आपण एम नथी कहेता के ए बटली गयी; पण तथो अने नारायण  
रूप थयो एम कहाये छीए यारे कर्मनो खाग ए नक्कनुं साधन न-  
थी ए वात सिद्धहे, पण व्यवहारमा यां सुधी रहीये उीए या सु-  
धी एनी जस्ता परमार्थ विषे कर्म उपयोगी नथी ए सिद्धात जे दिव  
सथी सन्यास हिंदु लोकोना आचारमां पेठो ते दिवसथी कर्मनी के-  
ळ निशा थइ आ प्रमाणे परस्पर निशा धयाथी जेटला आधार रूप  
शाख हे ते सर्वनी निशा थइ. निशा वगर एक पण आधार रथ्यो  
नाहै, वेदाति कर्मनी निशा करेहे, वैष्णव शैवनी करेहे, श्रोति वामि  
नी करेहे, ए समजोने लीके शाख मुको दधिं अने रुद्धीने पर्म स-  
मवनीने रुद्धीने वल्ली रह्याहे. शाख संचापि वाद कोईने गमतो नथी;  
कारण तेमाथी काळु निकल्वानुं, भने वधारे फजेतीनुं कारण बनवानुं,  
तेथी कोई पण चर्चा करतुं नयो, ए वात आज थइ एम नथी, पण  
भारतमा पण एम कह्यु हे के.

धर्मस्यतत्वनिहितंगुहायां

महाजनोयैनगतःसपंथाः ॥

रुदो उपर लोकोनी निष्ठा एवं मजबूत बेठी हे के जस कोइ

रुढ़ी विस्तृत करे तो तेनी बुमो पड़े छे, पण ते विशे शाखा शुं छे ए  
विचार करताने फोई पण समर्थ नयी, अने इछा पण राखतुं नयी,  
लोक एम कहे छे के जुना पोथाम, गमे तेम टक्के पण टाल चाले छे  
ते खद्दं एम धायी सुपारो फोइकरो सक्रतुं नयी, मनु एम रुहेछे के

### “पक्वान्नफलवत्याहां”

पण ए वातनो रुढ़ी नयी तेथी ते शाखा रद्द थयुं, तेज प्रमाणे.

### कार्पांशंकटिनिमुक्तंकौशेयकृतभोजनं

एयी रुढ़ी उलटी छे, पोतायाने जेठलु अशुचिल अडके छे ए-  
टलुं यज्ञोपवीतने अडकतुं नयी, सर्व न्रामण, शाखमा समान छता  
जुदा थया छे, अने वर्णमा जाति, अने जातिमा जाति रुढीयी थइছे,  
आ रुढीनुं जोर अने शाखनो नीर्विक्ता समजीने इयोज सरकारे अदा,  
लतने सारु कायदो ठराव्यो तेमा पण शाखयी रुढी वधारे वल्लवान  
ठरावी छे, यारे रुढीना अनुयायी लोक ते सुपाराना रस्ता ऊपर शो  
रीते आवशे ते मोटो विचार छे,

रुढीनुं जोर एवुं छे के वैष्णवी मंदिरमा यज्ञ न करवो एवो मत  
राखे छे, पग, वेदना पारायणयी मंदिर पवित्र थाय छे, तेमा यज्ञनो  
विधि, अश्वमेष, नरमेष, इत्यादि विधि बोल्या छे, ते साभल्लवामा घणुं  
पुण्य जाणे छे, साभल्लवूं, पण करवूं नहीं, यारे न करवानो विधि श-  
वण करवामा पुण्य छे के नहि! आ प्रभनो मोटो विचार उत्पन्न थाय  
छे यजुर्वेद सन्वितामा ६००, जनावर अश्वमेषमा मारवा तेना नाम  
विगतवार लख्या छे, तेज प्रमाणे आक्षील भाषण लख्या छे, ते

होळिमा नीच लोक बोले छे तेथी नठारा, तेज प्रमाणे मनुष्य यशना  
वर्से नरजातिना नाम लख्या छे, ते साभळवासा पुण्य टशे खर्वी सर्व  
शास्त्र रहे छे के देह शुद्धर्य कर्म छे.

## गीता

## यज्ञोदानंतपश्चैवपावनानिमनीपीणां ॥

ए प्रमाणे वेदाति पण बोले छे, खारे उपर लखेला कर्मयो देहनी  
अने चिननी शुद्धि याप खरी, अनुस्तरणीयी मुवो माणसे स्वर्गे जाय,  
ए पण मोटो संशय छे, स्फौर्यो ढेढने कोइ अडकतो नयो, तेनुं का-  
रण एम कहे छे के ढेढ जनावरो खाय छे, खारे मुसलमान विगरे शुद्ध  
शायी याप! ते घरमा आवे पण ढेढ चामडियो न अवि तेनुं कारण  
कदापि ढेढ हराम एटले मुवा जनावरो खाय छे, अने मुसलमान ह-  
लाल एटले मारिने खाय छे, माटे पवित्र थया हशे? आगगाडिमा,  
ढेढ वेसे तो लोक पुकार करे छे, अने यवनादिक वेसे तो कोइ वेल-  
तो नयो, एनुं कारण दरिद्र हशे, के विजु हशे, ते कोण जाणे?  
आरे दरिद्री ते नीच एम केहता न कावे, उच्चर्वणना घणा दरिद्रिछे.

भारतमा भोध्माचार्ये कहेलो सिद्धात साभळी ने धर्मराजाए भी-  
भन्ना निर्णय पछी अश्रमेध कयो अने जणसो जेनावरो मारी ने  
पाप मुक्त थया, हवे भिध्माचार्यना सिद्धातनो अर्थ कोइ विजे प्रकारे  
करशे तारे प्रथक्य पुधिष्ठिर राजा साभळनार हता अने भोध्माचार्य  
बहु बृद्ध अने धर्मज्ञ हता तेथी तेमना मरण समये धर्म व्याख्यान  
साभळवाने वासते भोटी ऋषीनी सभा भराइ हति, तेमा युधिष्ठिर  
राजा मुख्य हेता तेणे अश्रमेध केम कयो? तेना ध्यानमा भोध्माचार्य

यनो सिद्धात नरो वर भाव्यो नहो के केम?

वेद, पुराण, इतिहास, आसां पुस्तको परमेश्वरे निर्माण करेलाछे, भने ए तेनि बाणी छे, ए प्रमाणे द्विदु लोक मानेछे, ए प्रमाणे न माने तेने नास्तिक रुहेछे. तेमा वेक्षण्ड छे, कर्मकांड अने शानकांण्ड, एक बीजाने विहदछे. तारे जानि नास्तिक केशु? जे-शानकांण्डनी दीक्षा एटले संन्यास लेछे ते आस्तिक के नास्तिक कदापि ने जणा आस्तिक राहिये, तो कर्म करनारा दिक्षीत भयि होत्रि पण आस्तिक अने चोटली भने जनौइझो खाग करनारा संन्यास अने परमहंस पण भ्रास्तिक छे, एम जणाय छे, तेमां कर्म कर्ताने पुनर्जन्म अने शानि ने मोक्ष एटलो रारकछे. तारे कर्मकांण्ड मा शु करवा पढवू? ए समजातु नथी, नोच मागं कर्मनो छे, तारे जानी केम न थवू? संसारमा पण जानी थइए तो हरकत नथी.

**कृष्णभोगीशुकत्यागीराजाजनकराघवौ ॥**

**वसिष्ठकर्मकर्त्तचंचैतेसमज्ञानिनः ॥**

ए प्रमाणे बदाय लोक कमै मुक्ति देईने पोत पोताना धंधा करीने जानी थाय तो शि हरकत? पण लोक कहेशे के स्टी नथी माटे संन्यास लेवो जोइए. तारे कृष्ण, राम, जनक, एमणे संन्यास क्यारे लिपो हतो?

हाल रुद्धिनुं जोर एवु छे के धर्मना आचार्य जो बाबा होय तो तेने पगे लागे, तेमनो उपदेश ले, तेथि मोक्षे जाय. एम समजे, पण ज्ञातनो ढंटो होय, अने आचार्य कहे तारे तेनुं वचन कोइ माने नहीं बाबाने गुह कहे पण तेनुं पाणी न पिये एक तरफथी एम स

मजे छे के हु पवित्र ज्ञात जातमां छुं, बावो अने साधु वदलेला छे, तेनुं पाणी पिंव नहीं, अने विजि तरकथो एम समजे छे के बाबो मने मोक्षे मोकलशे, तारे एनो मेळ कशो नर्था, रुढी प्रमाण,

एक ठेकाणे अन्नमां मेध्य आब्युं एम ऋग्वेदमां लख्युछे, पण ते अन्ननी प्रशंसापर वाक्य छे, पण तेयि पशु हिंसा वर्ज यद एम नर्थी, कारण हजारो वेद अने मूत्र प्रमाण छे, भिग्माचार्य अने शंकराचार्य एम ज वोल्या छे, अने यज्ञनी वातो भारतादिकमां आवि छे, युधिष्ठिरे अश्वमेध कर्त्त्यो, तेमां व्यास शिष्य सहवर्तमान हाजर हता अने त्रणसे पशु मार्या, तारे व्यासजीने मेध्य जनावरमां रख्युं नहीं ए वात मालुम पडि नहोति? अने हालना पंडितोने मात्र मालुम पडि, ए पण कहेवू मुष्केल छे. जनावरोमार्थी निकब्बीने मेध्य अनम पेटू, ए वाक्यनो अर्थ एटलोज छे के अनं पण होमवा लायक छे, वैकुंठना भगवाननो अवतार अयोध्योमा थयो तारे वैकुंठ खालि पद्युं एम यतु नर्था, तेज प्रमाणे जनावरमार्थी मेध्य निकब्बीने अन्नमां आब्युं एनो अर्थ वे मेध्य छे. एम न कहिये तो हजारो वेद, अने यज्ञनी आस्थायिका हजारो छे, ते खोटि धशे, अने ते करनारा प्राचीन नहीं, व्यास, युधिष्ठिर, भरतादिक, सर्व मूर्ख ठरशे, कोइ पंडितोनो मत एवो छे के हिंसा करता तेनुं कारण अन मलतुं नहोतु, पण ए वात खोटी छे. ए प्रमाणे भारतना अश्वमेध पर्वना श्लोक दाखल कर्त्त्या छे, ते उपरथी समजावे, लक्षा वधी लोकोने जमाडवा अन मद्यूं अने होमवाने ढाँगर केम न मळि? बिनु अनुस्तरणीनो होम लख्यो छे ते खावाने वाले नर्थी, फँकूत प्रेत संस्कारमां जनावरने बालुं एटलुंज ल-

ખૂં છે તારે અન કમતિનું કારણ બધાં આવ્યું. તારે આ તર્ક પણ મિથ્યા છે. ગુર્જર દેશના લોકો એ હિંસા વર્જ કરેલિછે તેનું કારણ એ-  
મને શાસ્ત્રનો ખરો અર્થ જાણ્યો અને પ્રાચીન બ્યાસાડિક ક્રદિષિ અને  
શંકરાચાર્યાદીક આચાર્યોએ વેદનો અર્થ જાણ્યો નથી એમ નહીં, ગુજ-  
રાતના બ્રાહ્મણો શાસ્ત્ર પુરંધર મુલ્યથી નથી ગુજરાતમા કોઈ શાસ્ત્ર  
ઉપર ગ્રંથ થયેલો નથી, દક્ષણમા હૈમાદ્રી માધ્વાદિક પ્રસિદ્ધ છે, વંગ-  
દેશમા ગદાધર ઇલ્યાદિ પ્રસિદ્ધ છે, પણ ગુજરાતમા કોઈ કાળમા ગ્રંથ  
થયેલો નથી, ફકત જૈનધર્મના બદ્ધથી બ્રાહ્મણ દવાયા માટે યજ્ઞા-  
દિક વિધિ મુક્તી દિખ્યો. તારપછિ વૈષ્ણવ લોકોએ પણ અહિંસા પ્રતિ-  
પાદન કરી તેથી બ્રાહ્મણ તેમને મભતા રહ્યા, એ ખરુ કારણ કબૂલ  
કરવાને સેમને શરમ લાગેછે, તેથો વેદનો અર્થ એમ નથી એમ કહેછે,  
પણ એ વાત જુરિ છે. તેનું પ્રમાણ આ મંથમા પાને પાને મલશે. ગુજ-  
રાતમા દિક્ષિત નામના, પાણીક નામના, બ્રાહ્મણ છે તારે તેમણે પૂર્વે  
યજ્ઞયાગ કર્યા હશે જ, પણ હાલ મુક્તી દિખુ છે, સેનું કારણ ફકત  
જૈનધર્મનો ફૈલાવ છે. વેદનો અર્થ હિંસાપર છે એમ ઘણા પુરાવાથી  
શાયિત છે, પ્રખ્ય વેદના મંત્રો, તે પ્રમાણે પુરોના રાજાદિકે કર્મ ક-  
રેલા તેનો ઇતિહાસ, સાપ્તના કાશી વિગેરે ઠેકાણે યજ કર્મ થાયછે  
એ સર્વે પ્રમાણ ફરત ગુજરાતના હાલના બ્રાહ્મણથી મિથ્યા કેમ થશે?  
૧. એ સંશયની નિવૃત્તિ ખરે રીતે કોઈ કરશે એવી આજા છે, હજારો પ્ર-  
માણથી વિસ્ત્ર બોલવામા શો માલ?

મૂર્તિની ઉપાસના તંત્ર અને પુરાણથી ઉત્પન્ન થિએ. પણ વેદમા કોઈ  
ઠેકાણે નથી, સંખ્યા બ્રહ્મ યથ ઇલ્યાદિક બ્રહ્મ કર્મમા મૂર્તિ નથી મૂર્તિ-

नो मार्ग निकल्यो तेथी लोकोने मोटी छूट माळि, पंथ पंथमा गामो-  
गाम भने वगहामा अनेक मूर्तयो थइ, एके एक करो, खारे बोजाए  
बोजी करो, कोइ ध्यार हाथनी कोइ आठ भने दश हाथनी करो,  
कोइ चार मुखनी, क्रोड, छ मुखनी, कोइ शात रूपनी कोइ वीरनी,  
कोइ लिनी, कोइ जनावरोनी, कोइ भर्पू जनावर भने कोड भर्पू माणस  
एवं, करो, पछो तेनुं भक्षण, सेनो पूजापो, तेनुं वाहन, पात्र, भ्रष्ट  
आभरण शृंगार, तेनुं कुटुंब, अने तेनो विस्तार, अने नोकर, चाकर,  
तेनी राणीयो, अने राखेली खोयो, अने तेनी रुची, अने तेनुं भाकिनुं  
पटल, पद्मिति, न्यास, सुद्रा, यंच, मंच, बीज, पंचाग, इत्यादि उभा  
कर्या, एथी हिंदु लोको महा धूम अने अंपःकारमा पढ्या, एनो नि-  
र्णय काळ करशो ते खरो, आगममा, रजस्वला, भंगण इत्यादिक पण  
पूजा योग्य मूर्ति थइ छे, तेथी तेनो अंत पार रह्यो नयी, धर्ममा ए  
मोटुं तोफान डृपन्न थयुं, एम लागे छे! ए विशे कोइ खुलासो करशे  
तो सार्हे.

एम कहे छे के हृष्ण अवतार छे, अने हृष्णनुं वाक्य गीता इ-  
त्यादिक मानवा बुद्ध अवतार छे, पण बुद्धना बचन मानवा नहीं.

बलभाचार्य, प्रमाण एटले खरा शाख ठराव्याछे ते ए प्रमाण,

वैदा:श्रीकृष्णवाक्यानीव्याससूत्राणिचैवही ॥

समाधिभाष्याव्यासस्यप्रमाणंतच्चतुष्टुयं ॥१॥

उत्तरतो बलवान्

अर्ध.

वेद, गीता, ब्रह्मसूत्र, अने भागवत ए चार एक करता एक व-  
परे मानवा लायक तेज प्रमाणे शिवने ईश्वर कहेछे, पण शिवे र-  
चेला तंत्रो मानवा नहीं. एम केटला एक पंडितोंनो मत छै. तारे आ-  
वद्वायनो सार एवो निकले छे के, गमे ते देव, के आपि शास्त्रनो ल-  
खनार हशे पण तेनो लेख आपणा ध्यानमा उत्तरशे के बरोबर छे  
तारे ते मानवो. अने मनमा नठारो एम लागे तारे मानवा नहीं.  
तारे शास्त्रमा सास कियुं अने नठारू कियुं ए जाणवाने वास्ते आपणुं  
मन प्रमाण छे, शास्त्र प्रमाण नहीं. कारण शास्त्रो सांग अने नठारा  
अनेक भेड़ शेळ थथा, तारे बुद्धियि निश्चय करवानो रहो.

कियुं छे के.

**श्रुतिस्मृतिविरेखेत्युक्तिरेववलीयसी ॥**

**युक्तिहीनेविचारेत्युधर्महानिःप्रजायते ॥२॥**

वेद पण प्रमाण नहीं. तेमा जेटलु आपणे फावतु भवे, तेटलु  
खर, बाकी खोटु. ते खोटु उरावाने वास्ते हम ते यंयनुं वाक्य ले-  
यु. भारतेथी के पुराण वचनथी वेदने रद्द करीये, तेनी चिंता नहीं.  
तारे मन एज मोटुं शास्त्र छे. एम सिदात उरावीये तो अनेक प्रकार  
ना माणसना, अनेक प्रकारना मन छे. तारे किया माणसना मननो  
आधार करीये, ए पण मोटो संशय छे? जे गुह पासे जइये तो ते-  
नि एक उपासना होयज, ते पोतानि उपासना बतावशे, वैष्णव हशे  
तो विष्णुनु बतावशे, कालिकानो उपासक हशे ते, ते बतावशे. वेदा  
ति, हशे तो सर्व कर्म काण्ड वर्यथछे अने एक ब्रह्मानि उपासना क-

खो एम बतावशे, तारे विजा बद्धाय मार्ग खोटा अने मारो मत खरो एम पण कहेवु विचारमा ठीक आवतु नथी, कदापि सर्व देवता छे, ते एक इश्वरनु दपज छे, नाम रूप लोके ए जुदु कब्धु, माटे शि चिताछे बद्धायने परमेश्वर कहिये एम केटालाएक मत भरावेछे, अने कोइयो विश्व चालता, नथी तेमणे एक संकट मोटु पढेछे, ते एज के नंठारा अने सारा शास्त्र जे उपर बताव्याछे ते सर्वने माय करवा पढेछे विवेक जायछे अने सुधारो करवानी बुद्धी क्षीण पायछे. आळसु, अविवेकीने ए मत गमशे पण, बद्धायने ए मत गमवानो नथी, हजारो तकरारो स्वामिनारायण विगरेनी चाले छे ते उपर्यु एम मालम पढेछे, तारे शास्त्र खरु कियु ए सार काढवानि घणी जहुर छे. पण ए काम कोण करशे, ते हजी समजाउनु नथी विद्वान लोके एम ठराव्यु छे को:—

अग्रौक्रियावतादेवेदिविदेवेमनीपिणां ॥

प्रतिमास्वल्पवुद्दिनांसर्वत्रसमदर्शिनां ॥

आगमवाङ्गाए जेम, जंतर मंतर अने दुचका कल्पनाथी उत्पन्न काया तेज प्रमाणे निर्गमवाङ्गाए चारसे पाचसे बत ठराव्या छे, तेज प्रमाणे दान ठराव्या छे त्रितार्क, चतुर्वर्ग चितामणी विगरे ग्रंथमा बद्धाय भेगा कान्या छे प्रस्त्रेकमा एक एक काहाणि लखी छे. तेनी रिति एवी.

“एक ब्राह्मण हतो ते दरिद्र थषो तेथी पीडा पाप्यो अने भटक्तो फरतो हतो तेनी एक दर्हाडे गंगाने काठे एक ऋषिनी मुलाकात थई तेणे कब्धु के आज नोम छे आज जेको किलापक्षी सो-

नानो नरीने पूजा तरंगे, अने ग्रामणने दान देशे, तो तेमुं दरिद्र जशे, ते साभलीने ते प्रमाणे करताज वीजे दहाडे लक्ष्मी प्राप्त थइ. घण्या खोदता इव्य मळ्यू, अने ग्रामण सुखी धण्यो ए व्रतनो कथा रामचंद्रजीए लक्ष्मणजीने कही तेयो जगतमा प्रसिद्ध थइ. एवं ए व्रत लक्ष्मी भापनार छे. "

आवि कथा इजारो लखीछे. अने तेषे आपारने साक्षे मोटा पुह्यो थइ गया, तेमना नाम दाखल कैया छे एटलुज नहीं, पण स्थावर पदार्थना नामयी केटलीएक रुथा लखी छे जेमके परणी अने शेष-नो संगाद, सूर्य अने, अरुणनो संवाद, सागर, अने आकाश, चंद्र अने शनि, अपि अने रात्तेक स्वामी, हिमालय, अने ईंद्र, इत्यादि जड, स्थावर, कन्दिपत, पुह्यना नामयी रुथा लखी छे, तेथा मोटी, मोटी करामतो, अद्भुत चमकार सिद्धि, अनेक तरेहना रस, अने रंग, पण ते बद्धायनो मतलब एज के ग्रामणनुं भास्तु दृधारवू अने, तेमणे जेटली अने एठली मिलकत आपावी ए, प्रमाणे सर्व कथानो, सारछे. ग्रामण पहेला श्राप देता अने वर आपता, तेनी वहु रुथाओ लखी छे कोइना त्रापयी राजा मरी गया, समूद्र सुकायो, यादवकुलनुं स-खानाश गयु, मोटा देव, पर्वत, नदीयो, ए पण विहिने चालता. अ-ने ए बोले, तेम करता ए मतलबनी हजारो, कथाओ लखीछे, संस्कृत पुस्तकनो-मोटो भाग ए मतलब उपरज्ञहे. अने ग्रामणनी लायजे रीमा सर्व पुस्तको एज प्रकारना होयछे तेषे आवा पुस्तको नाहा नपणयो वाच्या होय, तेना मनउपर असर तेज प्रकारनो, लागे संस्कृत भणेलो मोटो पढित होय, तो ए विद्यामा वहु कुशल होयछे भूमोळ, यंत्रज्ञान के इनिहास, वोरे सख्तियाथी ए वहु द्वार होयछे. स-

यशु अने असासंगु, ते विषे एनो विचार नष्ट थायछे. बुदिमा कुतर्क  
 वृद्ध पामेछे, दर्टी दुध, अने शोर्दिना रसनो समृद्धछे, सूर्यनो वंश पृ-  
 थी उपर राज करवा आव्यो, हिमालयनि द्विकि ने गिवजी पण्या,  
 अने सूर्यनि कन्या तापिनिदि, अने यमनो वेटेन यमुना, इत्यादि भ-  
 दुत कल्पना विशे संस्कृत पंडितोना मनमा कर्तो सशय आवतो  
 ज नथी, अने संशय आव्या विना शाखनी वृद्धि के शोभन थतु नथी.  
 माटे हिंदुस्थानमा विद्याने वृद्धि वेष्प पढि, ने राजा अने विधिवा ए  
 वे जणा ब्राह्मणोना मोटा घराक थायाछे. आ हिंदुस्थानमा यमकाढ  
 कमति थयुं, एम समजीने शातिक पौष्टीक कर्मनो वृद्धि करी दान-  
 ना विधि लख्याछे, तेमा प्रखेकमा जुदा जुदा देवता तेमानि पूजा,  
 होम, सृंगार, अने ते प्रमाणे करवायो कल थायछे तेनु वर्णन, ल-  
 ख्युछे. हेमाद्रे य्रंथ ऊपरथी थोडा दान निचे लख्याछे.

उदककुम्भदान	इछा भोजन दान	अश्वदान
गोदान	भूमी दान	ब्रह्माडदान
कन्यादान	घंटा दान	महिषीदान
कदलिदान	घृतदान	रजतदान
कास्य पात्रदान	छवोपानहदान	सुवर्णदान
गजदान	दक्षिणा मूर्तिदान	वृषभदान
कृष्णजीनदान	तिलदान	वस्त्रदान
पुस्तकदान	गोधूमदान	शपादान
गृहदान	तुलादान	यज्ञो पञ्चीतदान
गोपालमूर्तिदान	दशमहादान	श्वेताश्वदान
गोसुहखदान	पात्र पर्वतदान	कपिलादान

प्रपादान	दीपदान	अभ्यत्यदान
मणिदान	वृक्षदान	सर्वस्वदान
लवण पूर्वतदान		रत्नदान

इस्यादि जेटला उपयोगी पदार्थ तेवला दान छे अने ग्राहण शिवाय वीजाने आपवाना नहाँ अने वीजाने जमाडबा नहाँ, ए बावत सख्त नियम लख्या छे, ने एवा हजारो दान लख्या छे, तेज प्रमाणे व्रतार्क उपरथी धोडा निचे व्रतना नाम लख्या छे.

एकादशीव्रत	मुक्ताभरण	गोत्रिरात्र
सोमवारव्रत	रथसप्तमी	प्रदोष
हरितालिका	बुधाष्टमी	नृसिंहजयंति
हस्तगौरी	ज्येष्ठाष्टमी	अनंतचतुर्दशी
परशुराम जयंति	महालक्ष्मी	वैकुण्ठचतुर्दशी
चतुर्थी	दुर्वाष्टमी	वटसाविंशी
ऋषीपञ्चमी	रामनवमी	कोकिलाव्रत
उपागललिता	षष्ठ्यज्ञेव्रत	सोमवति
कपिलाष्टि	लक्षदीपव्रत	शिवामुष्टि
शीतलाव्रत	विजयादशमी	मंगलागौरी
लक्ष्मनमस्कार	दशाहार	सकाति
	लक्ष्मप्रदक्षिणा	तुलसीविवाह

प्रत्येक कथामा एम लखे छे के—

शृणुराजन्प्रकृत्यामीत्रतानांउत्तमंव्रतं ॥

एनु कल वताख्यु ते ए प्रमाणे—

अश्वमेधसहस्राणीवा जपेयशंतानिच ॥

वंध्यानां पुन्नजननं धनधान्यविवर्धनं ॥

प्रयोग व्रत-रूपमा एम लखे छे के

आचार्यचसपल्लीकंवस्थालंकारचंद्रनैः

तोपयित्वाशुचौदांतंगांचदद्यात् प्रथस्त्रिनी ॥

त्राह्णांभोजयेत्पश्चादक्षिणाभिः प्रदापयेत् ॥

दरएक व्रतमा, नवा नवा देव भावि छे, केव्हनुं झाँड कदली व्र-  
तमा पुजाये छे तेनि प्रार्थना करेछे ते निचे प्रमाणे

आगछकदलिदेवीसौभाग्यफलदायिनी ॥

रूपदेही नयदेहीयशोदेही सुनिश्चितं ॥

एन प्रमाणे पिप्लो, बड, इयादिकनी कोइ ब्रह्मा, कोड विष्णु,  
कोइ रुद्र, एवा नामयी प्रार्थना पशु पाक्षे झाँड, पान्य, पापाण, चा-  
मड, इयादिने परमेश्वर ठराव्या डे ए पुराण अने तंत्रनो पर्मवेदधी  
जुदो छे, अर्जुने बाण मारीने तीरनो ढगलो स्वर्ग सुधी कर्यो, ते र-  
स्तेयो इंद्रनो हायि लेइ आव्या ए कथा पण गजगौरी व्रतमा छे जेम  
जेम खियो उपर जुलम वधतो गयो, तेम तेम आवी कथा साभब्रह्ममा  
अने व्रतादिक करवामा वधारे सामिल यइ एमने वास्तेज ए पर्म ठ-  
राव्यो एम पण धणे ठेकागे लख्यु छे. आ हिंदुस्थानमा विष्वा जेवो  
दुर्देवी अमगळ अने कुरुप प्राणी नथी सामि मळे तो दु शुक्ल याय,  
मंगल काममा उभि रहे तो मर्यादा तुटि कृहेवाय, ते वार जमे तो  
अधर्म, वर माडे तो वटलि जाय, सारु लुगेडु पहेतो लुचि कहेवाय,  
एवि वबतरा कोइ प्राणीने न होय

केटलाएँ पुराणमां युगना वर्ष लख्या छे तेनी गिरत  
३८० वर्षना १ दिव्य वर्ष थाई छे.

एवा दिव्य वर्ष,	मनुष्य वर्ष
कृतयुगमा ४८००	१०२८०००
चेतायुगमा ३६००	१२६६०००
द्वापरमा २४००	८६४०००
कलियुगमा १२००	४३२०००

प्रसेक्युगना भारते सार्पिताल अने अंते संध्याकाळ आवे छे  
तेनुं रोटर.

संघि	मुख्यराल	संध्याश
४००	५०००	४००
३००	३०००	३००
२००	२०००	२००
१००	१०००	९००

तारे कलियुगनुं हाल ४९७५ मुं वर्ष चाले छे, अने सो दिव्य  
वर्ष एटले ३६००० छातिस हजार वर्ष सुधि कलिनी संघी चालशे ते  
मा पुर्व युगना धर्म चालवाना एम लख्य छे, ते खरू के खोटु ! भा  
प्रभनो जवाब कोण देशो ?

एज प्रमाणे शाद्व विधिनो विस्तार थयो छे.

नित्यश्राद्व	मासिक	दधिश्राद्व
दर्शश्राद्व	वार्षिक- साव-सरी	घृतश्राद्व
शाष्णवतिश्राद्व	चट	एकादिष्ट
नादिश्राद्व	हिरण्यश्राद्व	पार्वण
तीर्थश्राद्व	आमान्यश्राद्व	संपिडश्राद्व

एक एक श्राद्धमा लाख रूपया खर्च थाय छे. राजा अने श्रीमा  
न् प्रहस्थो राडिराढो हजारो रूपैशा पितृकार्यमा खर्च करे छे एं उँ  
परयी, बारमू, जमवानी रीत, नात जमवानी रीत गुजरातमा पडी  
छे साठोदा नागर सात वलत नातो जमाढे छे, अने औदीच ब्राह्मण  
एक वार नात जमाढे छे, सेमां गरीब माणस होय तो घरबार वेचीने  
कर्ज फरीने नात जमाढे छे. आ देशमा, गामोमा, अने शहेरमा कर-  
ज छे तेमानो घणो भाग एज कारणथी छे. ए कारणथी, भिखारी,  
विद्याहीन, ने निरूपयोगी लोक बहु थया.

**अन्नदानात्परंनास्तिविद्यादानंततःपरं ॥**

**अन्नेनक्षणिकातृसियावज्जीवितुविद्यता ॥**

अन्नदानयी क्षणिक तृसि थाय छे विद्यार्थी आमरण तृसि छे.  
आमानो बीजो भाग जतो रक्ष्यो. एवा अनेक कारणयि आ देशनी प-  
ढति थई छे.

वैदिक पर्ममा ऋण ऋण लख्या छे एक देव ऋण-पितृऋण  
अने ऋषिऋण. आ ऋण, यज्ञार्थी श्राद्धार्थी अने स्वाध्यायार्थी अपायछे.  
यज्ञ एटले होम-मध्य-क्रतु-याग मेष-अव्यर इत्यादि नामर्थी प्रसिद्ध छे.

**यद्यदभौजुहोतिसदेवयज्ञः**

**आश्व. सूत्र अ. ३ कं. १**

शत यज्ञ करे तेनु नाम शत ऋतु कहेवाय छे. एवा राजा पण  
यपा छे, एना पेटामा, सप्तहाविर्धन, सप्त पाक यज्ञ, सप्त सौम यज्ञ, श्रौत  
यज्ञ, कंतर ऋतु इत्यादिरु भेद छे, केटलाएक अन्नना, अने धीना,  
अने केटलाएक पशुना छे. पशु एटले सर्वे प्रकारना जनावर, माणस,  
बब्द, बकरा, घोडा, घोडा इत्यादि, ऋग्वेदनी वे ऋचा निचे लाखी

छे ते आश्वलायन गृह्ण सूत्रनो पहेला अध्यायनो प्रथम काण्डिनामो पा-  
चमा सूत्रमा दाखल कर्या छे.

**विश्वमनाञ्चपि, इंद्रदेवता ॥**

**अगोरुधायगविषेदुक्षायदस्म्यंवचः ॥**

**घृतात्स्वादियोमधुनश्वोचते ॥**

**ऋ० अ० ६० अ० २२ वर्ग २०**

**भारद्वाजञ्चपि. अग्निदेवता ॥**

**आतेअग्नञ्चचाहविदूदातष्टुभरामसी ॥**

**तेतेभवंतूक्षणञ्चपभासोवशाङ्गत ॥**

**ऋग्वेद.**

**अ० ४ अ० ५ वर्ग १८ ऋ० ४७ आश्वलायन**

**नारायणवृत्ति**

**अस्यमंत्रस्यतात्पर्येऽक्षादिमांसेनतवयावति**

**प्रीतिस्तावतितविद्यापिभवतीत्यर्थः ॥**

**अर्थः**

हे इंद्र हे अग्नी तमारी बळद अने गायनो मास उपर प्रीती छे.

ते प्रमाणे हमारी विशा उपर प्रीति थाय. यज्ञने देव यज्ञ कहे छे.

यहस्य लोक, राजा, श्रौति ब्राह्मण पासेथो पैसा अर्पणे यज्ञ करावे छे.

वाममार्गो पासेथो पूजन ऊरावे छे तेथो पोतानुं कल्याण जाणे छे.

श्राद्ध एटले पितृ यज्ञ एमा पण अनुलरणी इत्यादिक मासना वि-  
णो छे. एने पितृ मेष पण कहे छे. आश्वलायन सूत्रनो टीकाकार  
नारायण श्राद्धनो व्याख्या एम करें छे.

पितृनुहिश्ययदियते ब्राह्मणेभ्यःश्रद्धयाततश्राद्धं ॥

आ--४--७

अर्थः—वीडलोना नामधी ब्राह्मणने भक्तियो आपुं, एनुं नाम धार्द, स्वाध्याय एटले वेद पठण करवा, एने ब्रह्म यज्ञ पण कहे छे, आ त्रण यज्ञ छे, वेदनो मुख्य भजन मार्ग एन छे, पौराणिक धर्म चान्यो तेमा यज्ञने ठेकाणे पूजा स्थापन करी, तेमा वे भाग छे, दक्षण अने वाम, दक्षिण मार्गमां वैष्णव मत सौधी साखिकछे, तेमा हिंसा नवी, अने वाममा बल्लिदान, मद्य मासादिक अनेक प्रकारना दुराचरणो छे, साखिक मार्गनो कर्त्ता नुध, कृषभ देव अने तेनी परंपरामा वैष्णवाचार्य, नारद, पराशरादिक तेमनु पूजा कहेवुं एवं के पूजामा हिंसा नहि, पण वैदिक अने श्रौत कर्म करिये तां हिंसा कर्वा पण ते हिंसा छे, एम कहेवुं नहो, वीजा निरीश्वर वादी जैन अने श्रावण छे, वीजो वाममाग एनो चलावनार शिवजी अने तेमना परंपराना नाथादिक धया, ते, भा प्रेमाणे हाळ वैष्णव अने शौक वे मोठा प्रस्थान हिंदुस्थानम् छे.

यज्ञधर्म असलयो सर्व देशमा हतो एम इतिहासधी मालूम पडे छे, हाल जेम हिंदुस्थानमा भक्ति अने ज्ञान धर्मनो फैलाव थयाथी यंज नर्म पाढु हठयु, ते प्रमाणे थंय देशमा पण यज्ञ कर्म बंध पङ्कु छे.

कबोर पंथी, रामस्नेही, मापवगीहि, नदियादनो संत रामबाबा, ए पंथमा मूर्तेनो रपाग छे वेदातिमा वे पक्ष प्राचीनि अने अर्वाचीनि छे, प्राचीनमा सगुण ब्रह्मनी द्वैन भावे उपासना फेरे छे प्रार्थना समाजनु मन एज छे अर्वाचीन मननो स्थापन करनारा शंकुराचार्य ते ब्रह्मने निर्गुण ठंरावोने अदृत माने छे अने हु ब्रह्म छु एम समजे छे.

## उपोद्घात.

---

शोकराम रामनाथ शास्त्री शहेर अમदाबाद एमने निगमप्रकाश  
ग्रंथ तपासवा आप्यो हतो तेमने ते ग्रथनुं सदण लखी आप्यू छे ते  
आगळ छापगामा आप्यू छे

---

शास्त्रि सेवकराम रामनाथ रचित हिंसा प्रधान धर्मे  
खंडननी चोपडी वेदाभिग्राय वोधनी.

---

श्रीगणेशायनमः ॥ ॥ जगतनी सृष्टिने विषे देव मनुष्य असुर  
तथा उच्च नीच वर्ण तथा दारिद्री तथा धनवान् तथा राजा रंकए जुदाँ  
जुदा करवा है जे विषम भाव ने निर्दर्श पूर्ण ते ईश्वरने ते नयी खोरे  
ए देवादि विषम भाव शाथी छे तो सृष्टि वेळाये ईश्वर जे ते जीवनां पूर्व  
कर्म जोइने तेने अनुसरीने विषम सृष्टि करे छे माटे जीवना कर्म एज  
विषम भावनु कारण छे. पाप करे छे ते पापि धाय छे साहं करे छे  
ते सारो धाय छे. जीवने जीवना कर्मनो प्रवाह भनादीनो छे कोइ दि-  
वस जीव कर्म बनातो नोता एम नभी एम जो होय तो न करेलु आवे  
ने करेलु जाप.

॥ उक्तं च शारीरकमीमांसायाम् ॥

वैपम्यनैर्घृण्येन सपेक्षत्वात्तथा हिदर्शयतीति ॥

साधुकारी साधुर्भवतिपापकारी पापो भवतीतिश्रुतिः ॥

न कर्माविभागाच्चेनानादित्वादुपपद्यते चाप्युलभ्यते चेति ॥

अन्यथा इकृताभ्यागम लक्षितविप्रनाश प्रसंगात् ॥

प्रकृतिं पुरुषं चैय विद्वनादीउभावपीतिस्मृतिः

वेदग्रणिहितो धर्मो ह्याधर्मस्तद्विपर्ययः ॥

वेदोनारायणः साक्षात्कवयं भूरितिशुश्रुम ॥२॥

तथाचश्रुतिः ॥ अस्यमहतोभूतस्यनिः

श्वसितमेतद्वद्गवेदोयज्ञवेदोः सामवेदोऽथवैति

ते जीव साक्षिक राजस तामस ए चण प्रकारना छे ते महा प्रलय-  
मा माया मध्ये लीन थाय छे जेम सूर्यना तेजसा रात्री लीन थाय छे.

### उक्तंचस्कांडे

सकार्यमूर्लप्रकृतिः सकालाक्षरतेजसि ॥

प्रकाशोक्स्यरात्रीवतिरोभूतातदा भवत् ॥

तिरोभवं तिजीवेशायत्राव्यक्तेहरीच्छया ॥ १ ॥

अनादि जीव पोत पोताना कर्म सहित मायमा सुतेला छे ते  
अनुशायि जीव रहेवाय छे तेने सृष्टि वेळाये भगवान् जे ते बुद्धि इंद्रि-  
योने मनने प्राण आले छे तथा देह आले छे शा वास्ते विषय भोगने  
अर्थे तथा जाम प्रभृति रसि ऊखाने अर्थे तथा लोकातरमा जवाने अर्थे  
रहेता ते ते लोकना भोगने अर्थे तथा मोक्षने अर्थे.

### ॥ उक्तंचश्रीमद्भागवते ॥

वुद्दीद्रियमनः प्राणाजनानामसृजत्प्रभुः ॥

मात्रार्थचभवार्थचत्त्वात्मनेकत्पनायच ॥ २ ॥

तेमा साक्षिक जीति छे ते सच्छाल्य स्फुरणना संगे रुरी मोथ  
मार्गमा पर्वते छे राजस तामस जीव छे ते पामर छे ते सर्वे जीव रु  
शुं शाश्वत तथा विरि निषेष समजता नयी गले सदा मास भक्षण करे  
छे परदारा सग ररे छे सुरापान ररे छे तेने नियममा लागा साहं

भगवने वेद रूप शास्त्र नायुं छे ते सृष्टिकाळे वैराजना भासमा उत्तार  
रूपे आवो चतुर्मुख ब्रह्माना चार मुखमाथी भृथरामक मन्त्र गण रूपे  
उत्तन धाय छे

### उत्तंचश्रीमद्भागवते

सएपजीवोविवरप्रसूतिः प्राणेनघोपेणगुहांप्रविष्टः

मनोमयंसूक्ष्ममुघेत्पर्हंपंमात्रास्वरोवर्णइति स्थविष्टः

तथाचश्रुतिः

चत्वारिंवाक्यरिमितापदानितानिविदुर्ब्रह्मणायेमनीषिणः ॥

गुहात्रीणिनिहितानेंगयंतितुरीयंवाचोमनुष्यावदंति ॥

श्रीमद्भागवतेच तृ. अ० १२

ऋग्यजुः सामाधर्वाख्यान्वेदान्पूर्वादिभिर्मुखैः ॥

शास्त्रमिड्यांस्तुतिस्तोमं प्रायश्चित्तं व्यधात् क्रमात् ॥१॥

आयुर्वेदं धनुर्वेदं गांधर्वेदमात्मनः ॥

स्थापत्यं चासृद्वेदं क्रमात्पूर्वादिभिर्मुखैः ॥ २ ॥

इति हासपुराणानां पंचमं वेदमीश्वरः ॥

सर्वेभ्य एव वत् क्रेभ्यः स सृजे सर्वदर्शनः ॥ ३ ॥

वेदमा ने पुराणमा कशी भेद नथी वेदमा अस्पष्ट वार्ता छे ने  
पुराणमा स्पष्ट वार्ता छे एटलो भेद छे पुराण ने वेदनु उपर्हकपण  
हुहे छ,

## उक्तं च मार्श्ये

यन्नदृष्टं हिवेदेषु तद्पृस्मृतिभिः किल ॥

उभाभ्यां यन्नदृष्टं हितत्पुराणेषु गीयते ॥ १ ॥

इति हा स पुराणाभ्यां वेदं समुपवृहयेत् ॥ . .

विभेत्यल्य श्रुतादेदो मामयं चालयेदिति ॥ २ ॥

मामयं नि हनि प्यतीति क्वचित्पाठः ॥

ब्रह्माना मुखमाथी वेद उत्पन्न धया ते वेद मरीच्यादि पोताना पु-  
न्र ब्रह्माये भणाव्या पण प्रथम युगमा एक ब्राह्मणनीज सृष्टि हति ते सर्वे  
सत्त्वाणी पापे रहित हता ने ध्यान निष्ठ हता वास्ते उपासना तथा  
ज्ञान ए वे वेदना भाग प्रवर्त्या पण कर्म मार्ग न प्रवर्त्यो पछे सत्ययुग  
उत्तर्यो ने त्रेतायुग वेठो खारे कर्म मार्ग प्रवर्त्यो खार पहले बहुधा प्र-  
कारे केवल उंसारात्मज वेद हतो.

## उक्तं च श्रीमद्भागवते

नवमस्कं धेसप्तदशोऽध्याये ॥

वेदः प्रणव एवाग्रेधमो हृष्पृष्पृष्टृत् ॥

उपासते तपो निष्ठाधर्ममां मुक्त्वा किलिवपाः ॥ १ ॥

त्रेतायुगे माहाभाग प्राणान्मेहदयात्रयी ॥

विद्या प्रादुरभूत्तस्या अहमासंन्वित्वन्मखः ॥ २ ॥

त्रेतायां संप्रवृत्तायां मनसि त्रिव्यवर्त्तत ॥

स्थालीस्थानं गतोऽश्वत्थं शमीगर्भविलक्ष्य सः ॥ ३ ॥

तेनद्वे अरणी कृत्वा उर्वशीलोक काम्यया ॥

उर्वशी मन्त्रतो ध्यायन्नधरा रणि मुक्तराम् ॥ ४ ॥

आत्मानं यन्त्रयोर्मध्ये यन्त्रजननं प्रभुः ॥

तस्यानि मैथना बजातो जातवेदो विभावसुः ॥ ५ ॥

त्रयास विद्यया राज्ञः पुत्रत्वे कल्पिता स्त्रिवृत् ॥

तेनायजत्यज्ञेशं भगवंतमधोक्षजम् ॥ ६ ॥

उर्वशीलोक मन्त्रिछन्सर्वलोक मयं हरिम्  
एक एव पुरुषो वेदः प्रणवः सर्ववाङ् मयः ॥

देवो नारायणो नान्पए कोश्चिर्वर्ण एव च ॥ ७ ॥

पुरुषवस एवासीन्नयन्त्रिता मुखवेनृप ॥

अग्निना प्रजया राजालोकं गांधर्वमोयिवान् ॥ ८ ॥

ते यज्ञ पण भगवाने व्रण प्रकारना काया छे एक तो साक्षात् प-  
शुपे करिने वीजो पशु ते पिटनो करवो पण साक्षात् पशु नाहि तेने प्र-  
कृति ने विकृति रूप केहे छे ते शास्त्रमा प्रसिद्ध छे ने ए बे थकी  
चिजो केवल अहिंसक यज्ञ व्रण वर्षभी ढागेरे करिने करवानों कहो  
छे पण

यागात्स्वर्गो भवति ॥ अक्षयं हवै सुकृतं चातुर्मास्या  
जिनोऽभवति

इत्यादि जे वेदमा कछे श्रुति लखिछे तेने जोइने हिंसामय यज्ञमा सकारिक राजस तामस जन घणा आसक थाप छे पण घटवत् श्वर्गादि विनश्यति इत्यादि ज्ञानमार्गनी श्रुतियोंनो विचार नथी कर्ता ने हिंसामय यज्ञ करेछो ते वारंवार जन्म मरणने पामे छो के खा एमनुं कल्पाण धतुं नथी,

॥ तथाचश्रुतिः ॥

स्फवाद्येतेअद्वद्यज्ञस्पाअष्टादशोक्तमवरंयेपुकर्मएतच्छ्रे  
योयेऽभिनंदंतिमूढास्तेजरामृत्युपुनरेवापियंति ॥

अर्थः—आ यज्ञ स्पी प्राव जे नाव छे ते अद्वद्य केता द्वद्य नथी ने अष्टादश पुराहित यजमानादिक जे तेमणे कञ्चुं एवुं जे कर्म हिंसा स्पी ते नीच छे ते हिंसामय यज्ञना करनारा पुरुष वारंवार जन्म मरणने पामे छे एकनो एक वेद बे वार्ताओ केम कहै छे पामर जीवने विषयी ऊरवा सार्ह यज्ञ कह्या हता पाछा ए जीव विषयमा आसक थया तेने छोडापवा बाले पोते ने पोते एनां निषेधनां वचन वक्ष्यां छे खा दृष्टात छे जेम पिता याङ्कने खंडलडुकादिये करिने लोभावता सत्ता औपप पाप छे एटले रुरी रुप खंड लाडुनुं लाभनुं प्रयोजन नथी यारे शु प्रयोजन छे शरीरे आरोग्य याय ए प्रयोजन छे एम तेह पण फूपालुं छे ते रुमने मुकावा सार्ह कर्म ऊरवे छे,

उक्तचश्रीमद्वागवते एका. तृ. ध्याये

परोक्षवादोवेदोयंवालानामनुशासनम् ॥

कर्ममोक्षायकर्माणिविधत्तेत्यगदंयथा ॥ २ ॥

अन्यच्चश्रीधरीटीकाया -

पिवनिंवंप्रदास्यामिखलुतेखंडलदुकान् ॥

पित्रैवमुक्तः पिवतिनफलंतावदेवतु ॥ १ ॥

उक्तंचभागवते

नाचरेद्यस्तुवदेऽक्तंस्वययज्ञो जितेद्रियः ॥

विकर्मणाह्यधर्मेणमृत्योमृत्युमुपैतिसः ॥ २ ॥

वेदोक्तमेवकुर्वाणोनिःसंगोऽपितमीश्वरे ॥

नैषकम्यालभतोसिद्धिरोचनार्थाफलश्रुतिः ॥ २ ॥

अर्थः—जो कर्मनो मोक्ष ए पुरुपार्थ छे यारे वेद प्रथमज कर्मनो  
याग वयम करावतो नयी आ कहे छे अजितेद्रि छे वास्ते अज्ञानि छे  
पोते जो वेदोक्त कर्म नाचरे तो कर्माना चरण लक्षण जे अर्धम तेणे  
रुरि मृत्यु थकी अनंतर मृत्युनेज पासे छे,

तथाचश्रुतिः

मृत्वापुनर्मृत्युमपद्यतेर्द्यमानःस्वकर्मभिः ॥

हिसामय यज्ञनी निंदा कहि छे श्रुतिमा

कश्चिद्गवाअस्माल्लोकात्प्रेत्यआत्मानंवेदअयमहयस्मीति

कश्चिद्गवंलोकंनप्रतिजानातिअग्निमुग्धोहैवधूमतांतङ्गति

अर्थ —कोइक पोतानो लोक जे ब्रह्म धाम आत्म तत्त्ववा तेमे  
जाणतो नयी जे पुराय जे अवातर कलमा परम कलनो माननाशे ते

आये साध्य कर्ममा आ सकिये करि लोपाइ गयो छे विवेक जेनो तेने  
अंते धूम मार्ग छे.

उक्तंचश्रीमद्भागवतैकादशैएकविंशतिमाध्यायैच  
फलश्रुतिरियनृणांनश्रेयोरोचनंपरम् ॥  
श्रेयोविवक्षयाप्रोक्तंयथामैषड्यरोचनम् ॥ १ ॥  
उत्यत्यैवहिकामेषुप्राणेषुस्वजनेषुच ॥  
आसस्तमनसोमर्त्याआत्मनोऽनर्थहेतुपु ॥ २ ॥  
नतानविदुपःस्वार्थभास्यतोवृजिनाध्वनि ॥  
कथंयुद्यात्युनस्तेषुतांस्तमोविज्ञातोवुधः ॥ ३ ॥  
एवंव्यवसितंकेचिदविज्ञायकुबुद्धयः  
फलश्रुतिंकुसुमितांनवेदज्ञावदंतिहि ॥ ४ ॥  
कामिनःकृपणलुब्धाःपुष्पेषुफलबुद्धयः ॥  
अग्निमुग्धाधूमतांताःस्वलोकंनविदंतिते ॥ ५ ॥  
नतुमामंगजानाननितिहृदिस्थंयद्यतः ॥  
उक्थशश्वाद्यसुतृपोयथानीहारचक्षुपः ॥ ६ ॥  
तेमेमतमविज्ञायपरोक्षांविषयात्मकाः ॥  
हिंसायांयदिरागःस्याद्यज्ञेवनचोदना ॥ ७ ॥  
हिंसाविहाराह्यालब्धैःपशुभिःस्वसुखेत्त्या ॥

यजंतेदेवतायज्ञैः पितृभूतपतीन्खलाः ॥ ८ ॥  
 स्वप्रोपममयुलोकमसंतंश्रवणप्रियम् ॥  
 आशिषोहृदिसंकल्पत्यजंत्यर्थान्यथावाणिक् ॥ ९ ॥  
 रजःसत्वतमोनिष्टरजःसत्वतमोजुपः ॥  
 उपासतेइंद्रमुख्यान्देवांदीन्नतयैवमाम् ॥ १० ॥  
 इष्टे हृदेवतायज्ञैर्गत्वारंस्यामहेदिवि ॥  
 तस्यांतइहभूयास्ममहाशालामहाकुलाः ॥ ११ ॥  
 एवंयुष्मितयावाचाव्याक्षिसमनसांनृणाम् ॥  
 मानिनांचातिस्तव्यानांमद्वात्तोपिनरोचते ॥ १२ ॥  
 वैदान्नेह्यात्मविपयान्निकांडविपयाइमे ॥  
 पंरोक्षवादान्नरूपयः परोक्षंममचप्रियम् ॥ १३ ॥  
 किंविधत्तेकिमाचषेकिमनूद्यविकल्पयेत् ॥  
 इत्यस्याहृदयंलोकेनान्योगदेवकश्चन ॥ १४ ॥  
 मांविधत्तेऽभिधत्तेमांविकल्पापोद्यतेह्यहम् ॥  
 एतावान्सर्ववैदार्थःशब्दआस्थायमांभिदा ॥ १५ ॥

एकादशमा छत्रोशमा अध्यायमा सर्व व्रतमा आहेसाव्रत छे ते  
 पोतानुं स्वस्प कस्युं छे.  
 यज्ञानांजपयज्ञोहंन्रतानामविहिंसनम् ॥

एकादशना १७ अध्यायमा अहिंसा ए सर्वे वर्णनो धर्म कहो छे  
वाले हिंसामय यज्ञ करवा अवश्य एवुं वेदनुं तात्पर्य नयी,

अहिंसासत्यमस्तेयमकामक्रोधलोभ्यता ॥

भूतप्रियाहितेहाचधर्मोयंसार्ववार्णिकः ॥ २ ॥

श्री भारतना मोक्ष धर्ममा एकसोनेचोसेठमा अध्यायमा कल्पाणना  
मारगमा चात्या जे वेणव तेने हिंसामय यज्ञ न करवा एम कह्युँछे, ते  
अध्यायना आदि नीलकंठे अवतारणिका लखि छे.

यदाभगवतोऽत्यर्थमित्यादिरध्यायो

वैष्णवानांहिंसयज्ञनिपेधार्थः ॥

युधिष्ठिरउवाच.

यदाभगवतोत्यर्थमासीद्राजामहान्वसुः ॥

किमर्थसपरिभ्रष्टोविवेशविवरंभुवः ॥ २ ॥

ऋष्ट-अन्नापुदाहरंतीममितिहासंपुरातनम् ॥

ऋषीणांचैवसंवादंनिदशानांचभारत ॥ २ ॥

अजेनयष्टव्यमितिग्राहुदेवादिजोत्तमान् ॥

सच्छागोपजोज्ञेयोनान्यःपशुरितेस्थितिः ॥ ३ ।

ऋष्ट-वीजैर्यज्ञेपुयष्टव्यमितिवैदिकीथुतिः ॥

अजसंज्ञनिबीजानिष्ठाग्नोहंतुमहंथ ॥ ४ ॥

नैपर्धमःसतांदेवायत्रवधेत्वैपशुः ॥

इदं रुतयुगं श्रेष्ठं कर्थं वध्ये तवैपश्चुः ॥ ५ ॥  
 भीष्मउ-तेपां संवदता मैव ऋषीणां विवृधैः सह ॥  
 मार्गागतो नृप श्रेष्ठस्तं देशं प्राप्तवान्वसुः ॥ ६ ॥  
 अंतरिक्षचरः श्रीमान् समयवलवाहनः ॥  
 तं द पृथि सहस्रायां तं वसुं तेलं तरिक्षगम् ॥ ७ ॥  
 ऊचुदीर्जातयो देवाने पञ्चेस्यति संशयम् ॥  
 यज्वादानपतिः श्रेष्ठः सर्वभूतहितमियः ॥ ८ ॥  
 कर्थं स्विदन्यथा व्रूयादेपवाक्यं महान्वसुः ॥  
 एवं ते संविदं रुत्वा विवृधा ऋषयस्तथा ॥ ९ ॥  
 अपृच्छन्सहस्राभ्येत्यवसुं राजानमंतिकात् ॥  
 भोराजन्केन यष्टव्यमजेनाहो स्विदोषधैः ॥ १० ॥  
 एतं नः संशयं छिंधि प्रमाणनो भवान्मतः ॥  
 सत्तान्कृतां जलिभूत्वापरिप्रच्छैव सुः ॥ ११ ॥  
 कस्य चैको मतः कामो व्रूत सत्पं द्विजो त्तमाः ॥  
 ऋषयउ-धान्यैर्यष्टव्यमित्येव पक्षोऽस्माकं नराधिप ॥  
 देवानां तु पश्चुः पक्षो मतो राजन्वदस्वनः ॥ १२ ॥  
 भीष्मउ-देवानां तु मतं ज्ञात्वा वसुना पक्षसंश्रयात् ॥  
 छागेन जेन यष्टव्यमैव मुक्तं वचस्तदा ॥ १३ ॥

कुपितास्तेततः सर्वे मुनयः सूर्यवर्चसः ॥

ऊचुर्वसुं विमानस्थं देवपक्षार्थवादिनम् ॥ २४ ॥

सुरपक्षो गृहीतस्येयस्मात्तस्माद्विवः पत ॥

अद्यप्रभृतितेराजन्नाकाशे विहतागतिः ॥ २५ ॥

अस्मच्छापाभिघातेन महीभित्वा प्रवैक्ष्यसि ॥

ततस्तस्मिन्मुहूर्ते उथराजोपारिचरस्तदा ॥ २६ ॥

अधोवै संबभूवाशुभूमे विवरतो नृप ॥

स्मृतिस्त्वेवं न विजहौ तदानारायणाङ्गया ॥ २७ ॥

इति श्री भारते मोक्ष धर्मे शतोपारिचतुः पष्टितमेऽध्याये ।

एम वार्ता वायु पुराणमा पण छे, स्कंद पुराणमा पण छे खार्थी जोइ लेजो घणा विस्तारे छे.

यावेदविहिताहिंसानसाहिंसोति कीर्त्यते ॥

ए स्मृति वाक्यमा कल्युं जे वेदमा राहि एतो जे हिंसा ते हिंसा न कहेवाय, यज्ञ विना अमयी हिंसा करवानुं कोइ ठेकाणे कल्युं नयी जे हिंसा निषेध करे एतो जे ठेकाणे हिंसाना निषेध छे ते वदे विहित हिंसानाज निषेध छे.

ऐतरायाणनीद्वितीयं चिकामां पुरुषं वैदेवाः पशुमालभंत

ए पुरुष मेपना निषेध श्रीमद्भागवतना पंचम स्कंपना छेला अ-  
च्यायमा निषेध द्यन्प्यम् यातना ॥ २८ ॥

तथा हियो विहवै पुरुषाः पुरुषमेधेन यजंते या श्वस्त्रियो नृप  
 शून्यवादं तितांश्वता श्वते पश्च वद्वहनि हताय मसदने पात  
 यंतो रक्षो गणाः सौनि काइव स्वधिति ना विदार्यासृक्षपि  
 वंति नृत्यंति गायंति च हृष्य माणाय येह पुरुषादाः ॥५॥

सोमक राजा हता तेने एक पुत्र जंतु नमि हतो तेने एक दिन  
 कीड़िये चटको भयो खारे पुत्रे बकोर पाढ्यो खारे राजाये मुख हलाव्यु  
 ने कहुँ जे एक पुत्र ते पुत्रमा नहि तारे पासे उभा एवा जे पुरोहित  
 तेणे कहुँ जे ए पुत्रने यज्ञ करि होमो तो घणा पुत्र थशे खारे राजाये  
 कहुँ जे होमीशुँ यज्ञ करो पछे ए गोर हता तेणे यज्ञ करिने पुत्रने  
 होमाव्यो पछे राजाने पुत्र एक सोने एक थया पछे काले करि गोर मरि  
 गया खारे पुरुष मेध कैरचो तेना पापे करिने गोरने नरकमा नाख्या  
 पछे राजा मरि गया खारे राजा पण नरकमा गया ला गोरने देखिने  
 यम राजाने राजाये कहुँ जे आ गोरने नरकमा शा सार्ह नाख्या खारे  
 यमे कहुँ जे तमाने पुरुष मेध कराव्यो तेना पापे करिने तमारे नरक  
 भोगबो छे ने गोरने पण भोगवत्वानो छे ए वार्ता वन पर्वमा सविल्लर  
 ते जोवि ए रीते वेदोक्त हिंसानुँ फळ पण नरक प्राप्ति छे कलिमा तो  
 सर्वथा हिंसामय यज्ञनो निषेधज लख्यो छे जो ए हिंसामय यज्ञनो सख  
 पक्ष होय तो निषेध शु करवा करे काल निर्णय दीपिकामा निषेध ल-  
 ख्यो छे

वर्ड्यं गो न रवा जि मेध करणं मद्यं विवाहः

पुनर्वृद्धाया श्वकलौ कमं डलुधृति व्रिद्य व्रतं नैष्टिकम् ॥

ज्येष्ठांशोदुरण्वरातिथिसुसव्यर्थपश्चोहंसनंभ्रातु.  
स्त्रीपुनियोगतःसुतजनिस्तदूदूनस्थाश्रमः ॥ १ ॥

## आदित्यपुराणे च.

नरांश्वमेधौमद्यंचकलौवर्ज्यद्विजातिभिः ॥

उढायाः पुनरुद्धाहो ज्येष्ठांशोगोवधस्तथा ॥ २ ॥

शास्त्रमा कर्म वे प्रकारना कहा छे प्रवृत्त कर्म तथा निवृत्त कर्म तेमा अभिहोत्रादि हिंस कर्म छे ते अशात्तिनुं करनार छे वारंवार ज-मरणने आपे छे निवृत्त कर्म मोक्ष आपे छे.

## उक्तं च श्रीमद्भागवते सप्तमस्कं धे.

प्रवृत्तं च निवृत्तं च द्विविधं कर्म वै दिक्म् ॥

आवत्तेत प्रवृत्तेन निवृत्तेनाभ्रुतेऽमृतम् ॥ २ ॥

हिंसं द्रव्यमयं काम्पमभिहोत्राद्यशांतिदम् ॥

दर्शश्वपूर्णमासश्वचातुर्मास्यं पशुः सुतः ॥ २ ॥ सोमयागः

एतदिष्टं प्रवृत्ताख्यं हुतं प्रहुतमेव च ॥

पूर्त्तिसुरालयारामकूपाजीव्यादिलक्षणम् ॥ ३ ॥

द्रव्यसूक्ष्माविषकश्वधूमोरात्रिरयक्षयः ॥

अथनंदक्षिणं सोमो दर्शर्तुं पधिवीरुधः ॥ ४ ॥

अन्नं रेत इति क्षेशपितृयानं पुनर्भवः ॥

एकैकश्येनानुपूर्वमूल्वाभूत्वेहजायते ॥ ५ ॥ १४  
 निषेकादिश्मगानांतैःसंस्कारैःसंस्कृतोद्विजः ॥ ६ ॥  
 इंद्रियेषुक्रियायज्ञान्नानंदीपेषुजुदति ॥ ७ ॥ इस्यादि.

प्राचीनवर्णित राजाये यज्ञेकारि बधु वसुधात लेंदर्भे करि आस-  
 त कयुं ए सिये कर्मने विषे आसक्त छे मन जेमुं एवा प्राचीन वर्णित  
 जोइ कृपालु नारदजी वोध करुता हवा हे राजत् क्रीया कर्म करि दु  
 खहानि सुखभी प्राप्ति छे राजाये कहुं महाराज मने काश समजण  
 नथी पठे नारदजीये प्रब्लक्ष मार्या पशुने देखाउया जे कुठार लइने  
 राजाने मारवा उभा छे ते राजा जोइ कंप्या ने हँसीपर्यं यंत्र छोडीने  
 निष्काम अहिसक कर्म करि परमात्माने पाप्या

उक्तंचश्रीमद्भागवतेचतुर्थस्कंधे.

वर्णितसुमहाभागोहविर्द्धानिःप्रजापतिः ॥ १ ॥ १  
 क्रियाकांडेषुनिष्णातोयोगेषुचकुरुद्वह ॥ २ ॥  
 यस्पेदंदेवयजनमनुयज्ञवितन्वतः ॥ ३ ॥  
 प्राचीनायैःकुशैरासीदास्तृतंवसुधातलम् ॥ ४ ॥  
 प्राचीनवर्णिपराजनकर्मस्वासक्तमानसम् ॥  
 नारदोऽध्योत्मतत्वज्ञः कृपालुःप्रत्येवोधयन् ॥ ५ ॥  
 श्रेयस्त्वंकर्तमद्राजन्कर्मणात्मनईहसे ॥ ६ ॥  
 दुःखहानिःसुखावासिःश्रेयस्तन्नेहचेष्यते ॥ ७ ॥

राजोवाच-नज्ञानमिमहावाहोपरंकर्मापविदुधीः ॥

ब्रूहिमेविमलंज्ञानयेनमुच्येयकर्मभिः ॥ ५६ ॥

गृहेषुकूटधमेषुपुत्रदारधनार्थधीः ॥ ५७ ॥

नपरंविंदतेमूढोभ्राम्यन्संसारवर्त्मसुः ॥ ५८ ॥

श्रीनारदंडवाच् ॥

भीमोःग्रजापतेराजन्यशून्यश्यत्वयाध्वरे ॥

संज्ञापितान् जीवसंघात्रिवृणेनसहस्रशः ॥ ५९ ॥

एतेत्वांसंग्रतीक्ष्मतेस्मरन्तोवैशसंतवां ॥

संपरेतमयःकूटैर्द्धिंठुत्पुत्रियतमन्यवः ॥ ६० ॥

युधिष्ठिरवाक्यंप्रथमस्कंधे ॥

यथापकेनपंकार्भःसुरयोवासुराण्टम् ॥ ६१ ॥

भूतहसांतर्थैवैकानंयज्ञैमाष्टुमहाति ॥ ६२ ॥

वेदना वृण काँडछे एकेतो कर्मकाँड बोजी उंपासना काँड जी-  
जो ज्ञानकाँड धकी श्रीमद्भागवतमे श्रेष्ठ पृणु कर्त्तु श्रेष्ठ श्रीर्घृस्वामीपे  
पर्मःप्रोज्ज्ञत ए लोकनी दोकामा ॥

इदानीं श्रोतृ प्रवत्तनाय श्रीमद्भागवतस्पकाँड-

त्रयविषयेभ्यः सर्वशास्त्रेभ्य श्रेष्ठ उंदर्शयति धर्मैदति ।

धर्मःप्रोज्ज्ञतकैतवो उत्परमोनिर्मत्सराणा ॥

सतांवेद्यं वास्तव मत्र वस्तु शिवदंतीपत्रयोन्मूलनम् ॥१॥  
 श्रीमद्भागवते महायुर्निरुतेकिंवापरैरीश्वरः ॥२॥  
 सद्योहद्यवस्थ्यते ऽत्र लक्षणिभिः श्रुत्वा ब्रह्मस्तत्क्षणात् ॥३॥  
 निगमकल्पतरोगीलितफलं शुक्रमुखादमृतद्रवसंयुतम् ॥४॥  
 पिवत भागवतं रसमालयं मुहुर होरसि कामुकिभावुकाः ॥५॥  
 श्रीधरस्वामिनः सर्वटीकाकाराग्रगण्यविद्विद्वारि  
 ष्टाव्याचख्युः ॥६॥ विभिर्यात्प्रसारमिति श्रीभगवत्  
 अत्र श्रीमति सुन्दरे भागवते प्ररमोधमौ निरुप्यते ॥७॥  
 ॥८॥ परमत्वे हेतुः ॥९॥ परमत्वे हेतुः ॥१०॥  
 प्रकर्षेणोऽज्ञातं कौतवं फलाभिसंधिलक्षणं कपटं यस्मिन्सः ॥  
 प्रशब्देन मोक्षाभिसंधिरपि निरस्तः ॥११॥ विभिर्यात्प्रसार  
 कौवलमीश्वराराधनलक्षणोधमौ निरुप्यत इति ॥१२॥  
 अधिकारितोऽपि धर्मस्य परमत्वे माहनिर्मत्सराणां  
 परोक्तर्पा सहनं भत्सरस्तद्रहितानां संतां भूतानुकं पिनाम्  
 एवं कर्मकांडविषये भ्यः शास्त्रेभ्यः श्रैष्ठयमुक्तम् ॥१३॥  
 ज्ञानकांडविषये भ्योऽपि श्रैष्ठयमाह वेद्यमिति  
 वास्तवं परमार्थभूतं वस्तु वेद्यम् ॥१४॥  
 न तु वै शोपिकाणां भिवद्रव्यगुणादिस्तप्तम् ॥१५॥

शिवदंपरमसुखदम्किंच ॥  
आध्यात्मिकादितापैत्रयोन्मूलनंच ॥  
अनेनज्ञानकांडविषयेभ्यःश्रैषुचंद्रितम् ॥  
कर्त्तृतोपि श्रैषुयमाह  
। महामुनिः श्रीनारायणस्तेन प्रथमं संझेष्टः कृते ॥  
देवताकांडगतं श्रैषुयमाह परैः शास्त्रैस्तदुक्तसाधनैर्वा ॥  
ईश्वरो ह दिकिवासद्य एवावस्थ्यते स्थिरीक्रियते ॥  
वाशब्दः कटाक्षोकिं तु विलं वै नक्षयं चिद्रेव ॥  
अन्तु शुश्रूपुभिः श्रोतुमिन्छुद्गिरेवतत्क्षाणादेवावस्थ्यते ॥  
। इदमेवतार्हकिमिति सर्वेन भूष्णवं तितन्नाह कृतिभिरिति ॥  
श्रवणेऽनुपुण्यैर्विनानोत्ययत इत्यर्थः ॥  
तस्मादत्रकांडत्रयार्थस्यापियथावत्प्रतियादनादिदमेव  
सर्वशास्त्रोस्यः श्रैषुमतो नित्यमेतदेव श्रोतर्व्यमिति भावः ॥  
इदानीं तु न केवलं सर्वशास्त्रोभ्यः श्रैषुत्वादस्य श्रवणं  
विधीयते अपितु सर्वशास्त्रफलस्पृष्टिमिदं मतः पुरमाद-  
रेण सेव्यमित्याहनिगमोति ॥ १० ॥

ऋग्यजुः सामाधर्वाख्यवेदाश्वत्वारउद्गताः ॥ १ ॥  
 इतिहासपुराणानिपंचमोवेदउच्यते ॥ २ ॥ १ ॥  
 तत्रग्वेदधरः पैलः सामगोजैमिनिः कविः ॥ २ ॥ २ ॥  
 वैशांपायनएवकोनिष्ठातोयजुषामुत ॥ २ ॥ ३ ॥  
 अथर्वागिरसामासीत्सुमंतुर्दासुणोमुनिः ॥ २ ॥ ४ ॥  
 इतिहासपुराणानपितामेरोमहर्षणः ॥ ४ ॥ ५ ॥  
 तएतऋषयोवेदस्वंस्वंव्यस्पन्ननेकधा ॥ ५ ॥ ६ ॥  
 शिष्यैः प्रशिष्यैस्तच्छिष्यैवेदास्तेशाखिनोभवन् ॥ ५ ॥  
 तएववेदादुर्मधैर्धार्यतेपुरुषैर्यथा ॥ ५ ॥ ७ ॥  
 एवंचकारभगवान्व्यासः कृपणवत्सलः ॥ ६ ॥  
 स्त्रीशूद्राद्विजवंधूनांत्रयीनशुतिगोचरः ॥ ६ ॥ ८ ॥  
 कर्मश्रेयसिमूर्ठानांश्रेयएवंभवेदिहः ॥ ७ ॥ ९ ॥  
 इतिभारतीमाख्यानंकृपयामुनिनकृतम् ॥ ७ ॥ १ ॥  
 एवंप्रवृत्तस्पसदाभूतानांश्रेयसिद्विजाः ॥ ८ ॥  
 भारतव्यपदेशोनंद्याम्नायार्थश्वेदर्शितः ॥ ८ ॥ २ ॥ १ ॥  
 हृष्यतेयत्रधर्मादिस्त्रीशूद्रादिभिर्यथुत ॥ ९ ॥ ९ ॥ ३ ॥  
 मुमुक्षवोघोरस्पान्हिल्वाभूतपर्तीनिये ॥ ९ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ३ ॥  
 नारायणकलाः शांताभजंतिद्यनसूर्यवः ॥ १० ॥ ५ ॥

रजस्तमः प्रलतयः समशीलान्मजंति वै ॥ ११ ॥  
 पितृभूतप्रजेशादीन् थ्रियै श्वर्यग्रजेष्वं वः ॥ १२ ॥  
 वा सुदेवपरविदावी सुदेवपर्वर्मखाः ॥ १३ ॥  
 वा सुदेवपरायोगात् सुदेवपूराः क्रियाः ॥ १४ ॥  
 वेदार्थभारते त्यस्तां इति वै ॥ १५ ॥  
 वेदान्व्यासयुतिनिरूपयतिभारतादिष्वितिवेद ॥ १६ ॥  
 व्यास इति नाम निरूपक्ते ॥ १७ ॥  
 इति हा स पुराणानि पंचमै वेदमीश्वर इत्यादिवाक्यैः  
 पुराणानि विदाभिन्नत्वं निश्चयैः ॥ १८ ॥  
 ॥ महोभारते मानवीयै च ॥ १९ ॥  
 इति हा स पुराणाभ्यां वेदं समुपवृहयै दित्युक्तम् ॥ २० ॥  
 तेन पुराणानि वेदो पवृहक व्विन्नततो विजातीयत्वम् ॥ २१ ॥  
 तस्मान्न पुराणो त्त्वावयेष्य वै दिक्त्व शंका कार्या ॥ २२ ॥  
 ॥ २३ ॥ तथाच न रदीये ॥ २४ ॥  
 वेदार्थादधिकं मन्ये पुराणार्थवरानने ॥ २५ ॥  
 वेदाऽप्रतिष्ठितादेवि पुराणेनान्न संशार्यः ॥ २६ ॥  
 पुराणमन्यथा ज्ञात्वा तिर्यग्योति मवाप्नुयात् ॥ २७ ॥  
 सुदांतोऽपि सुशांतो चानगतिं प्राप्नुयात्सतीम् ॥ २८ ॥

वेदपुराणयोर्भिन्नत्वेत्वस्पष्टपरोक्षार्थत्वस्पष्टापरोक्षं  
 क्षार्थत्वे एव प्रयोजके भवतो न त्वा धिक्यन्त्यन्त्वे ॥ ५३ ॥  
 उभयोरपि भगवन्मुखादेवा विभूतत्वात् ॥ ५४ ॥  
 तथा हिवेदेनित्यो नित्यानां चेतनश्चेतनानां मित्यादित्याः  
 प्रथमांतनित्यचेतनशब्दाभिधेयो भगवन्नस्पष्टप्रतीयते ॥  
 पुराणेतुलक्षणमेन भवेहित्वमात्मानमार्गिलात्मना  
 मिति स्पष्टप्रतीयते ॥ ५५ ॥  
 तथा वेदेसदेव सोम्येदमयआसीदेकमेवाद्वितीय  
 मिति सामान्यतोऽस्पष्टमुच्यते ॥ ५६ ॥  
 पुराणेतुतत्रोद्भवत्पशुपवंशशिशुत्वाव्यन्वत्वाद्वयं  
 परमनंतमगाधवाधिम् ॥ ५७ ॥  
 वत्सान्सखीनिवपुरापरितोविचिन्ददेकं सपाणिकवलं  
 परमेष्टयचष्टेति स्पष्टमुच्यते ॥ ५८ ॥  
 तथा वेदेयदूर्ध्वगार्गिदिवोयदवीर्पृथिव्यायदंतरा  
 द्यावापृथिवीस्यादिनाभगवतो व्रह्माडाश्रयलक्षणं  
 माहात्म्यमुक्तं तत्त्वास्पष्टम् ॥ ५९ ॥  
 पुराणेतुक्षाहंतमामहदहंखचराग्निवार्भं  
 संवेष्टितांडघटसप्तवितस्तिकायः ॥ ६० ॥

केदग्विधाविगणितांडपराणुचर्यावात्सधरोम् ॥

विवरस्यचतेमहित्वमितिस्पष्टमुक्तम् ॥ १ ॥

तथावेदेमायाचतमोरुपासदसदनिर्वचनी

येतिमायायादुज्जेयत्वमुक्तंतचास्पष्टम् ॥ २ ॥

पुराणेतुअतिमांशभूतातांमायाभवानीभगवान्भवः

शंसतामृषिमुख्यानांप्रीत्याचष्टाथभारतेति ॥ ३ ॥

श्रीपार्वतीरुपामायेतिस्पष्टयुक्तम् ॥

मुंडकोपनिषदि

द्रोविद्योदैतव्यैइति हास्मयद्ब्रह्माविदोवदातिपराचैवाप-

राचतत्रापरात्सम्बद्धोयजुवदः सामवदाब्रह्मवदः शक्षाक-

ल्पोव्याकरणंनिरुक्तंछंदोऽयोतिषामितीति हासः पुराणं

न्यायामांसाधिमशास्त्राणात्पथपराययातदक्षरमाधिग-

म्मतयत्तदहश्यमयाद्यमगोत्रमवणमचक्षुः श्रोत्रतदपाणि

प्रादंनित्यंविभुसवगतसुसूक्ष्मतदव्ययंयदूतयोनिंपरिपश्य-

तिधीराः ॥

ए श्रुतिमां कुर्वु जे वेद पुराण ने इति हास एकज छे एमा केर नयी,

॥ ३ ॥ तृतीयस्कंधे ॥

जीवाः श्रेष्ठाद्यजीवानांतंसः प्राणभूतः जुमे ॥

ततः सचित्ताः प्रवरास्ततश्चेद्रियवृतयः ॥ १ ॥

तत्रापि स्पर्शवेदिभ्यः प्रवरारसवेदिनः ॥

ते योगं धविदः श्रेष्ठस्ततः शब्दविदोवराः ॥ २ ॥

रूपभेदविदस्तत्रतश्चोभयतोदतः ॥

ते षां वहुपदः श्रेष्ठाश्चतुष्यादस्ततोद्विपात् ॥ ३ ॥

ततो वर्णश्चत्वारस्तेषां त्राह्यण उत्तमः ॥

ब्राह्मणेष्वपि वेदज्ञो वृथर्थज्ञोऽभ्यधिकस्ततः ॥ ४ ॥

अर्थज्ञात्संशयच्छेत्ताततः श्रेयान्स्वकर्मण्टत् ॥

मुक्तसंगस्ततो भूयान्बदो ग्धाधर्ममात्मनः ॥ ५ ॥

तस्मान्मय्यर्पिताशेष क्रियार्थात्मानिरंतरः ॥

मय्यर्पितात्मनः पुंसो मयि संन्यस्तकर्मणः ॥ ६ ॥

न पश्या मिपरं भूतमकर्तुः समदर्शनात् ॥ ७ ॥

हिं सामय यज्ञे करिने राजस तामस जीवने स्वर्गादिकनी प्राप्ति नि-  
विघ्ने करि यज्ञ करे ते मारु माय आराधन करे तो धाय छे पण एनु  
युण्य थइ रहे खोरे पाछो मत्तर्प लोकमा पढे छे ते गीतामा 'भगवाने  
कह्युं छे

त्रैविद्याः सोमणाः शूतपापार्यज्ञैरिष्टास्वर्गतिं प्रार्थयंते ॥

ते पुण्यमासाद्य सुरेन्द्रलोकम अंतिदिव्यान्दिवदैवभोगान् ॥

तेतंभुत्कास्वर्गलोकंविशालंक्षीणेपुण्येमर्त्यलोक

विशंति ॥ १ ॥

एवंत्रयीधर्ममनुप्रपन्नागतागतंकामकामालभेते ॥

पण एम मोक्ष यतो नथी वासे जेने मोक्षनो इछा होय तेने  
न्यारेय पण हिंसामय यज्ञ न करगा निष्काम अहिंसक यज्ञ करवा ते  
कलिप्रा जे अक्षमेधादि यज्ञ ऊरवानो निषेध कर्यो छे ते तो कदापि  
करवाज नाहें.

उक्तंचश्रीमद्भागवते

कृतेयद्यायतोविष्टमुन्त्रेतायांयजतोमखैः ॥

द्वापरेपरिचर्यायांकलौतद्वरिकीर्त्तनात् ॥ १ ॥

भारतना मोक्ष धर्मसा विशामा अध्यात्मसा हिंसामय यागादि वर्म  
निंदुं छे.

लोष्टमहीतृणछेदीनखवादीतुयोनरः ॥

निस्योच्छिष्ठङ्कुशुकोनेहायुर्विदतेमहत् ॥ २ ॥

यजुषासंस्कृतंमांसंनिवृत्तोमांसभक्षणात् ॥

नभक्षयेद्यथामांपृष्ठमांसंचवर्जयेत् ॥ २ ॥

अस्यटीकायांनीलकंठः ॥

अमृतंब्राह्मणोच्छिष्ठमित्यस्यप्रशंसार्थिहिंसामयं -  
यागादिकर्मनिंद्यते

लोष्टेतिः—लोष्टमर्दीयज्ञीयवेदिकरणार्थतृणछेदी  
वर्हिराहरणार्थनखादिनखैच्छुत्वायज्ञशौपंमांसं  
खादतीतितथा ॥

नित्योच्छुष्टनित्यसोमपार्णपितापितामहोवापिसोमं  
यस्यनपीतवान् सवैकत्रीक्षणोनामेयुक्तःतेनउच्छि  
ष्टः सोमपार्यीशंकुसुकःफलाभिष्वगीमहदायुत्रेक्ष  
नविंदते ॥१॥

यजुषायजुवेदविदाऽधर्युणामांसंयज्ञीयंयद्यपिनिवृत्तौ  
नभक्षयेत् ॥

वृथामांसंअसंस्कृतमांसंपृष्टमांसंचरममांसंश्राद्ध  
शेषप्रित्यर्थः ॥

पृष्टंचरममात्रेस्यादितिविश्वः ॥

एतेनहिंसायुक्तोधर्मोनकर्त्तव्यइत्युक्तम् ॥ २ ॥

श्रीभारतना भोक्ष पर्मपा अध्याय ८८, ८९, ९०, ए चण अध्या  
यमा तुलाधार जाजलिनो सर्वाद आहेसक पर्मे युक्त छे.

यदाचायनविभेतियदाचास्माच्चविभ्यनि

यदानेच्छातिनद्वैष्टिब्रह्मसंपद्यतेतदा ॥ २ ॥

यदानकुरुतेभावंसर्वभूतेषुपापकम् ॥

कर्मणामनसावाचाब्रह्मासंपद्यतेतदा ॥ २ ॥  
 नभूतोनभाविष्योऽस्तिनचधर्मोऽस्तिकश्चन ॥  
 योऽभयः सर्वभूतानां सप्राप्नोत्पभयं पदम् ॥ ३ ॥  
 यस्मादुद्विजते लोकः सर्वैमृत्युमुखादिव ॥  
 वाक्कूराहंडपर्खपात्संप्राप्नोत्प्रिमहेद्यम् ॥ ४ ॥  
 यथावदुर्त्तमानानां वृद्धानो पुनर्पौत्रिणाम् ॥  
 अनुवृत्तामहेवृत्तं महिंस्याणां महात्मनाम् ॥ ५ ॥  
 अहिंस्याणामिति हिंसामयकुलाचारोप्यप्रमाण  
 मिति नीलिकंठः ॥

वेद तथा भारत तथा सर्वे पुराणनो आभिप्राय तो हिंसामय यज्ञ  
 न करते एज छे सक्रामिक पुरुषने हिंसा करतानुं सुन्ने छे काम्प  
 एवं जे हिंसामय कर्म तेनी निंदा करि छे।

स एव सुभगो भूत्वा पुनर्भवति दुर्भगः ॥  
 व्यापत्तिकर्मणां दृष्टाङुगुप्संति जनाः सदा ॥ १ ॥  
 अकारणो हि नैवास्तिधर्मः सूक्ष्मो हि जाजले ॥  
 भूतभवार्थमेवेह धर्मप्रवचने लृतम् ॥ २ ॥  
 सूक्ष्मत्वान्तसविज्ञातुं शक्यते वहुनिन्हवः ॥  
 उपलभ्यां तराचान्यानाचारानववृध्यते ॥ ३ ॥

टीकाअस्यैवस्तुत्यर्थकाम्यंकर्मक्षाविज्ञैननि  
दातिसएवेति ॥

सुभगःस्वर्गीव्याप्तिंनाऽनांकर्मणांकर्मफलानां  
स्वर्गादीनाम् ॥ १ ॥

अकारणःकारणमनुप्रानंप्रयोजकंफलंतद्वीनः  
सूक्ष्मोऽभयदानात्मकः ॥

भूतंब्रह्मव्यस्वर्गादिउभयार्थमेवधर्मणांशमानीनां  
यज्ञादीनांचप्रवचनमध्यथनंवेदेकृतंअतःस्थूलधर्मा  
द्यज्ञादेरन्यःसूक्ष्मधर्मोऽस्तीतिभावः ॥ २ ॥

कुतःसूक्ष्मधर्मोदुज्जेयः ॥

यतःवहुनिन्हवःसप्तशप्राजापत्यान्यशूनालतेसप्तशो  
वैप्रजापतिःप्रजापतेरास्याइत्यादिविधयःश्रेयः साधनत्वे  
नहिंसामुपदिश्यात्तःअहिंसाशास्त्रमुपद्रवंतीत्यर्थः ॥

ताहिंतदप्रमाणमेवेत्याशांक्याहउपलभ्येति ॥

उक्षाणावावेहतेचाक्षदंते महोक्षंवामहाजंवाश्रोन्नियायोप  
कल्पयोदितिश्रुतिस्मृतिविहितोमधुपकोंगवालंबनएक  
आचारःयागामनागामदितिवधिष्ठेतिमंत्रलिंगावगतोग  
वोत्सर्गविधिस्ताद्विरुद्धोऽन्यआचारस्तत्रप्रमाणमितिवि

शेषणात् क्रत्वं र्थहिंसा विधेर हिंसा विधि ज्याया निति गम्यते  
 अनागस्त्वस्य प्राजा पत्यपशुं बपितु ल्यत्वा दित्या स्तांतावत्।।  
 तपो भिर्यज्ञदानै श्ववाक्यैः प्रज्ञाभ्रितैस्तथा ॥  
 प्राप्नोत्पभयदानस्य यद्यत्फलं मिहाश्रुते ॥ १ ॥  
 लोकैयः सर्वभूतेभ्यो ददात्यभयदक्षिणाम् ॥  
 स सर्वयज्ञैरीजानः प्राप्नोत्पभयदक्षिणाम् ॥ २ ॥  
 न भूतानामहिंसायाङ्गायान्वयोऽस्तिकश्चन ॥  
 यस्मान्नोद्विजते भूतं जातु किंचित्कथं चन ॥ ३ ॥  
 सोऽभयं सर्वभूतेभ्यः संग्राप्नोति महामुने ॥  
 यस्मादुद्विजते लोकः सर्वाद्वैश्मगतादिव ॥  
 न सधर्ममवासोति इहलोके परत्रच ॥ ४ ॥  
 सर्वभूतात्मभूतस्य सम्यक् भूतानि पद्यतः ॥  
 देवापि मार्गं मुद्दांति अपदस्य पदैषिणः ॥ ५ ॥  
 दानं भूताभयस्याहुः सर्वदानेभ्युत्तमम् ॥  
 ब्रवीमिते सत्यमिदं श्रहधस्तच जाजले ॥ ६ ॥

अर्थः—आ लोकोनो अर्थ ए छे जे अहिंसायी वीजो कोइ उ-  
 तम पर्म नयी।

अध्याद्याति गवांनामक एताहं तु मर्हति ॥

महद्वकाराकुशलं दृपं गांवालभेत्यः ॥ २ ॥  
 आथायध्वमध्यादेवभागमिति श्रुतिप्रसिद्धं गवांनाम ॥  
 न हंतुं शक्या अध्याइति योगात् गवामवध्वत्वं श्रौतमित्यर्थः ॥  
 चकार लक्षतवान् आलभेत् हिंस्यात् ॥

अर्थ — यसे यज्ञमा वा अतिथिने अर्थे गायने तथा दृपभने मारे छे ए गोदुं अकुशल कर्म करे छे

तथा चापस्तं बः ॥ हष्टो हृष्ट्यति द्वसो धर्ममति क्रामति धर्मा  
 ति क्रमान्वयतीति कुदो हन्यात्पित्वन पीति ॥  
 तस्मात् सर्वभूताभयप्रदानमेव महान्धर्म इत्याश्रयः ॥

अर्थः— ते कागण माटे सर्व भूतने अभय दान आलवुं एज मोटो धर्म छे पण हिंसामय यज्ञ एतो मोटो धर्म नयो एतो निख हिंसा करे छे तेने मुकवाने अर्थे छे ने पामर जीवने विषयी करता ने विषयीने मुमुक्षुं करवाने अर्थे छे.

वद्यामिजाजले वृत्तिनास्मिन्नाद्यणनास्तिकः ॥  
 नयज्ञं च विनिंदामियज्ञविनुसुदुर्लभः ॥ २ ॥

अर्थ — तुलाधार जाजलि रुषिने कहे छे हे जाजलि हे 'ब्राह्मण हुं जे ते हिंसा रहित जीविका तेने कहु छुं यज्ञनी निंदा नयो करतो सु नास्तिक नयो.

यज्ञो । वैविष्णुरिति श्रुते यों यज्ञभोक्ता

यज्ञ ए विश्वु वाचक शब्द छे ते परमात्मा तेनो जाणनार दुर्लभ  
छे ते परमात्मानुं पुराडाशे करी यज्ञ करवु एज उत्तम यज्ञ छे पण  
पशु होमी यज्ञ तो केवल सकामिक तामसी पुष्ट्यने ने पामर्हने विषयी  
कवचा सारुज छे संकोचने अर्थे नियम छे परंतु विधि नधी.

**नमोब्राह्मण्यज्ञायेच्यज्ञविदोजनाः ॥**

**स्वयज्ञंब्राह्मणाहित्वाभ्यन्त्रयज्ञमिहास्थिताः ॥ २ ॥**

टीका.ब्राह्मणानंब्रह्मविदांयज्ञःब्रह्माग्नीवहवि  
पस्त्यागस्तस्मैयोगायेत्पर्थः ॥ स्वयज्ञंयागम् ॥

**क्षत्रयज्ञंहिंसामयंज्योतिष्ठोमादिम् ॥**

अर्थः—ब्राह्मण जे ते पोतानो यज्ञ जे योग तेनो खाग करि क्ष-  
त्रिनो यज्ञ जे हिंसामय ज्योतिष्ठोमादिक तेने आधा छे.

**क्षत्रयज्ञंविशिनष्टिलुब्धैरिति ॥**

**लुब्धैर्वृत्तिपौर्वेह्यनास्तिकैःसंप्रवर्त्तितम् ॥**

**वेदवादानविज्ञायसत्याभासमिवानृतम् ॥ ३ ॥**

टीका.हेत्रह्यन् ॥ आस्तिकैवेदप्रामाण्यवादिभिः ॥

वेदवादानर्थवादान्तेषांस्तुतिमात्रतात्यर्थमित्यविज्ञाय

सत्यवदाभासमानस्वस्त्पतःअनृतंआविद्यकब्राह्मण्या

द्यध्यासमूलत्वान्तलुब्धैःप्रवर्त्तितम्तथाचश्रुतिः ॥

**नीहारेणप्रावृताजल्पाश्वासुन्नपउवयशासश्वरंतीति ॥**

अज्ञानेन आवृताः जह्या अर्थवादगिरः ॥

असुतृपः प्राणपोपकाः उक्थशासकमनुशासनपराः ॥

आत्मिक जे तेमणे वेदमा जे अर्थ नाढे छे तेने स्तुति मात्रने विषे  
ताः पर्यं छे एम न जाणि सब्यक्षी पेठे भासतुं ने स्पृहपे कारिं तो अ-  
नृतने लोभि पुरुषे हिसामय पणुं प्रवर्जाव्युं छे.

एवं क्षत्रयज्ञां निदित्वा ब्राह्मणस्वरूपमाहयदेवेति ॥

यदेव सुकृतं हव्यं तेन नुप्यं तिदेवताः ॥

न मस्कारेण हविपास्वाध्यायैरोपधैस्तथा ॥ ४ ॥

टीका. सुकृतं सुकृतां जितं हव्यम् ॥

तदेव निविधि माहन मद्दति ॥

न मस्कारात्मकेन हविपेति सामानाधिकरण्यम् ॥

यो न मसामध्वरद्दति यज्ञो वै न मद्दति हि ब्राह्मणं

भवतीति श्रुतिस्मृतिभ्यां न मस्कारस्यैव यज्ञत्वावगते:

तथा स्वाध्यायैर्हविषेति संवंधः ॥

वयम ग्रे अर्वता वा सुवीर्य ब्रह्मणा वा चिंतये मजानीम

अनीति वेदस्यापि यज्ञत्वं श्रुतेः ॥

अर्वता अश्वेन ब्रह्मणा वेदेन वा ऽग्रेत्वां चिंतये मजानीम ॥

तथा चाश्वमेधतुल्यत्वं यज्ञस्पोक्तम् ॥

आश्वलायनगृहोपि आते अग्रन्तं चाहर्विदात्तष्टुभग  
 मसितेतेभवं तूक्षण ऋषभासोवशा उतेत्पतएवउक्षा  
 णश्चऋषभाश्ववशा श्वभवेति यद्मंस्वाध्यायमधीयतद्विति ॥  
 तथार्दुषधैव्रांहियवादिभिः पशुभ्यौ वै मेधाउदक्रामंस्तौ  
 ग्रीहि श्वैवयवश्वभूतामावजायेतांतस्मादाहुः पुरोडाशसंत्र  
 लोक्यमितिचत्योर्हविष्ट्रावगमात् पुरुषाश्वगोजादीनां  
 पशुनाममेध्यत्वश्रुतिश्वातएवउक्रांतमेधाअमेध्याः  
 पशवद्विति ॥

तथा चैतैस्त्रिभिर्हविभिर्देवतापूजायज्ञाख्याकर्त्तव्येति  
 शास्त्रवेदेनिदर्शनं प्रत्यायकवचमस्तितदप्युदाहतमेव ॥  
 पूजास्यादेवतानां हियथाशास्त्रानिदर्शनम् ॥  
 इदं पूर्वव्याख्यातम् ॥

इष्टापूर्त्तदसाधनाविगुणाजायतेप्रजा ॥

टीका ननु इष्टान्भोगान् हिवोदेवादास्यतेयज्ञभाविता  
 इति भगवतायज्ञानां धनपुत्रत्वादिग्रीत्यर्थत्वोक्तेः  
 किंतैमौक्षानुपयोगिभिरित्याशंक्याह इष्टेति ॥  
 इष्टं इष्टिपशुसोमादिआपूर्त्तं टाकारामादि ॥  
 असाधुनां कामनावतां यज्ञाः ताद्वगेव लुब्धमपत्यं भवति ॥

समेयोरागद्वेषग्रन्थे भ्य इष्टा दिकार्त्तम्योनी प्रिसता पिता  
दशी प्रजाजायत इत्यर्थः ॥

भारते मोक्षधर्मे अध्याय ९०

यत्र गत्वा न तोचं ति न च्यवंति व्यथंति च ॥

ते तु तद्व्रह्मणः स्थानं प्राप्नुवंती ह सात्त्विकाः ॥ १ ॥

नैव ते स्वर्गमिच्छुंति न यजंति यशो धनैः ॥

स तां वत्मानुवर्त्तते ये यजंते त्वं हिं सया ॥ २ ॥

वनस्पतीनोपधी श्वफलं मूलं चतौ विदुः

न चैतानृत्वं जोलुव्यायाजयंति फलार्थिनः ॥ ३ ॥

अर्थ—आ लोकने विषे जो सात्त्विक छे हिं सामय यज्ञ कर्ता न थी  
सेतो परमात्माना स्थानने पामे छे.

ते ने विषे जडने शोक करता न थी तथा च्यवता न थी ने व्यथा  
पामता न थी

अर्थ—ते स्वर्गने पण इछता न थी

त स्पनाम महद्यश इति शु । ते यशो व्रह्मधनैर्धन साध्यैः

धन साध्य एवा कर्मे करि यजता न थी सत्पुरुषनो मार्गजे योग  
ते ने अनु वर्त्ते छे जो अहिंसाये करिने यज्ञ करे छे ते पुरुष यज्ञ शाने  
करिने करे छे तो वनस्पति तथा उषपित्री हियवादिं तथा फल मूल  
तेज यज्ञमा होमवानी सामग्री जाणे छे पण पशुने न थी जाणता लो  
भीयाने धन थी एवा दक्षिण जे ते एवा समझणा छे ते ने यज कराव  
ता न थी

वेद ने हिंसा ने विषे तात्पर्य नयो । किंतु राग प्राप्त हिंसा संबोचने  
अर्थे महा पत्काल निर्वाहने अर्थे अभ्य नुज्ञा मात्र छे

तथा चोक्तम् तीर्थे पुग्रति दृष्टे पुराजा मेध्यपश्चून्वने ॥  
यावदर्थमलं लुधो हन्या दिति नियम्यते ॥ २ ॥  
लोके व्यवायामिपमद्य सेवा नित्या स्तु जंतो न हितत्र नोदना ॥  
व्यवस्थिति स्ते पुविवा हयज्ञ सुराय हैरा सुनिवृत्तिरिष्टा ॥ २ ॥  
टीका. श्रीधरः न हिमृगया विधीयते राग प्राप्तत्वात् ॥  
किंतु नियम्यते ग्रवृत्तिः संकोच्यते ॥  
नियममेव षड्डिधं दर्शयति ॥ यद्यलमसर्थं लुधो रागी  
सन् हन्या त्तार्ही तीर्थे पुश्राद्वादिष्वेवतत्रापि प्रतिदृष्टे पु  
प्रख्याते ष्वेवन नित्यश्राद्वादिपुतत्रापि राजैव  
मेध्यनेव यावदुपयोगमेव अतो नावद्यकत्वमिति ॥  
नित्यारागतएव नित्यप्राप्ताः ॥ जंतोः प्राणिमात्रस्य  
तत्रता सुचोदना विधिर्नास्ति ॥ न नुकृता बुयेयादुतश्च  
पंभक्षयोदित्यादिविधिर्दर्शितः सत्यम् नत्यमपूर्वविधिः  
रागतः प्राप्तत्वात् किंतु नियमविधिरुपैण सक्तामानां  
राजसत्तामसप्रकृतीनां हिंसा रागिणां क्षत्रियाणामे  
वाभ्यनुज्ञामात्रं क्रियते न नुसालिकानां मुमुक्षुणामिति ॥ २ ॥

**भारते मोक्षधर्मे अ. ९०**

तस्मात्तानृत्विजोलुव्धायाजयंत्यनुभान्नरान् ॥  
ग्रापयेयुःप्रजास्वर्गेस्वधर्मचरणेनवै ॥ २ ॥

ये कारण माटे सात्त्विक पुरुषने लोभीया सत्त्विजनथी यज्ञ करावता ते पण तेने नगी इच्छता ते कारण माटे मोक्षेष्ठा रहित पुरुषने ते लोभीया सत्त्विज यज्ञ करवे छे. बीजा साधु जे तेतो स्वधर्मचरणे करिने परने उपकार फुरे छे पण धर्म फलने नथी इच्छता, समयुद्धि छे माटे एम कहे छे प्रापयेयु एणे करीने

**भारते मोक्षधर्मे अ. ९०**

उत्तयज्ञाउत्तायज्ञामखंनाहितितैकचित् ॥

अर्थ — जे दायिक छे ते यज्ञ करे छे तोये पण श्रद्धा रहित छे माटे अ यज्ञ छे ते कोइ दिनर्माव अथवा बायण यज्ञकरवा योग्य नथी आज्येनपयसादभ्रापूर्णाहुत्याविशेषतः

वालैःशृंगेणपादेनसंभरत्पेवगौर्मिखम्

अर्थ — श्रद्धा नाला छे तेने तो एक यागे करिनेज बाह्य यज्ञनी सिद्धि छे एम कहे छे आज्येन ए क्षेत्रके भरिने धीये करी तथा दुधे करिने तथा दायिये करी तथा धीनी पूर्णाहुतिये करिने यज्ञ थाय छे गाय जे ते वाले करित शृंगे करित. पादर जे यज्ञ पूर्ण फुरे छे

नीलकंठः

टकिए एतेपांगोस्पर्शनादीनांचसव्यःपा

पनाशकत्वं परलोक प्रदत्त्वं च समृद्धिकुर्त्तं दर्शितम्

पशु हिंसाये रहित घृतादिये करिने साध्य एवा यज्ञनी वार्ता राह  
मात्र पर्मना ९० मा अध्यायमा

पाछी हिंसा रहित यज्ञनो पुष्टिने अर्थे कहे छे

पत्नीं च नेन विधि ना प्रकरोति नियोजयन् ॥

इष्टं तु दैवतं कृत्वा यथा यज्ञमवाप्नुयात् ॥ २ ॥

टीका. ननु पल्यभावे विशेषवान् श्रौतो मखः कथं स्पादित्य  
तआह पत्नी मिति ।। अनेन पशु हिंसारहिते न आज्या  
दिसाध्यक्रतु विधि ना आज्या दिद्रव्यं दैवतार्थे विनियोजयन्  
हेतौ शानृ प्रत्ययः विनियोग हेतोः पक्षीच मानसी मेव करो  
ति ।। श्रद्धा मिति शेषः तस्मादपक्षीकोऽग्निहोत्र माहरेत्त  
स्मादपक्षीक स्पाधानं कुर्वती युत्का श्रद्धा पक्षी सत्यं यज्ञमा  
न इति वदू जब्राह्मणे अपक्षीक स्याग्निहोत्राधानादौ श्रद्धायाः  
पक्षीत्वदर्शनात् ।। इष्टभावे त्तकः ।। यागमे वदैवतवदत्यं  
तसेवनीयं कृत्वा यथा यथा वद्यज्ञं विद्युमुप्राप्नुयात् ॥

तत्र यागविशेषं नियमयति पुरोडाशो हीति हि शब्दे न त एत  
उक्तांतमेधा अमेध्याः पश्चावद्वाति पश्चनाम मेध्यत्वम् ॥

तस्मादाहुः पुरोडाश सत्रं लोक्य मिति ।।

पुरोडाशसत्रप्राशस्त्यं च श्रुतिप्रसिद्धुं द्योत्यते ।  
मेधोयज्ञस्तदहं मेध्यः सर्वैषां वाएष पश्चूनां मेधे न यजते यः  
पुरोडाशो न यजत इति श्रुते : मूलेष पश्चूना मिति न निर्दीरण  
पश्चीप पश्चूना भग्ने ध्यत्वा त् । पुरोडाश स्यचापश्चूत्वा तत्त्वे न  
पश्चु संबधीयो मेध स्तदहं पुरोडाश इति श्रुत्यनुसारेण  
स्मृत्यथैव वर्णनीयः ॥

पुरोडाशो हि सर्वैषां पश्चूनां मेध्य उच्यते ॥  
इदं पूर्वादीप्रथमं व्याख्यातम् ॥ सर्वान्द्यः  
सरस्वत्यः सर्वैषुण्ठाः शिलोच्याः ॥ २ ॥  
एवं अद्वावताम विदुपां यज्ञमुक्ती विदुपां यसमाह सर्वाइति ॥

ए रीते ९० मा अध्यायमां श्रुतिमो गर्वरोधे न आवे ए रीते भहि  
सक धर्म प्रतिपादन कर्यो छे ने वेदमां हिंसामय यज्ञनुं जे वर्णन छे  
तेतो निय हिंसा रुक्ता होय तेने संकरावी सर्वथा मुक्तावी ते कल्याण  
माँगे चलावी ते मोक्ष करवाने अर्थे छे एज सर्व वेदनो सिद्धात छे पण  
वेद हिंसा कर्वी एम कहेता नयी.

### भारत मोक्ष धर्म अध्याय ९२

प्रजानामनुकं पार्थगीतं राज्ञा विचख्युना ॥ २ ॥

टीका---प्रजानां पुरुषादिपश्चूनां मू

अर्थ.—यज्ञमा होमता एवा जे पुरुषादि पश्चु ते उपर दया कुर-

वाने अर्थं विचल्यु राजाये रक्षु छे

अर्थ — ते विचल्यु नामे राजा जे ते गवालंभ यज्ञने विपे छेदायु छे यहोर जेनुं एवो वृष जे बली वर्द तेने जोइने गायोनो असंत विलाप तेने जोइने यज्ञ वाटमा रह्या एवा निर्दय ब्राह्मणने जोता सता चोलता हवा,

### भारते मोक्ष धर्मे अध्याय ९२

स्वस्तिगोभ्योस्तुलोकेपुततोनिर्वचनंकृतम् ॥

हिंसायांहिप्रवृत्तायामाश्चरेपाकात्पिता ॥ ३ ॥

अव्यवस्थितमर्यदैर्विमूठैनीस्तिकैर्नरैः ॥

संशयात्मभिख्यक्तैहिंसासमनुवर्णिता ॥ ४ ॥

अर्थ — निर्वचन कर्यु ते कहे छे हिंसामय यज्ञ छे ते रागस ता पसे शविनो यज्ञ छे ते थकी धीरवृते कारि कर्हो ए ब्राह्मणनो यज्ञ छे ए प्रकासनी मर्यादा छे नयो मर्यादा जेमने वास्ते विमूढ एवा ते नयो ब्रह्म ए प्रकारे कहेता.

आत्मादेहोऽन्योवाअन्योऽपिकर्त्ता ऽकर्त्तीवा

अकर्त्तायेकोऽनेकोवाएकोऽपिसंगवा नसंगोवा

इत्यादि रूपजे संशय ते वालुं छे चित्त जेमनु एवाने यज्ञा दि द्वाराये कारि ख्यातिने इछताएवा पुष्प जे तेमणे हिंसा वर्णन करि छे के ला यज्ञमा पशु मार्हो ए त्रेट कह्यु छे

### भारते मोक्ष धर्मे अध्याय ९२

सर्वकर्मस्वहितांहिधर्मात्मामनुरत्नवीत् ॥

**कामकाराद्विहिंसंतिवहिवेद्यांपशून्नराः ॥**

अर्थः—पर्मात्मा एवा मनु जे ते सर्व रूपने विषेशोऽतिष्ठोमादि  
यज्ञने विषेशे पण आहिसानेज वचाणता एवा नर जे ते कामकारण थ-  
कीज वहिवेदी ने विषेशे पशुने मारे छे पण शास्त्र थकी नाहि विशेष  
वार्ता ए श्लोकनी टीकामाधी जोवो टीकामा श्रुति लखी छे ते हिं-  
गामय यज्ञने निंदे छे.

**एवाद्वैतेऽबद्धायज्ञस्पाअष्टादशोक्तमवरंयेपुकर्मएतन्त्वे  
योयेऽभिनंदतिमूठाजरामृत्युतेपुनरेवापियंतीति ॥**

**तस्मात्प्रमाणतःकार्योधर्मःसूक्ष्मोविजानता**

**अहिंसासर्वभूतेभ्योधर्मेभ्योद्यायसीयता ॥६॥**

अर्थः—ते कारण गाटे प्रमाणनु बळाबळ जाण तो प्रथ जे तेणे  
संक्षम धर्म जे ते करवो ते कहे छे आहिसा जे ते सर्व धर्म थका  
मोठो छे.

**गृहस्थस्यपंचसूनानामपरिहार्यत्वात्कथम**

**हिंसाकार्येत्यतआहोपोष्येति ॥**

**उपोष्यसंशितोभूत्वाहित्वादेवकृताःश्रुतीः ॥**

**आचारदृत्यनाचारःकृपणाःफलहेतवः ७**

**टीका---उपसमीपेग्रामस्यवासंकृत्वाभिक्षार्थ**

**ग्रामंप्राविशेदितिविधेःसंन्यस्येत्यर्थः**

**संशितस्तीक्ष्णव्रतोभूत्वादेवेनकृताःश्रुतीःफलश्रुतीः**

अक्षव्यंहवैचातुर्मस्ययाजिनः सुकृतं भवतीत्याद्याः  
 हित्वा आचारद्वांति बुध्या अनाचारः  
 गृहस्थाचारहीनः स्यात् पुरुषस्येदमेव श्रेयद्वाति  
 वुद्धयानैष्कर्म्यश्रेयोदित्यर्थः कृपणाक्षुडाः  
 फलमेव कर्मणि प्रवृत्तौ हेतुः कारणं ये पांतथाभूताः  
 यदियज्ञांश्च वृक्षांश्च यूपांश्चोदित्यमानवाः ॥

वृथामांसानि खादंति नैप धर्मः प्रशास्यते ॥ ८ ॥

अर्थ — यज्ञादिपर एव मानव जे ते यज्ञादि ने उद्देशिने वृथा मांस खाय छे ए पर्म प्रशास्त नर्थी.

सुरांमस्यान्मधुमांसभासर्वकृशरोदनम् ॥

धूत्तौः प्रवर्त्तिं तं ह्येतत्रैतदेषु कल्पितम् ॥

मानान्मोहाच्चलोभाच्चलौ ल्यमेतत्प्रकल्पितम् ॥ ९ ॥

बैदिक कर्मनि निदा करिने रामकार रूत जे कर्म तेमे निदे छे सुरामश्य मधु मास आसव केता मद्य कृशरोदन केता तिल मिश्रोदन एने खावानुं धूतारा पुरुषोये प्रवर्त्तांश्चु ए वेदने विषे नर्थीनु कल्प्य मान मोह लोभ थकी ए ललुता पणु कल्पुद्धुं पण वेदनो अभिप्राय नर्थी ॥

विष्णुमेवा भिजानंति सर्वयज्ञेषु ब्राह्मणाः ॥

पायसैः सुमनो भिंश्चतस्यापि यजनं स्मृतम् ॥ १० ॥

अर्थ—ब्राह्मण जे ते सर्व यज्ञने विषे विष्वनुने मुख्य जाणे छे ॥  
ते विष्वनुनुं यजन पायसे करिने तथा पुण्ये करिनेज कह्यु छे ॥

**यज्ञियाश्वैवयेवृक्षावेदेषुपारिकलिपताः ॥**

**पञ्चापिकिंचित्कर्त्तिवयमन्यद्धोक्षैःसुसंस्कृतम् ॥**

**महत्त्वैःशुद्धभावैःसर्वदेवार्हमेवत् ॥११॥**

अर्थ—शुद्ध भावकरि शुद्ध पुरुषे शोधेलुं एवुं जे अन्न दुधयीते  
सर्वे विष्वनु यजन रुखुं ते योग्य छे ते पशुये करिने यजन करवुं एतो  
तामसी पामर एवा जे जाव जेने मोक्ष पामवानी इछा नर्धी गामगरा-  
स खो उपर जेनुं चित्तछे तेमनुं कामछे पूर्वना अध्यायमा निष्काम  
धर्मने ब्रेष्ट कक्षो ॥ ते हिंसा शुन्य एवोज निष्काम धर्म ते ब्रेष्टछे ए  
म कहेवाने हिंसामय यज्ञनि निंदाने अर्थे आ अध्याय आरम्भोछे वि-  
दर्भदेशमा उंछ वृत्ति नामे ब्राह्मण हतो यज्ञ करवाने तत्पर थयो तारे  
मूल कले करि यज्ञ करवा माडचो तनी खो पुकर धारिणे ते पण  
स्वामिनी भाजाधी आवी एज प्रकारि करतो हवी तारे बननी विषे स-  
मीप रख्यो एवो मृग जे ते बोलतो हवी जे ते आदुष्कृत कर्युं पशुबना  
नो यज्ञ मंत्रागही न करयो मने अग्रिमा होमने स्वर्गमा जातो पण  
मान्यु नहि तारे सवितृ मंडला पिटानी देवताये अविने कह्यु तो पण  
मान्यु नहि पछे बळी हरिणे आवीने कह्यु जे मने यज्ञमा होमी तु स्वर्ग  
मा जाने मने पण पमादे पछे मृगने अग्रिमा होम्यो पछे एणे मोड  
तप कर्युं हतु ते नाश पाण्यु ने मोटुं दुंख पड़ञ्यु.

एतो धर्म हता ते कोइ रारणयो मृग थया हता तेमने पाँचुं  
धर्म हवे थै स्वर्गमा जावु हतुं ते ए रीये ऋषद वरिने पोताना स्था

नमा गया पण १शु होमवो ए यज्ञनो विधि नर्थी ॥

तथा चोक्तम् ॥

सतुधर्मोगृगोभूत्वावहुवपोपितोवने ॥

तस्यनिष्कृतिभाधत्तनह्यसौयज्ञसंविधिः ॥ २ ॥

टीका-सत्त्वितिकेनचिन्त्रिमित्तेनमृगतांप्राप्तः

धर्मः तस्यनिमित्तस्यनिष्कृतिप्रतीकारंम् ॥

स्वात्मानंमोचितवान्नन्त्वसौयज्ञस्यसमीचीनोविधिः ॥

हिंसामयत्वात् ॥ तस्यतेनानुभावेनमृगहिंसात्मनस्तदा ॥

तपोमहद्यमुच्छ्वन्तस्मादिंसानयज्ञिया ॥ २ ॥

टीका-अनुभावेनपशुहत्वास्वर्गप्राप्त्यामीत्यभिप्रायेण ॥

यज्ञियायज्ञायहिता ॥

ततस्तंभगवान्धर्मोयज्ञयाजयतस्वयम्

समाधानंचभार्यायालेभेसतपसापरम् ॥ ३ ॥

अहिंसासकलोधर्मोहिंसाधर्मस्तथाहितः ॥

सत्यंतेहंप्रवक्ष्यामियोधर्मः सत्यवादिनाम् ॥

टीका-तथातेनस्वर्गप्रदत्तेनस्तपेणहितः सत्यवादिनां

ब्रह्मवादिनांतुअसौनोधर्मः योधर्मद्वातिपाठे तेनुभ्यं

सत्यंवक्ष्यामिकिंतसत्यम् यः सत्यवादिनांधर्मः

यद्विविधेयोद्यंपुस्त्वम् ॥ अत्राख्यायिकातात्यर्थम् ॥  
 पशुकायैश्यामाकादिविकारान्चरुपुरोडाशादीन् ॥  
 कुर्यादितिगम्यतेतथाचगृह्ये अथश्वौभूतोष्टकाः ॥  
 पशुनास्थालीपाकोविधीयतएव मन्यत्र पुरोडाशा ॥  
 मीक्षादीनामपि पशुस्थाने विधान मवगंतव्यं तस्मान्न  
 हिंसायज्ञः श्रेयान्निति ॥

## नारद पंचरात्रेच

शुतिर्वदतिविश्वस्यजननीवहितं सदा ॥  
 कस्यापिद्रोहजननं नवक्त्ति प्रभुतत्परा ॥१॥  
 न च्छास्त्रं तु यच्छास्त्रं वक्त्ति हिंसा मनर्थदाम् ॥  
 यतो भवति संसारः सर्वानर्थपरं परः ॥२॥  
 अंतरंगं विजानाति भगवत्याः श्रुतिस्वयम् ॥  
 चराचरात्मा भगवान्नपरः कोऽपि तत्ववित् ॥  
 आत्मवत्सर्वभूतानि मान्यानीत्येव सम्रुवन् ॥  
 भगवान्कथमन्नेमां हिंसा मुपदिशो त्वं चिन् ॥  
 हिंसा विधिस्तु हिंसाया निवृत्यधोस्ति सर्वथा ॥  
 आत्मवत्सर्वभूतानि ततः पद्येत्वनान्यथेति ॥

वृद्धपराशरेणोक्तम्

शौचं च पात्रशुद्गिश्वभ्रद्वाच परमाय दि ॥

अनंतनृप्तिकृच्छ्रद्ग्नेऽतदैव न चामिषम् ॥१॥

यस्तु प्राणिवधं कृत्वा पितॄन्मां सेन तर्पयेत् ॥

सो विद्वां श्वं दण्डग्न्धवाकुर्यादं गारलेपनम् ॥

सूक्ष्मजं नुनाद्रो हनुं फलपणं अं धकृपाख्यनरकलख्योऽहे

श्रीमद्भागवतने विषे.

यस्त्विवहै भूतानामीश्वरकलिपतवृत्तीनामविविक्त

परव्यथानां स्वयं पुरुषो कलिपतवृत्तिर्विक्तपरव्यथो

व्यथामाचरति स परत्रां धकृपेतदभिद्रोहेण निपतति

तत्र हासौतैस्तैर्जन्मुभिः पशुपक्षिमृगसरीसृपैर्मश

कयूकामन्कुण मक्षिकादिभिर्यैकेचाभिदुग्धास्तैः

सर्वतोऽभिदुग्धमाणस्तमसि विहतनिद्रानिर्वृतिर

लब्धावस्थानः परिक्रामति यथा कुशरीरेङ्गविः ॥

न ब्रह्मदंडदग्धस्यनभूतभयदस्यच ॥

नारकाश्वानुगृह्यते यां यां योनिमसौ गतः ॥

तस्मान्नकस्य चिद्रोहमाचरेऽयतथाविधः ॥

आत्मनः क्षेममन्विष्टन्द्रोग्नुर्वै परतो भयम् ॥

भागवतेच

नदद्यादामिषंश्राद्वेनचाद्यादुर्भृत्ववित् ॥१॥

मुन्यन्नैःस्पात्पराप्रीतिर्यथानपशुहिंसया ॥२॥

नैतादशःपरोधमौनृणांसधर्ममिच्छत्ताम् ॥३॥

न्यासोदंडस्यभूतेषुमनोवाकायजस्पयः ॥४॥

स्कंदपुराणेच

नश्रादेकापिमांसनुदद्यान्नाद्याच्चमानवः ॥

मुन्यन्नैःक्षीरसर्पिभ्यत्प्रतिपितरोभृशम् ॥

ईदशीमहिंसांचयोगशास्त्रेसाधनपादेमहाव्रत  
त्वेनसून्नयामासभगवान्यतंजलिः ॥

अहिंसासत्त्वास्तेयन्नेत्वंचर्योपरिश्रायमाः ॥

जातिदेशंकालसमयानवच्छिन्ना

सार्वभौमीमहाव्रतमिति ॥ तत्राहिंसामहाव्रतं

व्याचख्यौभाष्यकारोभगवान्वादरायणः ॥

सर्वथासर्वदाभूतानामनभिद्रोहः

अहिंसासाचमश्येष्वेवाहिंसानान्यत्रेतिजात्यवाच्छिन्नान  
तीर्थेहनिव्यामीतिदेशावच्छिन्नानचतुर्दश्यानंपुण्येहनीति  
सैवकालावच्छिन्नातथान्निभिस्तप्रतस्यदेवव्राद्याणार्थेहनि

वृद्धपराशरेणोक्तम्

शौचं च पात्र गुदि श्वभद्रा च परमायदि ॥  
 अनंत नृ मिठ्ठू द्वे एतदेव न चामिषम् ॥५॥  
 यस्तु प्राणि वधं कृत्वा पितॄ न मां सेन तर्पयेत् ॥  
 सो विद्वांश्च दं दग्धवा कुर्यादं गारलेपनम् ॥  
 सूक्ष्मजं नुना द्वो हनुं फलपण अंधकूपा ख्यन रकलख्योऽहे  
 श्रीमद्रागवतने विषे.

यस्त्वहै भूता नामी श्वरका लिपत वृत्ती नाम विविक्त  
 परव्यथा नां स्वयं पुरुषो कहियत वृत्ति विक्त परव्यथो  
 व्यथा माचरति स परत्रां धकूपेत दभिद्वो हेण निपतति  
 तत्र हा सौतै स्तैर्ज तुभिः पशु पाक्ष मृग सरी सृष्टैर्मशा  
 कयूका मन्कुण माक्षिका दभियो कैचा भिदु गधा स्तैः  
 सर्वतोऽभिदु द्वयमाण स्तमा सिविहत निद्रानि वृत्तिर  
 लघाव स्थानः परिक्रामते यथा कुशरी रेजीवः ॥  
 न ब्रह्मादंडदग्धस्यन भूत भयदस्यच ॥  
 न आरका श्वानुगृह्याते यां यां यो निमसौ गतः ॥  
 तस्माच्चकस्य चिद्रो हमाचरे इयत धाविधः ॥  
 आस्मनः क्षेममन्विछन्द्रो गधु वै परतो भयम् ॥

भागवतेच

नदद्यादामिषंश्राद्वेनचाद्यादुर्मत्त्ववित् ॥

मुन्यन्नैःस्पात्पराप्रीतिर्यथानपशुहिंसया ॥१॥

नैतादृशःपरोधमौनृणांसधर्ममिच्छताम् ॥

न्यासोदंडस्यभूतेषुमनोवाकायजस्पयः ॥२॥

स्कंदपुराणेच.

नश्राद्वेकापिमांसंनुदद्यान्नाद्याद्यमानवः ॥

मुन्यन्नैःक्षीरसर्पिभ्यत्तृष्णंतिपितरोभृशम् ॥

ईदशीमहिंसांचयोगशास्त्रे साधनपादेमहाव्रत  
त्वेनसूत्रयामासभगवान्यतंजलिः ॥

अहिंसासुत्पास्तेयव्रज्ञचर्योपरिग्रहायमाः ॥

जातिदेशकालसमयानवच्छिन्नाः

सार्वभौमीमहाव्रतमिति ॥ तत्राहिंसामहाव्रतं

व्याचरख्यौभाष्यकारोभगवान्वादरायणः ॥

सर्वथासर्वदाभूतानामनभिद्वोहः

अहिंसासाचमद्येष्वेवाहिंसानान्यत्रेतिजात्यवाच्छिन्नान  
तीर्थैहनिष्यामीतिदेशावच्छिन्नानचतुर्दश्यांनपुण्येहनीति  
सैवकालावच्छिन्नातथात्रिभिरुपरतस्यदेवमात्मणार्थेहनि

एषामिनान्यधेति समयावच्छिन्नायथाक्षत्रियाणां युद्धे एव हैं  
 सानान्यन्तेति एभिर्जीविदेशकालसमये रनवच्छिन्नाअहिं  
 सासर्वथैव परिपालनीया सर्वभूमिषु सर्वभूविषये षु सर्वथैवा  
 विदितव्यभिचारा सार्वभौमी महाव्रतमित्युच्यते ॥

मोक्षधर्मोद्दितीये १६्याये

नहें सयतियोज्ञतून्मनोवाक्याय हेतुभिः  
 जीवता थैं पनयनैः प्राणिमिन्सवध्यते ॥१॥

भागवते

न कर्मभिस्तां गतिपाप्तु वांति

विद्यातपोयोगसमाधिभाजाम् ॥२॥

तस्मात्सर्वात्मनाराजन्हरिः सर्वज्ञसर्वदा ॥

ओतव्यः कीर्तिव्यथस्मर्तव्यश्चेष्टता १ भयम् ॥३॥

एवं नृणां क्रियायोगाः सर्वेऽसंसृतिहेतवः ॥

त एवात्मनिनाशाय कल्पते कल्पिताः परे ॥४॥

प्रायेण वेदतादिर्दन्महाजनो यदेव्याविमोहितमतिर्बित

मायया १ लम् ॥ त्रयां लड्डीकृतमतिर्मधुपुण्यतायां वैता

निकेमहत्तिकर्मणियुच्यमानः ॥५॥

मनुस्मृती

अनुमंताविशसितानिंहताक्रयविक्रयी ॥

संस्कर्त्तचोपहर्त्तचरखादकश्वेतिघातकाः ॥१॥

नकृत्वाप्राणिनांहिंसांमांसमुलद्येतकाचित् ॥

न च प्राणिवधः स्वर्ग्यस्तस्मान्मांसं भक्षयेत् ॥२॥

मांसभक्षयितामुत्रयस्य मांसमिहाइयहम् ॥

एतन्मांसस्य मासत्वं प्रवदंति मनीषिणः ॥

दानधर्मेषु भविष्मः

योयजेताश्वमेधेन मासिमासियतव्रतः ॥

वर्जयेन्मधुमांसं च समग्रेत गुणिष्ठिर ॥३॥

सप्तर्षयोवालखित्यास्तथैव च मरीचिपाः ॥

अमांसभक्षणं राजन् प्रशंसं तिमनीषिणः ॥४॥

पूर्वतु मनसात्प्रकातथावाचाचकर्मणा ॥

न भक्षयति यो मांसं त्रिविधं सविमुच्यते ॥५॥

न हि मांसं तृणात्काष्ठादुपलाद्वापि जायते ॥

जंतु घाताद्वेन्मांसं तस्मादोषो स्तिभक्षणे ॥६॥

ऋषिभिः संशायं पृष्ठो वसुश्वो देपतिः पुरा ॥

अभक्ष्यमपि मांसं सप्राहमद्यमिति प्रभो ॥७॥

आकाशात्यातेतः सद्योभूमौ सनृपतिस्तथा ॥  
एतदेव पुनश्चोत्तकाविवेशधरणीतलम् ॥६॥

### भगवद्रीतायांम्

यज्ञशिष्टशिनः संतो मुच्यते सर्वकिल्विपैः ॥  
भुं जते तेत्वघं पापायेपं च त्यात्मकारणात् ॥

अर्थ — यज्ञमार्थी शेष रह्यु तेने जमे तो सर्व पापयो मुकाप ने जे पोताने अर्थे पाक रुटि जमे छे ते तो पाप जमे छे ते वावय पण मात भक्षण विषय नर्थी तरि देवरूप तृष्णि निष्यन्त रंधितात्रनु वै खदे वानंकर भोजन विषय छे तेज प्रकारे श्री गीता भाष्य ने विषेत श्री घोस्त ठीकाने विषे व्याख्यान करायु छे.

तथाहि वै श्वदेवादिपं च महायज्ञावशिष्टमन्त्रं ये । श्रंति  
ते पं च सूना रूतैः सर्वैः किल्विपैर्विमुच्यते पं च सूना श्व  
स्मृतात्मुक्ताः ॥

कंडनीपेपणी चुही उदकुं भीच मार्जनी

पं च सूना गृहस्थसप्ताभिः स्वर्गनविंदति ॥१॥

श्रीवैष्णवाचार्यास्तु यज्ञो वै विष्ट्रिरितिश्रुतेः

श्रीवासुदेवनैवेद्यावशिष्टात्रभोजिनः सकल

किल्विपमुक्ताभवंतोत्यस्यार्थमाहुरित्यन्त्रविस्तरः ॥

या करीने पहमार्थी शेष भास भक्षण रुटि ए भास भक्षणनी...गु-

दिने अर्थे चांद्रायण वत लखु छे सूलंतरने विषे जो हिसामय यज्ञ  
अपूर्व विधि होथ तो एनुं प्रायश्चित्त शु करवा लग्ये वास्ते वेदनुं ता-  
त्पर्य हिसा मुकावानुं छे.

तथाहिद्विजोयोभक्षयेन्मांसंयज्ञशेषमपिकचित् ॥

सनुचांद्रायणेनैवशुद्धिमाग्रोतिनान्यथा ॥१॥

तथाचमनुः

सुरावैमलमनांपाचमलमुच्यते ॥

तस्माद्ब्राह्मणराजन्यैवैश्यश्वनसुरांपिबेत् ॥२॥

गौडीमाध्वीतथापैष्टीविज्ञेयात्रिविधासुरा

यथैवैकातथासर्वानपातव्याद्विजोत्तमैः ॥३॥

पुलस्यः

पानसंद्राक्षमाधूकंखज्जूरंतालमैक्षवम् ॥

माधूत्थंसैरमारिष्टंमैरेयंनालिकोरजम् ॥४॥

समानानिविजानीयान्मद्यान्येकादशैवतु ॥

द्वादशंतुसुरामद्यंसर्वेषामधमस्मृतम् ॥५॥

ग्रत्वेताः

सुरापगुस्तल्यगौचीरवल्कलवाससौ

द्वादशाष्टद्व्याव्रहत्याव्रतंचरेयाताम् ॥

सुरापीत्वाद्विजोमोहादग्रिवर्णसुरांपिबेत् ॥

सौन्नामण्यामपि सुराय हनिषेधः

भागवते

यद्घाण भक्षो विहितः सुराया स्तथा पश्चोराल भनं न हिं सा ॥

एवं व्यवायः प्रज्ञान रत्याइ मं विशुद्धु न विदुः स्वधर्मम् ॥१॥

इत्यादीनि वेदवेदोपवृह कं पुराणे तिहासादीनां हिं सामय

यज्ञानिषेधकानि मांस भक्षण निषेधकानि च सहस्रशो वाक्या

नि संति ततः सर्वथा सर्वदा मुमुक्षु भाँहि सामय यज्ञो मांस भ-  
क्षणं च वर्जनीय मिति

भारते आनुशासन पर्वणियः सर्वमांसानि न भक्षायीत पु-  
मान्स दाभावितो वर्मयुक्तः ॥

माता पित्रो रार्चिता धर्मयुक्तः शुभ्रूषिता ब्राह्मणा नाम  
निद्यः ॥२॥

ईदगुणो मानवस्तु प्रया तिलो कं गवां शाश्वतं चाव्यं च ॥  
न पारदारी पद्यति लोकमे तं न वै लृत द्वौ न मृपा संग्रलापि ॥

योगीश्वरः

गुरुणामध्यधिक्षेपो वेदानि दासु त्वद्वधः ॥

ब्रह्महत्या समझौय मधति स्यचना शनम् ॥३॥

ईश्वरमंतरा वेदता त्यर्थतु न को पिजाना तिवेदे पुहिं सामय

यज्ञवर्णं राजसताम सज्जीवानां मुमुक्षु करणार्थं नित्यमास  
 भक्षणादि संकोचार्थं चेत्य वसेद्यम् ॥  
 अत्रायथा किंचित्तिखितं यदि प्रतिभाति तद्वेपभावमुत्सृज्य  
 शोधनीयं पांडितैः ॥

भारते मोक्ष धर्मे अ. ९२

सुरामश्यान्मधुमांसमासवंकृशरौदनम्  
 धृत्तैः प्रवर्त्तिं व्येत चैतद्वेषुं कलिपतम्  
 मानान्मोहाच्छलोभाच्छलैत्यपेतत्प्रकापितम्

सुरामश्यादिनुं भक्षण पूताराये प्रवर्त्तान्यु ए वेदमा नयो मोहथी  
 लोभथी ललुतापणायी कल्यु छे

भारते वृहत्पराशरस्मृतौ च  
 मत्स्यग्राहस्य यत्पापं षण्मासाभ्यंतरे भवेत् ॥  
 एकाहेनैव तत्पापमगालितं जलं पिवे त् ॥१॥

अर्थ — मार्छीने छमास माछला मारत्यानुं जे पाप से पाप जे  
 कोइ प्राणी एकदीन अगालित गाल्या विनानुं जल पीये तोने छे,



## उपोद्घात.

१०८७७५४३३३

निगमप्रकाश यथ भोल्नाथ भगवान् शास्त्री रायकर्वाळ पासे त-  
पासवा आप्यो हतो तेमणे तेनुं बीजुं खंडन लखी आप्युं छे ते आगळ  
जोवामा आवशे,

---

॥ श्रीगणेशायनमः ॥ विहितोपिधर्मः पूर्वमहदि  
 राचरितएवान्यैरन्वाचर्यत इतिपरं परा यज्ञादिपुष्पुहन  
 नात्मकोधर्मः पुरातनकाले कैराचरितः किमर्थं च तैराचरि  
 त इत्याकांक्षासमाधानपूर्वकयज्ञार्थपशुहनविषयानुज्ञामा  
 ह मनुर्मासभक्षणप्रकरणोपक्रमकाले ॥

यज्ञार्थं ब्राह्मणैर्विध्याः प्रशस्तामृगपक्षिणः  
 भूत्यानां चैव वृत्यर्थं मगस्त्योह्याचरत्पुरा १

यस्मात् पुरातनकाले इव इयं भरणीयानां जीवनार्थं म-  
 गस्त्येनाचारितं तस्माद्यज्ञार्थं पश्चावोहन्तव्याइतिभावः क-  
 स्मिन्काल आचारितमित्याकांक्षायामाह स एव  
 वभूवुहिं पुरोडाशा भक्ष्याणां मृगपक्षिणाम्  
 पुराणेष्वपि यज्ञोपुत्रहक्षन्त्रसवेषु च २

यस्मिन् काले ब्रह्मक्षन्त्रसवेषु भक्ष्याणां मृगपक्षिणां मां सेनपु-  
 रोडाशा आसन्त स्मिन् काले हता इतिभावः श्रुत्यादिपुरो  
 डाशा व्रीहियवयोरेव विहितास्त स्मिन्काले तु व्रीहियवैनवभूव  
 तु स्तस्मान्मांस पुरोडाशा स्तेनकृता इतितात्पर्यम् एतावता ३  
 न्नाभावकाल एव केवलं स्वकीयानां जीवनार्थमेवागस्त्येन य-  
 ज्ञादिपुष्पशावोहता स्तस्मादन्यैरप्यन्नाभावकाल एव प्राणधा

( ४ )

रणार्थमेवहन्तव्याइतिमनोराशयः एतदेवाभिप्रेत्यपराश  
रोपितथैवाह

सर्वथान्नंयदानस्यात्तदैवामिषमाश्रयेन्  
ब्राह्मणश्चस्वयंनाद्यात्तच्चश्वादिहतंयदि ३

ब्रह्मस्पतिरपि

अभून्मांसपुरोडाशेभक्षणंमृगपक्षिणां  
पुराणेवयज्ञेषुब्रह्मक्षत्रसवेषुच ४

यस्मिन्नकालेषुरातनयज्ञेषुमांसपुरोडाशआसीत्तस्मिन्ने  
वकालेमृगपक्षिणांभक्षणमभूत्तनुव्रीहियवयोः पुरोडाश-  
काले अन्नाभावकालएवमांसभक्षणमितिपर्यवसितं तत्का-  
लेपिष्ठूर्वकेवलेनागस्येनतदनुसारिभिश्ववंगस्थैरेवायंक्रौर्य  
विशिष्टोधर्मआचरितोननुसर्वार्थमिस्तस्मादन्नाभावकालेपि  
तदुर्मानननुष्ट्रानेमहत्फलभावत्वमाहमनुः

योवंधनवधक्षेशान् प्राणिनान्नचिकीर्पति  
ससर्वस्यहितग्रेष्मुःमुखमन्यंतमश्वुते ५  
यदुयायतियत्कुरुतेधृतिंवधातियत्रच  
तदवाप्रोत्ययवेनयो हिनस्तनकिंचन ६  
नारत्वाप्राणिनांहिंसांमांसमुत्पद्यतेष्वचित्

न च प्राणिवधः स्वर्गस्तस्मान्मांसंविवर्जयेत् ७  
 स मुत्पत्तिं च मांसस्य वधवं धौचदेहिनां प्रसमीक्ष्य  
 निवर्त्तेत् सर्वमांसस्य भक्षणात् फलमूलाशनैर्मै  
 धैर्यमुन्यन्नानां च भोजनैः न तत्फलमवाप्नोति य-  
 न्मांसपरिवर्जनात् ८

मांसभक्षयितामुत्त्रयस्य मांसमिहाम्यहं  
 एतन्मांसस्य मांसत्वं प्रवदाति मनीषिणः ९  
 अनुमंताविश्वसितानिहंताक्रयविक्रयी  
 संस्कर्ताचोपहर्ताच खादकश्चेति धातकाः १०  
 वर्षेवर्षेश्वर्मेधेनयोर्यजेत शतं समाः  
 मांसं न खादयेद्यस्तुतयोः पुण्यफलं सर्वं ११  
 यात्तवल्वयोपि

सर्वान्कामानवाप्नोति हयमेधफलं तथा  
 गृहेष्विनिसन्विग्रोमुनिर्मांसविवर्जनात्  
 यमः

सर्वेषामेव मांसानां महान्दोपस्तु भक्षणे  
 निवर्त्तने महत्पुण्यमित्याहसप्रजापतिः १२  
 वृहस्पतिः

रोगातौभर्थितोवापियोमांसंनात्यलोलुपः  
 फलंप्राप्नोत्ययेनसोश्वेषफलंतथा १३  
 किञ्चतकालेष्यगस्येनवक्ष्यमाणविधिनैवायंधमौऽनुष्ठित  
 स्तस्मादविधिनाचरणेदोपमाहमनुः  
 नायादविधिनामांसंविधिज्ञोनापद्विज्ञः  
 जग्धवाह्यविधिनामांसंप्रेत्यतैरद्यते १४  
 असंस्कृतान्पश्चून्मंत्रैर्नीद्याद्विप्रःकदाचन  
 मंत्रैस्तुसंस्कृतानश्चाच्छाश्वतंविधिमास्थितः १५  
 नभक्षयतियोमांसंविधिंहित्वापिशाचवत्  
 सलोकोप्रियतांयातिव्याधिभिश्वनपीड्यते १६  
 स्वमांसंपरमांसेनयोवर्द्धयितुमिच्छति  
 अनभ्यन्यपित्तनुदेवांस्ततोऽन्योनास्त्यपुण्यकृत् १७  
 याज्ञवाल्योपि  
 वसेत्सनरकेष्वोरे वर्षाणेष्टुरोमभिः  
 समितानिदुराचारोयोहत्यविधिनापश्चन् १८  
 विधिमाहमनु  
 मधुपकेंचयज्ञेचपिनृदैवतकर्गणि  
 एवपश्चाचोहिम्यानान्यत्रेतिकदाचन १९

## याज्ञवल्क्योपि

प्राणात्ययेतथाश्रादुप्रोक्षितोद्विजकाम्यया

देवान् पितृन् समभ्यर्च्यर्खादन्मांसन्नदोषभाक् २०

विधेरपिदैवराक्षसभेदाभ्यां द्वौविध्यमाहमनुः

यज्ञायज्ञग्निर्मांसस्येसेपदैवोविधिस्मृतः

अतोन्यथाग्रवृत्तिस्तुराक्षसोविधिरुच्यते २१

यज्ञेमांसभक्षणं दैवविधिस्तदातिरिक्तश्रादुमधुपकर्देवाच्च  
नादिषुमांसभक्षणं राक्षसोविधिरिस्यर्थः न चात्र यज्ञशब्देन  
श्रादुदेवाच्च नादीन्युपलक्ष्याणेमधुपकं च यज्ञो चेत्यादिवाक्ये  
पुमधुपकां दिभ्यो यज्ञशब्दस्य पृथकरणात् न चायं यज्ञस्यैव  
प्रपञ्च इति वाच्यं राक्षसोविधिरुच्यते इत्यत्रविधिशब्दोपादा  
नेन तदुचित ग्राह्यान्यविधेर दर्शनान् न च पिशाचवद् भक्षणं  
राक्षसोविधिरिति वाच्यं न भक्षयति योगांसंविधिहित्वा पिशा  
चवदिसादिवाक्ये पुष्पिशाचवद्भक्षणस्याविधित्वग्रदर्शनात् ॥  
न चायं राक्षसोविधिरनर्थकरः पठित इति वाच्यं सर्वथान्नाभा  
व काले पिशाचवद् हिंसायां प्रवृत्तानां वंगस्थानां राक्षसविधे  
रन्यत्रहिंसानिवर्त्तकत्वेन तस्याप्यर्थकरत्वात् न च तत्रत्यना  
मापि विदुषाम् ग्राह्यस्तस्य रक्षः कर्मत्वात् अन्नाभावकाले पूर्णां

दिभिः प्रतिपादितं अन्यथा तिमां सलानां गोजाश्वादीनमे  
 व भक्ष्यत्वं ब्रूयात् अत्यत्यपि मां सानां कच्छपादिनां च भक्ष्यत्वं न  
 ब्रूयात् किंचागस्तेनान्नाभावकाले केवल मवश्यं भरणीयानां  
 प्राणधारणार्थमेव यज्ञादिषु पश्चवो हत्ताननुशरीरपुष्ट्यर्थम् अ-  
 न्यथा गोजाश्वादीनेव स्वीकुर्यात् मन्वादीनामप्यगस्त्याचर-  
 णानुसरणमेवाभिप्रतम् अतएव तैरप्यगस्य स्वीकृताएवानुस्वी-  
 कृताः किंचयज्ञार्थपश्चवः सृष्टाः स्वयमेव स्वयं भूवेत्यादिवाक्यैः  
 पश्चानां यज्ञार्थसृष्टत्वेषितत्र मूलमगस्त्याचरणभेवनोचेद्यज्ञा,  
 र्थपश्चवोवध्या: प्रशस्तामृगपक्षिणद्वितीवाक्येप्रशस्ताद्वितिप-  
 दन्वो ब्रूयात् त्रभुवुहिं पुरोडाशाभक्ष्याणां मृगपक्षिणामितिवा-  
 क्येच भक्ष्याणामितिपदं च नो ब्रूयात् सर्वोपि आशावावध्याः सन्ति  
 कुतः प्रशस्तामृगपक्षिणो वध्याद्वयुक्तं कुतश्च भक्ष्याणां मृगप-  
 क्षिणां पुरोडाशाआसन्नियुक्तं तत्रागस्त्याचरणस्य मूलत्वे  
 तु येयेपश्चवस्तेन स्वीकृतास्तेपां यज्ञार्थसृष्टत्वं येचाऽस्वी-  
 कृता स्तेपा मयाज्ञियत्वम् एव मप्रशस्ताना गभक्ष्याणां  
 व्यावृत्यर्थं प्रशस्तपदम् भक्ष्याणा मितिपदं च तेन नि-  
 र्दिष्टं किंचन मां स भक्षणेदोपोनमद्येन च मैथुनेप्रवृत्तिरेपा मू-  
 तानां निवृत्तिस्तु गहाफलेति मनुनोप्रसंहारकाले प्रदशितं ते

नमांसभक्षणेमद्यपानैमैथुनैचनदोषोऽयंतु प्रवृत्तिलक्षणो धर्म  
 इति केपां चिद्विदुपां भ्रान्तिस्तपद्यते परं तु नायमर्थो मनोर  
 भिग्रेतः तथा सति वृथामांसभक्षणेप्रायश्चित्तविधेरविधिनामां  
 सभक्षणेदोषप्रदर्शनस्य च वैयर्थ्यस्यात्तथा च सुरां पित्रादि  
 जो मोहादग्निवर्णसुरां पिवेदिस्यादिभिर्मद्यपानैऽतिदुष्कर  
 प्रायश्चित्तविधानस्य नैरर्थ्यस्यात्तथा परस्तीगमने प्रायश्चित्त  
 विधानस्य च निष्फलत्वं स्यात्तदकरणेकुंभीपाकादिनरक  
 पतनप्रदर्शनस्य च निरर्थकत्वं स्यात्तस्मान्नायमर्थो मनोरभि  
 ग्रेतः किं तु सर्वथान्नाभावकालएव यज्ञार्थमांसभक्षणेनदोपः  
 सौत्रामण्यां च मद्येनदोपः स्वभार्यायामृतौ गमनेचनदोप  
 इत्ययमेवार्थो मनोरभिग्रेतः

अतएव वृहस्पतिः

अभून्मांसपुरोडाशे भक्षणं मृगपक्षिणां  
 पुराणेष्वेव यज्ञेषु व्रह्मध्वनिसवेषु च २८

सौत्रामण्यां तथामद्यं श्रुतौ भक्ष्य मुदात्वत् म्  
 ऋतौ च मैथुनं धर्म्युत्रो त्पत्तिनिमित्ततः

स्वर्गप्राग्रोति नैवं तु प्रत्यवायेन दुष्यति २९

तथा सत्यन्न सत्येव त्रकर्मणिगत्यक्षणशुः प्रदेयत्वेनोक्तरत

त्रैकं कार्यमित्यपेक्षायामाह मनुः

कुर्याद्भूतपशुं संगेकुर्यात् पिष्टपशुं स्तथा

न त्वेवतु वृथा हन्तुं पशुमेष्ठेन कदाचन ३०

अत्र मनु नोभयकार्यमाभिप्रेत्यतन्त्रेणेयं स्मृतिः पठितातथा हि  
आसक्तिश्वेद्भूतपशुं स्तथा पिष्टपशुं लक्ष्यादयेन तथाच  
यज्ञादिप्रसंगेपुयत्रप्रत्यक्षपशुः ॥ प्रदेयत्वेनोक्तस्तत्र पिष्टपशुं कु  
र्यात् अतएवात्रमनुनाकुर्यादिपदं संगद्वातिपदं च निर्दिष्टम् अ  
न्यथा सक्तिश्वेत् पिष्टपशुं लक्ष्यादयेदिति स्पष्टं कुयान् अत  
एवयवमयं मेयं मेषीचलक्ष्यावस्थादेवता मुहिश्याग्नौ निर्वे प  
नितनायं पिष्टपशुः प्रत्यक्षपशोरभवेत्प्रतिनिधिरितिवाच्यं  
वेदोपिष्टपशोरेव प्रत्यक्षपशुत्वप्रतिपादनात् तथा हिशतप  
यन्नाह्वाणे

हरिः ३० वै श्वदेवेन वै प्रजापतिः । प्रजाः स सृजे ता

अस्य प्रजाः सृष्टा वस्त्रस्य यदान्जक्षुर्वस्त्र्यो  
ह वाऽअये यवस्तद्यन्तेव वस्त्रस्य यवान्ग्रादंस्त-  
स्मादवस्त्रणग्रन्थासानाम ॥१॥ ता वस्त्रोजग्राह ।

ता वस्त्रणगृहीताः परिदीर्णा अनस्य च ग्राणस्य च  
शिखियरे च निषेदुच्च ग्राणोदानौ हैवाभ्यो नाप-

चक्रमनुरथान्याः सर्वा देवता अपचक्रमुस्तयो-  
हैवास्य हतोः प्रजा न परावभूवः ॥२॥ ता

एतेन हविपा प्रजापतिरभिपञ्च्यत् । तद्याश्वैवा-  
स्य प्रजा जाता आसन्याश्वाजातास्ता उभयीर्वर्ण-  
णपाशात्प्रमुञ्चत्ता अस्यानमीवा अकिलिव-  
पा: प्रजाः प्राजायत ॥३॥ अथ यदेष्ट एतैश्च  
तुर्थे मासि यजते । तन्नाह न्वैवैतस्य तंथा प्रजा  
वर्णणे गृह्णातीति देवा अकुर्वन्निति न्वैवैष्ट एत-  
त्करोति याश्च न्वैवास्य प्रजा जाता याश्वाजा-  
तास्ता उभयीर्वर्णणपाशात्प्रमुञ्चति ता अस्या-  
नमीवा अकिलिविपा: प्रजाः प्रजायते तस्माद्वा ।  
एष एतैश्चतुर्थे मासि यजते ॥४॥ तद्वै द्वे वेदी  
द्वावग्नी भवतः । तद्यद्वे वेदी द्वावग्नी भवतस्तदुभ-  
यत एवैतद्रुर्णणपाशात्प्रजाः प्रमुञ्चतीतश्चोर्ध्वा इ-  
त्तश्चाद्याचीस्तस्माद्वे वेदी द्वावग्नी भवतः ॥५॥  
स उत्तरस्यामेव वेदौ । उत्तरवोदिमुपकिरति न  
दक्षिणस्यांक्षत्रं वै वर्णणे विश्वो मरुतः क्षत्रमेवै-  
तद्विश्वा उत्तरं करोति तस्मादुपर्यासीनं क्षत्रीय-

मधस्तादिमाः प्रजा उपासते तस्मादुत्तरस्यामेव  
 वेदाऽउत्तरवेदिमुषकिरति नदक्षिणस्याम् ॥६॥  
 अथैतान्येव पञ्च हवींपि भवन्ति । एतैवै ह-  
 विर्भिः प्रजापतिः प्रजा असृजतैरुभयतो वर्ण  
 पाशात्प्रजाः प्रामुञ्चदितश्वोर्ध्वा इतश्वावाचीस्त  
 स्माद्वा एतानि पञ्च हविंषि भवन्ति ॥७॥  
 अथैन्द्राग्नो द्वादशकपालः पुरोडाशो भवति ।  
 । प्राणोदानौ वा इन्द्राग्नी तद्यथा पुण्यं चुक्रपे पुण्यं  
 कुर्यादिवं तत्त्योहैवास्य हेतोः प्रजा न परावभूव-  
 स्तत्प्राणोदानाभ्यामेवैतत्प्रजा भिपड्यति प्राणोदा-  
 नौ प्रजासु दधाति तस्मादैन्द्राग्नो द्वादशकपालः  
 पुरोडाशो भवति ॥८॥ उभयत्रपयस्ये भवतः ।  
 पयसो वै प्रजाः सम्भवन्ति पयसः सम्भुतास्त-  
 थत एव सम्भुतायतः सम्भवन्ति-तत-एवैतदुभ-  
 यतो वर्णपाशात्प्रजाः प्रामुञ्चतीतश्वोर्ध्वा इतश्वा-  
 वाचीस्तस्मादुभयत्र पयस्ये भवतः ॥९॥ वारु-  
 ण्युत्तरा भवति । वर्णो ह वा अस्यप्रजा अ-  
 गृह्णात्तव्यर्थं वर्णपाशात्प्रजाः प्रामुञ्चति मा-

स्ती दक्षिणाजामितायै न्वेव मास्ती भवति जा-  
 मि ह कुर्याददुभे वास्थ्यौ स्यातामतो ह वाऽ  
 अस्य दक्षिणतो मस्तः प्रजा अजिघांसंस्ता-  
 नेतेन भागेनाशमयन्तस्मान्मास्ती दक्षिणा ॥१०॥  
 तयोरुभयोरेव करीराण्यावपति । कं वै प्रजाप-  
 तिः प्रजाभ्यः करीरकुस्त कमैवैप एतत्प्रजाभ्यः  
 कुस्ते ॥११॥ तयोरुभयोरेव शमीपलाशान्या-  
 वपति । शं वै प्रजापतिः प्रजाभ्यः शमीपलाशै-  
 रकुस्त शमैवैप एतत्प्रजाभ्य कुस्ते ॥॥१२॥  
 अथ काय एककपालः पुरोडाशो भवति । कं  
 वै प्रजापतिः प्रजाभ्यः कायैनैककपालेन पुरोडा-  
 शेनाकुस्त कमैवैप एतत्प्रजाभ्यः कायैनैकक-  
 पालेन पुरोडाशेन कुस्ते तस्मात्काय एककपा-  
 लः पुरोडाशो भवति ॥१३॥ अथ पूर्वेद्युः ।  
 अन्वाहार्यपचनेऽनुपानिव यवान्कृत्वा तानीपदिवो  
 पत्थ्य तेया करम्भपात्राणि कुर्वन्ति यावन्तोगृह्या  
 स्युस्नावन्त्येकेनातिरिक्तानि ॥१४॥ तत्रापि मेषं  
 च मेषीं च कुर्वन्ति । तथोमेषे च मेष्यां च य-

ध्यनैडकीरुणा विन्देत्ताः प्रणिड्य निश्चेपयेद्यगुऽ  
 अनैडकीर्ते विन्देदथोऽआपि कुशोणा एव सुः  
 ॥१५॥ तद्यन्मेषश्च मेपी च भवतः । एप वै-  
 प्रत्यक्षं वस्त्रणस्य पशुर्यन्मेषस्तत्प्रत्यक्षं वस्त्रणा-  
 शात्प्रज्ञाः प्रमुच्चति यवमयौ भवतो यदान्हि  
 जक्षुपीवर्स्त्रणोऽगृहणान्मधुनौ भवतो मिथुनादेवै-  
 तद्वस्त्रण पाशात्प्रबाः प्रमुच्चति ॥१६॥ स उ  
 त्तरस्यामेव पयस्यायां मेपीमवदधाति । दक्षिणस्यां  
 मेपमेवमिवही मिथुनं क्लृप्तमुक्तरतो हि स्त्री पु-  
 मांसमुपश्नेते ॥१७॥

एवंयत्रयत्रकर्मणप्रत्यक्षपशुः प्रदेयत्वेनोक्तस्तत्रतत्र  
 पिष्टपशुरेवाभिप्रेत्तोनतु साक्षात्पशुः साक्षात्यश्वनोहिनन  
 कालेशोचन्तितस्मात्तेयज्ञार्हनिभवन्तिअतएवसृष्ट्यारंभक  
 लेन्वसिसृक्षुणाप्रजापतिनादौस्वमनसः सकाशानुपुरुषोनि  
 मितश्चक्षुपोऽश्वः प्राणादगौः श्रोत्रादविवाचो जश्चनिर्मि  
 तः एवंसृष्टैपश्वोनिर्वपनकालेयदाअशोचन् सुदेत्थंतेयां  
 शोकोपहतः लोकेपुरुषपश्वोद्गृषादपशुर्नहिंस्यस्तथाश्व  
 रूपश्चतुप्पादपशुर्नहिंस्यः एवंगौरविरजश्वनहन्तव्याः किंचै

तेषाव उत्क्रान्तमेधाभमेध्याअयज्ञियाः सन्तितस्मादेते  
पांमांसंनाशितव्यगित्याहशतपथव्रात्यणे.

हरि: ॐ प्रजापतिर्वाऽइदमयऽआसीदेक एव सोऽका  
मयतात्रं सृजेय प्रजायेयेति स प्राणेभ्य एवाधि  
पशुन्निरमिमीत मनसः पुरुषं चक्षुपोऽश्वं प्राणा  
द्रां श्रोत्रादविं वाचोऽजं तद्यदेनान्प्राणेभ्योऽधि  
निरमिमीत तस्मादाहुः प्राणाः पशाव इति मनो  
वै प्राणानां प्रथमं तद्यन्मनसः पुरुषं निरमिमीत  
तस्मादाहुः पुरुषः प्रथमः पशुनां वीर्यवत्तमङ्गनि  
मनो वै सर्वे प्राणा मनसि हि सर्वे प्राणाः प्रति  
ष्ठितास्तद्यन्मनसः पुरुषं निरमिमीत तस्मादाहुः  
पुरुषः सर्वे पशाव इति पुरुषस्य ह्येवैते सर्वे भव  
न्ति ॥६॥ तदेतदन्नं सृष्टा

हरि: ॐ अथोत्सर्गैरुपतिष्ठत । एतद्वै यत्रैतान्प्रजा  
.पतिः\_पशुनालिप्सत तऽआलिप्स्यमाना अओचं  
स्तेपामैतैरुत्सर्गैः शुचं पाप्मानमपाहंस्तथैवैपामय  
मेतदेतैरुत्सर्गैः शुचं पाप्मानमपहन्ति ॥२८॥  
तद्धैके । यं-यमेव पशुमुपदधति तस्य तस्य शु

द्यनैडकीरुणा विन्देत्ताः प्रणिड्य निश्लेषयेद्यगुऽ  
 अनैडकीर्न विन्देदथोऽपि कुशोणा एव स्युः  
 ॥१५॥ तद्यन्मेपश्च मेषी च भवतः । एष वै-  
 प्रत्यक्षं वस्णस्य पशुर्यन्मेपस्तत्प्रत्यक्षं वस्णपा-  
 शात्प्रज्ञाः प्रमुच्चति यवमयौ भवतो यवान्हि  
 जक्षुपीर्वस्णोऽगृहणान्मथुनौ भवतो मिथुनादेवै-  
 तद्वस्ण पाशात्प्रबाः प्रमुच्चाति ॥१६॥ स उ  
 त्तरस्यामेव पयस्यायां मेषीमवदधाति । दक्षिणस्यां  
 मेपमेवमिवही मिथुनं कल्पमुत्तरतो हि स्त्री पु-  
 मांसमुपशोते ॥१७॥

एवंयत्रयत्रकर्मणप्रत्यक्षपशुः प्रदेयत्वेनोक्तस्ततत्र  
 पिष्टपशुरेवाभिग्रेत्तोनतु साक्षात्पशुः साक्षात्यश्वो हि हनन  
 रालेशो चन्तिरस्मात्तेयज्ञाहर्निभवन्ति अतएव सृष्ट्यारंभका  
 लेब्रं सिसृष्टुणाग्रजापतिनादौ स्वमनसः सकाशान् पुरुषो नि  
 र्मितश्चक्षुपोऽश्वः प्राणाद्गौः श्रोत्रादविवाचो जश्वै निर्मि-  
 तः एवं सृष्टैतेपश्वो निर्वपनकालेयदा अश्वो च नृतदेव्यं तेषां  
 शोकोपहतः लोकेऽपुरुषपर्वपशुर्गुर्हिंस्यस्तथाश्व  
 स्त्रुपश्चतुर्ष्वादपशुर्गुर्हिंस्यः एवं गौरविरजश्वनहनतव्याः किंचै

तेषावउत्क्रान्तमेधाऽमेधाअयज्ञियाः सन्तितस्मादेते  
पांमांसंनाशितव्यमित्याहशतपथब्राह्मणे.

हरिः ॐ प्रजापतिर्वाऽइदमयऽआसीदेक एव सोऽका  
मयतात्रं सृजेय प्रजायेयेति स प्राणेभ्य एवाधि  
पशुनिरमिमीत मनसः पुरुषं चक्षुपोऽश्वं प्राणा  
द्वां थ्रोत्रादविं वाचोऽजं तद्यदेनान्प्राणेभ्योऽधि  
निरमिमीत तस्मादाहुः प्राणाः पशाव इति मनो  
वै प्राणानां प्रथमं तद्यन्मनसः पुरुषं निरमिमीत  
तस्मादाहुः पुरुषः प्रथमः पश्चनां वीर्यवत्तमऽनि  
मनो वै सर्वे प्राणा मनसि हि सर्वे प्राणाः प्रति  
ष्ठितास्तद्यन्मनसः पुरुषं निरमिमीत तस्मादाहुः  
पुरुषः सर्वे पशाव इति पुरुषस्य ह्यैवैते सर्वे भव  
न्ति ॥६॥ तदेतदत्रं सृष्टा

हरिः ॐ अथोत्सगैरुपतिष्ठत । एतद्वै यत्रैतान्प्रजा  
.पतिः पश्चनालिप्सत तऽआलिप्स्यमाना अठोचं  
स्तेपामेतैरुत्सगैः शुचं पाप्मानमपाहंस्तथैवैपामय  
मेतदेतैरुत्सगैः शुचं पाप्मानमपहन्ति ॥२८॥  
तद्वैके । यं-यमेव पशुमुपदधति त्रस्य नस्य शु

चमुत्सृजन्ति नैश्चुचं पाप्मानमभ्युपदधामहा । इति  
 ते ह ते शुचं पाप्मानमभ्युपदधति । यां हिष्ठूर्वस्य  
 शुचमुत्सृजन्ति तामुत्तरेण सहोपदधति ॥ २९ ॥  
 विपरिक्राममु हैक । उपतिष्ठन्ते । उर्ध्वा शुचमु  
 त्सृजाम इति ते ह ते शुचं पाप्मानमनूदन्त्यध्वं  
 ह्येतेन कर्मणैत्यूर्ध्वामु शुचमुत्सृजन्ति । ३० ॥ वा  
 ह्येनैवाग्निमुत्सृजेत् । इमे वै लोका एषोऽग्निरेभ्य  
 स्तल्लोकेभ्यो वहिर्धा शुचं दधात्युदङ्ग तिष्ठन्तेतस्यां  
 ह दिश्येते पश्वस्तद्यत्रैते पश्वस्तदेवेष्वेतक्षुचं  
 दधाति ॥ ३१ ॥ पुरुषस्य प्रथममुत्सृजति । तं हि  
 प्रथममुपदधातीमं मा हिंसीर्द्वपादं पशुमिति द्वि  
 पादाएप पशुर्यत्पुरुषस्तं मा हिंसीरित्येतत्सहस्रा  
 क्षो मेधाय चीयमान इति, हिरण्यशकलैर्वा । ए  
 प सहस्राक्षो मेधायेत्यन्नायेत्येतन्मयुं पशुं मेध  
 मग्ने जुपस्वेति किम्पुरुषो वै मयुः किम्पुरुषमग्ने  
 जुपस्वेत्येतत्तेन चिन्वानस्तन्वो निषीदेत्यात्मा वै  
 तनूस्तेन चिन्वान आत्मानं संस्कुरुष्वेत्येतन्मयुं ते

शुगृछनु यंद्विष्मस्तं ते शुगृछलिति तन्मयौ च  
 शुचं दधाति यं च द्वेष्टि तस्मिंश्च ॥३२॥ अथा  
 श्वस्य । इमं मा हिंसीरेकशाफं पशुमित्येकशाफो  
 वाऽएप पशुर्यदश्वस्तं माहिंसीरित्येतत्कनिक्रदं  
 वाजिनं वाजिनेष्विति कनिक्रदो वाऽएप वाज्यु वा  
 जिनेपु गौरमारण्यमनु ते दिशामीति तदस्मै गौ  
 रमारण्यमनुदिशति तेन चिन्वानस्तन्वो निपीदेति  
 तेन चिन्वानआत्मानं संस्कुरुष्वेत्येतद्वौरं ते शुगृ  
 छनु यं द्विष्मस्तं ते शुगृछलिति तद्वौरे च शुचं  
 दधाति यं च द्वेष्टि तस्मिंश्च ॥३३॥ अथगोः ।  
 इमं साहस्रं शतधारमुत्ममिति साहस्रो वाऽएप  
 शतधार उत्सो यद्वौर्यच्युमानं सरिरस्य मध्य  
 इतिमे वै लोकाः सरिरमुपजिव्यमानमेपु लोके  
 षिव्येतद्घृतं दुहानामदितिं जनायेति धृतं वाऽए  
 पादितिर्जनाय दुहेऽमे मा हिंसीःपरमे व्योमन्त्रि  
 तीमे वै लोकाः परमं व्योमैषु लोकेष्वेनं मा हिं  
 सीरित्येतद्वयमारण्यमनु ते दिशामीति तदस्मै  
 गवयमारण्यमनुदिशति तेन चिन्वानस्तन्वो नि

पीदेति तेन चिन्वान आत्मानं संस्कुरप्तेत्येतद्रव  
 यं ते शुगृच्छतु यं द्विष्मस्तंते शुगृच्छत्विति तद्रवये  
 च शुचं दधाति यं च द्वैष्टि तस्मिंश्च ॥३४॥ अ  
 थावैः । इममूर्णायुमित्यूर्णावलमित्येतदृहणस्य ना  
 मिमिति वार्णो ह्यविस्त्वचं पश्चानां द्विपदां च तु  
 ष्पदामित्युभयेपां हैप पश्चानां त्वग्द्विपदां च च तु  
 ष्पदां च त्वश्चुः प्रजानां प्रथमं जनित्रमित्येतद्ध  
 त्वष्टा प्रथमं स्थं विचकाराग्ने मा हिंसीः परमे  
 व्योमन्तीमि वै लोकाः परमं व्योमैपु लोकेष्वेनं  
 मा हिंसीरित्येतदुष्टमारण्यमनु ते दिशामीति त  
 दस्माऽउप्रमारण्यमनुदिशति तेन चिन्वानस्तन्वो  
 निर्षीदेति तेन चिन्वान आत्मानं संस्कुरप्तेत्येत  
 दुष्टं ते शुगृच्छतु यं द्विष्मस्तं ते शुगृच्छत्विति त  
 दुष्टेच शुचं दधाति यं च द्वैष्टि तस्मिंश्च ॥३५॥  
 अथाजस्य । अजो ह्यग्नेरजनिष्ट शोकादिति य  
 द्वै प्रजापतेः शोकादजायत तदग्नेः शोकादंजा  
 यत सोऽअपश्यज्जनितारमग्रऽइति प्रजापतिवै  
 जनिता सोऽपश्यत्प्रजापतिमग्रऽइत्येतत्तेन देवा दै

वतामयऽआयन्निति वाग्वा॒अंजो वा चो वै देवा  
 देवतामयमायंस्तेन रोहमायनुपमेध्यासं इति स्व  
 गों वै लोको रोहस्तेन स्वर्गलोकमायनुप मेध्या  
 स इत्येतच्छरभमारण्यमनु ते दिशामीति तदस्मै  
 शरभमारण्यमनुदिशति तेन चिन्वानस्तन्वो नि-  
 पीदेति तेन चिन्वान आत्मानं संस्कुरुष्वेतच्छर  
 भं ते शुगृच्छतु यं द्रिष्मस्तं ते शुगृच्छत्विंति तच्छ  
 रमे च शुचं दधाति यं च द्वेष्टि तस्मिंश्च॥३६॥  
 तदाहुः । यावै तत्प्रजापातिरैतेषां प्रशूनां शुचं पा-  
 प्मानमपाहंस्तऽएते पञ्च एशावोऽुभवंस्तु एतं उत्त-  
 त्वकान्तमेधा अमेध्या अयज्ञियास्तेषां ब्राह्मणो  
 नाश्रीयात्तानेतस्यां दिशि दधाति तस्मादेतस्यां दि-  
 शि पर्जन्यो न वर्षुको यज्ञैते भवन्ति ॥३७॥

नह्यधुनाप्येतादशाः के पिपशावोविद्यन्तेयैवैहननकाले  
 किमपिताशोचेयुस्ततः शोचतां साक्षात्पश्चान्यज्ञा उनर्हत्वा  
 दुत्सृज्यत्वमेवास्तिनतुहननीयत्वमितिभावः न चतेषांयज्ञानहै  
 त्वेकोवलस्तच्छ्रोकएव हेतुरितिवाच्यं तेषाममेध्यत्वस्यापि हेतु  
 त्वात् कथममेध्यत्वमितिचेदुच्यते सर्वथा उन्नाभावकाले देवाः

प्रथमं यज्ञियसारं मे धं पुरुषप एव प्रदद्वशुः ततो यज्ञासि धर्थं प्रथमं  
 पुरुषमालोभिरेतदानिमालव्यात्पुरुषपान्मेधोऽुपक्रम्या श्वं प्रवि-  
 पुः पुरुषस्तु किं पुरुषपाजितः पश्चात् पुरुषं परित्यज्य प्रविष्टमेधत्वे  
 नाश्वं मेधयं प्रदद्वयमेधधर्थमश्वमालभन्ततदालव्यादश्वादपि मे-  
 धउत्क्रम्य गां प्रविवेश अश्वश्वगौ रमृगो बभूवत तोऽुश्वं त्यक्त्वा  
 मेधधर्थं प्रविष्टमेधत्वेन गां मेधयं ज्ञात्वात्मालोभिरेतस्मादपि मेधो  
 निः सृत्याविं प्राविशत् गौश्वगवयोऽुभवत् ते गां परित्यज्या दुविं  
 मेधयं प्रज्ञाय मेधार्थं तमथालेभिरेततोऽुपि मेधोऽुपक्रम्या जां प्रवि-  
 पुः आविस्तू श्रेभवत् अविं परित्यज्या दुजोयदालव्यस्तदामेधः  
 पृथिवीं प्राविशत् अजश्वशरभोऽुभवत् तदनंतरं देवाः पृथिव्यां  
 मेधमनुजग्मुस्तदामेधो व्रीहि रुषो भूत्वावहिर्निसृतस्ततो व्रीहि  
 मैश्योऽुभवत् एवं पूर्वोक्तरीत्या पुरुषस्य मेधयत्वे पुत्रान्तमेध  
 त्वादमेधयत्वं जातमश्वाद्यजपर्यन्तानां तु प्रविष्टमेधत्वेन मेध  
 त्वे जाते प्य पक्रान्तमेधत्वादमेधयत्वं निष्पन्नम् अन्येषां पशुनां  
 तु स्वभावत एव मेधवत्वाभावात्सर्वैषपश्चवोऽुमेध्याः सञ्ज्ञिअ-  
 तः सर्वैषां पशुनाम मेधयत्वेन यज्ञानर्हत्वात्कदापितदर्थं नहन्त  
 व्यास्तन्मां सादीनिचनाश्रीयान् किंच पूर्वोक्तमेधो यस्मात्  
 व्रीहि रुषो भवत् यस्माच्चाश्वादि पशुपु प्राविशत् ताभ्यां हेतुभ्यां

श्रीहिनिर्मितपशुः केवलोद्धीहिरेव वात्तत्पशु संज्ञया सांस्कि  
 य माण आलभ्यते न तु साक्षात्पशुः न चानेन केवलै न हास्येन  
 ब्रीहिपशु नैव यष्टव्यं किं तु पुरोडाशेन सह यष्टव्यं ततो यहै व  
 स्यः पशु भैव तित है वत्यं पुरोडाशमनुनिवेषन्ति न चास्य ब्रीहेः  
 पुरोडाशस्य चरोमत्वगादिमत्वा भावात्पशुत्वं न संगच्छत इति  
 वाच्यं तत्तु पशुपिष्टकिंशास्फलीकरणादिनांत्वग्रामांसरोमा  
 सृगादित्वप्रतिपादने न पशुत्वप्रतिपादनात् तथा च स्पष्टमृ  
 ग्वेदान्तर्गतैरेय व्राह्मणे

हरिः ॐ पुरुषं वै देवाः पशुमालभंत-तस्मादालब्धान्मे  
 ध उदक्रामत्सोऽश्वं प्राविश्च तस्मादश्वो मैध्योऽ भव  
 दथैन मुक्रांतमेधमस्यार्जित, स किं पुरुषो भवत्ते  
 उश्वमालभंत. सोऽश्वादालब्धादुदक्रामत्संगां  
 प्राविश्च तस्मान् गौमैध्यो भवदथैन मुक्रांतमेधम  
 स्यार्जित, स गौरमृगो भवत्ते गांमालभंत. स गो  
 रालब्धादुदक्रामत्सोऽविं प्राविश्च तस्मादविमैध्यो भ  
 वदथैन मुक्रांतमेधमस्यार्जित, स गवयो भवत्ते उवि  
 गालभंत. सोऽवेरालब्धादुदक्रामत्सोऽजं प्राविश्च  
 तस्मादजो मैध्यो भवदथैन मुक्रांतमेधमस्यार्जित, स

उपर्युक्ते भवत्सोऽु जे ज्योत्तमामिवारं मत्. तस्मादेष प एतेषां पश्चनां प्रयुक्ततमो यदजस्तेऽु जमालभंत्. सोऽु जादालब्धादुदक्रामत्स इमां प्राविशत्तस्मादियं मेध्या भवदैनमुल्कांतमेधमत्याजीत्, स शरभोऽु भवत्त एव उत्क्रांतमेधा अमेध्याः पश्चवस्तस्मादेतेषां नाश्रीयात्तमस्यामन्वगच्छुत्सोऽु नुगतो ब्रीहिरभवत्तद्यत्पश्चौ पुरोळाशमनु निर्विपंति, स मेधेन नः पशुनेष्टमसत् केवलेन नः पशु नेष्टमसदिति. स मेधेन हास्य पशुनेष्टं भवति के वलेन हास्य पशुनेष्टं भवति य एवं वेद ॥ ८॥

स वा एष पशुरेवालभ्यते यत्पुरोळाशस्तस्य यानि किंशास्त्रणितानि रोमाणि, ये तु पाः सा त्व ग्ये फलीकरणास्तदसृग्यत्पिष्टुं किवन् सास्तन्मांसं; यत्किञ्चित्कंसारं तदस्थि. सर्वेषां वा एष पश्चनां मेधेन यजते य पुरोळाशेन यजते. तस्मादाहुः पुरोळाशसत्रं ह्लोवयमिति युवमेतानि दिवि रोचनान्यग्निश्चसोम सक्रन् अधत्तं; युवं सिंधू० रभिशस्तेरवद्यादभीषोमानमुंचतं गृभीतानिति ।

पायै यजति. सर्वाभिर्वा एप देवताभिरालब्धो भवति यो दीक्षितो भवति. तस्मादाहुर्न दीक्षितस्या श्रीयादिति स यदग्नीपोमावमुंचतं गृभीतानिति व पायै यजति, सर्वाभ्य एव तदेवताभ्यो यजमानं प्रमुंचति. तस्मादाहुरशितव्यं वपायां हुतायां यजमानो हि स तर्हि भवति. आन्यं दिवो मात रित्वा जभारेति पुरोळाशस्य यजति. अमथना दन्यं परि श्येनो अद्रेरितीत इव च श्येप इत इव च मेध समाहतो भवति. स्वदस्व हव्या समिपो दिदीहिति पुरोळाशःस्थिष्ठ रुतो यजति. हविरे वास्मा एतत्स्वदयतिपमूर्जमात्मन् धत्त. इळामुपव्ययते. पश्चावो वाइळा पश्चूनेव तदुपव्ययते पश्चन्यजमाने दधति ॥९॥

॥ तथैवयुज्ञेदांतर्गतशतपथब्राह्मणेषि ॥

एविः अ० पश्चुर्ह वाएप आलभ्यते यत्पुरोळाशः॥५॥  
पुरुषं ह वै देवाः । अग्ने पश्चुमालेभिरे तस्याल  
धस्य मेधोऽुपचक्राम मोऽुभ्यं प्रविवेश तेऽुभ्य  
मालभन्त तस्यालच्छस्य मेधोऽुचक्राम स गां

प्रविवेश ते गामालभन्त तस्यालब्धस्य मेघोऽप  
 चक्राम सोऽुर्विं प्रविवेश ते ऽुर्विमालभन्त तस्या  
 लब्धस्य मेघोऽुपचक्राम सोऽुजं प्रविवेश ते ऽुज  
 मालभन्त तस्यालब्धस्य मेघोऽुपचक्राम ॥६॥  
 स इमां पृथिवीं प्रविवेश । तं खनन्त-इवान्विपु  
 स्तमन्विन्दस्ताविमौ ब्रीहीयवौ तस्मादप्येतावेत  
 हि खनन्त-इवैवानुविन्दन्ति स यावद्वीर्यवद्भ वा  
 उअस्यैते सर्वे पश्चव आलब्धाः स्युस्तावद्वीर्यव  
 द्भास्य हविरेव भवति य एवमेतदेदात्रो सा स  
 म्पद्यदाहुः पाङ्कः पशुरिति ॥७॥ यदा पिष्टान्य  
 थ लोमानि भवन्ति । यदाप आनयस्यथ त्वग्भ  
 वति यदा संयौत्यथ मांसं भवति संतत-इव हि  
 स तर्हि भवति संततमिव हि मासं यदा॑ शृतोऽ  
 यास्थिभवति दास्तण-इव हि स तर्हि भवति दा  
 स्तणमित्यस्यथ यदुद्वासयिष्यन्नभिघारयति तंम  
 डजानं दधात्येषो सा सम्पद्यदाहुः पाङ्कः पशुरि  
 ति ॥८॥ स यं पुरुषमालभन्त । स किम्पुरुषो  
 ऽभवद्यावश्चं च गां च तौ गौरञ्ज गायक्षाभव

तां यमविमालभन्त स उग्रोऽभवद्यमजमालभन्त  
स शरभोऽभवत्स्मादेतेपां पशुनां नाशितव्यम  
एकान्तमेधा हैते पशवः ॥९॥

अन्नपुरुषंवैदेवाः पशुमालभन्तेति पुरुषस्य पशुत्वप्रदर्श  
नं ब्रीहेः पुरोडाशस्य च पशुत्वद्वयीकरणार्थमन्यथा पुरुषस्य मा  
लेभिर इत्येव वृयात् पशुपदं नो बूयात् यथा पुरुषस्य पशुत्वप्रद  
र्शनमनवद्यन्तं यैव ब्रीहेः पुरोडाशस्य च पशुत्वं निरवद्यमि तिभा  
वः न चात्र परिसंख्याता श्वादीनामेव मां सादाशनं निषिद्ध्यते  
किं तु सर्वेषां पशुत्वजा तिविशिष्टानां निषिद्ध्यते परिसंख्या  
तानां निषेधे ऽमेध्यत्वस्य हेतुत्वेन प्रदर्शितत्वात् अन्नायं  
भावः येषां येषां पशुनाम मेध्यत्वं ते पां ते पां पशुनां मां सादाश  
नं प्रतिषिद्ध्यते तत्र परिसंख्याता नाम श्वादीनामेधो त्वं क्रमणात्  
वै पुरुषनिः सृतमेधप्रवेशनैव हेतुनामेध्यत्वप्रतिपादनात् येषां  
येषां पशुनां प्रविष्टमेधत्वं ते पां ते पां पशुनामेव मेध्यत्वम् अतः ग  
रिसंख्याता श्वादिव्यतिरिक्तानां पशुत्वजा तिविशिष्टानां स  
वै पामषिपशुनां प्रविष्टमेधत्वाभावादमेध्यत्वं निषिद्धं परिसं-  
ख्यातानां त्वं पशुनां निषेधत्वादमेध्यत्वं ग्राति पादितमेव ब्रीहेः पशु  
त्वेन तत् पिष्टादिनां मां सादित्वे पितस्य मेध्यपशुत्वा तदशनं

नप्रतिपिदुंतथाचयन्त्रमांसादिनांहवनीयत्वेनभक्षणी  
 यत्वेनचप्रदर्शनंतत्रसर्वत्रब्रीहिपिणादिकमेवाभिग्रेतमितिवो  
 ध्यनोचेत्तत्पिणादिनांमांसादित्वप्रतिपादनस्यवैयर्थ्यस्यात् स  
 वाएपपशुरेवालभ्यतइत्यत्रचावधारणार्थेनैवाव्ययेनसर्वे  
 प्यपांक्ताःपशवःपुनरपिव्यवृत्यन्तेउताहोकेवलेनपांक्तपशु  
 नापुगेडाशेनयजमानास्तन्त्रेणसर्वेषांपशुनांमेधेनयजन्तइति  
 महदलभ्पलाभोक्त्तिःकिंचसाक्षादभ्यादीनामालभनेननह्य  
 श्वमेधादियज्ञसिद्धिःकुतइतिचेदुच्यते अश्वस्यमेधोयस्मि  
 न्नितिव्युत्पत्याश्वसंबंधीयज्ञियसारोमेधोमुख्योहवनीयोय-  
 स्मिन्यज्ञेसयज्ञोअश्वमेधशब्देनाभिधीयतेतथाचगोसंबंधी  
 मेधोमुख्यत्वेनहवनीयोयस्मिन्यज्ञेसगोमेधशब्देनोच्यतेषु रु  
 पसंबंधीमेधोमुख्यत्वेनहवनीयोयस्मिन्सुपुरुपमेधशब्देना-  
 ख्यायतेएवंसतिसाक्षादभ्यादिष्वालव्यपुतन्तसंबंधीमेधोह  
 वनार्थेनैवलभ्यतेतेपामपक्रान्तमेधत्वेनमेधवत्वाभावादतस्ते  
 पामालभनंवृथैवव्रीहिपशुनायजनेतुतस्यसर्वपशुमेधरुप  
 त्वादभ्यादिसंबंधीमेधोहवनार्थलभ्यतएवनचात्रमेधशब्द  
 स्याप्रशस्तमपिधज्ञवाचकत्वमंगीक्रस्याश्वमेवादिशब्देषुपग्नी  
 नत्पुरुपःकार्यःतथासतिगुरुपमेधवज्ञाऽभमेधयज्ञादिशब्दे

पुयज्ञशब्दस्यपुनस्त्वेनानर्थक्यापत्तिःस्यात् ततोवहुव्रीहि  
 रेवयुक्तः न च व्यधिकरणोवहुव्रीहि रन्याय्य इति वाच्यं संभ  
 वति समानाधिकरण एव व्यधिकरण स्यान्याय्यत्वान् सप्तमी  
 विशेषणे वहुव्रीहा विति सूत्रे सप्तमी ग्रहणे न व्यधिकरण वहुव्री  
 हेरपिज्ञापितत्वाच्यदा उभुनाव्रीहेऽधरूपत्वादश्वसंज्ञकोमे  
 धोव्रीहिमुख्यो हवनीयो यस्मिन्निति समानाधिकरणे वहुव्रीहा  
 वपि न कापि क्षतिः नायत्र मेधशाप्दस्य यज्ञिय साराहुति रिक्तः  
 कश्चिदप्यन्योगौ णोर्थः स्वीकार्यः मुख्यार्थं परित्यज्य गौणार्थं  
 स्वीकारे गानाभावात् सायनाचार्यादिकृत भाष्ये पुतस्य यज्ञिय  
 सारवाचकत्वप्रतिपादनान् सर्वेष्वप्यश्वमेधादियज्ञेष्वश्वादिमे  
 ध एव मुख्यो हूयते तस्मादश्वमेध पुस्पमेधादिशष्टेऽपुमेधशब्दउ<sup>१</sup>  
 द्विष्टः तदर्थस्यागेतत्स्वारस्य भंगापत्तिरपि स्यात् किंच वस्तुतः  
 साक्षादश्वाद्यालभने मुख्यत्वेनालभनशब्दो पिनप्रवर्त्तते आ  
 समन्तान् लभ्यते अनेनेति प्राप्यर्थकालभूधातोः सकाशात्  
 करणे खुटि सत्यालभनशष्टः सिध्यति लभूधातोश्वसकर्म  
 कत्वात् कर्मभूतो मेध आकृष्टप्रते नयत् संस्कारविशेषणमेधः  
 प्राप्यते संस्कारविशेषणोपआलभनशब्देनोच्यते तथा सति न हि  
 माक्षात् पशुसंस्कारातिशेषणतन्मेधः प्राप्यते साक्षात्पशुनामे

धवत्वभावात् ब्रीहिपश्चौतु संस्कारविशेषेणा श्यादिनां मेधः ग्रा  
 प्यतएव ब्रीहेः सर्वमेधस्तपत्वात् तस्माद्ब्रीहिपश्चोः संस्कार  
 विशेषेण एव मुख्यत्वेनालभनशब्दः प्रवक्त्तंते न चासमंतात् ल  
 भ्यते अनेनेत्यत्रमांसादिनः कर्मत्वं वाच्यं तस्योप्सिततमत्वा  
 भावात् यजमानानामालभनाख्यसंस्कारविशेषेण मेधएवे  
 पिसततमोन्तुमांसादि यद्यपि मांसादिनोपीपिसततत्वं भवति  
 तथापीपिसततमत्वाभावात्रकर्मत्वं कर्तुरीपिसततमंकर्मेति  
 सूत्रेणोपिसततमस्यैव कर्मत्वविधानात् एतावतासाक्षात् पश्चभा  
 वे प्रतिनिधिब्रीहिपश्चुरितिकेपांचित् कुतर्कः परास्तः देवकृतप  
 श्वालभनेन तु ब्रीहियवात्मको मेधः प्राप्तस्तस्मात् तत्रालभनश  
 वदो मुख्यत्वेन प्रवृत्तः ब्रीहिपश्चालभनेन यजमानोपिसतं मांसा  
 दिकमपिपिटादिस्तपं प्राप्यतएव इयं ब्रीहियवयोस्तप्त्यन्तिर्देव  
 कृतपश्चालभनस्य स्तष्ट्यारम्भकालोऽद्वृतत्वमन्नाभावकालोऽद्वृत  
 त्वं च ज्ञापयति देवालवधा श्यादीनां मृगादिस्तपैर्भवनं केवलं दे  
 वाचरणं ज्ञात्वैव तद्वन्मनुष्यैर्नाचरणीयमिति धनयाते एवंशु  
 वोक्तरीस्याब्रीहियवौ ब्रीहियवसंज्ञाभ्याम् पश्चुसंज्ञाभ्यां च नि  
 गमादिपुसंव्यवहियेते तत्राश्वमेधेब्रीहियवो वामुख्यत्वेनाश्व  
 संज्ञयापुस्तपमेधेमुख्यत्वेनपुस्तपश्चुसंज्ञयागोमेवेगो संज्ञया

ज्योतिष्ठेमादिपुच्छागादिसंज्ञाभिर्विहियत इतिवेदसं  
 केतः नोचेत् यज्ञविपयकमंत्रब्राह्मणादिपुसर्वत्राश्वादीनां वि  
 शेषपणतयोच्चारितस्यमेध्यपदस्यवैयर्थ्यस्यात् व्यावृत्याभावा  
 त् नाहिलोकेपुमेध्यत्वमेध्यत्वभेदाभ्यासुभयाविधाः साक्षादश्वा  
 दयः प्रदद्यन्ते तस्माद्व्यावर्त्यतावच्छेदकावच्छिन्नानाममेध्या  
 नामन्येपां साक्षादश्वादीनामनुपलभात्तद्व्यावर्त्तकतावच्छेद  
 कावच्छिन्नस्यमेध्यपदस्यवैयर्थ्यस्यात् न चात्रविशेषणस्यस्व  
 रूपज्ञापकत्वमेध्यत्वस्यस्वरूपभावात् मेध्यत्वमेध्यत्वं च शा  
 स्त्रानिष्पन्नमेव न तु स्वरूपनिष्पन्नशास्त्रेण च साक्षादश्वादीनाम  
 मेध्यत्वं निष्पादितं ब्रीहियवयोश्च मेध्यत्वं निष्पादितं तस्माद्व्या  
 वर्त्तकतावच्छेदकावच्छिन्नेन मेध्यपदेन व्यावर्त्यतावच्छेदका  
 वच्छिन्नाः साक्षादश्वादयएव व्यावृत्यन्ते अतः सर्वोपां साक्षाद  
 श्वादीनां मेध्यपदेन व्यावर्त्यत्वात् यज्ञविपयकमंत्रब्राह्मणादि  
 ष्वश्वादिशब्दव्रीहियववेव संज्ञायेते तत्संज्ञाकरणेकारणं तु  
 मेधस्याश्वादिपुग्रवेश एव देवष्टतालभनकालेव्रीहिरूपोयं  
 साक्षात् न्मेधोश्वशरीरप्रवेशनेनाश्वत्वं प्राप्तस्तस्मादश्वमेधेमु  
 ख्यत्वेनाद्वसंज्ञयासंस्कृयमाणः सन्नालभ्यते गोप्रविष्ट्वेन गो  
 त्वं प्राप्तस्तो गोमेधेगो संज्ञयासंस्कृयगाणः सन्नालभ्यते देन

रुतानिलभनात् पूर्वे पुरुषपस्थितत्वेन पुरुषपत्वमासीत् तस्मात् पुरुषप  
 मेधेषु पुरुषसंज्ञया संस्कुर्वन्तश्च व्रीहिं यवमेव वालभन्ते एवं सोयं  
 साक्षान्मेधो व्रीहि पुरुषो जातस्तस्माद् व्रीहि संज्ञया पौर्णमासादि  
 सर्वयागे पुरुषसंस्कृयमाणः सन् पुरोडाशत्वं ग्राम्प्रोतितं पुरोडाशं  
 पृथक् पृथक् कपाले पुरुषसंस्कुर्वन्तः सन्तः पुरोडाशं संज्ञया निर्वं  
 पन्तिपशुयागे पुरुषोः पशुपुरोडाशयोर्विहितत्वदेकत्र स्था  
 ने पशुसंज्ञया संस्कृयते अन्यत्र च व्रीहि संज्ञया संस्कृयते त  
 दनन्तरं मांससंज्ञया संस्कृयमाणपिटं पुरोडाशेन सहजु  
 ह्वते अतो यत्रयत्र मैध्यपदविशिष्टा अश्वादयोदश्यन्ते त  
 त्रसर्वत्र व्रीहि पशुरेवाभिप्रेत इति वोध्यं पूर्वकाले कर्वपुत्रे  
 ण तुरेणैन्द्रेण महाभिप्रेकेणाभिपित्तः परिक्षित् पुत्रो जनमेज  
 यः सर्वतः पृथ्वीं जयन् सन् मैध्ये नैवाद्यवेन जेन तु साक्षादश्वे  
 न किंचधान्यभक्षकं साक्षिमणं हरितस्त्रजं साक्षादश्वं लो  
 काचारमनुसृत्य सिंहासनसमिपेव वर्ध न तु यो नापिजघा  
 न तथैव भृगुपुत्रेण च्यवनेन महाभिप्रेकेणाभिपित्तः शार्यातो  
 मैध्ये नैवाद्यवेन जेन तु साक्षादश्वैन एवं वाजरलायन सोमशु  
 प्यासत्राजित पुत्रं शतानीकं मैन्द्रेण महाभिप्रेकेणाभिपिपे  
 च तस्मात् शतानीकः सर्वतः पृथिवीं जयन् परीयाय मे

ध्येनैवाश्वेनैजेतथापर्वतनारदाभ्यामभिपित्तआम्ब्राष्ट्योमे  
 ध्येनैवाश्वेनैजेनधैवपर्वतनारदाभ्यामेवाभिपित्तउग्रसेनपुत्रो  
 युधांश्रीष्टिमेध्यैवैवाश्वेनैजेतथाचकठयेनाभिपित्तोभुवन  
 पुत्रोविश्वकर्मामैःयैनैवाश्वेनैजेयस्मिन्यज्ञेविश्वकर्मणाकश्य  
 पायदत्तापृथिवीविश्वकर्मणंप्रस्तेतदत्रवीत् हेभूवनपुत्रविश्व  
 कर्मन्त्कश्चिदपिमत्योमांदातुंनार्हतिएवं सत्यपियस्मान्त्वया  
 दत्तातस्मादहंजलेनिमंक्षेतवप्रतिज्ञावृथैवेतितथावश्चिष्टः  
 पिजवनपुत्रंसुदासंमहाभिपेकेणाभिपिपेचतस्मात्सुदाःसर्वः  
 पृथिवींजयन्परीयाथ मेध्यैनैवाश्वेनैजेतथैवांगिर सःपुत्रेण  
 संवर्तेनमहाभिपेकेणाभिपित्तोऽविक्षितपुत्रोमरुत्तोमेध्यैवा  
 श्वेनैजेतस्यच्चपूर्णकामस्यमरुत्तस्यगृहेवायवःपरिवेष्टरआ  
 सन्तथाचान्तिपुत्रेणोदभयेनाभिपित्तोगोमेध्यै नैवाश्वेनैजेत  
 थाचस्पष्टमृग्वेदान्तर्गतैरेयत्राह्याप्रमपित्तिचकायाम् ॥  
 हरिः ॐ एतेन ह वा ऐद्रेण महाभिपेकेण तुरः का  
 वपेयो जनमेजयं पारिक्षितमभिपिपेच. तस्मादु  
 जनमेजयः पारिक्षितः समंतं सर्वतः पृथिवीं ज  
 यन् परियायाश्वेनच मेध्यैनैजे, तदेपाभियज्ञगा  
 था गीयते. आसंदीवति धान्यादं रुक्मिणं हरि

येते श्लोका अभिगीताः यार्थियोऽभिस्तदमयं प्रैय  
 मैधा अयाज्जयन् द्वे द्वे सहस्रे वदानामात्रेयो म  
 ध्यतो ददात्. अप्ताशीती सहस्राणि ष्वेतान्वैरो  
 चनो हयान्; ग्रष्टुं निश्वृत्य प्रायच्छुद्यजमाने पुरो  
 हिते. देशादेशात्समोऽव्यानां सर्वामामाद्यदुहितृ  
 णां; दशाददात्सहस्राण्यात्रेयो निष्ककंठयः. द  
 शनागसहस्राणि दत्त्वात्रेयो वचत्नुके; श्रांत पा  
 रिकुटान्प्रेस्त्रानेनांगस्य ब्राह्मणः शतं तुभ्यं श  
 तं तुभ्यमिति सगव प्रताम्यति; सहस्रं तुभ्यमित्यु  
 त्का प्राणान्स्म प्रतिपद्यत इति २२

एतेन ह वा ऐद्रेण महाभिपेकेण दीर्घतमामाम  
 तेयो भरतं दौष्यंतिमभिपिपेच. तस्मादु भरतो  
 दौष्यंतिः समंतं सर्वतः पृथिवीं जयन्यरीयायाद्वै  
 दृच मैध्यैरीजे तदप्येते श्लोका अभिगीताः हि  
 रण्येन परीवृतान्कृष्णान् शुल्कदत्तो मृगान्; मणा  
 रे भरतो ददाच्छतं वदानि सप्तच भरतस्यैप दौ  
 ष्यंतेराग्निः साचिगुणे चितः; यस्मिन्त्सहस्रं ब्रा  
 ह्माणा वदृशो गावि मेजिरे. अप्तासप्ति भरतो

दौष्ट्यंतिर्थमुनामनु; गंगायां वृत्रघे वधनात्पंचपंचा  
 शतं हयान्. त्रयस्तिंशच्छतं राजाऽश्वान् वधवा  
 य मेध्यान्; दौष्ट्यंतिरत्यगाढ़ाज्ञो मायां मायावत्तरः  
 महा कर्म भरतस्य न पूर्वे नापरे जनाः; दिवं  
 मर्त्ये इव हस्ताभ्यां नोदापुः पंच मानवा इत्ये  
 तं ह वा ऐंद्रं महाभिषेकं वृहदुक्थ ऋषिदुर्मुखा  
 य पांचालय ग्रोवाच. तस्मादु दुर्मुखः पांचालौ  
 ऽराजा सन्निविद्यया समंतं सर्वतः पृथिवीं जयन्प  
 रीयायैतं ह वा ऐंद्रं महाभिषेकं वासिष्ठः सात्य  
 हव्योऽत्यरातये जानंतपये ग्रोवाच. तस्मादृत्यरा  
 तिर्जीनंतपिरराजा सन्निविद्यया समंतं सर्वतः पृथि  
 वीं जयन्परीयाय. स होवाच वासिष्ठः सात्यह  
 व्यो जैपीवैं समंतं सर्वतः पृथिवीं महन्मा गमये  
 ति स होवाचात्यरातिर्जीनंतपिर्यदा ब्राह्मणोत्तर  
 कुस्त्र जयेयमथ त्वमु हैव पृथिव्यै राजा स्याः  
 सेनापतिरेव ते ऽहं स्यामिति स होवाच वासिष्ठः  
 सात्यहव्यो देवक्षेत्रं वै तन्नवैतन्मत्यौ जेतुमहस  
 दक्षो वै म आ ऽतः इदं दद इति ततो हात्य

तस्यजं, अद्वं बवंध सारंगं देवेभ्यो जनमेजय  
 इत्येतेन ह वा ऐद्रेण महाभिषेकेण च्यवनो गा  
 र्गवः शार्यां मानवमभिषिषेच तस्मादु शार्या  
 तो मानवः समंतं सर्वतः पृथिवीं जयन्परीयाया  
 इवेन च मेध्येनेजे. देवानां हापि सत्रे गृहणनि  
 रासैतेन ह वा ऐद्रेण गहाभिषेकेण सोगशुप्ता  
 वाजरत्नायनः शतानीकं सात्राजितमभिषिषेच.  
 तस्मादु शतानीकः सात्राजितः समंतं सर्वतः ॥१॥  
 पृथिवीं जयन्परीयायाइवेन च मेध्येनेजे. एतेन ह  
 वा ऐद्रेण महाभिषेकेण पर्वतनारदावां वाष्पयम  
 भिषिषिचतुस्तस्माद्वांवाष्पयः समंतं सर्वतः पृथि  
 वीं जयन्परीयायाइवेन च मेध्येनेजे एतेन ह वा  
 ऐद्रेण महाभिषेकेण पर्वतनारदौ युवांशौष्ठमौष्ट्र  
 सैन्यमभिषिषिचतुस्तस्मादु युदांशौष्ठरौयसैन्यः स  
 मंतं सर्वतः पृथिवीं जयन् परियायाइवेन ० घ मे  
 ध्येनेजे. एतेन ह वा ऐद्रेण महाभिषेकेण कठय  
 ा विश्वकर्मणं गौतमगमभिषिषेच. तस्मादु विश्व  
 कर्मा भौतगः समंतं सर्वतः पृथिवीं जयन्परीया

याऽनेन च मैथ्येनेजे. भूमिर्ह जगावित्युदाहरंति.  
 न मा मर्यः कश्चन दानुमहर्ति विश्वकर्मन् भौव  
 न मां दिदासिथ; निगंध्ये इहं सलिलरथ मध्ये  
 गोषस्त एष कश्यपायास संगर इस्येतेन ह वा  
 ऐंद्रेण महाभिषेकेण वसिष्ठः सुदासं पैजवनम  
 भिषिपेच. तस्मादु सुदाः पैजवनः समंतं सर्वतः  
 पृथिवीं जयन्परीयायाश्वेन च मैथ्येनेजे. एतेन ह  
 वा ऐंद्रेण महाभिषेकेण सर्वतं आंगिरसो मरुत्त  
 माविक्षितमभिषिपेच. तस्मादु मरुत्त आविक्षितः  
 समंतं सर्वतः पृथिवीं जयन् परीयायाश्वेन च मै  
 ध्येनेजे. तदप्येष श्लोकोऽभिगतिं, मरुतः परि  
 वेष्टरो मरुत्तस्यावसन् गृहे आविज्ञितस्य कर्मिषे  
 विश्वे देवाः सभासद इति २१

एतेन ह वा ऐंद्रेण महाभिषिकेणोदग्य आत्रेयों  
 गमभिषिपेच. तस्मादंगः सगंतं सर्वतः पृथिवीं ज  
 यन्परीयायाश्वेन च मैथ्येनेजे. स होवाचालोपां  
 गो दशानागसहस्राणि दशदासीसहस्राणि ददा  
 मिते ब्राह्मणोप गा ऽस्मिन् यज्ञे व्यस्येति तद्

राति जानंतपिमान्तवीर्यं निःशुक्रममित्तपनः शु  
ष्मिणः शैव्यो राजा जघान् तस्मादेवंविदुपे त्रा  
ह्याणायैवंचक्रुपे न क्षत्रियो दुर्बोन्नेद्रापूदद एवेय  
चेदूमग्राणो जहादिति जहादितिः २३

॥ तथाच शतपथब्राह्मणे ॥

हरिः ॐ एतेन हेन्द्रोतो दैवापः शौनकः । जनमेज-  
यं पारिक्षितं याज्यां चकार तेनेष्टा सर्वा पाप-  
कृत्यां सर्वा ब्रह्महत्यामपजघान सर्वा; ह वै पाप  
कृत्यां सर्वा ब्रह्महत्यामपहन्ति योऽश्वमेधैन यज-  
ते ॥ १ ॥ तदेतद्वाथयाभिगितम् । आसन्दीवति  
धान्यादं रुक्मिणं हरितस्यजम् अवभादश्व;  
सारंगं देवेभ्यो जनमेजय इति ॥ २ ॥ एतेऽ-  
एव पूर्वोऽअंहनी । ज्योतिरातिरात्रस्तेन भीमसेन-  
मेतेऽएव पूर्वोऽअहनी गौरातिरात्रस्तेनोयसेनमेतेऽए-  
व पूर्वोऽअहनीऽआयुरातिरात्रस्तेन श्रुतसेनभिल्येते  
पारिक्षितीयस्तदेतद्वाथयाभिगितं पारिक्षिता य-  
ज्ञमाना अश्वमेधैः परोऽुवरम् अजहुः कर्म पा-  
पकं पुण्याः पुण्येन कर्मणेति ॥ ३ ॥ एतेऽए

पूर्वेुअहनी । अभिजिदतिरात्रस्तेन ह पर आट्  
 णार ईजे कौसत्यो राजा तदेतद्राथयाभिगीतम-  
 दणारस्य परः पुत्रोऽश्वं मैथ्यमवन्धयत् हैरण्यना-  
 भः कौसल्यो दिशः गूणी अमंहतोति ॥ ४ ॥  
 एतेऽएव पूर्वेुअहनी । विश्वजिदतिरात्रस्तेन ह  
 पुम्कुत्सोढौर्गहेणेजुऐक्षवाको राजा तस्मादेतद-  
 पिणाभ्यनूक्तमस्माकमत्र पितरस्तुआसन्तसाऽ  
 ऋपयो दौगेहे वध्यमानऽइति ॥ ५ ॥ एतेऽ  
 एव पूर्वेुअहनी । महात्रस्तिरात्रस्तेन ह मरुत  
 आविक्षित ईजऽआयोगवो राजा तस्य ह ततो  
 मरुतः परिवेष्टारोऽग्निः क्षत्ता विश्वे देवाः सभा  
 सदो वभुस्तदेतद्राथयाभिगीतं मरुतः परिवेष्टा-  
 रो मरुत्स्यावसन्गृहे आविक्षितस्याग्निः क्षत्ता  
 विश्वे देवाः सभासद इति मरुतो ह वै तस्य प-  
 रिवेष्टारोऽग्निः क्षत्ता विश्वे देवाः सभासदो भव-  
 न्ति योऽश्वमेधेन यजते ॥ ६ ॥ एतेऽएव पूर्वेु  
 अहनी । अषोर्यामोऽतिरात्रस्तेन हैतेन क्रैव्य ईजे  
 गात्रचाल्ने राजा क्रिनय इति ह वै पुरा गत्या

लानाचक्षते तदेतद्राथयाभिगीतम् अश्वं मेध्यमा-  
 लभत क्रिवीणामतिपुरुपः पञ्चालः परिवक्तार्या-  
 सहस्रशतदक्षिणमिति ॥ ७ ॥ अथ द्वितीयया-  
 । सहस्रमासन्नयुता शता च पञ्चविंशतिः दि-  
 क्कोन्दिक्कः पञ्चालानां ब्राह्मणा या विभेजिरइ-  
 ति ॥ ८ ॥ त्रिवृदभिष्ठोमः । पञ्चदश उक्थ्यः  
 सप्तदशं तृतीयमहः सोक्थकमेकविंशः पोडशी  
 पञ्चदशी रात्रिस्थिवृत्संधिरित्येषोऽ नुष्टुप्सम्पन्न  
 स्तने हैतेन ध्वसा द्वैतवन ईंजो मात्स्यो राजा य  
 त्रैतद्वैतवनं सरस्तदेतद्राथयाभिगीतं चनुर्दश द्वैत  
 वनो राजा संग्रामजिद्यान् इन्द्राय वृत्रघेऽवभा-  
 च्चस्माद्वैतवनं सर इति ॥ ९ ॥ चनुविंशाः प-  
 वमानाः । त्रिवृदभ्यावर्त्ते चनुश्वत्वारिंशाः पवमा-  
 ना एकविंशमभ्यावर्त्तमष्टाचत्वारिंशाः पवमानास्त्रा-  
 यस्त्रिंशमभ्यावर्त्तमाभिष्ठोमसामाद्रात्रिंशान्युक्थ्यान्ये  
 कविंशः पोडशी पञ्चदशी रात्रिस्थिवृत्संधिरिति  
 ॥ १० ॥ एतद्विष्णोः क्रान्तम् । तेन हैतेन भर-  
 तो दौःप्यन्तिरीजे तेनेष्टेमां व्याप्तिं यानके

रतानां तदेतद्राथयाभिगीतगष्टासप्ततिं भरतो दौः  
 प्यन्तिर्यमुनामनु गङ्गायां वृत्तघेऽवभात्पञ्चपञ्चा-  
 शतं हयानिति ॥ २१ ॥ अथ द्वितीयया । त्र-  
 यस्तिंशां शतं राजाश्वान्वद्धाय मेध्यान् सौगुम्बि  
 रस्यष्टादन्यानमायान्मायवत्तर इति ॥ २२ ॥ अ-  
 थ तृतीयया । शकुन्तला नाडपित्यप्सरा भरतं द-  
 धे परः सहस्रानिन्द्रायाश्वान्मेध्यान्य आहराद्विजि-  
 त्य पृथिवीं सर्वाभिति ॥ २३ ॥ अथ चतुर्थ्या ।  
 महदय भरतस्य न पूर्वे नापरे जनाः । दिवं म  
 र्त्य-इव वाहुभ्यां नोदापुः पञ्च मानवा इति ॥  
 २४ ॥ एकविंशस्तोमेन । ऋपभो यज्ञनुर ईजे  
 श्विक्षानां राजा तदेतद्राथयाभिगीतं यज्ञतुरे यज-  
 माने व्रह्माण ऋपभेजनाः अश्वमेधे धनं लब्ध्या  
 विभजन्ते स्म दक्षिणा इति ॥ २५ ॥ त्रयस्तिं  
 श्वस्तोमेन । शोणः सात्रासाह ईजे पाञ्चालो  
 राजा तदेतद्राथयागिगीतं सात्रासहे यजमनेऽश्व  
 मेधेन तौरेशाः उदिरते त्रयस्तिंशाः पद् सहस्रा-  
 णि वर्गिणामिति ॥ २६ ॥ अथ द्वितीयया । प

दृपद् पड़ा सहस्राणि यज्ञे कोकपिंतुस्तव उदी  
 रहे त्रयस्तिशाः पट् सहस्राणि वर्मिणामिति ॥  
 १७ ॥ अथ तृतीयथा । सात्रासहे यजमाने पा  
 त्त्वाले राज्ञि मुख्यजि अमाद्यदिन्दः सोमेनातृष्ट  
 न्त्राह्यणा धनैरिति ॥ २८ ॥ गोविनतेन शता  
 नीकः । सात्राजित ईंजैकाद्यस्याश्वमादाय त  
 तो हैतदर्वाकाशयोऽुभीत्रादधतुआत्तसोमपीथाः  
 स्म इति वदन्तः ॥ २९ ॥ तस्य विंधा चतुर्वै  
 शाः पवमानाः । त्रिवृद्भ्यावर्त्त चतुश्चत्वारिंशाः  
 पवमाना एकविंशान्याज्यानि त्रिष्वान्युक्त्यान्ये  
 कविंशानि पृष्ठानि पट्त्रिंशाः पवमानाख्यस्तिश  
 मभ्यावर्त्तमाग्निषेमसामादेकविंशान्युवथान्येकविंशः  
 पोडशी पञ्चदशी रात्रिस्तिवृत्संघिः ॥ २० ॥  
 तदेतद्राययाभिर्गीतं । शतानीकः समन्तासु मे-  
 ध्यं सात्राजितो हयम् आदत्त यज्ञं काशीनां भ  
 रतः सत्वतामिवेति ॥ २१ ॥ अथ द्वितीयथा ।  
 श्वेतं समन्तासु वशं चरन्तं शतानिको धूतराप्र  
 स्य गेत्यग् आदाय सहा दशमास्यमश्च शतानी-

को गोविनतेन हेजुइति ॥ २२ ॥ अथ चनु  
 र्था । महदय भरतानां न पूर्वे नापरे जनाः दिवं  
 गत्यै-इव पक्षाभ्यां नादोगुः सप्त मानवा इति ॥  
 २३ ॥ अथातो दाक्षिणानाम् । मध्यं प्रति राष्ट्र  
 स्य यदन्यदूर्मेश्व पुरुषेभ्यश्च ब्रह्मणस्य च वित्ता  
 त्प्राची दिग्घोनुर्दक्षिणा ब्रह्मणः प्रतिच्यध्वयोरुदी  
 च्युद्रातुस्तदेव होतृका अन्वाभक्ताः ॥ २४ ॥ उ  
 दयनीयायां संस्थितायाम् । एकविंशतिं वशा  
 अनूबन्ध्या आलभते मैत्रावर्षणवैश्वदेवीर्वाहिस्पत्या  
 एतासां देवतानामास्यै तद्यत्काहिस्पत्यान्स्या भव  
 न्ति ब्रह्म वै वृहस्पतिस्तदु ब्रह्मण्येवान्ततः प्रति  
 तिष्ठति ॥ २५ ॥ अथ यदेकविंशतिर्भेवन्ति ।  
 एकविंशो वाऽएप य एप तपति द्वादशा मासाः  
 पञ्चर्त्तरवस्थय इमे लोकां असावादित्य एकविं  
 श एतामभिसम्पदम् ॥ २६ ॥ उदवशानीया  
 यां संस्थितायाम् । चतुर्थश्च जायाः कुमारीं प  
 ञ्चमीं चत्वारि च शतान्यनुचरीणां यथासमु  
 दितं दक्षिणां ददति ॥ २७ ॥ अथोत्तरं संवत्स

रमूतुपशुभिर्यजते । पद्मभिराग्नेयैवसन्ते पद्मभिरै  
 न्द्रैग्रीष्मे पद्मभिः पार्जन्यैर्वा मास्तैर्वा वर्षासु पद्म  
 भिर्मेत्रावस्थणैः शरदि पद्मभिरैन्द्रावैष्णवैहेमन्ते प  
 द्मभिरैन्द्रावार्हस्यत्यैः शिशिरै पद्मतवः संवत्सरः  
 ऋतुवै संवत्सरे प्रतितिष्ठिति पट्टिंशदेते पश्चावो  
 भवन्ति पट्टिंशदक्षरा वृहती वृहत्यामवि स्वर्गो  
 लोकः प्रतिष्ठितस्तद्वन्ततो वृहत्यै छन्दशा स्वर्गे  
 लोके प्रतितिष्ठिति ॥ २८ ॥

अत्र सर्वत्रव्यावर्तकतावन्धेदकविशिष्टेन मेध्यपदेन  
 व्यावर्त्यतावन्धेदकयुक्तसाक्षादध्यावृत्ति पूर्वकविशेष्य  
 तावच्छेदकावच्छिन्नब्रीहिपशुरेवविशेष्यते आसन्दीवति  
 धान्यादं स्वविमणं हरितस्त्रज्जमश्वं बन्धेत्यादिवाक्येषु पुनः  
 पुनः साक्षादध्वं धनोक्तिरपि साक्षादध्वं हिं सनाभावं ध्वन  
 यति अन्यथाजघानेति व्रयात् अत्रेत्यं व्यवस्थेयं मेध्यश-  
 ब्दोद्विविधो मेधवद्वाचकः पवित्रवाचकश्चोते तत्र मेधवद्  
 वाचकः पारिभापिकयोगस्थः पवित्रवाचकस्तु स्थृण्ड एव त  
 वयोगस्थो मां सवपादियज्ञसंपदं धैवतृष्णिकारकोयो ब्रीहि  
 पशुः संस्कृयते तमेव ज्ञापयति सच पशुः यूपएव वध्यते न

त्वन्यत्र सूढस्तुविशेष्यवस्तुनः पवित्रत्वंज्ञापयतियथा मे  
 ध्याआपद्यादिपुतथासतिलोकव्यवहारमनुसृत्येन्द्रमुहिश्य  
 योधान्यादःपवित्राऽश्वानीयतेसस्त्रगादिभिःस्वलङ्घतोय  
 चकुत्रापिस्वेपितस्थलेबद्धःस्पृष्टःसञ्चुत्सृज्यतेनतुनिहन्यते  
 अतएवसिंहासनसमीपे गंगायांचवबन्धेतिनिर्दिप्तंनोचेद्यु  
 पेववन्धेतिन्द्रयात् अतोवायव्यं श्वेतमालभेतेत्यादिवचनेपु  
 श्वेतव्रीहिरेवाभिग्रेयते तथै वाययेष्ठागस्यहविपोवपायामे  
 दसः प्रेष्यानुवूहिवेत्यादिपु छागादिशब्दैस्तत्त्वसंज्ञाभिःसं  
 स्त्रियमाणोव्रीहिरेववोध्यः मेदःप्रभृतिशब्दैश्च तत्तत् संज्ञा  
 भिःसंस्कृताः किंनसादयोव्रीहिरेवयवाएववोध्याः नचपशु  
 शब्दस्य चतुष्पाड्जाति विशेषैरुद्धत्वात् व्रीहेः पशुत्वमयुक्त  
 मितिमन्तव्यं श्रुतौद्विपदांपुरुषपाणां पादाद्यवयव राहितानां  
 पदार्थानांचपशुत्वप्रदर्शनात् तथाहि

हरि ॐ देवायद्य ज्ञंतन्वाना अवन्नन्पुरुषपंशुम्

हरि ॐ उपा वाऽअश्वस्य मेध्यस्य शिरः । सूर्यश्वकु  
 र्वातः प्राणो व्यात्तमश्विवैश्वानरः संवत्सर आ  
 त्माश्वस्य मेध्यस्य द्यौष्ण्यमन्तरिक्षमुदरं पृथिवी  
 पाजस्य दिशः पाश्वेऽअवान्तरदिशः पर्शव ऋ

तवोऽङ्गानि मासाश्चार्धमासाश्च पर्वाण्यहोरात्रा  
 पि ग्रतिष्ठा नक्षत्राण्यस्थीनि नभो मांसान्युवध्यं  
 सिकताः सिन्धवो गुदा यरुच्च लोमानश्च पर्व  
 ता औपधयश्च वनस्पतयश्च लोमान्युद्यन्पूर्वधीं  
 निम्लोचन्जघनाधो यद्विजृम्भते तद्विद्योतते यद्वि  
 धूनुते तत्स्तनयति यन्मेहति तद्रूपति वागेवास्यं  
 वागहर्वाऽअश्वं पुरस्तान्महिमान्वजायत तस्य पूर्वे  
 समुद्रे योनी रात्रिरेन्यं पश्चान्महिमान्वजायत त  
 स्यापरे समुद्रे योनिरेतौ वाऽअश्वं महिमानाव  
 भितः सम्बभूवतुर्हयो भूत्वा देवानवहद्वाजी गन्धवीं  
 नर्वासुरानश्चो मनुष्यान्तसमुद्र एवास्य वन्धुः स  
 मुद्रो योनिः ॥१॥

हरि ॐ तद्यदेनान्प्राणेभ्योऽधिनिरमिमीत तस्मादाहुः  
 प्राणाः पश्चावइति इत्यादि

एवंवेदेषु वहूनां पदार्थानां पशुत्वप्रदर्शनाच्चतुर्णाड्जा  
 तिविशेषेषु शब्दो रुढो नभवति किंतु पारिगापिको योगरु-  
 ढ़ एवतथाच स्यष्टिशतपथब्राह्मणे

हरि ॐ स एतान्पञ्चपश्चानपश्यत् पुरुषमश्वं गामविम्

जं यदपश्यत्तस्मादे तेषावः ॥ २ ॥ स-ए-  
 तान्पञ्च पशुन्प्राविशत् स एते पञ्चपशावोऽभ  
 वत्तमु वै गजापनिरन्वैक्षत् ॥ ३ ॥ स एतान्प  
 ञ्च पशुनपश्यत् यदपश्यत्तस्मादेतेषावस्ते वे  
 तमपञ्चयत्तस्माद्वैतेषावः

एवंग्रजापते: प्रेक्षितत्वमेव पशुशब्दस्य प्रवृत्तिनिमि  
 त्तं तस्माद्ब्रीहावपि ग्रजापते: प्रेक्षितत्वस्यसंभवात् तत्र  
 पशुत्वं युक्तमेवेतिदिक् नचपूर्वपरिसंख्या ताश्वादिव्याति  
 रित्काः केचिदप्यन्ये पशावो मेध्याः सन्तीती शंकितव्यं  
 सर्वेषां पिसाक्षात् पशुनामुक्तान्त मेधत्वादितिस्पष्टमैतरे  
 य ब्राह्मणे शतपथब्राह्मणे च  
 हरिः ॐ सर्वेषां वा एष पशुनां मेधोयद् व्रीहियवा  
 वित्यादि

एवं सर्वेषां पिसाक्षात् पशावो यज्ञार्हानभवन्ति तेषां  
 मांसादिकं च नाशितव्यमितिदिक् सर्वथा व्रीहियवाद्यन्ना  
 भावकालेनुवंगस्थ प्रभृतयोऽमेध्यानपिसाक्षात् पशुन्यज्ञ  
 श्राद्धाद्यर्थं मगस्त्याचरणं मनुसृत्यहिंसन्तिगुर्जरस्थादय  
 स्त्वन्नाभावकाले पिसाक्षात्पशुन् नैवहिंसन्ति यद्यपिवेदे

नान्नसत्वे ब्रीहिपशुहिंसाप्रदर्शिता सर्वथाऽन्नाभावकाले  
 च साक्षात् पशु हिंसाप्रदर्शिता तथा पिशिष्टास्तूभयोः  
 कालयो रुभयविधामपि हिंसांनैव कुर्वन्ति हिंसायां  
 दोषश्रवणात् निवृत्तौ पुण्यश्रवणाच्च विहितहिंसाया अ  
 हिंसात्वेषि वेदेन हिंसाजन्य फलाश्रयत्वं समूलं नैव प्रसा  
 ख्यातं नोचेत् हिंसाश्रयाणां विद्योत्सर्जन शीलानां हिं  
 सानुरूपधूमरात्र्यादिगमनेन चान्द्रगामिनां यज्ञजन्य पु  
 ण्येक्षीणेकथं पुनः पत्तनशीलत्वं प्रदर्शितं हिंसोत्सर्जन  
 शीलानां विद्या श्रयाणां ब्रह्मलोकगामिनां कथं पुनर्ब्रह्म  
 त्या वर्त्तन शीलत्वं प्रदर्शितं पुण्यस्थोभयत्रापि समान शी  
 लत्वादुभयोर्मार्गयोरपि समानशीलत्वे नैव भवितव्यं युक्तम्  
 अतो यज्ञकाले यज्ञजन्यफलेन यज्ञान्तर्गत हिंसाजन्यफलं  
 प्रच्छाद्यते न तु निहन्यते तेन यज्ञजन्यफलेक्षणे हिंसाजन्य  
 फलं प्रकटीभवति तस्माद् हिंसाश्रयाणां चांद्रगामिनां  
 हिंसाजन्यफलाश्रयत्वात् पुनः प्रसावर्त्तनशीलत्वं विद्या  
 श्रयाणां तु हिंसाया अभावान्नप्रत्यावर्त्तन शीलत्वमिति वो  
 ध्यम् एतदेवाभिप्रेत्य यावेदविहितां हिंसानियता स्मिश्वरा  
 चरे अहिंसामेवतां विद्याद्वेदादुभांहि निर्वभाविता वहिं

सात्वग्रतिपादकवाक्येषुपर्युदांसः कृतः पर्युदासस्य हि सद्ग्राहा  
हित्वादहिं साशब्देन हिं साभिन्नो हिं सासद्वक्त्विसदाधौं गृह्णा  
ते सद्वक्त्वं तु तदभिन्नत्वे सतितद्रूतभूयोधर्मवत्वं तथा च हिं सा  
भिन्नत्वे सति हिं सागतभूयोधर्मः पातनधर्मः एवं वेदविहित हिं  
साया अहिं सात्वेषिताद्वग्ह हिं साया; पातनधर्मवच्छिन्नत्वान्  
तदवच्छिन्नानां चांद्रगामिनां पुनः पतनशीलत्वमिति सिद्धम्  
अतएव निरुक्तेत्रयोदशाध्याये , , , - - -

हरि ॐ अथ ये हिं सामाश्रित्य विद्यामुत्सृज्य महत्तपस्ते  
- - पिरोचिरेण वेदोक्तानिवाकमाणिकुर्वन्ति ते धूममभिसं  
भवन्ति धूमाद्राचिं रात्रे पक्षीयमाणपक्षमपक्षीयमाण  
पक्षादक्षिणाय नंदक्षिणाय नात्पितृलोकं पितृलोकाद्यं  
द्रमसंचंद्रमसो वायुं वायोर्वृष्टिं वृष्टे रोषधयश्वै नदूत्वात्  
स्य संक्षयेषु नरै वै मंलोकं प्रातिपद्यन्ते ॥ २२ ॥

हरि ॐ अथ ये हिं सामुत्सृज्य विद्यामाश्रित्य महत्तपस्ते पिरे  
त्चिरेण ज्ञानोक्तानिवाकमाणिकुर्वन्ति ते चिरभिसंभव  
न्त्य चिषोऽहरन्ह आपूर्यमाणपक्षमापुमाणपक्षादुदग्य  
यनमुदगयेनाद्वै वलोकं द्वै वलोकादा दित्यमादित्याद्वै  
द्वृतं वै द्वृतादात्मानसंमानसः पुरुषो भूत्वा ब्रह्मलोकमभि

- संभवान्तिते नं पुनरावर्तन्तोशिष्टादंदगूकायत इदं न जा
  - न निति तस्मादिदं वै दितेभ्यमथाप्याह ॥
- ॥ शर्तपथब्राह्मणेषि ॥

हरे ॐ ये चामीऽअरण्ये अद्वाँ सत्यमुपासते ते ऽर्चि  
 - रभिसम्भवन्त्यर्चिपोऽहरन्ह आपूर्यमाणपक्षमापूर्यमा  
 . णपक्षाद्यान्यण्मासानुदुङ्गादित्य एति मासेभ्यो देव  
 लोकं देवलोकादादित्यमादित्यहृद्युतं तान्वैद्युतात्पु-  
 रुपो मानस एत्य ब्रह्मलोकान्गमयति ते तेषु ब्र  
 . ह्मलोकेषु पराः परावतो वसन्ति तेषामिह न पु-  
 नरावृत्तिरस्ति ॥ २८ ॥ अथ ये यज्ञेन दानेन  
 । तपसा लोकं जयन्ति ते धूममभिसम्भवन्ति धू  
 मांद्रात्रिं रात्रेरपक्षीयमाणपक्षमपक्षीयमाणपक्षाद्या  
 न्यण्मासान्दक्षिणादित्य एति मासेभ्यः पितृलो-  
 कं पितृलोकाद्यन्द्रंते धन्द्रं प्राप्यान्नं भवन्ति तां-  
 स्तत्र देवा यथा सोमं राजानमाप्यायस्वापक्षीयस्वे  
 त्येवमेनांस्तत्र भक्षयन्ति तेषां यदा तत्पर्यवैत्यथेम  
 मेवाकाशमभिनिष्पदन्त । आकाशाद्यायुं वायोर्वृष्टे  
 वृष्टे पृथिवीं ते पृथिवीं प्राप्यान्नं भवन्ति त एवमे-

वानुपरिवर्तन्ते ऽथ यऽएतौ पन्थानौ न विदुस्ते की  
टाः पतड़ा यदिदं दन्दशूकम् ॥ २९ ॥

थ्रूयते च

वेदाहमेतं पुरुषं महात्मा दित्यवर्णीत मसः परस्तात् तमेव वि  
दित्याति मृत्युमोत्तिनान्यः पंथा विद्यते यनाय ॥

गणाग्निगिर्दग्निग्नरत्नरम्भकालाद  
पुर्वगिर्दग्ननौ दाना प्रेन उग्निग्ना निग्ना ।  
र्थमकाशकभ्रामितचैत सां भ्रमनिवृत्यर्थम्

- संभवान्तिते नेपुनरावर्तन्तोशिष्टादंदश्चकायत इदं न जा
  - न निति रसमादिदं वै दितव्यमथाप्याह ॥
- ॥ शर्तपथब्राह्मणोपि ॥ ,

हरि ॐ ये चामीऽअरण्ये अद्वां सत्यमुपासते ते ऽर्चि  
 - रमिसम्भवन्त्यर्चिषोऽहरन्ह आपूर्यमाणपक्षमापूर्यमा  
 . णपक्षाद्यान्विष्मासानुदुङ्गादित्य एति मासेभ्यो देव  
 लोकं देवलोकादादिसमादित्याद्वैयुतं तान्वैद्युतात्पु-  
 रुषो मानस एत्य ब्रह्मलोकान्गमयति ते तेषु ब्र  
 . ह्यलोकेषु पंराः पंरावतोऽसन्ति तेषामिह न पु-  
 नरावृत्तिरस्ति ॥ १८ ॥ अथ ये यज्ञेन दानेन  
 । तपसा लोकं जयन्ति ते धूममभिसम्भवन्ति धू  
 मांद्रात्रिं रात्रेरपक्षीयमाणपक्षमपक्षीयमाणपक्षाद्या  
 न्पण्मासान्दक्षिणादित्य एति मासेभ्यः पितृलो-  
 कं पितृलोकाच्छन्दं ते चन्द्रं प्राप्यात्रं भवन्ति तां-  
 स्तत्र देवा यथा सोमं राजानमाप्यायस्वापक्षीयस्वे  
 त्येवमेनांस्तत्र भक्षयन्ति तेषां यदा तत्पर्यवैत्यधेम  
 मैवाकाशमभिनिष्पद्यन्ति आकाशाद्वायुं वायोर्वृष्टिं  
 वृष्टेः पृथिवीं ते पृथिवीं प्राप्यात्रं भवन्ति ते एवमे-

ने तेने दुषित करेछे श्रुति स्मृतिमां जे कहुंचे ते सघंडु दोष  
रहित अने प्रमाण सिद्धछे, प्रत्येक वेदना मंत्र, ब्राह्मण, अने उपनि-  
षद् एवा त्रण भागछे, तेमा मंत्र करता ज्ञानण तथा उपनिषद्मा  
हरेक विषय वधारे स्पष्टताथी समजाव्योछे, समग्र वेदना कर्मकाण्ड  
अने ज्ञान काण्ड एवा ते मुख्य भागछे, कर्मकाण्डमा वैश्वदेव, अङ्ग-  
भान, अग्निहोत्र, दर्श पौर्णमास, चातुर्मास्य इष्टिओ, ज्योतिष्ठोम,  
अश्वमेध, गोमेध, अने नरमेध इत्यादि अनेक प्रकारना कर्म वरणवेला  
छे, तेमज ज्ञानकाण्डमा श्रवण, मनन, निदध्यास, ध्यान, धारणा, यम,  
नियम, समाधि, इत्यादि ब्रह्मज्ञानना उपायो, तथा ब्रह्मना स्वरूप,  
अने तटस्थ लक्षणो तथा कर्मकाण्डमा कहेला यज्ञोने ज्ञानमार्गथी क  
रवानो प्रकार इत्यादे ज्ञान वर्णवेलु छे तेभोमाथी जेने पर्म जिजासा  
छे, ते कर्मकाण्डनो आश्रय करेछे; अने जेने ब्रह्मजिज्ञासा छे ते ज्ञान  
काण्डनो आश्रय करेछे, कर्मकाण्डनो आश्रय करनार धूम, साथी  
रात्रि, कृष्णपक्ष, दक्षिणायन, पितृलोक, अने साथी चंद्रलोकमा जाय  
छे; या तेनुं पुण्य क्षीण थयेथी ते देवताओंनुं अन थायछे; अने दे-  
वो तेनुं भक्षण करेछे, पछो वायु, वृष्टि, अने ओषधिद्वारे पुन. आ  
लोकमा आवी जन्म मरणादि पामेछे. .

अने जे ज्ञानकाण्डनो आश्रय करेछे ते आर्चिष्ट साथी दिवस, शु-  
क्लपक्ष, साथी उत्तरायन, देवलोक, सूर्यलोक, बैद्युत अने साथी ब्रह्म  
लोकमा जायछे, या समष्टशब्दिमानि पुरुषनुं सायुज्य (मोक्ष) पामेछे, ते पुन  
आलोकमा आवतो नयि

तेमज कर्म काण्डना अन्तर्गत जे उपासना छे तेना आश्रय

करनारने पण ए पूम मार्गे करी चंद्र लोकनी मासि अने याधी पुनः पतन थायछे. अने ज्ञान काण्डना अन्तर्गत जे उपासना रहेलीछे ते. नो आश्रय करनार आचिंप मार्गे करी ब्रह्म लोकमा जायद्ये याधी पुनः पतन थतु नयि.

कर्मकाण्डना आश्रय करनारने अध्यकार मार्गे जरुं, अने पुनः पतन यवुं तेनो हेतु ए छो के तेने अज्ञान रूपी अध्यकार अने हिंसा ए बेनो आश्रय करवो पडोछे, फेवल प्राणिना घात करवानेज वेदमा हिंसागणीछे एम नयि, वृक्ष वनस्पत्यादिना ध्वंस करवाने पण हिंसाज गणेलीछे. वेदमा जे जे ठेकाणे वनस्पत्यादिना स्तुत्यादिक करेला छे ते ठेकाणे जेम प्राणिना करवा होय तेमज करेलाछे, ऐटलुज नाहि पण जगत्ना पृथिव्यादि सघबा पदार्थोने प्राणिना स्पकमाज वर्णवेला छे. नोदि करवामां पृथ्वी उपर जे कोदाळिनो प्रहार याय छे. तेने क्रौर्य कर्म गणी तन्निमित्तक वेदे प्रायभित्त कहपेलुं छे. साराश के जगत्ना पदार्थ मात्रने प्राणिना रूपकमा वर्णवेला छे. तेथी तेना ध्वंस विषय मा सघबे ठेकाणे हिंसा शब्देनो निर्देश करेलो छे.

सघबा यज्ञोमा समिधादिने अर्थे नानाप्रकारनी वनस्पतिओ अने वृक्षादिनो ध्वंस करवो पडे छे. तेथी यज्ञोने हिंसामय यज्ञ केहेछे.

ए कर्म काण्डमां मेध्य अने अमेध्य एवा वे प्रकारना पदार्थो गणाय छे तेमाथी मेध्य पदार्थो यज्ञना काममा आवेछे. अने 'अमेध्य पदार्थो आवता नयि, हालमा जे साक्षात् पशुओ देखोए छीए तेने अमेध्य गणेलाछे तेथी से यज्ञना काममा आवता नयि, त्रीहि तथा यत अे वे मेध्य पदार्थो गणेलाछे तेथी ते यज्ञना काममा आवेछे भे

बेडने मेध्य गणवानु कारण ऐछेके देवोओ ज्यारे प्रथम पुरुषनुं आलभन (अेक जातनो संस्कार, स्पर्श) कर्यु त्यारे तेमाथी मेधे निकळीने अश्वमा प्रवेश कर्यो तेथी अश्वनुं आलभन कर्यु त्यारे अश्वमाथी पण मेधे उक्तमण करीने गोमा प्रवेश कर्यो तेथी तेमणे गोनुं आलभन कर्यु त्यारे तेमाथी पण निसरीने अविमा जतो रह्यो तेथी तेमणे अविनुं आलभन कर्यु त्यारे तेमाथी निकळी अजमा गयो ते अजनु पण आलभन कर्यु त्यारे पृथ्वीमा गयो त्यारे देवो तेने पृथ्वीमा खोडवा लाग्या त्यारे ब्रीहि तथा यव रूपे बहार उगी निकळ्यो, तेथी तेंब्रीहि तथा यव मेध्य एटले यज्ञना उपयोगमा आवे एवा थया, उपर लखेला पाच प्राणीमा मेधे प्रवेश कर्यो तेथी तेंपण पशु मेध्य थया खरा पण तेमाथी मेध निसरी गयो एटले ते अमेध्य गणाया एटले यज्ञना काममा आवता नयि, पण मेधे ए पाच पशुओमा प्रवेश कर्यो, अने पोते ब्रीहि तथा यव रूपे उगी निकळ्यो ते बेड कारणथी ते ब्रीहि अधवा यवना उपर ते पशुओना नामयी संस्कारकरवा पडेछे जेमके अश्वमेधमा पुरुष अश्वना नामयी पुरुष मेधमा पुरुषना नामयी इत्यादि (जेम श्राद्मा दर्भ) तेजकारण लइने याजिको पिटपेशु करेठं वर्णी तेज हेतु लेइने ब्रज्ञाए पण ए पशुओनो उत्सर्ग करेलोछे तेणे मृष्टिना आरंभकालमा मन तथा चक्षुष् प्रभृति पोतानी इंद्रियोधी ए पुरुषादि पांच पशुओ उत्पन्न करीने तेओर्नै यज्ञना उपयोगमा लेवानी लिप्सा करी त्यारे ए पाच पशुओ शोक करवा लाग्या त्यारे ब्रज्ञाए रुद्धु हे अग्नि ! पुरुष रूपो द्विपाद पशु तथा भद्रवादि चतुर्थाद पशुओमी हिंसा करवी नहि कारण के ए पशुओ भमेध्य थयेलाछे तेथी ते यज्ञना काममा आवता नयि अने

ऐनुं मास भक्षण करवू नाहि एमनो मेध त्रीहि तथा यव रूपे थयोछे तेने तुं सैव, तेमज आगले जनमेजय प्रभृति जे जे राजाओए यह करेलाछे तेवणे पण ए मेध्य वस्तुथी फरेलाछे लोकाचार प्रमाणे साक्षात् पशुने माला वस्त्रादिथी शणगारी सिंहासनादि पोताना इप्सित स्थलमा थापीने स्पर्श मात्र करेलो छे, एम वेदमां कहेलुँ छे.

तेमज वहणप्रधासा नामना कर्ममा वहण देवताने प्रब्लक्ष पशु आपवाना कहेला छे, ते ठेकाणे पण यवना पिट्ठना पशु कर्नाने आपवा एम वेदमा फहेलुँ छे, ए मेध्य पदार्थ उपर पशुना नामथी संस्कार थायछे तेथी तेना चोखा तथा छोतरा इत्यादि अवयवोने मास, खचा, रुधिर, इत्यादि गणेलाछे, अने ते उपरेलखेला पाच प्राणी तथा बीजां सघळी जातिना प्राणि भमेध्य गणायछे तेथी तेनुं मास भक्षण करवू नाहि एम वेदमा कहेलुछे साराश के सघळे ठेकाणे मास वपादि शब्दोए कर्नाने ए त्रीहिना अवयवोज लेवायछे वेदमां त्रीहि तथा यवने पशु गणेछे एटलुंज नहि १४ कोइ कोइ प्रसंगे जगत्ना सघळा पदार्थोने पशुना रूपकमा वर्णवेला छे, अने तेना विध्वंस करवाने वेदे हिंसा गणेलीछे, तेथी यजमा पशु हिंसाछे एम कहेवायछे.

एम छता पण पुरातन काळमा अगस्त्य नामना कोइ एक ऋषिए पोताना वृद्ध माता पिता प्रभृतिना प्राण राखवाने अर्थे यथा विधि हिंसा करी हत्ती, ते काल एवी हत्ती के यजमापुरोडाश करवानेपण त्रीहि यवादि काइ पण अन्न हत्तु नहि; तेथी तेणे शास्त्रमां गोधा कच्छपादि जे प्राणीओ भव्य गणेलाछे तेना मासना पुरोडाश कर्या हत्ता, माटे जे कालमा त्रीहि यवादि अन्न पुरोडाश करवा जेटलुँ पण मळे नाहि तेवा

कालमां गोपा कच्छपादिना मांसनां पुरोडाश करवा, अने यज्ञ, श्राद्ध,  
देवार्चन, मधुपर्क, तथा अंन प्राशनां देखाडेला, स्थलं मां ए  
भृंश्य पशुनी हिंसा करवायी दोष नयि एम कहुँचे, एउपर लखेला टेका-  
र्णामार्थी मात्र यज्ञने अर्थे जे हिंसा करवी तेने दैव विधि एटले देवने  
करवा योग्य विधि एम कहेलुँचे, अने बाकीनां श्राद्ध, मधुपर्क, देवार्च-  
नादिमां पंशु हिंसा करवी त, आसुर विधि एटले राक्षसने करवानो  
विधि एम कहेलुँचे, सारांश के सर्व प्रकारे अन्न न मछवायी मांसना  
पुरोडाश करवा पडे ते, कालमां मात्र यज्ञने अर्थेज हिंसा करे तो ते-  
मो दोष गणातो नयि. एवा कालमां पण अविधिर्थी करे तो जेटलां  
पशुना शरीर उपर रुआं होय तेदलां वृष्टिपूर्यंते नरक भोगवे एम  
स्मृतिओमां कहेलुँचे, वीर्य यवादि अन छत्ता मांस भक्षण करवुं तेने वृथा,  
मांस भक्षण कहेछे ने ते करनारने पारथी करतां पण अधिक पापी  
गणेलोछे. एवा आपत्ति कालमां पण जे माणस मांस भक्षण तथा हि-  
सा करतो नयि तो तेने सो अश्वेष करवा, जेटलुं फल थायिछे.

उपर जे अगस्त्यनं दृष्टात आपी अन्नाभावकालमां पशु हिंसा  
तथा मांस भक्षणनो विधि देखाइदो ते विधिने केवल अन्नाभावका-  
लमां बंगदेशना लोकों अनुसरेला छे अने गुर्जरादि देशना लोको  
कोइ काले अनुसरेला नयि तेथी एविधि गुर्जरादिना लोकोने उपयोगी  
नयो कांरण के धर्म शास्त्रमां धणे ठेकाणे पोताना देशाचार तथा कु-  
लांचार प्रमाणेज चालवुं एवुं कहेलुँ छे. आँ चतुर्युगनो सापारण ध-  
र्म लखेलो छे, कलियुगमा जे विशेष निषेप करेला छे ते पोतानी  
मैले वाची लेवा.